बीजक कबीरदास

श्रीरीवांराज्याधिपति वैकुण्ठवासि
श्री १०८ विश्वनाथसिंहकृत टीका सहित

पांचवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेख़ाने में छपा.

सन् १९१५ ई०

जुज़ ४१ बर्क़ २

श्रीगणेशाय नमः ॥

बीजक कबीरदास ॥

अथ आदि मङ्गल ॥

दो० प्रथमै समरथ आप रह, दूजा रहा न कोय ॥
दूजा केहि बिधि ऊपजा, पूछत हौं गुरु सोय १
तब सतगुरु मुख बोलिया, सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्त की पारचै, तासों कहौं बखान २
प्रथमसुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया, सात करी बिस्तार ३
दूजे घट इच्छा भई, चितमनसा तो कीन्ह ॥
सात रूप निरमाइया, अविगतकाहुनचीन्ह ४
तब समरथ के श्रवणते, मूलसुरति भै सार ॥
शब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुहार ५
पाँचौ पाँचै अण्ड धरि, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्त हैं, सो सुकृतचित चीन्ह ६
योगमया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह ॥
या अविगतसमरथकरी, ताहि गुप्त करि दीन्ह ७
श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बन्धान ॥
आठ अंश निरमाइया, चीन्हौ सन्त सुजान ८
तेज अण्ड आचिन्त्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
अण्ड शिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ९

ते अचिन्त्य के प्रेमते, उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंश निरमाइया, चारि वेद बिस्तार १०
तव अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथ अविगत करी, मर्म कोइ नहिं जान ११
जब अक्षर के नींदगै, दबी सुरति निरबान ॥
श्याम बर्ण यक अण्ड है, सो जलमें उतरान १२
अक्षर घटमें ऊपजे, व्याकुल संशय शूल ॥
किन अण्डा निरमाइया, कहा अण्डका मूल १३
तेही अण्डके मुक्खपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दशद्वारे काढ़ि बाप १४
तेहिते ज्योति निरञ्जनौ, प्रकटे रूप निधान ॥
काल अपरबल बीरभा, तीनिलोक परधान १५
ताते तीनों देवभे, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया, मायाके उपदेश १६
चारि वेद षट शास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान ॥
आशा दै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान १७
लख चौरासी धारमा, तहाँ जीवदिय बास ॥
चौदह यम रखवारिया, चारि वेद बिश्वास १८
आपु आपु सुख सबरमै, एक अण्डके माहिं ॥
उत्पति परलय दुःख सुख, फिरिआवहिंफिरिजाहिं १९
तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥
आदि अन्तकी उतपती, सो तुमसों कहिदेत २०
सात सुरति सब मूल है, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहीं मासे ऊपजे, इनहीं माहँ समाहिं २१
सोई ख्याल समरत्थकर, रहे सो अछपछपाइ ॥
सोई संधिलै आइया, सोवतजगहिजगाइ २२
सात सुरति के बाहिरे, सोरह संखिके पार ॥
तहँ समरथ को बैठका, हंसन केर अधार २३

घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार २४
मङ्गल उत्पति आदिका, सुनियो सन्त सुजान ॥
कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान॥ २५ ॥

दो० प्रथमै समरथ आपरह, दूजा रहा न कोय ॥
दूजा केहिविधि ऊपजा, पूछतहौं गुरु सोय १

कबीरजीकी वाणीके अर्थ करिबेको मोमें सामर्थ्य नहीं रही परन्तु साहब यह विचारिकै कि कबीरजी के बीजकको पाखण्ड अर्थ लगाइकै जीव बिगरेजायँ हैं सो साहब तो परम दयालु हैं उनको करुणा भई तब कबीरजीको भेज्यो या कहिकै कि आगे हम तुमको भेज्यो हतो सो तुम ग्रन्थ बनाइकै बहुत जीवनको उपदेशकरिकै उद्धार कियो सो अब तिहारे ग्रन्थ को पाखण्ड अर्थ करिकै पाखण्डी ह्वै कै जीव बिगरे जायँहैं और बहुत बिगरिगये सो तुम जाइकै जौन अर्थतुम बीजकमें राख्योहै सो अर्थ विश्वनाथ सों बनवावो जाते सो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पास आवैं सो कबीरजी आयकै मोसों कह्यो कि तुम बीजकको अर्थ बनावो हम तुमको बतावेंगे सो उनके हुकुमतेमैं बीजकको अर्थ बनाऊं हौं बतावनेवाले श्रीकबीरजीही हैं मोमें ताक़त नहीं है जो मैं बनायसकौं और नाभाजी भक्तमाल में लिख्यो है कि " कबीर कानि राखी नहीं बरणाश्रम षटदरशनी " सो इहां कबीरजी को सिद्धान्त मत मैं कहौंगो औ सर्वसिद्धान्तग्रन्थ जो मैं बनायो है तामें सबको सिद्धान्त यथार्थ राख्योहै सो यहां बीजकके तिलक में साहबको औ कबीरजीको हुकुम यहीहै कि एक सिद्धान्त रहै जोसबते परेहै और सिद्धान्त सब खण्डन ह्वैजायँ सो सबके सिद्धान्तन को खण्डन करिकै एक सिद्धान्त मैं वर्णन करौंहौं सो सुनि कै साहब के हुकुमी जानिकै साधुलोग पण्डितलोग और और मतवाले जेहैं ते मेरे ऊपर खफ़ा न होयँ प्रसन्न रहैं ना समुझि परै तौ प्रसन्न होइकै गुरुसों पूछिलेइँ औ यह वस्तुनिर्देशात्मक

मङ्गल है ताको अर्थ लिखै हैं (अथ अर्थ) प्रथम समरथ जे श्री रामचन्द्रहैं ते आपहीहैं दूसरा कोई नहीं रह्यो जो कहौ उनके लोक में तो हंस हंसिनी सब वर्णन करे हैं उनके पार्षद सब हैं ताको वर्णन निर्भय ज्ञान में विस्तरते हैं सो इहां संक्षेप ते सूचित किये देइ हैं "सत्य पुरुष निर्भय निरबाना। निर्भय हंस तहँ निर्भय ज्ञाना" इत्यादिक बहुत वर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी ने कियो है तुम एकही कैसे कहौ हौ सो सत्यहै उहांके जीव सनातन पार्षद बने रहै हैं और साहब व साहबको लोक सनातन बनो रहै है परन्तु उहांके पार्षद जीव और उहांकी सब वस्तु साहबही का रूप है औ सब चिन्मय है सो वेद कहै हैं (श्लोक) "सच्चिदानन्दो भगवान् सच्चिदानन्दात्मिकास्य व्यक्तिः" और वह अयोध्या नगरी ब्रह्मके परे है ब्रह्म वाको प्रकाशहै और रघुनाथजीके समीप के जे पार्षद हैं ते साहबके स्वरूप हैं तामें प्रमाण "अयोध्या च परब्रह्म, सरयू सगुणः पुमान्। तन्निवासी जगन्नाथः, सत्यं सत्यं वदाम्यहम् १ अयोध्यानगरी नित्या, सच्चिदानन्दरूपिणी। यदंशांशेन गोलोकः, वैकुण्ठस्थः प्रतिष्ठितः २" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) "देवानां पूरयोध्या तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गे लोका ज्योतिषावृताः" (इति श्रुतेः) सो इहां कहै हैं कि प्रथम तो समर्थ साहब वह लोक में आपही आपहैं दूजा कोई नहीं रह्यो दूजा जो रह्यो सो तो साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें रह्यो है सो कबीरजीते धर्मदास कहै हैं कि हे गुरुजी! मैं तुमसे पूछौंहौं कि साहब के लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें जो समष्टि जीव वह दूजा रह्यो सो केहि विधिते उपज्यो संसारी भयो काहेते कि साहब तो दयालु हैं जीवोंको संसारते छुड़ाइदेइ हैं जीवोंको संसारी नहीं करिदेइ हैं औ वह समष्टि जीवके तो मन आदिक नहीं रहे शुद्ध रह्योहै उपजिवे की सामर्थ्य नहीं रहीहै और साहब सामर्थ्य देकै जीव को संसारी करबही न करैंगे सो दूसरा जो है समष्टिजीव सो उपजिकै व्यष्टिरूप संसारी केहि विधिते भयो औ जीव के

अपने ते उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रही तामें प्रमाण "कर्तृत्वं करणत्वं च स्वभावश्चेतना धृतिः । तत्प्रसादादिमे सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया" (इति श्रुतेः) ॥ १ ॥

दो० तब सतगुरुमुखबोलिया, सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्तकी पारचै, तोसों कहौं बखान २

गुरु साहब को कहै हैं काहेते सबते श्रेष्ठ हैं और जे यथार्थ उपदेश करै हैं तिनको सतगुरु कहै हैं व जे अयथार्थ उपदेश करै हैं तिनको गुरुवालोग कहैहैं सो यह बीजक ग्रन्थकी और अनुभवातीत प्रदर्शनी यह टीका की यह सैली है तब सतगुरु जे कबीरजी हैं ते मुखते बोले कि, हे सुजान, हे सुकृत ! जीव समष्टि ते व्यष्टि जेहि प्रकार भये हैं सो सुनो मैं तुमसों आदि अन्त की परचै कहौ हौं जेहिते तुम जानिलेउ ॥ २ ॥

दो० प्रथम सुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया, सात करी विस्तार ३

प्रथम समर्थ जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं साकेतनिवासी दयालु जिनके लोकके प्रकाशमें समष्टिरूपते यह जीवहैं ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यह जीवको देखिकै कि कछू वस्तुको याको ज्ञान नहीं है जब यह जीवपर साहबकी दया भई तब सुरतिमात्र देकै अपने जानिबेको वाको समर्थ करतभये कि जब याके सुरति होयगी तब मोको जानैगो मैं हंसस्वरूप देकै अपने लोक लै आऊंगो जहां मन, माया, कालकी गति नहींहै तहां सुख पावैगो अबै तो याको सुखको ज्ञानई नहीं है यह करुणा करिकै वह समष्टिरूप जीवके घटमें सहजही सुरतिको उच्चार करत भये कहे अंकुर करतभये सो साहब तो अपने जानिबेको सुरति दियो कि मोको जानै और यह जीव वही सुरतिको पाइकै व मनआदिकन को कारण इनके रहबई करै और शुद्ध रहै—दूध रहै जीव अपनी शुद्धतारूप दूधमें जगत्‌को कारण बनोई रहै तामें वही

सुरति को जामन दैदियो सो बिनशिगयो सो वह सुरति पाइकै साहब के पास तो न गयो जीव बिनशिकै इच्छादिक जे सात तिनको विस्तार करत भयो और यह चैतन्य जीवको सुरति दैकै साहब चैतन्य करैहै साहब चैतन्यों को चैतन्य है तामें प्रमाण श्लोक " नित्यो नित्यश्चेतनश्चेतनानाम् । द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च । यदनुग्रहतः सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया " (इति भागवते) और इच्छादिकनको कौन सात विस्तार करत भयो सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

दो० दूजे घट इच्छाभई, चितमनसातौ कीन्ह ॥
सातरूपनिरमाइया, अविगतकाहुनचीन्ह४

जब याको साहब सुरति दीन तब जीवके जगत्को कारणमें रामाज्ञान बनोईरहै तेहिते सुरति साहबमें न लगायो जगतमुख लगायो जब सुरति जगतमुख लाग्यो तब प्रथम जगत्को कारण पुष्ट भयो बिनाशिगयो तेहिते दूसर इच्छारूप अंकुर भयो तीसर चित्त भयो चौथ मन भयो पांचौं बुद्धि भई छठौं अहंकार भयो सातौं अहंब्रह्म कहे अनुभवते भयो जो ब्रह्म ताको मान्यो कि महीं ब्रह्म हौं सो शुद्धते अशुद्ध ह्वैकै सात विस्तार करिकैसमष्टि-रूप जो जीव सो " अहं ब्रह्मास्मि " मान्यो तब याको अनुभव ब्रह्म माया शबलित भयो ताही द्वारा जगत् उत्पन्न भयो ताही द्वारा यह जीवौ उत्पन्न भयो अर्थात् समष्टिरूप जीवको अनुमान जो ब्रह्म सो इच्छा कियो एकते अनेक होऊं सो वा अनुमान ब्रह्मसमष्टि जीवको है यहि हेतु ते वह समष्टिजीव एकते अनेक ह्वैगयो और फिरि वह समष्टिरूप जीवको जो अनुमान ब्रह्म सो बिचार्यो कि ई जे अशुद्धरूप जीवात्मा तिनमें प्रवेश कैकै नाम रूप करो याही अर्थमें प्रमाण श्लोक " सदैव सौम्येदमग्रआसी-देकमेवाद्वितीयं तदैक्षत बहुस्याम् अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि " (इत्यादि श्रुतयः) जो कहो वा सत्

ब्रह्मजीव को अनुमान कैसे कहौहौ ब्रह्मही सबभयो ऐसो काहे नहीं कहौहौ तो "यतो वाचो निवर्तन्ते असह्य मनसा सह" इत्यादिक श्रुतिन करिकै मन वचनके परे है सत्नाम कहनो वामें नहीं संभवित है काहेते वो निर्विकार है सविकार ह्वैकै एक ते अनेक ह्वैजैवो नहीं सम्भवै या हेतुते यह समष्टि जीव ही अपनो अनुमानरूप धोखा ब्रह्म ठाटकैकै माया शबलित ह्वैकै तद्द्वारा जगत् उत्पन्नकैकै तद्द्वारा आपो उत्पन्न ह्वैकै समष्टिते व्यष्टि ह्वै गये अविगत समर्थ जे साहब हैं तिनको न चीन्हत भये यह सूक्ष्मरीति ते जो उत्पत्ति भई सो कहिदियो और जब जीव साहबके जानिबे को समर्थ भयो तब जैसी उत्पत्ति भई है सो कहै हैं साहब जो सुरति दियो सो तौ अपनेमें लगायबेको दियो यह संसारमें लगायो परन्तु जो संसार ते खैंचिकै अजहूं सुरति सम्हारि साहबमें लगावै तो साहब के हजूर आठौपहर बनोरहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखपरै संसार देखिही न परै तामें प्रमाण कबीरजी की साखी "सुरति फँसी संसार में, तेहि से परिगा दूर। सुरति बांधि सुस्थिर करै, आठौ पहर हजूर १" आगे जौनीतरह ते उत्पत्ति भई साहबको त्यागि संसारी भयो सुरति पाय काज करिबेको समर्थ भयो तबहूं साहब सारशब्द को उपदेश दियोहै ताको साहबमुख अर्थ न समुझिकै संसारमुख अर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पना कैसेकै संसारको उत्पन्न कैकै संसारी भयो है यह जीव सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

दो० तबसमरथकेश्रवणते, मूलसुरतिभइसार ॥
शब्दकला ताते भई, पांचब्रह्मअनुहार ५

साहब को दियो सुरति पाइकै समरथ भयो जो समष्टिजीव ताके श्रवण में मूलसुरति जो साहब अपने जानिबेको दियो है सो सार भई कहे रामनाम रूप ते प्रकट भई सार रामनामको कहै हैं तामें प्रमाण साखी कबीरजीकी "रामैनाम अहैनिजसारू।

औसबझूंठ सकलसंसारू १ " साहब जो सुरति दियोहै सो वह सुरतिके चैतन्यताते नाम सुन्यो अर्थात् साहब जो याको गोहरायो कि रामनामको जपिकै बिचारिकै मोको जानो तो मैं हंसस्वरूप ह्वैकै अपने पास बुलाइलेउँ सो सुनिकै रामनाममें जगत् मुख अर्थ है ताको ग्रहण कियो और शब्दमें लगाइ दिये वही रामनाम लैकै शब्दरूप वाणी उचरी है सो कबीरजीकी रमैनी में आगे लिख्योहै "रामनाम लै उचरी बाणी" और वही रामनामते शब्द कलावाणी होतभई सो पांच ब्रह्मके अनुहार हैं पांच ब्रह्म कौन हैं ते कहै हैं सोहं, ररंकार, ओंकार, अकार, पराशक्तिरूप परम श्रीकबीरजीके भेदसारग्रन्थको प्रमाण "प्रथम शब्द सोहं जो कीन्हा। सब घटमाहीं ताकर चीन्हा॥ ररंकार यक शब्द उचारी। ब्रह्मा बिष्णु जपैं त्रिपुरारी॥ ओंकार शब्द जो भयऊ। तिनसबही रचना करिलयऊ॥ शब्दस्वरूप निरञ्जन जाना। जिन यह कियो सकलबन्धाना॥ शब्दस्वरूपी शक्ति सो बोलै। पुरुष अडोल न कबहूं बोलै"॥ ५॥

दो० पांचो पांचै अण्डधरि, एक एकमा कीन्ह॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं, सो सुकृत चित चीन्ह६

तेपँचहुनको पांच अण्ड कहे पांच स्वरूप बनाइकै एकएकस्वरूपमें एक एक अक्षर राखत भये और दुइ इच्छा जे प्रथम कहि आये हैं एक वह इच्छा कारणरूपा जब साहब सुरति दियो है तब जो रही है साहब मुख नहीं होनदियो याको बिनाशिकै जगत्मुख कियो और दूसरी वह सुरति पाइकै जगत्मुख होइकै अपने अनुभव ब्रह्मको खड़ाकियो वह ब्रह्म मायाशबलित ह्वैगई तौन माया आदिशक्ति गायत्रीरूपा इच्छा सो ये दोनों इच्छा पँचहुन में गुप्तहैं सो कबीरजी कहैहैं कि, हे सुकृत! चित्तमें चीन्हों मैं वर्णन करौहौं बिचारिकै देखो ये पँचहुन में दोनों इच्छा हैं कि नहीं ये सिगरे ब्रह्म जे सारशब्द के जगत्मुख अर्थ ते भये हैं ते

माया शबलित हैं कि नहीं तुम चीन्हों सो आगे कहै हैं॥ ६॥

दो० योगमया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह॥
या अविगतसमरथकरी, ताहिगुप्तकरिदीन्ह ७

कारणरूप सुरति और योगमाया—गायत्री ये जे दुइ इच्छा हैं ते वे पांचों ब्रह्मको करती भईं सो सर्वत्र तो यह सुनै हैं कि ब्रह्मते सब होइ है और यहां इनते ब्रह्म होइहै पांचौ यह बड़ो आश्चर्य है यह अविगति समर्थ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियो है तब ये सब भये हैं तिनको गुप्तकरि दियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्ममें और जीवमें नामको अर्थ लगायदियो है ते पँचहुनको बतावै है॥ ७॥

दो० श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमीबन्धान॥
आठअंश निरमाइया, चीन्हों सन्तसुजान ८

यह सोहं शब्द वह परमपुरुष जोहै समष्टिजीव ताके श्वासा ते उपज्यो सोई बतावै है कि सोहं कहे "सः अहं" सो जो है अनुभवगम्य ब्रह्म सो मैंहौं और वही आदिपुरुष समष्टि जीव श्वासाते अमीबन्धान करतभयो कि इनकी मिठाई पाइकै लोग लोभायजायँ कौन अमीबन्धान करत भयो वही श्वासाते आठअंश बनावतभये कहे आठौ सिद्धियां निकासतभये आठौ सिद्धियों के नाम "अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः" अथवा आठ अंश निरमाइया कहे आठ प्रधान ईश्वर प्रकट कियो तेई परम पुरुष समष्टि जीवके मन्त्री भये तामें प्रमाण महातन्त्र में महादेव का वाक्य "काली च कौशिकी विष्णुः सूर्योऽहं गणनायकः। ब्रह्मा च भैरवोप्यष्टौ जीवामात्याः प्रकीर्तिताः १" यह प्रमाण शतानन्दभाष्य में विस्तार कैकैहै सो हे सन्त, सुजानौ! तुम चीन्हत जाउ वह जो सार शब्द रामनाम है सो साहब समष्टि जीव पुरुष को बतायो सो सुन्यो व साहबको न जान्यो धोखा

ब्रह्मरूप आप ह्वैकै वाको औरई जगद्रूप अर्थ निकासिलियो और वह जो सोहं शब्द प्रकट भयो सो संकर्षणहै काहेते कि "सोहं शब्द" जीवमें घटित होइहै कि वह जीव जो है सोई विचार करै है कि सो जो है ब्रह्म सो अहं कहे महींहौं एक और दूसरो कोई नहीं है सो उन्हींको आदिपुरुष व विराट् और हिरण्यगर्भ कहै है और सहस्रशीर्षा पुरुष कहै है और ई समष्टिरूपजीव पुरुष है सो वही समष्टिरूपते संकर्षण स्थूलरूप धारण करिकै प्रकटभयो सबको आकर्षण करिकै एक ह्वैरहे ताको संकर्षण कही समष्टि जीव काहेते महाप्रलयमें जब जीव समष्टि जीवै में रहें हैं और व्यञ्जन मकार पचीसौ वर्ण है सो जीववाचक है ताको अर्थ समष्टि जीव रूप संकर्षण समुझ्यो और रामनामकी जो मकार है सो तौ वर्णातीत है पचीसौ वर्ण नहीं है रामनाम के व्यञ्जन मकार में संकर्षण के अंशी जेहैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझ्यो वहां पांच ब्रह्म कहि आये हैं सो इहां एक ब्रह्मकी और रामनाम के एकमात्राकी प्राकट्य भई ॥ ८ ॥

दो० तेज अण्ड आचिन्त्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
अण्डशिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ९

अचिन्त्य जो है रामनाम ताको तेज अण्ड जो है रामनाम को रेफ तौने रेफको अर्थ लैकै सर्वत्र पसराइ दियो अर्थात् रेफ अर्धमात्रा को अर्थ परा आद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपा समुझ्यो सो सब जगत् में पसराइ दियो वही माया ते सम्पूर्ण जगत् होत भयो सो वह परा आद्या शक्ति अण्ड जोहै ब्रह्माण्ड ताकी शिखापर बैठिकै अधरदीप कहे नीचे के ब्रह्माण्डन को निरधार कहे प्रकाशकरिकै निर्माण करत भई सो वही को योगीलोग ब्रह्माण्डमें प्राण चढ़ायकै वही ब्रह्मज्योति को ध्यान करैं हैं और वही ज्योति में जीव को मिलावै हैं और रेफपदवाच्य ते श्रीजानकीजी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ ९ ॥

दो० ते अचिन्त्यके प्रेमते, उपज्यो अक्षर सार ॥
चारिअंशनिरमाइया, चारिबेद बिस्तार १०

तौन जो अचिन्त्य रामनाम ताके प्रेमते कहे जब वामें प्रेम कियो कि याको समुझै कहाहै तब रामनाममें जोहै रकार तेहिमें जो है लघु अकार तौनेके शक्तिहू अक्षरसार जो है रामनाम सो प्रणवरूपते प्रकट होतभयो ताहीको शब्द ब्रह्मरूप करिकै समुझतभये तौने प्रणवकी चारिमात्रा हैं अकार, उकार, मकार बिन्दुते एक एक मात्राते एक एक वेद भये सो चारिवेद होत भये और सबते परे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थ तिनको न समुझत भये सो याहीमें एकाक्षरी ब्रह्मकी और शब्दहू ब्रह्मकी प्राकट्य भई सो इहां तीसरे ब्रह्म की प्राकट्य भई १ वहां रकारकी अकारको अर्थ करि आयो यहां रकारार्थ श्रीरामचन्द्रको कहौहौं यह कैसे सो रेफवाच्यते जानकी और श्रीरामचन्द्रते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघुरकारकी जो अकार तौनेके रेफते सहितै कह्योहै रकारवाच्य श्रीरामचन्द्रको लिख्यो याही प्रमाणके अनुरोध तें वोहू रकारवाच्य श्रीरामचन्द्रको लिखिदियो सीताराम बिलग नहीं होयहैं तामें प्रमाण "अनन्या राघवेणाहं भास्करस्य प्रभा यथा" ये जानकीको वचन है "अनन्या हि मया सीता भास्करस्य प्रभा यथा" ये श्रीरामके वचन हैं याही अभिप्राय ते कबीरजी जानकीको वर्णन नहीं कियो श्रीरामही के वर्णन ते जानकी आइगई काहेते सीताराम में भेद है तामें प्रमाण "रामः सीता जानकी रामचन्द्रो नित्याखण्डो ये च पश्यन्ति धीराः" (इति श्रुतिः) ॥ १० ॥

दो० तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथ अविगतिकरी, मर्मकोइ नहिंजान ११

तब योगमाया अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्म प्रणव तत्प्रतिपाद्य जो ईश्वर प्रकट भयो जो जीव ताको नींद मोह आलस्य

देत भई और प्रणव व वेदनते पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाशादिक सब जगत् प्रकट भयो व ताही प्रणव वेदनते सब जीवनके नाम रूप शुभाशुभ कर्मादिक सब वस्तु प्रकट भई अर्थात् वेदही में सब वर्णितहै व सबके नाम रूप वेदही ते निकसे हैं सो प्रणव रकारहीते प्रकट भयोहै और सब अक्षर प्रकट भये हैं ताहीते सब वेद भयेहैं याही हेतु ते प्रणव और वेदहू अविगति समर्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी महिमा करी कहे कही जो वेद तात्पर्य करिकै बतावैंहैं तौनेको मर्म कोई न जानत भयो और प्रणव तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को कहैं हैं सो अर्थ तापिनी का प्रमाण दैकै लिख्योहै सो मेरे रहस्यत्रय ग्रन्थमें है सो प्रणव अक्षर वेद सब रामनामही ते निकसे हैं सो मेरे मन्त्रार्थ में प्रकट है ॥ ११ ॥

दो० जब अक्षर के नींद गइ, दबी सुरति निर्बान ॥
श्यामबरणयकअण्डहै, सो जलमें उतरान १२

योगमायामें सोय रहे अक्षर कहे नाशरहित जे नारायण तिनको जब योगमाया जगायो नींद गई तब उनको निर्वाण सुरति देत भई काहेते ई जे हैं नारायण तिनको निर्वाणरूप कहे निराकाररूप कैकै अन्तर्यामीरूपते सबके भीतर दबाइ देत भई अर्थात् चेष्टारहित दिव्यगुणविशिष्ट सर्वत्रव्यापक अन्तर्यामी तत्त्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबके अन्तर दबाइ देत भई कहे सबके अन्तर्यामी करि देतभई तेई प्रकट होतभये श्याम वर्ण अण्ड कहे चतुर्भुजरूप धारण करिकै जलमें उतरान कहे जलमें रहतभये सो इनके शरीरमें शरीर जे हैं निराकार नारायण तिनको नित्य सम्बन्ध होत भयो सो रकारमें जो है अकार ताको नारायण अर्थ करत भये और भरतवाची जोहै अकार सो अर्थ न समुझत भये यहां चौथे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ १२ ॥

दो० अक्षर घटमें ऊपजै, व्याकुल संशयशूल ॥

किन अण्डा निरमाइया, कहा अण्डका मूल १३

अक्षर जे नारायण हैं तिनके घटते ऊपजे अर्थात् तिनकी नाभि में कमल होइ है तेहिते ब्रह्मा होइहै ते ब्रह्मा सब जगत् करै हैं तब समष्टि जीव शुद्धते अशुद्ध ह्वैके ब्रह्मा ते उत्पन्न ह्वैके बहुत शरीरधारण करैहैं ते ब्रह्मा जब उत्पन्न भये तब व्याकुल भये और संशय करतभये कि कहां अण्डका मूल हैं व किसने अण्डा को बनायो है व हम कहांते उत्पन्न भये हैं सो खोज्यो खोजे ना पायो तब तपस्या करत भयो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि तुम जगत् की उत्पत्ति करौ यह कथा पुराणनमें प्र- सिद्ध है ॥ १३ ॥

दो० तेहीअण्डके मुख्यपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षरदृष्टि से फूटिया, दशद्वारे कढ़ि बाप १४

तौने ब्रह्मरूपी अण्डके मुखपर शब्दकी छाप लगी अर्थात् शब्दब्रह्म जो वेदसार ताको नारायण बताय दियो तौनेको ब्रह्मा जपत भये तब वाहीते प्रकटे जे चारोवेद ते ब्रह्मा के चारिउ मुख ते निकसतभये तौने वेदनको अक्षर जो समष्टिजीवहै सो जगत् मुख दृष्टि कियो अर्थात् जगत्मुख अर्थ देख्यो तब द्वारे ह्वैके वह मायाते शबलित जो ब्रह्महै जाको आगे बाप कहि आयेहैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवनको कैकै उत्पन्न करैहै सो दश द्वारेते कहे दशौ इन्द्रिनते कढ़त भयो तब इन्द्रिन की विषय ह्वैके इन्द्री ह्वैके चिदंश ह्वैके चिदचिदात्मक जगत् होत भयो अर्थात् वेदन को अर्थ जब जगत्मुख देख्यो तब वह जीव चिदचिदात्मक जगत्को धोखा ब्रह्महीं देखत भयो सो जगत् तो साहब के लोक प्रकाश को शरीरहै तौने को वेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्महीं देखत भयो यही धोखाहै तात्पर्य कैकै वेद जो साहबको कहैहै ताको न जानत भये लघु रकार की अकार ते नारायण भये तिनते ब्रह्मा की उत्पत्ति भई सो कहि आये अरु वहिते जे तो जगत्के उत्पन्न

को प्रयोजन रह्यो सो कहि गये अब फेरि सिंहावलोकन करिकै पञ्चम ब्रह्मकी प्राकट्य कहैहैं ॥ १४ ॥

दो० त्यहितेज्योतिनिरञ्जन, प्रकटेरूपनिधान ॥
कालअपरबलबीर भा, तीनलोकपरधान १५

तेहिते कहे वही रामनामते व्यञ्जन मकारको जो अर्थ करि आयेहैं तामें जो अकार रहीहै ताको महाविष्णु अर्थ करतभये जे विरजाके पार पर वैकुण्ठमें रहेहैं जिनके अंशते रमा वैकुण्ठवासी भगवान् भयेहैं सो अञ्जन जो अविद्या माया ताते वे रहित हैं काहेते कि अविद्या माया विरजा के यहीं पारभर बननेहै पै पुराणादिक में सो व्यञ्जन मकारकी अकारको महाविष्णु अर्थ करत भये और वह अकार शत्रुघ्नवाचकहै सो अर्थ न समुझत भये ते अकाररूप महाविष्णुते महाकाल अपरबल बीरभा कहे जेहिते प्रबल बीर कोई नहीं है अथवा अकार जे विष्णुहैं तेई हैं परमबल जिनके सो तीनलोकमें प्रधान होत भयो इहां पाँचों ब्रह्मकी प्राकट्य ह्वै गई ॥ १५ ॥

दो० ताते तीनों देव भे, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया, माया के उपदेश १६

तीने कालते कहे वही कालमें काल पाइ पाइकै एक एक ब्रह्माण्डमें तीन तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होतभये सो कोटिन ब्रह्माण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिक भये ते मायाके उपदेश ते कहे माया को ग्रहणकरिकै संसारमें चारिखानि जे जीवहैं तिन को सिरजिया कहे उत्पत्ति करत भये सो उत्पत्तिको क्रम ब्रह्माते पहिले कहिआये हैं ॥ १६ ॥

दो० चारिबेद षट्शास्त्रऊ, औ दश अष्ट पुरान ॥
आशादै जगआँधिया, तीनोंलोक भुलान १७

चारोवेद, छवोशास्त्र और अठारहो पुराणमें माया जोहै सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतनमें

लगाइदियो और सम्पूर्ण जगत् बाँधिलियो मुख अर्थ करिकै साहबको भुलाय दियो ये सब तात्पर्य कैकै साहबको कहैहैं सो साहबको न जानन पाये ताते तीनों लोकके जीव भुलायगये १७॥

दो० लखचौरासीधारमा, तहां जीव दिय बास ॥
चौदहयमरखवारी, चारिवेद बिश्वास १८

चौरासीलाख जो योनिहैं सोई हैं धारा ताहीमें जीवको बास देतभये कहे वही चौरासीलाख योनिरूपी धारामें सब जीव बहे जाइहैं अर्थात् नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके विश्वासते कहे चारि वेदके मतते नाना मत होतभये "शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता" इत्यादिक नाना देवतनकी उपासना गुरुवालोग बतावतभये वेद जो तात्पर्यकरिके बतावैहै साहबको सो अर्थ न जानतभये औ चौदहो यम जीवकी रखवारी करत भये यह जीव निकसिकै साहबके पास न जान पायो चौदह यमके नाममें प्रमाण ज्ञानसागरको "दुर्गदचित्रगुप्तबरियारा। ईतो यमके हैं सरदारा॥ मनसा मल्ल अपरबल मोहा। कालसैन मकरन्दी सोहा॥ चितचञ्चल औ अन्धअचेता। मृतक अन्ध जो जीतैखेता॥ सूर सिंह औरो क्रमरेखा। भावीतेजकाल का पेखा॥ अघनिद्रा औ क्रोधितअन्धा। जेहिमा जीव जन्तु सब बन्धा॥ परमेश्वर परबल धर्मराजा। पाप पुण्य सबते भल छाजा॥ यह सबयमैं निरञ्जन कीन्हा। लिखनी कागद रचिकै दीन्हा॥ १॥" प्रथम दुर्गद कहैं हैं दुर्ग कहावै कि जो कोई पुण्य करैहै ताको स्वर्ग देकै पुण्यभोग करावैहै और जो पाप करै है तिनको नरकनमें पापको भुगताइकै क्लिष्टरूपी जो है शरीर सो जीवको देय है याते दुर्गद यम एक और दूसरा चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखा करैहैं तीसरा मलिन मन व चौथा मोह व पांचौ कालकी सेनाका मकरन्दी कहे बसन्त ते सहित व छठो अन्ध अचेत जोहै चित्त सो व सातौं मृत्यु भई जो खेतको जीतैहै कहे

सबको मारैहै व आठों सूर कहे अन्धा अर्थात् अशुभकर्मकी रेखा व नवों सिंह कहे समर्थ शुभकर्मकी रेखा व दशौं यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जो कर्म होनहारहै सो काल करिकै होइ है अर्थात् कालकी अपेक्षा राखै है व ग्यारहौं अघ कहे पापरूप निद्रा व बारहौं अन्धको देनवारो क्रोध जामें सब जीव जन्तु बँधे हैं व तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमावैकुण्ठवासी विष्णु जे शुभाशुभ फलके दाताहैं व चौदहौं धर्मराज यज्ञपुरुष ये चौदहौं यमनिरञ्जन जो आगे कहि आयेहैं विरजापार विष्णुकी सत्ता विना ये सब जड़हैं कार्य नहीं करि सकेहैं वोई लिखनी कागद देहहैं ॥ १८ ॥

दो० आपु आपुसुखसब रमै, एक अण्डकेमाहिं ॥
उत्पतिपरलयदुःखसुख, फिरिआवैंफिरिजाहिं १९

एक अण्ड जो है ब्रह्माण्ड तौनेमें जीव अपने अपने सुखके लिये सब रमैहै कोई मानै है कि हम जीवात्माहैं कोई मानैहै कि हम ब्रह्महैं कोई मानैहै कि हम ईश्वरहैं कोई मानैहै कि हम देवताहैं कोई मानैहै कि हम सेवकहैं कोई मानैहै कि शरीरभर सब कुछहै आगे कछू नहीं है सो विषयही सुख करिलेइ कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्ग को सुख चाहैहै और कोई यश चाहैहै कि अपने स्वस्वरूपको प्राप्त होयँ तो हमको अक्षयसुख होय सो जिन जिन मतन करिकै जौन जौन स्वस्वरूप ई मानै है ते इनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावै तेहिते इनके जनन-मरण न छूटत भये उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्त होइहै और फिरि आवैहै फिरि जाइहै ककार-चकार-आदिक जे वर्णहैं तिनमें बुन्दार्थ चन्द्रदेइ तब सानुनासिक ताकी एक मात्रा रामनाममें और है सो याके अर्थ हंसस्वरूपहै सो साहब देइहै सो ना समुझो प्राकृत नाना जीवरूप आपनेको मानिकै नानामतनमें लागिकै संसारी ह्वै गये और रामनाममें छामात्रा हैं तामें प्रमाण " रामनाम महाविद्ये ! षड्भिर्वस्तुभिरावृतम् ।

जीवब्रह्ममहानादैस्त्रिभिरन्यं वदामि ते ॥ स्वरेण अर्धमात्रेण दिव्यया माययापिच"(इति महारामायणे) और रामनामको जो अर्थ भलिगयेहैं तामें प्रमाण सब मुनिनको भ्रम भयो श्रुतिन को प्रमाण दै कोई कहै हमारो मत ठीकहै कोई कहै हमारो मत ठीकहै तब सब मुनि वेदन ते पूछ्यो जाइ वेदहू विचारेउ कि सबमें तौ हमारही प्रमाण मिलैहै सो वेदहूको भ्रम भयो तब सब मुनि और वेद ब्रह्माके पास गये तब ब्रह्मा ते पूछ्यो तब ब्रह्मौके भ्रम भयो कि साँच मत साँच साहब कौनहै सो महादेवजी पार्वतीजीते कहै हैं कि तब सबको साहब श्री-रामचन्द्रको ध्यान कियो तब साहब कह्यो कि यह बात सबके आचार्य जे संकर्षण हैं ते जानै हैं तिनके पास सबको पठै देहु वे समझाय देयँगे तब ब्रह्मा की आज्ञा ते सब संकर्षणरूप से शेषके यहां गये सो वेद उहां पूछ्यो संकर्षण ते तब संकर्षण जी एक सिद्धान्त जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बतायो है रामनाम को यथार्थ अर्थ तौन सदाशिवसंहिता के ये श्लोक हैं "रामनाम्नोऽथमुख्यार्थं भगतस्त्वेतत्प्रतिष्ठितम्। विस्मृतं कण्ठ-मणिवद्वेदाः शृणुत तत्त्वतः १ तात्पर्यवृत्त्या विज्ञेयो बोधयामि विभागतः। रामनाम्नि शुचौज्ञेयाः षण्मात्रास्तत्त्वबोधकाः २ राम-नाम्नि स्थितो रेफो जानकी तेन कथ्यते। रकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्तमः ३ अकारेण तथा ज्ञेयो भरतो विश्वपालकः। व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते ४ ह्रस्वाकारेण निगमाः शत्रुघ्नःसमुदाहृतः। मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ५ प्रोच्यन्ते तेन हंसा वै जीवाश्चैतन्यविग्रहाः। संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जिताः ६ दास्याधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य महात्म-नः। एततात्पर्यमुख्यार्थादन्यार्थो योनुभूयते ७ सोऽनर्थ इतिवि-ज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः" (इति सदाशिवसंहितायांविंशाध्याये वेदान्प्रतिशेषवचनम्) सो जौन नाम साहब बतायो ताके औरई और अर्थ करिकै जीवसंसारी ह्वैगये साहबको न जान्यो॥१६॥

दो० तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥
आदिअन्तकी उतपति, सो तुमसोंकहिदेत२०

इहां कबीर जी कहै हैं कि तेहि पीछे कहे जब संसारकी उत्पत्ति ह्वैगई और जीव नाना दुःख पावन लगे तब साहब जे दयालुहैं तिनके दया भई कि हमतो अपने नाम को उपदेश कियो कि हमारे रामनामको जो यह अर्थ लक्ष्मण जानकी हम भरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद तिनको जानिकै हमारे पास आवै और ये सबजीव संकर्षण आद्या पराशक्ति, शब्दब्रह्म, नारायण, महाविष्णु, जीव इनके पक्ष में रामनाम की छवोमात्रा इनमें लगाइकै औरे औरे मतनमें लगिके संसारी ह्वैकै नानादुःख पावन लगे तब रामनामको यथार्थ अर्थ बतावनको हमको भेज्यो सो हम सारशब्द जो है रामनाम ताको सत्य कहे सांच जो अर्थ है ताके बतावनके हेतु हम आये सो आदि अन्तकी उत्पत्ति हम तुम से कहे देयहैं आदि कौन है जो यह उत्पत्ति ह्वैआई संसार भयो और अन्त कौन है जो हम रामनामको सांच अर्थ बतायो सो अर्थ समुझिलेइ साहबके पास जाय वाको संसारको अन्त ह्वैजाइ है फिरि संसार में नहीं आवै है सो यह आदि अन्त की उत्पत्ति हम तुम सों कहिदियो कि यहि भांतिते जगत् की उत्पत्ति होय है जीवसंसारी होइ हैं और यहि भांतिते जब रामनामको सांच अर्थ जानै है तब संसारको अन्त ह्वै जाइहै ॥ २० ॥

दो० सातसुरति सब मूल है, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहींमा से ऊपजै, इनहीं माहिं समाहिं २१

इहां मङ्गलको उपसंहार करै हैं सबकी मूल सात सुरति जे प्रथम वर्णन करि आये हैं सो वे तो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूपते प्रकट भई है सात कौन हैं दु इच्छा एक योगमाया एक जगत् को अंकुर कारणरूपा और पांचौ ब्रह्मरूपा यई सातौ सब के मूल हैं इनहींते उपजै हैं इनहींते प्रलय ह्वै जाय है कहे नाश

ह्वै ह्वै जाय है और इनहीं में पुनि समाइ है सातो सूरति में प्रमाण साखी शंकरगुष्टकी "निरञ्जन अक्षर अचित, वोहं सोहं जान। औ पुनिमूलअंकूरकहि, सात सूर्त परमान"॥ २१॥

दो॰ सोइख्यालसमरत्थकर, रहे सो अछपछपाइ॥
सोई संधि लै आयउ, सोवतजगहिजगाइ २२

सो समष्टिजीव अपनेको समर्थ मानिकै साहबको न जानिकै यह ख्याल करत भयो अछप कहे रामनामके अर्थ में साहब न छपे रहे और सर्वत्र पूर्णरहे साहबकै सब सामग्री साहबको लोक साहिबैको रूपवर्णन करिआये हैं जो साहबके लोक को प्रकाश सर्वत्र पूर्णरहा तो साहब पूर्णईरहे सर्वत्र सो जीव रामनाम को और और अर्थ करिकै और और मतनमें लग्यो तेहिते साहब छपायगये साहबको जीव न जानतभये सो तौनै संधि लैकै मैं आयों कि जीवते संधि कहे बीच परिगयो है रामनाम को सांच अर्थ भूलिगयो सो जौने संसारमें यह सोवैहै तौनी जगहमें आयो कि मैं याको सोवत ते जगाय देहुं कि जौने २ मतन में तुम लगे हौ सो रामनाम को अर्थ नहीं है ये संसारके देनवारे हैं तुम संसारी ह्वैगये सब स्वप्न देखौ हौ वह अर्थ नाम को मिथ्या है तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहब हैं तिनको जानौ॥ २२॥

दो॰ सात सूर्तके बाहिरे, सोरह संख्यके पार॥
तहँ समरथको बैठका, हंसनकेर अधार २३

साहब कैसे हैं कि सात सूर्त जे कहि आये तिनके बाहिर हैं और षोडशकला जीवको छान्दोग्य उपनिषद्‌में तत्त्वमसी के पूर्व लिख्योहै सो इहां कहे हैं कि 'सोरहसंख्यके' कहे सोरहसंख्यक जे जीव हैं अर्थात् षोडशकलात्मक जे समष्टि जीव जे लोकके प्रकाशमें रहै हैं शुद्धरूप तिनके साहब पार हैं सो जहां सोरह संख्यकहे षोडशकलात्मक जीव हैं तिनके पार वह लोक साहब को है तहां समर्थ जे साहब हैं तिनको बैठकाहै कहे वही लोकमें

रहैहैं समर्थ जो कह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्हीं के किये जीव समर्थ होइहै यह आपको झूठही समर्थ मानिलियोहै याही हेतुते जीव संसारी भयो है सो हंसन के आधार तो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तेहिते जब हंसरूप पावै तब साहबके पास वह लोक में बसै जाय ॥ २३ ॥

दो० घर घर हमसबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासीधार २४

सो कबीरजी कहैहैं कि घर २ हम सबसों बात कही हमारो कह्यो सांचशब्दको अर्थ कोई नहीं समुझैहै ना सुनै है ते संसाररूपी सागरके चौरासीलाख योनि जो हैं धारा तामें डूबिजाय हैं ॥ २४ ॥

दो० मङ्गलउतपतिआदिका, सुनियोसन्तसुजान ॥
कह कबीरगुरुजाग्रत, समरथकाफुरमान २५

सो आदिकी उत्पत्ति का मङ्गल हम यह कह्योहै सो हे सन्त, सुजानो ! सुनत जाइयो हम आपनो बनायकै नहीं कह्योहै हम यह मङ्गल गुरु कहे सबते श्रेष्ठ और तीनोंकालमें जाग्रत् कहे ब्रह्म मन मायादिकनके भ्रमते रहित ऐसे जे समर्थ सत्यलोकनिवासी श्री रामचन्द्र हैं तिनको फुरमान कहे उनके हुकुमते मैं कह्यों है व सबके पर साहबहैं और साहबको लोकहै तामें प्रमाण आदिवाणी को शब्द "बलिहारी अपने साहबकी, जिन यह जुगुति बनाई । उनकी शोभा केहि बिधि कहिये, मोसों कही न जाई ॥ बिना ज्योतिकी जहँ उजियारी, सो दरशै वह दीपा । निरतेहंसकरैकौतूहल, वोहीपुरुषसमीपा । झलकै पदुम नाना बिधि बानी, माथे छत्राबिराजै । कोटिनभानु चन्द्रतारागण, एक फुचरियन छाजै ॥ करगहि बिहँसि जबै मुखबोलै, तबहंसा सुखपावै । बंशअंश जिन बूझ बिचारी, सो जीवनमुकतावै ॥ चौदहलोकबेदकामण्डल, तहँलग कालदोहाई । लोक वेद जिन फन्दाकाटी, ते वह लोक सिधाई ॥ सात शिकारी चौदह पारथ, भिन्नभिन्ननिरतावै । चारि

अंशजिनसमुझि बिचारी, सो जीवन मुकतावै॥ चौदहलोक बसै यमचौदह, तहँलग काल पसारा। ताके आगे ज्योति निरञ्जन, बैठै सुन्नमझारा॥ सोरह षट अक्षर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई। अक्षरकला सृष्टिसे उपजी, उनहीं माहँ समाई॥ सत्रह संख्यपर अधरदीप जहँ, शब्दातीत बिराजै। निरतै सखी बहूविधि शोभा, अनहदबाजाबाजै॥ ताके ऊपर परमधामहै, भरम न कोई पाया। जो हम कही नहीं कोउ मानै, ना कोइ दूसरआया॥ बेदनसाखी सब जिउ अरुझे, परमधाम ठहराया। फिरि फिरि भटकै आप चतुर ह्वै, वह घर काहु न पाया॥ जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हमका पतिआई। औरन मिलै कोटिकरथाकै, बहुरिकालघरजाई॥ सोरहसंख्यकेआगे समरथ, जिन जगमोहिं पठवाया। कहै कबीर आदिकीबाणी,बेदभेद नहिं पाया"॥ २५॥

व मङ्गलको सात सुरति तेई शिकारी व चौदह जे यम पारथ हैं कहे तेऊ शिकारी हैं व चारिअंश चारिवेद तिनको बूझिकै विचारै तौ जीवनका समुझावै का विचारै जे सातौ शिकारी हैं सुरति ते भीतर जीव मृगा के भीतर को शिकार खेलै हैं बाहरते मारै हैं सो आगे निरञ्जन शून्यमें बैठाहै जीव पकरबेकेरहा शून्य में बैठा निरञ्जनको कस्तोसो सबके ऊपर है वोई सबको बांधे है साहबके इहां नहीं जानपावैहै शून्यमें लगाय देइहै अपनेमें लगाइराखै सोरहखण्डकहे समष्टिजीव सोरह कलात्मक तौनेते उत्पत्ति होइहै सो उनहींमें समाइहै सत्रहसंख्य कहे सत्रहतत्त्व जे सूक्ष्म शरीरमें रहती हैं तेहिके ऊपर अधरदीपिकालोकहै जो मङ्गलमें ज्योतिरूप को वर्णन करिआयेहैं सबके ऊपर तहां सूक्ष्म शरीर नहीं पहुँचिसकै है तेहिके ऊपर पात्र दैकै आगे लिखैंगे अर्थात् यह स्पष्ट है धाम और है सो दशमुकामी रेखता प्रमाण "उपक्रमोपसंहारावभ्यासोपूर्वताफलैः। अर्थवादोपपत्तीभालिङ्गंतात्पर्यनिर्णये १" उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वताफल, अर्थवाद, उपपत्ति इहां वस्तु तात्पर्य के वर्णन में लिङ्गकहे बोधकहै॥

जाई ॥ ररोंकहै सुनोरेभाई। सतगुरुपूछिकै सेवहु आई २" इत्यादिक बहुत से वाक्य हैं यह फल है और अर्थवाद कबीरजी तो साहबके पासके हैं उनको संसारका कौन डर है यह प्रशंसा करै है याते अर्थवादभयो "डरपतअहो यहभूलिबेको राखुयादव-राय। कहकबीर सुनु गोपाल बिनती शरण हरितुवपाय" और प्रकरणमें प्रतिपाद्य जो है कि रामनामैको जानैहै सोई छूटिजाय है औ जे नहीं जानै हैं और औरे मतनमें लगेहैं तेई संसारी होय हैं यह बात दृष्टान्त दैकै रामनामही को दृढ़कियो है" रामनाम बिन मिथ्या, जन्म गँवाईहो। सेमरसेयसुवाजोजहँड्यो, ऊनपरे-पछिताईहो॥ ज्यों बिनमदिपगांठि अरथै दै, घरहुंकी अकिल गँवाईहो। स्वादहुउदर भरै जो कैसे, वोसहिप्यास न जाईहो" इत्यादि ककहरामें लिख्यो है यह उत्पत्ति भई येई षट्लिङ्ग हैं जे इन को देखिकै अर्थकरै हैं सो सत्य है जे इनको नहीं जानिकै अर्थकरैहैं वह ग्रन्थको तात्पर्य और है और अर्थकरैहै सो अनर्थ है जैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मा में लगावै कोई नये नये खामिन्द बनाइकै अर्थलगावै है इत्यादि बेमनमुखी अपने अपने मन ते नानामतनमें अर्थलगावै हैं ते अनर्थ हैं अर्थ नहीं हैं वे गुरु जे हैं सबते गुरु परमपुरुष श्री-रामचन्द्र तिनके द्रोही हैं ताते प्रमाण "गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारिपुरुष अबिचार। ते नरचौरासीभ्रमहिं, जबलगिशशिदिन-कार १" अरु हम जो बीजक को यह अर्थ करै हैं तामें छहउ लिङ्ग श्रीरामचन्द्र में घटित हैं तेहिते जो अर्थ हम करैहैं अनि-र्वचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोई ठीकहै काहे ते कि जहां भरि प्रभु हैं तिनहूंके प्रभु हैं तौनेमें प्रमाण बाल्मीकीय को "सूर्य-स्यापिभवेत् सूर्यो ह्यग्नेरग्निः प्रभोः प्रभुः" अर्थ जो येई सूर्यमें येई अग्नि में अर्थलगावै तो पुनरुक्ति होय है काहेते जब बड़ो प्रकाश-मान सूर्यको कह्यो तब अग्नि को कहिबे कोहै ताते यह अर्थ है जो कर्मनमें लोकनकी प्रेरणाकरै सो कहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी

व सबके आगेरहतभयो याते अग्नि कहावै ब्रह्म सो सूर्य के सूर्य कहे अन्तर्यामीके अन्तर्यामी और अग्नि के अग्नि कहे ब्रह्म के ब्रह्म अन्तर्यामी परिछिन्न है ताते बड़ो ब्रह्म है जो सर्वत्र पूर्ण है और परिछिन्न है ताते बड़ो जाको प्रकाश यह ब्रह्म है जामें सब जीव भरे रहे हैं ऐसो साहबको लोक है सबको प्रभु परब्रह्मस्वरूप ताहूके प्रभु वह लोक के मालिक श्रीरामचन्द्र हैं वह ब्रह्म जो है सोई मन वचनके परे है पुनि जाको वो प्रकाश है ब्रह्म सो लोक कैसे मन वचन में आवै साहब तो दुहुनका मालिकहै उन की कहवाई कहाकरै जो कहो सबके मालिक श्रीरामचन्द्र हैं यह कहतई जाउहौ और कहौ कि मन वचन में नहीं आवै है यह बड़ो आश्चर्य है सो सत्य है ये कबीरहूजी कहे हैं कि रामो नहीं खोदाई काहते रामो नहीं खोदाय हो कहे हैं "रामै नाम अहै निज सारू। औ सबझूठ सकल संसारू" इत्यादिक बहुत प्रमाण देकै बीजक भरे में रामनामको सिद्धान्त कियोहै ताही में याको समाधान है और ताही में कबीरजीको बीजकलागै है औरीभांति अर्थ किये नहीं लागै है सो सुनो जो साहब को रामनाम है ताके साधन कीन्हे ते वह मन वचनके परे जो रामनाम ताको साहब देइ है सो वह नाम याके वचन में नहीं आवै है साहिबै के दीन्हेते पावैहै जब याको संसार छूट्यो तब अपने लोक को साहब हंसस्वरूप देइ है तौने हंसस्वरूप में टिकिके साहबको देखै हैं नामलेइ हैं साहब साहबको नाम साहबको लोक साहबको दियो हंसस्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन वचनके परे हैं तामें प्रमाण " यतोवाचोनिवर्तन्तेयत्परम्ब्रह्मणःपदम्। अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः" और यह रामनामके जपनकी विधि जैसी २ कबीरजी आपने शब्दनमें कह्योहै तेही रीतिते जो जप करै तो रामनाम मन वचनके परे जो आपनो स्वरूप सो याके अंतःकरणमें स्फूर्ति करि देयँहैं और साहब को रूप स्फूर्ति करि देयँहैं अर्थात् आपही स्फूर्ति ह्वैजायहैं तामें प्रमाण "नामचिन्ता-

मणीरामश्चैतन्यपरविग्रहः। नित्यशुद्धो नित्ययुक्तो न भिन्नन्नाम-नामिनः॥ अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः। स्फुरतिस्वयमेवैतज्जिह्वादौ श्रवणे मुखे २" सो यही रामनाम जो मन वचनके परेहै ताहीको कबीर जानै " सो जानै जेहि महीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लैआऊं॥ सहज जाप धुनि आपै होई। यह सँधि बूझै बिरला कोई॥ रँग २ बोलै रामजी, रोम रोम राकार। सहजै धुनि लागीरहै, सोई सुमिरणसार॥ ओठकण्ठहालैनहीं, जिह्वा नाहिं उचार। गुप्तबस्तुको जो लखै, सोई हंस हमार" जो हंसरूपमें टिकिकै जपत रहेहैं तौनेमें प्रमाण भक्तमालकी टीकामें श्रीप्रियादासजीने लिख्योहै " बिनै तानो बानो हिय राम मड़रानो" श्रीमहाराजाधिराजरामसिंहबाबा पूछ्यो है कबीरसाहब कह्यो है " रा अक्षर घट रम्यो कबीरा। निजघरमेरोसाधुशरीरा १" ताते रामनामहीको परत्व बीजकमेंहै मुक्ति रामनामहीमेंहै और साधनमें नहींहै यह कबीरजी बीजक भरेमें कह्योहै और अर्थ जे करै हैं ते बीजकको अर्थ नहीं जानै हैं काहेते भागूदास बीजक लैभागे हैं सो बघेलवंश विस्तार में कबीरहीजी कहि दियो है कि अर्थ नहीं जानै हैं तामें प्रमाण " भागूदासकी खबरि जनाई। लैचरणामृत साधु पियाई॥ कोउ आयकह कलि जरिगयऊ। बीजकग्रन्थचोराइलैगयऊ॥ सतगुरु कहँ वह निगुरापन्थी। काह भयो लै बीजकग्रन्थी॥ चोरी करि वह चोर कहाई। काह भयो बड़ भक्त कहाई॥ बीजमूल हम प्रकट चिन्हाई। बीज न चीन्हो दुर्मति ल्याई॥ बघेलबंश में प्रकटी हंसा। बीजकज्ञानकी करी प्रशंसा॥ सबसों पूछी प्रेम हिताई। आप सुरति आपैमें ल्याई॥ बीजक लाय गुफा में राखी। सत्यै कहौं बचन मैं भाखी" सो और २ अर्थ जे कबीरहा करै हैं ते भागूदास और भागूदास के शिष्य प्रशिष्य ते बीजक को बितण्डाबाद अर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धान्त को अर्थ जो रामनामहै ताते जीवन को विमुख करि डार्यो नरककी राह बताय दियो काहेते दूसरी पोथी तो रही

नहीं वोही पोथी रही तौने को मनमुखी अर्थ करिकै आप बिगरे और शिष्यन प्रशिष्यन को बिगार्‌यो जे उनके सत्संग किये ते सब याहीते नाम तो रहै भगवान्‌दास पै भागूदास कबीरजी कह्यो है और मैं जो तिलक करौंहौं बीजकको सो एकतो साहबके हुकुमई ते कियोहै सो आगे लिखि आयेहैं दूसरे तिलक बनाइ बांधौगढ़ में आयो तहां बयालिसबंश बिस्तार ग्रन्थ देख्यो ताको प्रमाण तिलकमें लिखिदियो है पोथी पन्द्रहसै यकइस के साल की धर्मदासके हाथकी लिखीहै और येही पोथीमें कबीरजी राजा रामते आगम कहिदियो है "तुमसे दशौ बंश जो हैहैं। सो तौ शब्द हमारो गहिहैं ॥ परमसनेही अनुभव बानी। कथिहैं शब्द लोक सहिदानी २" तेहिते मैं जो अर्थ करौं हौं सोई कबीरजी का सिद्धान्त है और यह ग्रन्थ में चारि साधन करिकै युक्त जो पुरुषहै सो अधिकारी है चारि साधन कौनहैं ? नित्यानित्य वस्तु विवेक १ और इहामुत्रार्थफलभोग विराग २ और दम, शम, उपरति, तितिक्षा और श्रद्धा समाधान ई षट्‌संपत्ति ३ और मुमुक्षता ४ नित्यानित्य विवेक का कहावै जीवात्मा नित्य और देह इन्द्रिय आदि दैकै जो संसार सो अनित्य है यहै कहावै नित्यानित्य विवेक और इहामुत्रार्थ फलभोग विराग का कहावै यह लोक के और परलोक के बिषे जेहैं स्रक्-चन्दन-बनिता यह आदि दैकै तिनको अनित्यता बुद्धिकैकै तिनते जो है वैराग्य सो इहामुत्रार्थ फलभोग विराग कहावै और लौकिक व्यापारते मन के जो है निवृत्ति सो कहावै शम और बाह्य जे इन्द्रिय हैं तिन की श्रीरामचन्द्र के सम्बन्धते व्यतिरिक्त जो बिषयहै तेहिते निवृत्ति होब जो है सो कहावैदम और श्रीरामचन्द्र को जो ज्ञानहै तेहि पूर्वक उपासनाके अर्थ विहित जेहैं नित्यादिक कर्म तिनको जो है त्याग सो कहावै उपरति और शीत उष्ण आदि दैकै जेहैं द्वन्द्व तिनको जोहै सहब सो कहावै तितिक्षा और निद्रा आलस्य प्रमाद इनको जोहै त्याग तेहि पूर्वक मनकै जोहै स्थिरता

सो कहावै समाधान और गुरु वेदान्त वाक्य में अविचल विश्वास सो कहावै श्रद्धा और संसारते छूटिबे की जो है ३ इच्छा सो कहावै मुमुक्षुता ई साधना चतुष्टय जामें होय सो कहावै अधिकारी १ और यह जीव साहब को है और को नहीं है यह जो है ज्ञान सो यह ग्रन्थ में विषय है २ और ग्रन्थको विषय सो सम्बन्ध कौन है तात्पर्य करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव ३ और यह ग्रन्थमें प्रयोजन काहै कि मनमाया और अहंब्रह्म जोहै ज्ञान तौने में बँधा जो है जीव सो मनमाया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजी को प्राप्त होय सो प्रयोजन ४ जीवको मनमाया ब्रह्मते छोड़ायकै श्रीरघुनाथ जीके पास प्राप्त करिबे को कही अपनी उक्तिते कही साहब की उक्तिते कही मायाकी उक्तिते कहीं जीवकी उक्तिते कही ब्रह्मकी उक्तिते कबीरजी उपदेश कियोहै और उत्पत्ति प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रन्थनमें कबीरजी कह्योहै सो इहां कबीरजी प्रथम रमैनी में आदिकी उत्पत्ति कहेहैं जब कुछ नहीं रह्यो है तब वही साहबको लोक रह्योहै ताही को परम अयोध्या कहे हैं और सत्यलोक सांतानकलोक नापैदलोक आदि दैकै नाना नाम हैं तौने लोक में जे हंस हंसनी हैं गुल्म लता तृणआदि दैकै ते सब चिन्मयहैं और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके मालिक हैं तामें प्रमाण "राजाधिराजःसर्वेषां रामएवनसंशयः" (इति श्रुतेः) दूसरो प्रमाण "यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम्। यत्किंचित्पक्षिभृङ्गादितत्सर्वंभातिचिन्मयम्"(इति वशिष्ठसंहितायाम्) कबीरोजी कह्योहै॥ "सदा बसन्त जहँ फूलहिं कुञ्ज सोहावहीं। अक्षयबृक्षतर सेज सो हंस बिछावहीं॥ धरती आकाशजहां नहीं जगमगै। वहियांदीनदयाल हंसकेसँगलगै" तौने श्रीअयोध्याजीको जो है प्रकाश तामें शुद्धजीव जे हैं तेभरेहैं तिनको साहबको और साहब के लोकको ज्ञान नहींहै जो साहबको जानै और साहबके लोक जाय तौ ना उलटि आवै सो साहबको तो जानै नहींहै याही ते माया उनको धरि लैआवैहै सो प्रथम साहब दयाल उनमें दयाकरिकै

आपनी शक्ति दैकै उनके सुरति उत्पत्ति करतभये कि हमको जानैं हमारे पास आवै तो माया ते बचि जाय सो आदिमङ्गल में करि आये हैं जब उनके सुरति भई तब वे धोखा ब्रह्ममें और मायामें लगिकै संसारीभये सो साहब बहुत हटक्यो सो हटको ना मान्यो सो आगे बेलिमें कहैंगे "तू हंसामनमानि कहो रमैया राम। हटल न मान्यो मोरहो रमैया राम ॥ जस कीन्ह्योतसपायोहो रमैया राम। हमरदोषजनिदेहु हो रमैया राम" और साहब के लोक में मनादिकनको कारण नहीं है तामें प्रमाण "न यत्र शोको न जरा न मृत्युर्न कालमायाप्रलयादिविभ्रमः। रमेत रामेत स तत्र गत्वा स्वरूपतां प्राप्य चिरं निरन्तरम्" (इति वशिष्ठसंहितायाम् १) कबीरौजी कह्यो है "तत्त्वभिन्ननिहतत्त्वनिरक्षर, मनो प्रेमसेन्यारा। नादबिन्दुअनहदनिरगोचर, सत्यशब्दनिरधारा" और साहबको लोक सबके पार है सो मङ्गल में कहिआये हैं जो साहबको जानै व साहबके लोक जाइ तो संसारमें ना आवै सो तौनै उत्पत्ति श्री कबीरजी प्रथम रमैनी में संक्षेप ते कहै हैं और सबकी उत्पत्ति साहबके लोकके प्रकाश के बहिरेहीते होइहै तामें प्रमाण ज्ञानसागरको "जानैभेद न दूसर कोई। उतपति सबकी बाहर होई" ॥ १ ॥

इति आदिमङ्गलसम्पूर्णम् ॥

अथ रमैनीप्रथम ॥ १ ॥

चौ० जीवरूपयकअन्तरबासा। अन्तरज्योतिकीनपरगासा १
इच्छारूप नारि अवतरी। तासु नाम गायत्री धरी २
तेहिनारीकेपुत्रतिनभयऊ। ब्रह्माबिष्णुमहेशनामधरेऊ ३
तब ब्रह्मा पूंछतमहतारी। कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
तुमहमहमतुमऔरनकोई। तुममोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५

साखी ॥ बाप पूतकी एकै नारी, औ एकै माय बिआय ॥
ऐसापूत सपूत न देख्यो, जो बापै चीन्है धाय १

चौ. जीवरूपयकअंतरबासा। अन्तरज्योतिकीनपरगासा १

श्रीरघुनाथजीके लोकको जोहै प्रकाश तेहिके अन्तर जेहैं जीव एकहू पते कहे समष्टिरूप ते बास किये रहे अन्तरज्योति कहे साहबके लोकको जोहै प्रकाश तेहिके अन्तरै कहे भीतरै आपनई प्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्न कै संसार प्रकटकै संसारी ह्वैगये साहबको न जानत भये या बात मङ्गलमें विस्तारते कहिआयेहैं याते इहां प्रसङ्गमात्र सूचित कियोहै जब प्रलय होयहै तबहूं वही ब्रह्ममें लीन होइ है उहैंते पुनि उत्पत्ति होइहै और अनुभव धोखा ब्रह्ममें ज्ञान करिकै जे मुक्त होयहैं ते सनातनज्योति जोहै अयोध्याजीको प्रकाश वही ब्रह्म जहां पूर्व लीन रहैहै तहैं जाय लीन होयहै औ जे श्रीरामचन्द्रको जानैहैं ते ज्योति वह भेदिकै श्रीरामचन्द्रके पास जायहैं तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखेमग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः। तज्ज्योतिर्भेदने शक्तारसिका हरिवेदनाः"। "जैसे माया मन मिल्यो, ऐसेरामरमाय। तारामण्डलभेदिकै, तबै अमरपुरजाय" और धोखाको अर्थ यहहै जो औरेको और देखेसो कौनहै कि एक जोहै सर्वत्र पूर्ण लोकप्रकाश ब्रह्म ताके अन्तर कहे भीतर अनुरूप जे जीव ते समष्टिरूपते बास कियेरहे सो अन्तरज्योति प्रकाश कहे जब साहब सुरतिदियो सोई अन्तरप्रकाश करतभई तब जीवको ज्ञान परनलग्यो चैतन्यता आई तब संकल्प विकल्प कियो कि मैं कौन हौं यही मनकी उत्पत्ति भई सो जीवको रूप तौ "बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च। भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते" (इतिश्रुतेः) इत्यादिक प्रमाण करिकै वाको स्वरूप तो अनु है सोतो वाको न देखि पर्‌यो सर्वत्र प्रकाशरूप ब्रह्म देख्यो सो मान्यो कि महीं ब्रह्म हौं यही धोखा ब्रह्महै कहीं जीव ब्रह्म तो बनैहै जीव कहना यही याकी भूलहै जब याको ज्ञान भयो ज्ञानते विज्ञान भयो अनुभवानन्द प्राप्त भयो जब भर अनुभवानन्द बनोरहैहै तब भर याको जीवत्वको लेश बनोरहै है

जब अनुभवानन्दरूप ही ह्वैगयो तब याको जीवत्व मिटि गयो संसारऊ मिटिगयो एक आपही आप रहतभयो तुम कैसे कहौ हौ कि जीवको ब्रह्म होना धोखा है जो ऐसो कहौ तौ सुनौ जो पदार्थ बीचको होयहै सो मिटि जायहै और जो पदार्थ सनातन है सो नहीं मिटिजाय है कैसे जैसे तुम कहौहौ कि जीवत्व बीच ही को है वही ब्रह्म अनेकरूप धारण कैलियोहै एकते अनेक होइ गयोहै जब जीवत्वको भ्रम मिटिगयो तब ब्रह्महीं रहिजायहै जो प्रथम रह्योहै सोई रहिजायहै जो पदार्थ बीचको होय है सो मिटि जायहै तैसे हमहूं कहैहैं कि आदिमें तो जीव रह्यो है सो जब संसार छूट्यो तब शुद्धजीवको जीवही रहिजायहै जो कहो ब्रह्मही जीव ह्वै जाय है तो हम तुमसों या पूछै हैं कि प्रथम तो ब्रह्मही रहत भयो सो ब्रह्म अकर्ता है निर्धर्म है मनमायादिकते रहित है देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते शून्य है सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्व को भ्रम कहांते भयो जो कहो वह ब्रह्म जीवत्व को धारण नहीं कियो वाको तो भ्रम ही नहीं है काहेते कि "सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म" यह श्रुतिलिखै है वाको भ्रमतो संभवितै नहीं है भ्रमतो जीवन को भयो है जिन को ब्रह्मको विज्ञान है तिन को न जीवत्व है न संसार है जैसे अज्ञानी जीवन को संसारही देखिपरैहै तैसे ज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखिपरैहै तो सुनौ तुमहीं दुइजीव कहौहौ एक अज्ञानी जीव एक ज्ञानी जीव सो अज्ञानी जीवको या कह्यो कि संसारही देखाय है सो ब्रह्मके तो अज्ञान होतही नहीं है जाते आपको जीवत्व मानिकै संसारीहोय जो कहो मायाते शबलित ह्वैकै ब्रह्मही जीव होइ संसारी ह्वै जायहै तो माया को तो मिथ्या कहौहौ "मायासामाको अर्थःमिथ्यैव" फिरि ब्रह्म को तो ज्ञानस्वरूप कहि आये हौं कि ब्रह्मको माया को स्पर्श नहीं होयहै ब्रह्म जीव नहीं होइ सकै है तो ज्ञानी अज्ञानी जीव और संसार वह ब्रह्म भ्रमकरिकै कैसे भयो जो कहो जीव और संसार या हई नहींहै तो पुराण और कुरान वेदान्त काको उपदेश करै

है तेहिते तुम्हारो समाधान कियो नहीं होय है जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होइहै सनातनते जीव भिन्न है और ब्रह्म भिन्न काहेते साहबके लोकप्रकाश ब्रह्म में अनादिकालते समष्टिरूपते जीव रहैहै ताको साहब दयाल दयाकरिकै सुरतिदियो कि मोमें सुरति लगावै तो मैं हंसरूप दैकै अपने पास लैआऊं सो अनादि कालते श्रीरामचन्द्रको जनबई न किये या मनादिकनको कारण उनके रहबही करै वह सुरतिपायकै संसारी ह्वैगये जो साहबको जानते तो संसारमें ना आवते जब मनादिक भये तब अनुभव ब्रह्मको उत्पन्नकियो सो यहतो साहबकोहै सो साहबको ना जान्यो आपहीको ब्रह्म मान्यो यही धोखाहै और जीव सनातनहै सर्वत्र पूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहीं होय है वही प्रकाशमें अचल समष्टिरूपते भरो रहैहै तामें प्रमाण " नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनः "(इतिगीतायाम्) और लोकप्रकाश व्यापक ब्रह्म ते जीव ते भेद है तामें प्रमाण " सत्यआत्मा सत्योजीवः सत्यंभिदः सत्यंभिदः " और अज्ञानहूते ब्रह्ममें लीन होय है तबहूं माया धरि लैआवैहै तामें प्रमाण "येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः । आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं ततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदङ्घ्रयः" (इति भागवते) तेहिते साहबके लोकप्रकाश में भरे जे जीवहैं तहैं ते व्यष्टि होतहै और तहैं समष्टिरूप करि लीन होतहै अनादिकाल यही क्रम है सो जैसो हम वर्णन करि आयेहैं ताही रीतिमें प्रकाशरूप जो ब्रह्महै तामें निर्विकारत्व निर्धर्मत्वादि जे वेदान्तमें विशेषणहैं ब्रह्मके ते बन रहेहैं औरी भांति नहीं संघटित होयहै और प्रकाशरूप जो ब्रह्म है सो निर्विकार है निर्धर्महै अकर्ताहै वाकी करी रक्षा जीवकी नहीं होयहै दूनोंते परे जे साहब हैं तिनको जो जानै है जानिकै उनके लोक को जाय है सो फेरि नहीं आवै है वे रक्षा करिलेय हैं काहेते वहां मनमायादिकन की गति नहींहै ॥ तामें प्रमाण " यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम" और जगत्की उत्पत्ति जो उपनिषदनमें लिखैहै

सो समष्टिरूप जीवही ते लिखे है सो कहेहैं "सदेवसौम्येदम-ग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम्" (इतिश्रुतेः) एक कहे सजातीयभेद शून्य अद्वितीय कहे विजातीयभेदशून्य ये बकारते स्वगत भेद-शून्य यद्यपि सूक्ष्म भेद वामें बनेहैं परन्तु समष्टिरूप करिकै जीव एकही रहैहै प्रलयमें अथवा जीवत्व करिकै एक रहैहै यह श्रुतिसद-नाम कैकै कहैहै ताते अनामा जो ब्रह्म है तामें नहीं लगै है और दूजी श्रुति है "स ऐच्छत एकोऽहं बहु स्याम्" तौने जोहै समष्टि जीव सो सुरति पायकै इच्छा करतभो कि एकते बहुत होउँ सो या ब्रह्मष्टि जे समष्टि जीव ताहीमें लगै है और ब्रह्मपद यह समष्टि जीवहीमें घटित होयहै काहेते "बृहि बृद्धौ" यह धातुहै व्यष्टिते स-मष्टि ह्वैजायहै समष्टिते व्यष्टिहोइजायहै और वह जो लोकप्रकाश ब्रह्म एकरस न घटै न बढ़ै तामें "एकोऽहंबहुस्याम्" या अर्थ नहीं लगैहै और अनुभव करि आपनेको जो ब्रह्म मान्योहै सो तो धोखैहै नाम मिथ्यैहै सो एकतो समष्टि जीवरूप सगुणब्रह्म तौन और एक लोकप्रकाशरूप निर्गुणब्रह्म तौन ई दूनों ते साहब परेहैं और मङ्गलमें पांच ब्रह्म कहिआये हैं सो नारायण जे हैं साकार ते और तिनके अन्तर्यामी जे हैं निराकार तत्त्वरूप नारायण तेई दूनों जे साकार निराकार हैं तिनते साहब परे हैं और निराकार साकार ये दोऊ साहबके शरीर हैं तामें प्रमाण "यामिच्छसि महाराज तां तनुं च कवीश्वराः। वैष्णवीं तां महातेजो यद्वाकाशं सनातनम्" (इति बाल्मीकीये) और साहब साकार द्विभुज नराकृतिहै तामें प्रमाण "स्थूलं चाष्टभुजंप्रोक्तं सूक्ष्मंचैव चतुर्भुजम्। परातु द्विभुजं रूपं तस्मादेतत्त्रयं यजेत्" (इति आनन्दसंहिता-याम्) "आनन्दोद्विभुजःप्रोक्तो मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच। अमूर्त्तस्याश्रयो मूर्त्तः परमात्मा नराकृतिः" (इति आनन्दसंहितायाम्) और मुसलमाननके जे अच्छे समुझवारे हैं ते साकारही मानै हैं काहे ते कि कुरानमें लिखैहै अल्लाह कहैहै कि महम्मद मोको एकबार जब लड़कामें देखाहै और एकबार मैंने बुलाया मेरे सामने चला

आया दुइकमान ते कम फरक रहिगया सो महम्मद देखा याते अल्लाहके सुरतिहै यह आयो औ महम्मदकीहदीस खलकलईसान अल्लाहके सूरतिहीमें बनाया है ईसान अपनी सुरतिका यहिसे या आया कि अल्लाह द्विभुजहै यहिसे या मालूम भया कि अल्लाह कहिकै द्विभुज श्रीरामचन्द्रही वर्णन करैहै और जे अल्लाहकी सुरति कहते हैं कि नहीं है कुरानकी जबान नहीं मानते हैं तिनको काफर कहतेहैं और वह जोहै निर्गुण सगुणके परे साहब नराकृति सो जाके ऊपर कृपा करैहै ताको आपनो हंसरूप आपनी इन्द्रिय देइहै आपै देखिपरै है तामें प्रमाण " ब्रह्मणैव जिघ्रति ब्रह्मणैव पश्यति ब्रह्मणैव शृणोति " (इति श्रुतेः) और साहबको रूप साकार निराकारते विलक्षणहै याते अरूपीरूप कहैहैं और जैसो यह नामहै तैसो नाम नहीं है वह नाम विलक्षण मन वचनके परेहै याते वाको अनामानाम कहैहैं तामें प्रमाण " अनामासोऽप्रसिद्धत्वादरूपोभूतवर्जनात् " (इति अग्निपुराणे) " अप्राकृतशरीरत्वादरूपी भगवान्विभुः " (इति वायुपुराणे) और साहबके हाथ पांय नहीं हैं निराकार आयो और चलै है ग्रहण करिलेइहै याते साकार आयो तामें प्रमाण " अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः "(इति श्रुतेः) सो ऐसे साहबके लोक प्रकाश ब्रह्मको यह जीव ना समुझयो कि साहबको लोकप्रकाश है मनते अनुभवकरि वह ब्रह्म आपहीको मानत भयो यही धोखा ब्रह्महै सो जीवपै कहै एकरूपते और कहै समष्टिरूपते जीवलोक प्रकाशके अन्तरमें बास कियेरहै सो अन्तरज्योति कहै सुरतिपाय प्रकाश कीन कहै मतादिक उत्पन्न करि समष्टिते व्यष्टि होवे की इच्छा करत भये सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

इच्छारूपनारिअवतरी । तासुनाम गायत्रीधरी २

आपनेको जो धोखा ते ब्रह्म मानिलियो समष्टिरूप जीव ताके जब इच्छा भई सोई मूलप्रकृति मायाहै तेहिते शबलित ब्रह्मभयो

सो इच्छा माया जब प्रकट भई ताको नाम गायत्री धरावतभये गायत्री तो सूर्यमध्यवर्ती जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको तात्पर्यते बतावै है सो अर्थतो न ग्रहण करतभये सूर्यके मध्यमें साहबहै तामें प्रमाण " सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम् " सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये तेहिते दिन राति संध्या होत भई और ब्रह्मादिक देवता भये सो आगे कहैंगे यह संसारमुख अर्थ समुझ्यो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति करत भई जो कहो काहे ते जानो कि गायत्री के द्वै अर्थ हैं तो सुनो यह वाणी जो है सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैकै प्रथम प्रकटभई है तामें द्वै अर्थ हैं एक साहबमुख एक संसारमुख ऐसे प्रणव-निगम-आगम इनमें द्वै द्वै अर्थ हैं एक साहबमुख एक संसारमुख काहेते कि रामनाम ते सब निकसेहैं सो जो कारणमें द्वै अर्थ भये तो कार्य में द्वै अर्थ होवई चाहैं सो संसारमुख अर्थ लैकै जीव संसारी होत भये सो यह उत्पत्ति मङ्गलमें विस्तारते लिखिआये हैं ताते संक्षेप इहां उत्पत्ति लिख्यो है ॥ २ ॥

तेहिनारीकेपुत्रतिनिभयऊ।ब्रह्माविष्णुमहेशनामधयऊ ३

तीने गायत्रीरूप नारीके ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होतभये तब वह जो गायत्रीरूप नारी है ॥ ३ ॥

तबब्रह्मापूछतमहतारी । कोतोरपुरुषकेकरतुमनारी ४

तासों ब्रह्मा पूछत भये कि को तोर पुरुष है काकरि तू नारी है और काके हम पुत्रहैं सो बताउ हम जानो चहैहैं तब वा नारी कहत भई ॥ ४ ॥

तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरजोई ५

प्रथम साहबके लोकप्रकाशमें अनादिकालते साहबते विमुखता रूप जो जगत्को कारण तेहिते सहित जीव समष्टिरूप बास कियोरह्यो तिनके ऊपर साहब दया कियो कि अबोध सुषुप्ति ऐसे में परे हैं इनको सुखको अनुभव नहीं है यह जानि साहब विचार्यो

कि हम इनको सुरति देयँ जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हंसरूप दैकै आपने धामको बोलाय लेउँ सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरण भयो यही चित्तकी उत्पत्ति है और वाको रूपतो अनु है सोतो आपनो देखै नहीं है संकल्प विकल्प करै है कि मैंहौं कि नहीं हौं यही मनकी उत्पत्ति है फिरि विचार्यो कि मैं हौं तो पै कौन हौं आपनो रूपतो देखै नहीं है फिरि निश्चय कियो कि जो मैं होतो न तो यह संकल्प विकल्प काको होतो याते मैं हौं यही बुद्धि की उत्पत्ति भई जौने लोक प्रकाश में अपार है ताको देखि मानत भयो कि सत् चित् आनन्द स्वरूप सो मही हौं यही अहंब्रह्मरूप अहंकारकी उत्पत्ति है सो जब समष्टिजीव आपनेको चिद्रूप ब्रह्ममान्यो तब वही पूर्वजगत् कारणरूपा योगमाया अर्थात् साहब ते विमुखतारूपा सो स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी तब आपनेको सच्चिदानन्द ब्रह्म मानिकै एकते अनेक होबेकी इच्छा कियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होबेकी इच्छाकियो तब साहब जान्यो कि समष्टिजीव आपने को सच्चिदानन्द ब्रह्म मानि संसारी होनचहै हैं तब सार शब्द जो रामनाम ताको दियो कि याको अर्थ समुझि हमको जानै तो हम हंसस्वरूप दै आपने धामको लैआवैं सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगत्मुख अर्थ लगाय रामनामकी जे षट् मात्रा हैं तिनते पांच मात्रा ते पांच ब्रह्म प्रकट कियो छठीं मात्रा को अर्थ जीवको हंसस्वरूप है सो न जान्यो वाहीको जीवको अर्थ करि समष्टिते व्यष्टि ह्वै गयो सो समष्टि ते व्यष्टि होबेवाली जो इच्छा है सोई गायत्रीरूपा माया है तेहिते ब्रह्मादिक देवता भये सो प्रथम शुद्ध जीव आपनेको ब्रह्म मानि अशुद्ध ह्वैगये हैं याही हेतु ब्रह्मको कोई जगत् को निमित्त कारण कहै हैं कोई निमित्त उपादान कारण कहै हैं याही ते वा ब्रह्म अशुद्ध जीवन को बाप है सोतो धोखई है गायत्री कैसे बतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा बाप है ताते यह कहै हैं कि प्रथम तुम रहे तिनके इच्छा

हम हैं अब हम तुम कहे हमते तुम भये और तो कोई हई नहीं है तुमहीं हमार पुरुषहौ हमैं तुम्हारि जोई हैं अर्थात् जब तुम शुद्धते अशुद्ध भयेहौ तब चित अचितरूपा जो माया हमहैं तिन हींते शबलित ह्वै उत्पन्न भयो है तबहूं हम तुम्हारी नारी रही हैं और अबहूं सरस्वती आदिक तुमको देयँगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुष हौ हमहीं नारी हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ बापपूतकी एकैनारी, औ एकैमाय बिआय ॥
ऐसापूतसपूतनदेखों, जो बापै चीन्हैं धाय ६

बापतो धोखा ब्रह्म है जाते शुद्ध जीव अशुद्ध ह्वै उत्पन्न भये हैं ते अशुद्ध जीव पूत हैं सो दोऊ माया शबलित भये ताते बाप पूतकी एकै नारी भई और पूर्व जगत् कारणरूपा जो माया है तौनेहींते "अहं ब्रह्मास्मि" मान्यो है और तौनेहींते व्यष्टि जीवन की उत्पत्तिहू भई है याते दोहुनकी एकै महतारी है याते एकै माया बियानी है सो ऐसा पूत सपूत नहीं देखेहु है कौनसो बाप जो है ब्रह्म ताका धायकै कहे बहुत बुद्धि दौरायकै चीन्है कियह धोखाहै अब जाकी शक्ति करिकै यह जगत् भयोहै जौनी भांति ते सो समेटिकै सिंहावलोकन कैकै पुनि कहै हैं ॥ ६ ॥

इति प्रथमरमैनी समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरीरमैनी ॥ २ ॥

अन्तर ज्योति शब्द यकनारी। हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १
ते तिरियै भग लिङ्ग अनन्ता। तेउन जानैं आदिउ अन्ता २
बखरी एक बिधातैं कीन्हा। चौदहठहर पाटि सोलीन्हा ३
हरि हर ब्रह्म महन्तौ नाऊ। ते पुनि तीनि बसावलगाऊ ४
ते पुनिरचिनिखण्ड ब्रह्माण्डा। छः दरशन छानबे पखण्डा ५
पेटहि काहु न बेद पढ़ाया। सुनतिकरायतुरुकनहिंआया ६
नारी मोचित गर्भ प्रसूती। स्वांग धरे बहुतै करतूती ७
तहिया हम तुम एकै लोहू। एकै प्राण बियायल मोहू ८

एकै जनी जना संसारा। कौन ज्ञानते भयो निनारा ९
भा बालक भग द्वारे आया। भग भोगेते पुरुष कहाया १०
अविगतिकीगति काहुनजानी। एकजीभकितकहौंबखानी ११
जो मुख होय जीभ दशलाषा। तौकोइ आइ महन्तौभाषा १२
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, ईलयऊ ब्यवहार ॥
रामनामजानेबिना, भवबूड़िमुवासंसार १३

अन्तरज्योतिशब्दयकनारी। हरिब्रह्माताकेत्रिपुरारी १

अन्तरज्योति कहे वह ज्योतिके अन्तरकहे भीतरै नारी जोहै गायत्रीरूप वाणी सो शब्द जोहै रामनाम ताको लैकै प्रकट भईहै सो मङ्गल में कहि आयेहैं तौने शब्दकी शक्ति ते तानारी के हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भयेहैं अर्थात् रामनामको जगत् मुख अर्थ लैकैवहै वाणीरूप नारी वेद शास्त्र और सब संसार प्रकट कियो रामनाम में ये सब भरेहैंसो मैं अपने मन्त्रार्थ में लिख्यो है सो रामनाम में जो साहबमुख अर्थहै ताको छिपाय दियो ॥ १ ॥

तेतिरियैभगलिङ्गअनन्ता। तेउनजानैं आदिउअन्ता २

तौन जो है तिरिया ताते अनन्त भग लिङ्ग होत भये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रन में अनेक वेदन में विचार करत २ तबहूं वह रामनाम के अर्थ को अन्त न पाये ॥ २ ॥

बखरीएकबिधातैंकीन्हा। चौदहठहरपाटिसोलीन्हा ३

एक बखरी यह ब्रह्माण्ड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदह ठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेते भये ॥ ३ ॥

हरिहरब्रह्ममहन्तौनाऊ। तेपुनितीनिबसावलगाऊ ४

औरहरिहर ब्रह्मा जौन ब्रह्माण्ड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोही ब्रह्माण्डमें तीनि गांव बसावत भये तहांके मालिक होत भये और जे प्रथम ब्रह्मादिक देवताभये हैं तेई ब्रह्मादिकन के अङ्गन के देवता होतभये सो मङ्गलमें लिखि आयेहैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति और पुनि भगवान्‌की नाभी में कमलभयो तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते

उत्पत्ति भई है और ब्रह्मवैवर्त्तौमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति पुरुषके अङ्गन ते भईहै औरपुनि भगवान्की नाभीमें कमल भयो है जो मङ्गल में कहि आये हैं तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते उत्पत्ति भई है और तौनै बात या रमैनीहू में कहैहैं कि पहिले इच्छारूपी नारीते ब्रह्मादिक भये और पुनि ब्रह्माण्डान्तरानुवर्ती ब्रह्मादिकभये ते सतोगुणाभिमानी जे विष्णु ते ऊपर देवलोक बसावत भये ते ताके मालिक और रजोगुणाभिमानी जे ब्रह्मा ते मध्यके लोकबसाये ते तहांके मालिक और तमोगुणाभिमानी जे महादेव ते नीचेके लोक बसाये ते तहांके मालिक होतभये सो ये तीनौं तीनलोक के मालिकै हैं परन्तु तौन तौन लोकनकी प्रधानता देखाई है ॥ ४ ॥

तेपुनिरचिनिखण्डब्रह्मण्डा। छःदर्शन छानबे पखण्डा ५

पेटहिकाहुनवेदपढ़ाया। सुनतिकरायतुरुकनहिंआया ६

ते तीनौं देवता मिलिकै ब्रह्माण्ड में छःदर्शन छानबे पाखण्ड बनावतभये " योगी जङ्गम सेवरा, संन्यासी दुरवेश। छठयें कहिये ब्राह्मण, छावर छा उपदेश॥ दशसंन्यासी बारहयोगी, चौदह शेष बखाना। बौध अठारहि जङ्गम अठारहि, चौबिस सेवरा जाना।" और प्रथम उत्पत्तिमें कहि आये हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ते यह ब्रह्माण्डके ऊपर अपने लोक बसाये फिर एक २ अंशते अनन्त कोटि ब्रह्माण्डन में बसे जाय ५ और पेटैते कोऊ बेद नहीं पढ़ि आया कह गायत्री नहीं पढ़्यो बरुवा नहीं भयो और न पेटैते सुनति करायके तुरुक बनि आया है ताते हिन्दू तुरुक को जीव एकई है सो तो ना जान्यो वेद किताब की वाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेद ह्वैगये वेद किताबको भेद न जान्यो ॥ ६ ॥

नारीमोचित गर्भप्रसूती। स्वांगधरै बहुतैकरतूती ७

तहिया हम तुमएकै लोहू। एकै प्राण बियायल मोहू ८

गर्भवासमें जब तुम रहे हो तब न हिन्दूए रह्यो है ना तुरुक रह्यो न वेद पढ़्यो न तिहारी सुन्नति भई जब गर्भते निकसे तब

कर्म करिकै हिन्दू मुसल्मान ह्वै गये वहै नारी जो है वाणी ताही में चित्त लगाय कै कर्म करिकै नाना स्वांग हिन्दू मुसल्मानभये७ सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध रहेहौ जब तुमहीं मन प्रकट कियो है और इच्छा भई है तब हम तुम एकही लोहू रहेहैं अर्थात् एकईजाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहेहौ सो एक मोह कहे भ्रम जो है मन सो व्यास ह्वैकै नाना भांति तुम को कराइ दियो कि हम हिन्दूहैं हम तुरुकहैं इत्यादिक सबसों ॥८॥

एकै जनी जना संसारा। कौनज्ञानते भयो निनारा ९
भा बालक भगद्वारे आया। भगभोगेते पुरुष कहाया१०
अविगतिकीगतिकाहुनजानी।एकजीभकितकहौंबखानी ११

एक जनी कहे उत्पत्ति करनहारी माया और एकै जना कहे उत्पत्ति करनहार मनका अनुभव ब्रह्म माया शबलित इनहीं ते सब जगत् है तुम कौन ज्ञानते हिन्दू तुरुक नानाजाति बनायलिये निनार निनार ९ जब भगके द्वारे आया तब बालक कहाया और जब भोगन लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जो है धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानै है मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ॥ ११ ॥

जोमुखहोइजीभदशलाषा। तौकोइआयमहन्तोभाषा १२

जो एक मुख में लाख जीभ होयँ तो कोई कहे महन्त वही ब्रह्मको भाषै अर्थात् न भाषै यह काकु अर्थ है काहेते कि वाके तो कुछ रूप रेखा हुई नहीं है धोखही है अथवा महत् जे ब्रह्मादिक अपने २ लोकके मालिक जिन जगत् की उत्पत्ति कियो है तिनके कर्तव्यता को जो काहूके दशलाख जीभ होयँ कहै तो का कहि-सकै अर्थात् नहीं कहिसकै ॥ १२ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिके, ई लयऊ ब्यवहार ॥
रामनाम जानेबिना, भव बूड़ि मुवा संसार १३

कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि या जो उत्पत्ति वर्णन करिआये

सो सब लय कहे नाशवान्‌है औऊ कहे वह धोखा ब्रह्मको जो व-र्णन करि आये सो व्यवहारमात्र है अर्थात् समुझेते धोखही है कुछ वस्तु नहीं है सो एक विना रामनामके जाने कहे साहब को जो बतावै है रामनाम सो अर्थ बिनजाने माया को बतायो जोहै रामनाम में संसार और ब्रह्म को अर्थ तौनेहै भव कहे भयंरूप समुद्र तौनेमें संसार बूड़ि मुवा इहां लक्षणा है संसार बूड़ि मुवा कहे संसारी जीव बूड़ि मुये ॥ १३ ॥

इति दूसरीरमैनीसमाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरी रमैनी ॥ ३ ॥

चौ०प्रथम अरम्भ कौन के भाऊ । दूसर प्रकट कीन सो ठाऊ १
प्रकटे ब्रह्म बिष्णु शिव शक्ती । प्रथमै भक्ति कीन जिव उक्ती २
प्रकटि पवन पानी औ छाया । बहु बिस्तारकै प्रकटी माया ३
प्रकटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा । पृथिवी प्रकटकीन नवखण्डा ४
प्रकटे सिध साधक संन्यासी । ये सब लागिरहे अबिनासी ५
प्रकटे सुर नर मुनि सबझारी । तेऊ खोजि परे सबहारी ६
साखी ॥ जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सब दास ॥
कबिर और जानै नहीं, एक रामनामकी आस ७

प्रथम अरम्भ कौनके भाऊ । दूसर प्रकटकीन सो ठाऊ १
प्रकटे ब्रह्मबिष्णुशिवशक्ती । प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती २

प्रथम अरम्भ कौनके भाऊ कहे भयो और दूसर कौन प्रकट कियो जाते ये सब व्यवहार हैं १ प्रथम अनुमान समष्टिजीव कियो मनके अनुभव ते ब्रह्म भयो और वाणी भई ताते ब्रह्मा, बिष्णु, महेशादिक देवता प्रकटभये उनकी सब शक्तियां प्रकटभईं और प्रथमही जीव जोहै सो अपनी उक्ति करिकै उक्त देवतनकी भक्ति करत भयो अर्थात् नाना उपासना बांधिलेतभये ॥ २ ॥

प्रकटिपवनपानीऔछाया । बहुबिस्तारकैप्रकटीमाया ३

प्रकटेअण्डपिण्डब्रह्मण्डा । पृथिवीप्रकटकीननवखण्डा४

वे जे ब्रह्मादिक हैं ते अपनो अपनो करतब करतभये तेहिसे पवन पानी और छाया बहुत विस्तार कैकै माया प्रकटभई और चारि जे खानिहैं अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज प्रकट भये जे ब्रह्माण्ड में हैं और नवखण्ड पृथ्वी प्रकट भईं ॥ ३ । ४ ॥

प्रकटेसिधसाधकसंन्यासी । येसबलागिरहेअविनासी ५
प्रकटेसुरनरमुनिसबझारी । तेऊखोजिपरे सब हारी ६

और सिद्ध साधक संन्यासी प्रकट होतभये ये सम्पूर्ण जे हैं ते अविनाशी में लागिरहे हैं अर्थात् अविनाशीको खोजे हैं ५ औ सुर नर मुनि सब झारिकै प्रकट होत भये तेऊ अविनाशी को खोजत खोजत हारि परे तिनहूं न पायो ॥ ६ ॥

साखी॥जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सबदास ॥
कबिर और जानै नहीं, एकरामनामकी आस७

जीव और सीव कहे ईश्वर सो सब प्रकटे सो ईश्वर तो ठाकुर भयो और सब जीव दास भये सो कबीरजी कहै हैं कि हमतो दूसरो काहूको नहीं जानै हैं न अविनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानैं न सगुण ईश्वरन को जानैं निर्गुण सगुण के परे जे श्री रामचन्द्र हैं तिनके एक रामनामकी हमारे आशा है कि वही हमारो उद्धार करैगो ॥ ७ ॥

इति तीसरीरमैनीसमाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथी रमैनी ॥ ४ ॥

चौ० प्रथम चरणगुरु कीन बिचारा । करतागावै सिरजनहारा १
कर्मै करिकै जग बौराया । शक्ति भक्तिलै बांधिनिमाया २
अद्भुतरूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया । बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४
जो चीन्है तेहि निर्मल अङ्गा । अनचीन्हे नल भये पतङ्गा ५

साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कहि गावहू, बानी परी न चीन्हि ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, सब आपुहि कहिदीन्हि ६

प्रथमचरणगुरुकीनबिचारा। करतागावैसिरजनहारा १
कर्म करिकै जगबौराया। शक्तिभक्तिलैबांधिनिमाया २

प्रथमचरण कहे जगत्की आदिमें गुरु कहे साहब विचार कीन कहे सुरति दीन कि हमको जानै हम हंसरूपदै आपने धामको लै आवैं सो जीव जे हैं ते वा चैतन्यता पाय जगत्मुख ह्वै जगत् उत्पन्नकरिकै संसारी ह्वैगये सो करता तो साहबहैं जिनकी चैतन्यता पाय जीव समष्टिते व्यष्टिभये तौने साहबकी कर्तव्यता तो न जान्यो ब्रह्मादिक आपहीको सिरजनहार मानतभये १ तेई ब्रह्मादिक नानाकर्मनको प्रतिपादन करिकै जगत् बौरायदियो और शक्ति जो है गायत्री तौने के उपदेशकी विधिकैकै ताकी भक्ति आपकैकै और जीवनको करायकै माया में बांधदियो ॥ २ ॥

अद्भुतरूप जातिकी बानी। उपजीप्रीतिरमैनीठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया। बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४

अद्भुतरूप और नानाजाति की जो है कर्मप्रतिपादक ब्रह्मादिकनकी वाणी अर्थात् अद्भुतरूपनके हैं ध्यान जिनमें कहे काहूके बहुत मूड़ काहूके बहुत हाथ काहूके बहुत पांय यहि रीति के देवतनकी उपासना करै हैं और नाना जातिकी कहे नाना तरहकी है उपासना वर्णन जिनमें ऐसी उनकी वाणी सुनके तिन तिन देवनपर जीवनकी प्रीति उपजतभई और रमैनीठानी जो कह्यो सो अपने अपने उपास्य देवगुणी जे हैं सगुण उपासनावाले ते जीवको स्वस्वरूप दासरूपता खोजनलगे और अनगुणी जेहैं निर्गुणवाले ते जीवको अनुमान जो ब्रह्मस्वरूपता खोजनलगे सो वा वेदतात्पर्यार्थ दुइमें कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरे जने बहुत विचार कियो परन्तु न चीन्हपायो ॥ ३ । ४ ॥

जोचीन्हे तेहि निर्मल अङ्गा। अनचीन्हेनलभयेपतङ्गा५

जे यह धोखाको जानैहैं कि यह धोखा है तिनहीं को जानिये कि इनके पारख है यह बात विना जाने जगत्के जे जीव हैं ते जैसे दीपक में पतङ्ग जरिजाय है ऐसे वह धोखा में परिकै नाना दुःख पावे हैं और जो कोई साहबको चीन्है है जाको नेति नेति वेद कहै हैं और पारिख करै हैं ताके निर्मल अङ्ग ह्वैजायहैं अर्थात् हंसरूप पावैहैं काहेते कि वह साहब तो निर्गुण सगुण मन वचनके परेहै सो जब वाको चीन्ह्यौ तब वाहू मनवचनके पर ह्वैजायहै॥५॥

साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कह गावहू, बाणीपरी न चीन्हि॥
आदिअन्तउत्पतिप्रलय,सबआपुहिकहिदीन्हि ६

चीन्हौ चीन्हौ तुम कहा गावहुहौ अर्थात् कहा कहौहौ वह वाणी तो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते वाणी आपही कहतजाय है कि जाकी उत्पत्ति होय है ताकी प्रलयभी होय है जाकी आदि होय है ताको अन्तहू होयहै ताते जेते पदार्थ जगत्में वाणी आदि देकै हैं ते मन वचनके परे नहीं हैं और जो चीन्है है ताको निर्मल अङ्ग होयजायहै यह जो कह्यो ताते यह देखाय दियो कि जब मनादिक एको नहीं रहिजाय हैं तब मन वचन के परे जो पुरुष है सो वह मुक्तजीवको हंसरूप देइ है ताको पायकै तेहि हंसरूपके इन्द्रिन ते साहबको देखैहैं सो याको प्रमाण वेदमें है " मुक्तस्य विग्रहोलाभः "(इति कठशाखायाम्) सो यह विचार नहीं करै हैं वाणीके फेरमें ब्रह्महूं भूलिगये सो आगे कहैहैं ॥ ६ ॥

इति चौथीरमैनीसमाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवीं रमैनी ॥ ५ ॥

चौ० कहँलौं कहौं युगनकी बाता। भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्मा के मन भाई। बिबिअक्षरलै युगति बनाई २
बिबिअक्षरकाकीन बिधाना।अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षर पढ़ि गुणिराहचलाई। सनकसनन्दन के मनभाई ४

बेद किताब कीन बिस्तारा । फैलगैलमन अगमअपारा ५
चहुँयुग भक्तन बांधलबाटी । समुझि न परै मोटरीफाटी ६
भैं भैं पृथ्वी चहुंदिशि धावै । स्थिर होय न औषध पावै ७
होयभिस्तजोचित न डोलावै । खसमैंछोड़िदोजखको धावै ८
पूरब दिशा हंसगति होई । है समीप सँधि बूझै कोई ९
भक्तो भक्तिनि कीन शृंगारा । बूड़िगये सबमाँझहिधारा १०
साखी ॥ बिनगुरु ज्ञानैद्वन्दभो, खसमकही मिलिबात ॥
युग युग कहवैया कहै, काहु न मानी जात ११

कहँलौंकहौंयुगनकीबाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्माके मनभाई । बिबिअक्षरलै युगति बनाई २

युगनकी बात मैं कहांलौं कहौं मन वचनन के परे जो है ताकी बाट ब्रह्मौं भूलिगयेहैं जो बाट पाठ होयहै तो यह अर्थ है और जो त्राता पाठ होय है तो यह अर्थ है कि सबके त्राता कहे रक्षक जो साहब ताको ब्रह्मा भूलिगयेहैं १ जौन रामनामको अर्थ जगत्मुख लैकै वाणी और समष्टिजीव आदि जगत् रच्योहै तौनै युगति ब्रह्मौं विष्णु महेशके मन में भावत भई सो दूनों अक्षर रामनाम को लैकै रचत भये ॥ २ ॥

बिबिअक्षरकाकीनबिधाना । अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षरपढ़िगुणिराहचलाई । सनकसनन्दनकेमनभाई ४

ओई जे द्वै अक्षर हैं तिनको विधान करतभये कहां विधान कियो को बन्धान करदेते भये अनहदशब्द ज्योति तिनते प्रमाण है कि ज्योतिरूपी जोहै आदिशक्ति रेफरूप अग्निबीज जाको मण्डलमें पांच ब्रह्ममें लिख्योहै ताहीते अनहद शब्द उठै व मनमें जो कुछ कहनेकी वासना आई चित्तमें सो मूलाधारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्यो कहे संकल्पउठ्यो तब वह ज्योति डोली ताते कछु पवनको संचारभयो ताते नादकी प्रकटता भई तब वह वाणी उठी सो पश्यन्ती मध्यमा ह्वै त्रिकुटीके ऊपर मकार है बिन्दुरूप

तहां टक्करपाय वैखरी ये तीनरूपह्वैके बाहरको आई और योगी सो जहां अग्निको और पवनको संयोग होय है तहां जो शब्द होयहै सो अनहद कहावै है सो वह वाणी जो बाहर आई सो सम्पूर्ण अक्षर भे तौने पढ़ि गुणिकै सनक सनन्दन जे जीव हैं तिनके मनमें भावत भई अथवा सनकसनन्दनादिक जे ब्रह्माके पुत्र तिनके मनमें भावत भई सो वहै राह चलावत भये ॥ ३ । ४ ॥

बेदकिताबकीन्हबिस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा ५

तेई अक्षरनको लैकै वेद किताब कुरान पुरान जे हैं तिनको विस्तार करतभये सो सबके मनमें फैल गैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमनमें जौन गैलनीकीलगी सो चलतभये सो वह गैल तो भूलहीगये बहुतगैल ह्वैगई अपनेअपने मतनकी अपनी अपनी गैलकहै हैं कि यही सिद्धान्त है तेहिते नानासिद्धान्त ह्वैगये जो सिद्धान्त है ताको तो पावै नहीं वेदादिकनको कुरानादिकनको कहनलगे कि अगमहै अपारहै काहे ते कि नाना मतहैं तिनमें वेद कुरान को प्रमाण सबमें है सो एक सिद्धान्तमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो धोखाब्रह्म है ताहीमें अपनो अपनो सिद्धान्त करते भये सो वह तो अगम अपार है काहूको मिलबइ नहीं कियो ॥ ५ ॥

चहुँयुगभक्तनबांधलबाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ६
भैं भैं पृथ्वीचहुँदिशिधावै । अस्थिरहोयनऔषध पावै ७

चारिहुयुगके नानादेवतनके जे भक्तहैं ते अपनी अपनी राह बांधत भये तबहूं वह सिद्धान्त न समुझि पर्‍यो काहेते कि बहुत राह ह्वैगई रामनामके संसार मुख अर्थ में है तो सब मत बनेही हैं परन्तु साहबमुख जो अर्थ है रामनाम को ताको भूलही गये भरमकी जो है मोटरी सो फटी कहे पण्डित भये पढ़े भरम नाशकी उपायकरनलगे अर्थात् शास्त्रन के अर्थ विचारनलगे यही थोरो पाढ़बोहै सो वह राह तो पाई नहीं बहुतराह ह्वैगई तब नाना

प्रकारकी शङ्काउठी भरम फैलिरह्यो नानाशास्त्रन के सिद्धान्तन में वेदको प्रमाण सबहीमें मिलेहै काको सांच कहैं काको असांच कहैं ताते शास्त्रन में एको सिद्धान्त न करिसके ६ तब जीव जेहैं ते भैं भैं पृथ्वीमें चारो ओर भ्रमन लगे खोजन लगे एकहु मतको सिद्धान्त नहीं पावैहैं सो यहरोगकी औषध जो साहबको जानैहैं ताही बिरले सन्तमेंहैं सो तो पावत न भये औरे औरमें लगे ताते अस्थिर न होत भये ॥ ७ ॥

होयभिस्तजोचितनडोलावै । खसमैंछोड़िदोजखकोधावै ८
पूरबदिशाहंसगतिहोई । है समीप सँधि बूझै कोई ९

जो चित्त न डोलावै सुधर्ममें चलै तो भिस्त जो स्वर्ग सो होय है अथवा जौने जौने देवतनकी उपासना करै है तिनके लोक जाय है अथवा यज्ञपुरुषकी आराधना करिकै स्वर्ग जायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै सब जीव दौरै हैं मुक्ति कहांते होय दोजख जो नरक है ताहीमें परै हैं इहां स्वर्गहूको नरकही मानिकै कहै हैं काहेते कि खसमके भूले जो स्वर्गहू जायगो तो दुःखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ८ पूर्व दिशा कहे सबके पूर्व जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्ध ह्वैकै अपने स्वस्वरूपको चीन्हें तब साहब हंसस्वरूप देय है सो वा साहब को विचार कर्मके बाहिरे है सो याकी जो संधिहै कहे विचार है सो समीपही है जो अपने स्वरूपको चीन्है तो साहब हंसरूप देबै करै परन्तु कोई बूझत है ॥ ९ ॥

भक्तौभक्तिनिकीनशृंगारा । बूड़िगयेसबमाँझहिधारा १०

ज्ञान मिथ्यावाले जे भक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करतभये कहे विचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं वह मनकी धारा में बूड़िगये कहां बूड़े कि यह सब मिथ्याहै यह कहत कहत एक अनुभव सिद्धान्तराख्यो सो अनुभव जीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मनकी मांझ धारा में बूड़िगये अथवा

साहब को छोड़िकै जे नाना देवतनके भजन करे हैं ते भक्त भक्तिनि कहावै हैं ते साहब को तो न जान्यो श्रृङ्गार करतभये कहे नानावेष बनावतभये कोई अक्षछिद्रनाकों की ओर चन्दन दियो कोई मृत्तिका दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानावेष बनावत भये ते सब संसाररूपी समुद्रकी मांझ धारामें बूड़िगये॥१०॥

साखी ॥ बिनगुरुज्ञानैद्वन्दभो, खसमकही मिलिबात ॥
युगयुग कहवैया कहै, काहुन मानीजात ११

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मिली बात कही कहे अपनो रामनाम बतायो तामें द्वै अर्थ रह्यो एक साहबमुख एक संसारमुख सो आदि मङ्गल में लिखि आये हैं सो सबते श्रेष्ठ गुरु साहब तिनको ज्ञान तो नहीं भयो संसारमुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्वन्दकहे जन्ममरण दुःख, सुख, स्त्री, पुरुष, ज्ञान, अज्ञान इत्यादिक संसार में होतभयो सो कबीरजी कहै हैं कि युगयुगमें कहनहार जो मैंहौं कबीर सो कह्यो मेरी कही बात काहू सों नहीं मानी जातहै ॥ ११ ॥

इति पँचईंरमैनीसमाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठी रमैनी ॥ ६ ॥

चौ० वर्णहुँ कौनरूप औ रेखा। दूसर कौन आय जो देखा १
औ ओंकार आदि नहिंबेदा। ताकर कहौं कौन कुलभेदा २
नहिंतारागणनहिंरविचन्दा। नहिंकछुहोत पिता के बिन्दा३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना।कोधरैनाम हुकुमकोबरना ४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती। ताकरकहहुं कौनकुल जाती ५

साखी ॥ शून्य सहज मनस्मृतिते, प्रकट भई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुष छवि, निरालम्ब जो होति ६

वर्णहुँ कौन रूप औ रेखा। दूसर कौन आय जो देखा १
औ ओंकारआदि नहिं बेदा। ताकरकहौंकौनकुलभेदा २

वह जो अनिर्वचनीय है ताको कौन रूप रेखा वर्णनकरौं मैंहीं नहीं वर्णन करि सकौंहौं तो दूसर कौन आय जो देख्यो १ प्रणव को वेदहू नहीं जानै हैं काहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्म वेदनको आदि है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदि है उसको कौन कुल भेद कहौं ॥ २ ॥

नहिंतारागणनहिंरविचन्दा। नहिंकछुहोतपिताकेबिन्दा३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोबरना४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती। ताकरकहहुंकौनकुलजाती५

न तारागण न सूर्य न चन्द्रमा न पिता को बिन्दु एकौ नहीं रहे जाते सब उत्पत्ति है ३ पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये व काको हुकुम वर्णन करत भये ४ और तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतितें, प्रकटभई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुषछबि, निरालम्ब जो होति ६

सहजशून्य जो प्रकाश देखिपरै ब्रह्म ताके मनके स्मरणते एक ज्योति प्रकट होय है सो सालम्ब है योगीजन ब्रह्माण्ड में देखै हैं और वह जो अनुभव ब्रह्म है सोऊ सालम्ब है काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होय है सो कबीरजी कहै हैं कि ये दोऊ सालम्बहैं कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबके मालिक निरालम्ब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छविकी मैं बलिहारी जाउँ हौं साहबनिरालम्ब काहेते हैं कि जीवकी जेती सामग्री हैं मनआदिक इन्द्रियन करिकै ज्ञान करिकै अनुभव करिकै साहब न देखेजायहैं न जाने जायहैं जब आपही अपनो हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजाय हैं और आपही ते जानेजायहैं तामें प्रमाण " सो जानै जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हैं तुम्हैं ह्वै जाई॥

तुम्हरी कृपा तुम्हैं रघुनन्दन। जानहिं भक्त भक्ति उरचन्दन १ ” (अर्थ) हे श्रीरामचन्द्र ! जाको तुम जनाइ देहुहौ सो जानै है जो कहो हमारे ही जनाये कैसे जानैगो वेदशास्त्र तो सबजनौतेहै तो एकबड़ो अवरोध है जब तुम्हारे जानबेके लिये शम दमादिक कियो हृदय शुद्ध भयो तब आपहीको मानैहै कि महीं राम हौं सो तुमको कैसे जानि सकै या हेतुते तुम्हारी कृपैते तुमको जानै है जब तुमने वाको हंसरूप दियो तब वह पांचौ शरीर ते भिन्न ह्वैकै हंसरूपमें स्थितभयो वह हंसस्वरूप कैसो है तुम्हारी अनिर्वचनीयासभक्तिरूप जो चन्दन है सो वाके उरमें लग्यो है ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमी नहीं आयसकै है जिनको कृपा करिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो जानै है तुमको सो ऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालम्ब तिनको कबीरजी कहै हैं कि मैं बलिहारी जाउँहौं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण “धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यदि। पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्वः शरो मे हन्तु रावणिम्”(इति बाल्मीकीये) लक्ष्मणजी ने मेघनादके मारत में शपथ कियो है कि जो पौरुषमें अप्रतिद्वन्द्वी श्रीराम होयँ कहे पुरुषत्वमें वैसो दूसरा न होय तौ हमारो बाण मेघनाद का शिर काटिलेइ सो मेघनादको शिर काटिलियो और भागवतहूमें है “ ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोऽहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् १ ” (अर्थ) हे महापुरुष ! तिहारे चरणारविन्द की हम वन्दना करेहैं कैसे तिहारे चरणारविन्द हैं कि सब कालमें ध्यानकरिबेके योग्य हैं और परिभव जो तिरस्कार ताके नाश करनेवाले हैं अर्थात् जो कोई ध्यानकरै है ताको तिरस्कार लोक में कोई नहीं करै है और मनोवाञ्छित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रयभूत और शिव विरंचि ते स्तुति करेगये व शरण्य कहे रक्षाकरनेमें समर्थ और दासनके पीड़ाहरनेवाले व दीननके पालनेवाले और संसारसमुद्र के नौकारूप तामें प्रमाण कबीरजी

को "साहब कहिये एकको, दूजा कहा न जाय। दूजा साहब जो कहै, बादबितण्डै आय ॥ ६ ॥

इति छठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवीं रमैनी ॥ ७ ॥

जीवमुख-जहियाहोतपवननहिंपानी। तहिया सृष्टिकौनउतपानी १
तहिया होत कली नहिं फूला। तहिया होत गर्भ नहिं मूला २
तहिया होत न बिद्या बेदा। तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिण्ड नहिं बासू। नाधर धरणि न गगन अकासू ४
तहिया होत गुरू नहिं चेला। गम्य अगम्य न पन्थ दुहेला ५
साखी ॥ अविगति की गति क्याकहौं, जाके गाँव न ठाँउ ॥
गुण विहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ६

जहियाहोतपवननहिंपानी। तहियासृष्टिकौनउतपानी १
तहियाहोतकलीनहिंफूला। तहियाहोतगर्भनहिं मूला २

जहिया कहे जेहि समय सृष्टि नहीं रही जेहि समय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौन उत्पन्नकियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बाल रह्यो न वृद्ध रह्यो न गर्भ रह्यो न गर्भको मूलबीज रह्यो ॥ २ ॥

तहियाहोतनबिद्याबेदा। तहियाहोतशब्दनहिंखेदा ३
तहियाहोतपिण्डनहिंबासू। नाधरधरणिनगगनअकासू४
तहियाहोतगुरूनहिंचेला। गम्यअगम्यनपन्थदुहेला ५

न वेद रह्यो न चौदहौ विद्या रहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःख रह्यो ३ न पिण्ड रह्यो न पिण्डमें जीवको बास रह्यो न अधर कहे पाताल रह्यो न धरणि रही न आकाश रह्यो ४ न गुरु रह्यो न चेला रह्यो न गम्य कहे सगुण रह्यो न अगम्य कहे निर्गुण रह्यो और दुहेला कहे दूनों पन्थ नहीं रहे ॥ ५ ॥

साखी ॥ अबिगतिकीगतिक्याकहौं, जाकेगाँउनठाँउ॥

गुणबिहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ६

वह जो अविगति कहे अव्यक्त जो नहीं प्रकट होय धोखा ब्रह्म है निराकार ताके गाँउ ठाँउ नहीं है वह गुण करिकै विहीन जो निर्गुण है ताको पेखना कहे देखिबे को का कहिकै नामलीजै कि यह है वातो कुछ वस्तु ही नहीं है ॥ ६ ॥

इति सातवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवीं रमैनी ॥ ८ ॥

चौ० तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ईउपनिषद कहै सन्देशा १
ऊनिश्चय उनके बड़भारी। वाहिकिवरणकरैअधिकारी २
परमतत्त्वकानिजपरमाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा। दत्तात्रयीवहै रसस्वादा ४
वहै वशिष्ठ राममिलि गाई। वहै कृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढ़ाई। देहै धरे विदेह कहाई ६
साखी॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियतमुवा नहिं होय॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्टकहावै सोय ७

तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ई उपनिषद कहै संदेशा १

तौने धोखा ब्रह्मको जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिषद्को प्रमाणदैकै प्रतिपादन करै हैं सो और सांच जो अर्थ है सो कबीर जी दोऊ तात्पर्य करिकै देखावै हैं "तत्त्वमसी" जो श्रुति उपनिषद्को उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसो कहैहैं संदेश कौन कहावै है कि बात को पूर्वापर नहीं समुझै वाकी कहनूति वासों कहिदेइ जो संदेशको हेतुपूछै कि कौने हेतुते कह्यो है तो वह कहै हैं कि संदेश कहि दियो यह नहीं जानैहैं कि कौन हेतु ते कह्योहै सो ऐसे गुरुवालोग श्रुति को तो पूर्वापर जानै नहीं हैं अक्षरमात्र को अर्थ करै हैं कि तत्त्व ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मत्वही है सो जीवही को अनुमान तो ब्रह्म है जीव ब्रह्म कैसे होयगो ब्रह्म तो ज्ञानस्वरूप है शुद्ध है माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसे होतो तो

गुरुवालोग कहे हैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो श्रुतिको अर्थ यह है कि पूर्व षोड़शकलात्मक जीव को कहिआये हैं ताही को कहै हैं कि " त्वम् असि " तौन षोड़शकलात्मक जीवते है षोड़श कला तोहीं में हैं तो उनते भिन्न हैं शुद्ध है यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं समुझै हैं सो या बात मेरे तत्त्वमस्यर्थवाद में विस्तारते है ॥ १ ॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी। वाहिकिबरणकरैअधिकारी २

ऊ कहे वह जो धोखा ब्रह्महै ताहीकी निश्चय उनकेबड़ीभारी है वाहीकी वरण कहे वही धोखा ब्रह्मको अधिकारी जे चेला हैं तिनको वरणकरै है अर्थात् अंगीकार करायदेइ है परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं जानै है जे जानेहैं तिनको कहैहैं ॥२॥

परमतत्त्वकानिजपरवाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा। दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको निजते पर मानत भये याही हेतुते सनकादिक और नारद जे हैं ते सुख जानत भये अर्थात् सुखी होतभये भाव यह है कि जे कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अपने ते पर मानै हैं तेई सुखी होय हैं ३ और फिरि कहै हैं याज्ञवल्क्य और जनकको संवाद भयोहै सो याज्ञवल्क्य कह्यो जो परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्यो है और वही तत्त्व दत्तात्रयी चौबीसगुरुबनाय संसार ते वैराग्यकैकै तात्पर्य वृत्ति ते जान्यो है ॥ ४ ॥

वहैवशिष्ठराममिलिगाई । वहैकृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढ़ाई। देहै धरे विदेह कहाई ६

वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको मिलिकै गाय कहे कहिकै वशिष्ठजी जान्यो है और वही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश कियो है ५ वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी विदेह

कहावत भये इहां द्वैजनक जो कह्यो सो वा वंश में एक जनक नाम करिकै राजा भये हैं तेहिते विदेह होत आये ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियत मुवा नहिं होय॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावै सोय ७

ऐसे जे परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमान खोयकै कहे त्यागिकै जियतै मुवा असनाभये अर्थात् हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीरते भिन्न ना भये देखत जो ना देखै सो अदृष्ट कहावै सो परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको वेद, पुराण, कुरान, शास्त्र, महात्मा इनकेद्वारा देखतऊ हैं और जिनको वर्णन करिआये सनकादिक महात्मनको उद्धार ह्वै गयो यहौ देखतऊ हैं समस्त दृष्टि ते परन्तु ये मूर्ख जीव गुरुवालोग ना जाने तेहिते अदृष्ट कहावै हैं कहे आँधरे कहावै हैं परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहीहैं तामें प्रमाण "राम एव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्" (इति हनुमदुपनिषदि) जो यह कहौ शुक सनकादिक येऊ न जान्यो तो अब कोजानैगो नास्तिकपना आवै वस्तु मिथ्या होय है ताते साधु तो जानतई हैं जिनको साहब जनाय दियो है कबीरोजी कहे हैं "ध्रुवप्रह्लादउबारिया, सोहरिहमरेसाथ। हम को शंकाकलुनहीं, हमसेवैं रघुनाथ" ॥ ७ ॥

इति आठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवीं रमैनी ॥ ९ ॥

चौ० बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता। यमबांधे अञ्जनिके पूता १
यमकेबाहन बांधिनिजनी। बांधे सृष्टि कहांलौं गनी २
बांधे देव तेंतीस करोरी। सुमिरतबन्दि लोहगैतोरी ३
राजासुमिरै तुरिया चढ़ी। पन्थीसुमिरि नामलै बढ़ी ४
अर्थबिहीना सुमिरै नारी। परजा सुमिरैपुहुमीभारी ५

साखी ॥ बँदि मनाय फल पावहीं, बन्दि दिया सो देव ॥
कह कबीर ते उबरे, निशि दिन नामहिं लेव ६

चौ० बांधे अष्ट कष्टनौसूता। यमबांधे अञ्जनिके पूता १

अष्ट जे अष्टाङ्गयोग हैं और कष्ट जो विज्ञान है तेहिते बांधि गयो धोखा ब्रह्म को विज्ञानरूप कष्ट है तामें प्रमाण "अव्यक्ता-हिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते" (इति गीतायाम्) "श्रेयःश्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये। तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम्" (इति भागवते) और नौ सूतकहे सगुना जो नवधा भक्ति है तेहि करिकै बांधिगयो और यमकहे दुइ विद्या और अविद्या तेहिकरिकै अञ्जनी जो माया ताके पूत जे जीव हैं ते सब बांधि गये॥ १॥

यमकेवाहनबाँधिनिजनी। बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी २
बाँधे देव तेंतीस करोरी। सुमिरतबन्दिलोहगैतोरी ३

और यम जे विद्या अविद्या दूनों माया हैं तिनके सब जीव वाहनभये काहेते कि उनहींको ढोवन लगे उनहींकी चाल चलन लगे और वै जे दूनों माया हैं ते बांधिनिजनी कहे फेरि फेरि जी-वन को उत्पन्न करिकै संसार दैकै बांधि लियो और शीशमें चढ़ी रहती हैं सो अनादि कालते बँधी जो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधेगये तिनको सुमिरतमात्रहीमें बन्दि कहे लोहेकी बेड़ी में परिके तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरत में का बन्दिलोहेकी बेरी जीव तोरि गये नहीं तोरिगये॥ ३॥

राजासुमिरै तुरियाचढ़ी। पन्थीसुमिरि नाम लै बढ़ी ४
अर्थविहीना सुमिरैनारी। परजासुमिरैपुहुमीभारी ५

तुरीया अवस्था को नाम है तामें ज्ञानीलोग चढ़ी कहे आरूढ़ ह्वैकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहै हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरै हैं और पन्थी जे अनेकपन्थ चलावनवालेहैं ते नानामतके पन्थ में आरूढ़ ह्वै अपने अपने इष्टदेवनके नाम लैकै साधन में बढ़ेहैं सो यहौ विरहीहैं ४ अर्थविहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य

ते त्यागि वन में बसिकै अपने इष्टदेवनको सुमिरै हैं ते और पर जो ब्रह्म है तामें जो जायो चहै सारी पुहुमी सहित सुमिरैहै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्मही देखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो माया है ताही को सुमिरै हैं काहेते कि जहांलौं मन जाय है तहांलौं सब माया है ॥ ५ ॥

साखी ॥ बँदिमनायफलपावहीं, बन्दिदियासोदेव ॥
कहकबीरतेऊबरे, निशिदिननामहिंलेव ६

बन्दि कहे विद्या अविद्यारूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौने फल पावैहैं अर्थात् जे स्वर्गादिक की चाह करै हैं ते लोहेकी बेरीमें परे जे "अहंब्रह्मास्मि" माने ते सोने की बेरी में परे सो जौने इष्टदेवतनको मनाये सो बन्दीही फल देतभये अथवा बन्दि में नाय कहे बन्दिमें डारिदिये हैं तेई फल पावै हैं अर्थात् स्वर्गादिक जे फलहैं ते सब बन्दिमें डारनवारे हैं सो बन्दि डारनवारो जे फल देय हैं ते का देव हैं नहीं हैं देव सो कबीरजी कहैहैं कि जे श्रीरामचन्द्र को नाम निशिदिन लेयहैं तेई उबरै हैं ॥ ६ ॥

इति नवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवीं रमैनी ॥ १० ॥

चौ० राही लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही १
आई करगी भो अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता २
बुतापहिरयमकरै पयाना । तीनलोकमें कीन समाना ३
बांधे ब्रह्मा बिष्णु महेशू । पार्वती सुत बांध गणेशू ४
बँधेपवन पावक नभनीरू । चन्द्र सूर्य बांधे दोउ बीरू ५
सांचमन्त्र बांधे सब झारी । अमृत बस्तु न जानै नारी ६

साखी ॥ अमृत बस्तु जानै नहीं, मगन भये कित लोग ॥
कहहिं कबिर कामोनहीं, जीवह मरण न योग ७

राही लैपिपराहीबही । करगीआवतकाहु न कही १

राही कहे सुराहके चलनवाले और पिपराही कहे पीपरकी ब-निका की नाईं अनेक मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं तिनहूं को लैकै संसारसागर में बहतभये करगी बूड़ाको जल जो छिटकैहै ताको कहैहैं सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूप बूड़ा है ताके आवतमें काहु न कही कि या धोखाब्रह्ममें न परो बूड़ि जाउगे ॥ १ ॥

आई करगी भो अजगूता। जन्मजन्मयमपहिरेबूता २

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि जन्म जन्म कहे जब जब ब्रह्माण्डन की उत्पत्तिभई तब तब यम पहिरे बूता कहे यमको काल निरञ्जन जे हैं तिनको बूता कहे पराक्रम काल पहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़ है निरञ्जनै को पराक्रम लैकै जीवनको मारै है ॥ २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना। तीनिलोकमोकीनसमाना ३
बांधे ब्रह्मा बिष्णु महेशू। पार्वतीसुत बांध गणेशू ४
बँधेपवनपावक नभनीरू। चन्द्रसूर्य बाँधे दोउबीरू ५

वही निरञ्जन को बुताकहे पराक्रम काललैकै पयान कियो सो लव, दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग, कल्परूप करिकै तीनलोक में समाइ जातभयो ३ जौन काल तीनलोकमें समानो ताहीमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, षण्मुख, गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाणरूपते सब बँधतभये ४ अरु ताही में पवन व पावक व पानी व चन्द्र व सूर्य और नभ सब बँधत भये ॥ ५ ॥

सांचमन्त्र सबबांधे झारी। अमृत बस्तु न जानै नारी६

झारादैकै जे साहब के सांच मन्त्र हैं तिनहूं को काल बांधि लियो काहेते कि जो साहब के मन्त्रको अर्थ प्रभाव और साहब को ज्ञानरूप अमृतवस्तु नारी जो आवरण कैलियो माया तामें परे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तो हमारे मारे न मरैंगे याही हेतुते बांध्यो है ॥ ६ ॥

साखी॥ अमृतबस्तु जानै नहीं, मगनभये कितलोग॥
कहैं कबिर कामो नहीं, जीवहमरन न योग ७

अमृतवस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौने कुत्सित संसारमें तू मगन भयो कौन साहब जो कामो नहीं अर्थात् कामैं नहीं है सबहीमें है सो ऐसो अमृतवस्तु साहब समीपई है वा जीवका जनन मरण योग है अर्थात् नहीं है व्यंग्यते या कहै हैं कि जीव महामूढ़ है अथवा जिनको सांच मन्त्र माने रहे ते तो सब बांधि गये अमृतवस्तु जो रामनामको साहबमुखअर्थ सो जानतही नहीं है याते जनन मरण न छूटतभयो॥ ७॥

इति दशवीं रमैनी समाप्तम्॥ १०॥

अथ ग्यारहवीं रमैनी॥ ११॥

गुरुमुख॥आँधरगुष्टिसृष्टिभैबौरी। तीनिलोकमहँ लागिठगौरी १
ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी। देवनसहित ठग्यो त्रिपुरारी २
राज ठगौरी बिष्णुहिं परी। चौदह भुवन केर चौधरी ३
आदि अन्त जेहि काहु न जानी। ताको डर तुम काहे मानी ४
ऊ उतंग तुम जाति पतङ्गा। यमघर किहेहु जीव कै सङ्गा ५
नीमकीट जस नीम पियारा। बिषको अमृत कहै गँवारा ६
बिषके संग कवन गुण होई। किंचित लाभ मूल गो खोई ७
बिष अमृतगो एकहि सानी। जिन जाना तिनबिषकै मानी ८
कहा भये नल सुध बेसूझा। बिनपरचै जग मूढ़ न बूझा ९
मतिके हीन कौन गुण कहई। लालच लागे आशा रहई १०

साखी॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुये कि बाजी ढोल॥
स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानी रहिगा बोल ११

आँधर गुष्टि सृष्टिभै बौरी। तीनिलोकमहँलागिठगौरी१

साहब कहैहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे
आँधर हैं ते माया और निराकार धोखाब्रह्म याही की गोष्टी जो वार्ता सो करतभये ताही में सारीसृष्टि बौरी ह्वैजातभई कोई तौ

मैंही ब्रह्महौं यह मानि अपने को मुक्त मानतभये कोई मायामें परि नाना देवतनकी उपासना करि अपने को भक्त मानत भये कोई जीवात्मै को मानै कोई सुन्निन को मानत भये सो यही ठगौरी जो माया है सो तीनोंलोकमें लागतभई सो आगे कहैहैं॥ १॥

ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी। देवनसहितठग्योत्रिपुरारी २
राजठगौरी बिष्णुहिंपरी। चौदहभुवन केर चौधरी ३

शेषनाग को संहारिकै कहे बांधिकै माया ब्रह्मा को ठग्यो ते संसार की उत्पत्ति करनलगे नागकहजाई जो पाठ होय तौ माया ब्रह्मा को ठगिसि और शेषनाग कहँ जाइकै ठगिसि सो शेषनाग पृथ्वी को भार शीशमें धरतभये देवनसहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमें लगे देवता अपने अपने काममें लगे २ और चौदहभुवन को चौधरी विष्णुको करिकै ठग्यो ते संसार को पालन करनलगे याही रीतिते मायाते जे गुणाभिमानी रहे तिनको सबको ठग्यो ॥ ३ ॥

आदिअन्तज्यहिकाहुनजानी। ताकोडरतुमकाहेनमानी ४

फिरि कैसीहै माया जाको आदि अन्त कोई जनवई न कियो काहेते न जान्यो वा कुछ वस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्र है जेतो पदार्थ देखैहै सुनैहै कहैहै सो सब त्रिगुणमय है गुण न आत्मईमें है न ब्रह्महीमें है ताते ये सब मिथ्याहीहैं और धोखाब्रह्म मिथ्या है कैसे सो कहैहैं सबको निराकरण करत करत जो वा रहिजायहै ताही को मानौ हौं कि सो ब्रह्म हमहैं ताहूको मूलअज्ञान कहौं सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशा में बिचारिदेखो तुमहीं रहिजाउ हौ तुम्हारोई अनुमान ब्रह्म है ताते मिथ्याही है जब तुम्हीं रहि गये तब तुम में तो माया ब्रह्मते छूटने की सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्य होती तौ पहिलेही ते तुमको काहे को बांधिलेती याते तुम डेराउहौ कि हम कैसेकै छूटैंगे सो या माया और धोखाब्रह्म का डर तुम काहेको मानतेहौ मैं जो अनिर्वचनीय हौं ताके तुम अंशहौ

तुमहूं अनिर्वचनीय हौ नाहक धोखाब्रह्म और माया को अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ तुम मायाब्रह्म को भ्रमत्यागि मेरे अनिर्वचनीय नाम में लगिकै मेरे पास आवो मैं रक्षाकरि लेउँगो यह मालिक जे श्रीरामचन्द्र हैं ते कहे हैं ॥ ४ ॥

ऊउतङ्गतुम जातिपतङ्गा। यमघर किहेहु जीवके सङ्गा ५
नीमकीटजसनीमपियारा। बिषको अमृतमान गँवारा ६

वह जो माया और धोखाब्रह्म अग्निरूप ताकी उत्तुङ्ग कहे बड़ी ऊंची लपटैहैं तुम जातिके पतङ्ग ह्वैकै वामें काहे जरि जरि मरौ हौ सो हे जीव! नानावस्तुनको संगकरि जाहीमें मन लगाय मर्‌यो और सोई भयो याही भांति जनमिकै मरिकै यमके पास घरबनाये हौ अर्थात् या संगका प्रभाव है जो यमके यहां घर बनाये हैं ५ जैसे नीमके किरवा को नीमही पियारलगैहै जो मिष्टान्नौ पावै तो न खाय ऐसे विषरूप जो विषय ताको अमृतमानि गँवार जो जीव हैं सो खाय हैं ॥ ६ ॥

बिषकेसंग कौनगुण होई। किंचितलाभमूलगो खोई ७
बिषअमृतगोएकहिसानी। जिनजानातिनबिषकैमानी ८

सो या बिषरूपी विषयके संग कौनगुण है क्षणभरेको सुख है और सबको मूल जो मेरो ज्ञान सो नशायगो अनेक जन्म दुःख पावन लग्यो ७ साहब कहैहैं कि और नाना देवतन को जो नाम जपिबो और तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो यातो विष है और मेरे नामको जपिबो मेरे लोकमें जाय सुख पाइबो यातो अमृत है सो ये दूनों विष अमृत एकै में सानिगो कैसे जैसे साहब को नाम लीन्हे मुक्त ह्वैजाय है साहब के लोकमें जाय सुख पावैहै ऐसे औरहू देवतनके नाम लीन्हेसे मुक्त ह्वैजाय है औ तिनके लोक में जाय सुख पावैहै वास्तव एकही नाम भेदसे और और कहैहै या भांतिते जे ज्ञान राखे हैं तिनके ज्ञान को मेरे अनिर्वचनीय नामरूप धाम के जे जनैया हैं तिनके ज्ञानको ते विषयी मानै हैं ॥ ८ ॥

कहाभयेनलसुधबेसूझा। बिनपरचै जगमूढ़ न बूझा ९
मतिकेहीनकौनगुणकहई। लालचलागेआशारहई १०

ऐसे बेसूझ जीव जिनको नहीं सूझपरै है ते कहां शुद्ध भये नहीं भये मैं जो अनिर्वचनीय ताके परचै विना जगमें मूढ़ जीवो तुम न बूझत भयो सो ऐसे मतिके हीन जे तुम तिनके कौन गुण कहैं लालचई में लागेरहेहैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषय की आशा मैं फिरै है सांच जो वेद को अर्थ मैं ताको न जानत भये॥ ९। १०॥

साखी॥ मुवाअहै मरिजाहुगे, मुयेकी बाजी ढोल॥
स्वप्नसनेहीजगभया, सहिदानीरहिगाबोल ११

साहब कहैहैं कि हे जीवो! मुवा जो धोखा ब्रह्म नानादेवता तिनमें जो लागौगे तो मरिजाहुगे अर्थात् जन्मतै मरतरहौगे या तुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेद पुराण हैं सो बाजैहैं कहे कहैहैं तब तुम्हारा इष्टदेवन को स्नेह और सब सुख जगत्को स्वप्न ऐसा ह्वै जायगा ये सब मुयेहैं ये वेद पुराण तात्पर्यते डङ्कादैके कहै हैं अथवा जो गुरुवालोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै हैं सो सब संसार मैं मुये की ढोल बाजै हैं मरिजाहुगे जो यामें लगौगे तो तुम्हारी सहिदानी बोल रहिजायगा बोल कहाहै जे तुम अपने इष्टदेवनके ग्रन्थ बनाय जावगे तेई रहिजायँगे कि फलाने के बनाये ग्रन्थ हैं कालपाय वोहू न रहिजायँगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनाम को संसारसुख अर्थ करि संसारी भयो हौ सोई जगत् की सहिदानी मेरो नाम रहिजायगो ताहीको फेरि संसार सुख अर्थकरि संसारी होउगे जब नाम मैं मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे॥ ११॥

इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम्॥ ११॥

अहंब्रह्म, अहंईश्वरः, अहंभोगी, अहंसिद्धः, अहंबलवान्, अहं सुखी" इहै भूँकैहै तामें प्रमाण "ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी" इत्यादिक रूप जो वाणीहै ताको देखि देखि भूंकतेहौ कहे पढ़तेहौ वा स्याररूप वाणीके धरिबेको तो भूंकि भूंकि तुमहीं मरिगये स्यारते कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जो वाणी सो तुम्हारी धरी न धरिगई वाको तात्पर्य्यार्थको धन जानतभये रूप जो वाणी मोमें वृत्ति तो नहीं राखौहौ अपने जानपनी को घमण्ड राखौ हौ ताते माया ते न छूटे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मूस बिलारी एक सँग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखौहो संतौ, हस्तीसिंहैखाय ७

हे नरो! मूस जे तुमहौ तिनको बिलारी जो माया है सो कैसे न खाय एकसंग तो रहौहौ सो कैसे विना खाये रहिजाय सो हे सन्तो! एक आश्चर्य और देखो तुम जे जीवहौ तेतौ सिंह हौ तिनको जो हाथी धोखाब्रह्म है सो खायलेयहै जो मोको तुम जानौ तो तुम सिंहही बनेहौ तुम सब धोखा मिटावनवारे हौ॥७॥

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवीं रमैनी ॥ १३ ॥

गुरुमुख-नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १
सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २
चले लोग सब मूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटि नहिं जाई ३
आजुकाजजियकाल्हिअकाजा। चले लादिदिग्गन्तर राजा ४
सहज बिचारत मूल गँवाई। लाभते हानि होय रे भाई ५
ओछी मती चन्द्र गो अथई। त्रिकुटीसंगम स्वामी बसई ६
तबहीं बिष्णु कहा समुझाई। मैथुनाष्ट तुम जीतहु जाई ७
तब सनकादिकतत्त्व बिचारा। जैसे रङ्क धनपाव अपारा ८
भोमर्याद बहुत सुखलागा। यहि लेखे सबसंशय भागा९
देखत उतपति लागु न बारा। एकमरै यककरै बिचारा १०

मुये गये की काहु न कही। झूठी आश लागिजगरही ११

साखी॥ जरत जरत से बाचहू, काहेन करहु गोहारि॥
बिष बिषयाके खायहू, रातदिवसमिलिझारि १२

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १

साहब कहै हैं यह तो उपदेश हम करते हैं तुम सबको परतीति जो नहीं आई सो यहि संसारमें पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दिशा, काल, मन, आत्मा को धोखाब्रह्म ई नवौ द्रव्यकी चोट कठिन कौन मारयो तुमको जाते तुम या मार्‌यो कि शरीर मैंहीं हौं देवता मैंहींहूं ब्रह्म मैंहींहौं सो तुम भूलगये नवौ द्रव्य मेराही शरीर है ताको न जान्यो तुम तामें प्रमाण "खं वायुमग्निं सलिलं महीं च ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्। सरित्समुद्रांश्च हरेःशरीरं यत्किंच भूतं प्रणमेदनन्यः" (इति भागवते) "यआत्मनितिष्ठन्यमात्मानवेदयस्यात्माशरीरम्" (इतिश्रुतिः)॥१॥

सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २

साहेब कहैहै हे जीवो! चित् अचित् जगत्‌रूप जो मेरो शरीर तामें तुम द्रव्यबुद्धि किये हौ सो त्यागिदेहु यह मेरही शरीर कैकै देखौ तो नित्य है नहींतो शेष होत हो तब सब लुकाय जायहैं एक एक में लीन ह्वै जायहैं निषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौ कि मैं रहिजाउँ हौं तब मैं तुमको हंसरूप दै आपने धामको लै आवौंहौं सो या जगत् मेरही शरीर है या परतीति तुमको काहू को न आई द्रव्यही बुद्धि मानते भये॥ २॥

चलेलोगसब मूलगँवाई। यमकीबाढ़िकाटिनहिंजाई ३

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवायकहे भूलिकै हे जीवो! तुम सब नानापन्थ चलेहौ परन्तु यम कहे दोऊ विद्या अविद्यारूप जो घोरनदी तिनकी बाढ़ि जो है धारा सो न काटी जायगी अर्थात् न पैरी जायगी वाही में बूड़ि जावोगे अथवा यम जो है कालरूप ब्रह्म ताकी बाढ़ि जो वाणी जो एकते अनेक भई

है सो हे जीवो ! तुम्हारी काटी न काटी जायगी जो काटि पाठ होय तो यह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदीबाढ़ी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी काटी न काटि जायगी अर्थात् वाही में परेरहौगे अथवा चौदहौ जे यम वर्णन करिआये हैं तिनकी बाढ़ि बढ़ी है सो तुम्हारी काटी न कटैगी विना मोको जाने ॥ ३ ॥

आजुकाजजियकाल्हिअकाजा।चलेलादिदिग्गन्तरराजा४

हे जीवो ! अनिर्वचनीय जो मेरो नाम ताको जो आजु समुझौतो कार्य होयगो तिहारो और जो काल्हि कहे शरीर छूटे में समुझो चाहौ तो अकाज है नाजानैं कौनी योनि में परौ फिरि समुझौ धौंना समुझौ सो हे जीवो ! तुमतो राजा हौ मन मायादिक ये तुम्हारे ही बनाये हैं सो तो तुम भूलिगये चलेलादि कहे विद्या अविद्या के जे नानाकर्म तिनको अङ्गीकार करि अर्थात् वहै बोझा अपने माथे में धरि दिगन्तर में जाय नानाशरीर धारण करत हौ सो अबहूं मोको जानि तुम सब यह दुःख त्यागो यह मायारूप धोखावालेन को उपदेश दियो अब सहजसमाधि वालेन को कहै हैं ॥ ४ ॥

सहज बिचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई ५

सहजकहे सो हंस अहं यह प्रतिश्वास बिचारत बिचारत सब को मूल जो मेरो नाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायदियो सो हे जीवो ! तुमको तो धोखाब्रह्म का लाभ भया परन्तु इस लाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हे भाइयो ! हानि ह्वैगई अर्थात् नहीं प्राप्तभई ॥ ५ ॥

ओछीमती चन्द्रगो अथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसई ६
तबहीं बिष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुम जीतहुजाई ७

वीर्यकी उलटी गति करत करत ओछीमतिकहे बुद्ध्यादिक सूक्ष्म ह्वै थिर ह्वैगईं तब चन्द्ररूप जो वीर्य सो अथैगयो अर्थात् उलटी गति ह्वैगई तब दूनौं नेत्रको उलटिकै ध्यानलगाय प्राण

के साथ वीर्य को चढ़ाय त्रिकुटी में जहां इड़ा, पिङ्गला, गङ्गा, यमुना, सरस्वती को सङ्गम है स्वामी बसै है जहां पहुँचौहौ तब लक्ष्मीनारायण तुमसों कहै हैं कि अब ऊपर गैबगुफा में जायकै आठौप्रकारके मैथुन जीति लेहु अबै एकही प्रकार जीत्यो है तब तुम उहां जाउहौ सो आगे कहैहैं ॥ ६ । ७ ॥

तबसनकादिकतत्त्वबिचारा। जैसेरङ्कधनपाव अपारा ८
भोमर्यादबहुतसुख लागा। यहिलेखेसबसंशय भागा ९

सो जब गैबगुफा में ध्यान लग्यो ज्योति में मिल्यो तब सनकादिक कहे हे जीवो! तुम सब वाहीको सखस्युतत्त्व विचारौहौ कैसे जैसे रङ्क अपारधन पायकै परमतत्त्व मानै है ८ भो मर्याद ब्रह्म जो ज्योति तामें जब आत्मा को मिलायो ज्योतिही ह्वैगयो यहीं तक मर्याद है या मान्यो तब तुमको बहुत सुख लागतभयो अर्थात् वाही में मग्न होइजातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागि गई परन्तु संशय नहीं गई सो आगे कहैहैं ॥ ९ ॥

देखतउतपति लागु न बारा। एकमरैयककरैबिचारा १०

हे जीवो! तुम या देखत हौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्न होत बार नहीं लगै है तो संसार कबै छूट्यो और येहू देखतहौ कि एकै मरै हैं तिनको लाय आय गैबगुफा जरिगई औ फिर वही गैबगुफा में प्राण चढ़ाइ मुक्ति को विचारौ हौ अर्थात् मुक्ति चाहौहौ सो हे जीवो! तुम सब विचारौ तो जो समाधि सुख नित्य होतो तो कैसे मिटि जातो ताते नित्य नहीं है ॥ १० ॥

मुयेगयेकी काहु न कही। झूंठीआशलागिजगरही ११

तुम्हारे गुरुवालोग मरे मरिकै कहांगये कौनी गति को प्राप्त भये या निकासकी बात तो काहू न कह्यो सो तो तुम सब न बिचार्‌यो धोखाब्रह्म होबेकी जो झूंठी आशा ताही में तुम सब लागि रहेहौ मोको न जानतभये ॥ ११ ॥

साखी ॥ जरतजरतसेबाचहू, काहे न करहु गोहारि ॥
बिषबिषयाकैखायहू, रातिदिवसमिलिभारि १२

प्रथम तो हे जीवो ! नानायोनि नरक गर्भवास के जठराग्नि में जरत जरत से बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भबास ते निकसे सो गर्भबास को दुःख तौ तुमको भूलिगयो और जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो बिषरूपी जो विषय ताही को राति व दिन खायहु अर्थात् भारि विषयही भोग कीन्हों मेरी शरण को काहे न गोहरायो जे मेरी शरणको गोहरावैहैं तेई बचे हैं सो हे जीवो ! जब मेरी शरण को गोहरावोगे तबहीं बचोगे मेरी या प्रतिज्ञाहै जो कोई मेरी शरणको गोहरावै है ताको मैं बचायही लेउहौं गोहारिको अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सो साहब शरणगये रक्षा करतही हैं तामें प्रमाण "सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम १" (इति वाल्मीकीये) ॥ १२ ॥

इति तेरहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवीं रमैनी ॥ १४ ॥

गुरुमुख ॥ बड़सो पापी आयगुमानी । पाखँडरूपछलोनर जानी १
वामनरूप छल्यो बलिराजा । ब्राह्मण कीन कौन कर काजा २
ब्राह्मणही सब कीन्हों चोरी । ब्राह्मणही को लागी खोरी ३
ब्राह्महि कीन्हों ग्रन्थ पुराना । कैसेहुकै मोहिं मानुष जाना ४
यकसे ब्रह्मै पन्थ चलाया । यकसे हंस गोपालहि गाया ५
यकसे शम्भू पन्थ चलाया । यकसे भूत प्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा । यकसे निहुरिनिवाज गुजारा ७
कोउ काहूको हटा न माना । झूठाखसम कबीर ने जाना ८
तन मन भजिरहु मेरे भक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता ९
आपुहि देव आपुही पाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूत संसारनिवासी । आपुहिखसमआपुसुखरासी ११

कहते मोहिं भये युगचारी। काके आगे कहौं पुकारी १२

साखी॥ सांचे कोइ न मानई, झूठाके सँगजाय॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

बड़ोसोपापी आयगुमानी। पाखँडरूपछलोनरजानी १
वामनरूपछल्योबलिराजा। ब्राह्मणकीनकौनकरकाजा २

साहब कहैहैं तैं बड़ोपापी है बड़ोगुमानी है काहेते कि मैं येतो समझाऊं हौं तैं नहीं समझैहै सो मैं जान्यो पाखण्डरूप जो धोखा ब्रह्म ताते हे नर! तुम छलेगये और जिनको छल्यो तिनको कहै हैं १ वही माया शबलित ब्रह्म वामनरूप करिकै बलिराजाको छल्यो है सो या ब्राह्मण जो माया शबलित ब्रह्म सो कौनको काज कीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है॥ २॥

ब्राह्मणहीसब कीन्होंचोरी। ब्राह्मणहीको लागी खोरी ३

वही ब्रह्म सबकी चोरीकियोहै काहेते कि माया तो जड़ है यह चैतन्य है ब्रह्महीं माया शबलित ह्वै मायहूको कर्ताकै मेरे सांचेज्ञानको संसार में शाकादिक पदार्थ बनाइ चोराइ राख्यो है सो जब व्यापकरूप ते सब पदार्थ ब्रह्मही ठहरयो और ब्रह्मही के संयोगते माया कर्ता भईहै तब ब्रह्महीको खोरिलगी कि वही सब करै है॥ ३॥

ब्रह्महिकीन्होंग्रन्थपुराना। कैसेहुकैमोहिंमानुषजाना ४

वही माया शबलित जो ब्रह्म है ताहीते सब वेद पुराण निकसे हैं ताहीते नानामत भये कोई निराकार ब्रह्मही कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये तुम सब बसहु जो निर्गुण के सगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्य ताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसेहुके कहे जस तसकै कोई बिरले सन्त जानै हैं और नहीं जानैहैं अथवा मोको सब बातके जनैया श्रीरामचन्द्रको सांच मनुष्यरूप है तामें प्रमाण "आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्" इति और जे नानापंथ वेदते निकसे तिनको आगे कहैं

अर्थ दशन्तिमयानितिदशः गरुडः सरथोयस्यसःदशरथःविष्णुः स एव आत्मजोयस्यसः दशरथात्मजः तम् ॥ ४ ॥

यकसेब्रह्मैपन्थचलाया । यकसेहंसगोपालहिगाया ५

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत ब्रह्मै नानाशास्त्र के नानापन्थ चलावतभये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को विचारकरत हंस जो जीव सो गोपालहि गावतभये अर्थात् गो जो इन्द्रिय ताको पालनवारो जो मन ताहीको गावतभये अर्थात् मनमुखी पन्थ चलावत भये और ब्रह्माने वेद कह्योहै वेदते सब मत निकसे हैं जीवनको जो जुदे करिकै कह्यो सो मेरे सम्मुख को जो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नानादेवतन यज्ञादि में लगाय दीन्हे ॥ ५ ॥

यकसे शम्भू पन्थ चलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ७

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजी को तामसमत चलावत भये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताहीको प्रतिपादन करत जीवनको मन भूत प्रेत देव सब लगायदेतेभये अर्थात् माया में अरुझाय देतेभये ६ यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाज गुजारत भये ॥ ७ ॥

कोउकाहूको हटा न माना । झूठाखसमकबीरने जाना ८
तनमन भजिरहुमेरेभक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता ९

कोऊ काहूको हटको न मानतभये झूठा जो धोखाब्रह्म ताही को दृढ़करिकै कायाके वीर जे जीव ते नाना देवतनसोते खसम जानत भये कोई महीं ब्रह्महौं या मानत भये खसम जो परम पुरुष मैंहौं ताको तुमसब न जानतभये ८ तनमनते मोहीं में लगो तबहीं तिहारो उबार होयगो सो हे कबीरजी ! वो एकतो

तुम सत्यहौ और एकजो तिहारे समुझावनवालो वक्ता मैं सो सत्य हौं और सबझूठे हैं वही ब्रह्म चारों ओर ह्वैगयो है यह द्वैमत देखायो तामें प्रमाण "सत्यमात्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः" ॥ ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूतसंसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११
कहतेमोहिंभयेयुगचारी। काके आगे कहौं पुकारी १२

और वही माया शबलित ब्रह्म आपुही देवता ह्वै गयोहै आपुही फूल पाती हैं आपुही पूजा करनवालो है आपुही कुल जाति है १० सो या भांतिते वही ब्रह्म सर्वभूत में निवासी ह्वैकै आपुही खसम ह्वै रह्योहै औ जामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसी सुख-राशी नारी ह्वै रह्यो है ११ सो यह बात चारोयुग मोको कहत भयो काके आगे पुकारिकै कहा कोई समुझै या धोखाब्रह्म को नहीं देखो परै ॥ १२ ॥

साखी ॥ सांचे कोइ न मानई, झूठाके सँग जाय ॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

सांचो मैं सांचे तुम जीव यह मत तो कोई नहीं मानै है झूठा जो वह ब्रह्म ताके संग सबजाय हैं अर्थात् वहीको सर्वस्व मानै हैं सो झूठा वह ब्रह्म और झूठा ज्ञानवाला जो जीव सो मिलिकै अहमक खेहा खाय है अर्थात् मरयो तब राख खाय है जनन मरण नहीं छूटै है ॥ १३ ॥

इति चौदहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवींरमैनी ॥ १५ ॥

चौ० उनई बदरिया परिगै सांझा। अगुवा भूले बनखँड मांझा १
पियअनतै धन अनतै रहई। चौपरि कामरि माथेगहई २

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होइ ३

उनईबदरियापरिगैसांझा। अगुवाभूलेवनखँडमांझा १

भ्रमकी बदरीओनई परिगै सांझा कहे जगत् में अँधियारी है गई साहबको ज्ञानरूपी रवि मूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखण्ड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलिगये कोई भैरव कोई भवानीको कोई गणेशको इत्यादि नाना देवतनकी उपासना करतेभये और शास्त्रहु में नानामत होतभये कोई कर्मको कोई ब्रह्मको कोई प्रकृतिपुरुषको कोई ईश्वरको कोई कालको कोई शब्दको कोई ब्रह्माण्डमें ज्योतिको प्रधान मानतभये और तिनहूंमें एकएक मतनमें अनेक मत होतेभये और मुसल्मानहूंके मजहबमें तिहत्तरि फिरके होत भये एकमें तो मुक्ति होती है औरनमें नहीं होती सो जो जौने फिरकेमें पराहै सो ताही को मुक्तिवाला मानेहै सो या एक सिद्धन्त ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेद ब्रह्मा ते पूछ्यो तब ब्रह्मै संभ्रमपूर्वक सबको शेष के पास पठयो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य सिद्धान्त सब को समुझायो है सो आदिमङ्गलमें लिखि आयेहैं और मेरे बनाये रामायणके अन्तहूमें लिख्यो है सो या हेतुते कबीरजी कहै हैं कि अगुवा जे ब्रह्मा तिनहींको भ्रम भयो है ॥ १ ॥

पियअनतै धन अनतैरहई। चौपरिकामरिमाथेगहई २

पियतो साहबहै और पियके मिलनवारो जो जीवनको ज्ञान सोई धन है सो दोऊ अनतही रहैहैं कोई बिरले सन्त पावैहैं चौपरि जो चारौ वेद तिनकी कामरि ऐसी भारी शीशपर धरे अपने अपने मन को अर्थ करैहैं वेदको सिद्धान्त नहीं पावैहैं अथवा चौपरि जो चारो खानिके जीव ते कर्मरूप जो है कामरि ताको कांधे में धरे हैं ॥ २ ॥

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखीसों रोय ॥
ज्योंज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारीहोय ३

जीव जे हैं ते अनु हैं अल्पबुद्धि हैं कर्मकाण्डरूप जो फूल ताही

को भार नहीं सहिसक अर्थात् सोई नहीं समुझिपरै ब्रह्मविचार कैसे समुझिपरै सो वेदरूप कामरी कांधेधरे जब ब्रह्मविचार करनलगे निषेध करत करत तब विचार में ब्रह्म न आयो तब सखी जे जीव हैं तिनते रोइकै कहतेहैं नेति नेति इतनै नहीं है अबै और कछु है नहीं समुझिपरै यही रोइबो है सो ज्यों ज्यों वेदरूप कामरी भीजैहै कहे विचारत जाइहैं त्यों त्यों भारीहोत जाय है अर्थात् गहिरो अर्थ होत जाय है सो कैसे समुझिपरै वातो धोखाब्रह्म कुछ वस्तुही नहीं है ॥ ३ ॥

इति पन्द्रहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १५ ॥

अथ सोलहवीं रमैनी ॥ १६ ॥

चलत चलत अतिचरण पिराने। हारिपरे तहँ अतिखिसिआने १
गण गन्धर्व मुनि अन्त न पाया। हारि अलोप जग धंधे लाया २
गहनी बन्धन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ३
भूलिपरे जिय अधिक डेराई। रजनी अन्धकूप है जाई ४
माया मोह उहां भरि भूरी। दादुर दामिनि पवनहु पूरी ५
बरसै तपै अखण्डित धारा। रैनि भयावनि कछु न अहारा ६
साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अन्धा सभै भुलान ॥
कहा कोइ नहिं मानहीं, सब एकैमाहँ समान ७

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँअतिखिसियाने१

नाना मतमें लगे जीव तिनके चरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात् थकिआये मति नहीं पहुँचे एकहू शास्त्रके विचारके पार न गये अतिरेसयान पाठ होय तो यह अर्थ कि बड़ सयानो रहे तेऊ हारिगे तामें प्रमाण "इन्द्रादयोपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः। प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम्" तब खिसिआइकै यह कहते भये ॥ १ ॥

गणगन्धर्वमुनिअन्तनपाया।हरिअलोपजगधन्धेलाया२

जौने ब्रह्मको अन्त गन्धर्व और मुनिनके गण नहीं पायो ताको

हम कैसे जानिसकैं जो ब्रह्मको साकार कहै हैं तो मध्यम प्रमाण में आयजाय हैं अनित्य होय है और जो ब्रह्मको निराकार कहै हैं तो जगत्का कर्तृत्व सिद्धान्त न भयो कबीरजी कहैहैं कि कैसे होयगा संदेहमें परे जैसे हरिहैं तैसे विना सद्गुरुके बताये तो ज्ञानत ही नहीं हैं यहिते हरि अलोप कहे हरि अप्रकट भये तिनके विना जाने जगत्के धन्धे में जीव सब अपनो मन लगायराख्यो॥ २॥

गहनी बन्धन बांध न सूझा । थाकिपरे तब कछू न बूझा३

गहनी बन्धन जो माया शबलित ब्रह्म जौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसो जो ब्रह्म ताको बांध जीवनको न सूझिपस्यो कौन बांध कि जो कोई मोहींमें लगैहै तो मैं बांधिकै संसारमें डारि देउँ हौं या माया शबलित ब्रह्मको बांध न सूझि पस्यो जो कहो काहेते बांध बांध्यो है तो जगत् की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याही ते जो कोई वामें लगै है ताको साहब को ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखै है सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसार में थाकिपरे तब कछू न बूझत भये अर्थात् अनेक मतनको विचारै है पै सिद्धान्त न पावत भये साहब को ज्ञान भूलिगये ॥ ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराई । रजनी अन्धकूप ह्वै जाई ४
मायामोह उहां भरि भूरी । दादुरदामिनिपवनहुपूरी५
बरसै तपै अखण्डितधारा । रैनिभयावनिकछुनअहारा६

सो जब साहबको ज्ञान भूले संसारमें परे तब अधिक डर आवत भयो काहेते कि मूला अज्ञानरूप रजनीकी बड़ी अँधियारी होत भई कछू न सूझिपस्यो काहेते कि "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै लीन ह्वैकै वही संसारमें पस्यो जहां माया मोह भूरि भरे हैं तब तो माया कारणरूपा रही है अब कार्यरूपा भई बहुत मोहादिक होतभये तामें परे जैसे दादुर बोलै हैं अर्थ कछू नहीं है तैसे उनको वेदको पढ़िबो है अर्थ नहीं जानै हैं जो काहूके कहे कछू ज्ञान भयो

तब दामिनी कैसी दमक ह्वै जायहै कछु हृदय में नहीं ठहरायहै और पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायकै योग करिये तो श्रम करै है कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखण्डधारा अमृत वर्षाइ नागिनी उठाइ समाधिकरैहै और कोई तपै अखण्डित धारा कहे पांचहज़ार कुम्भक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनीको जगाय प्राण चढ़ाय समाधि करैहै तहाँ भयावनि रैनि जो मूला अज्ञानकी अँधियारी ताहीमें पर्‍यो अर्थात् जबतक ज्योति देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योति में लीन ह्वैगयो तब सुषुप्ति ऐसे में परयो रह्यो यही भयावनि रैनिहै भयावनि को हेतु यहहै कि प्राण के उतरिबेकी अवधि बनी है॥ ४। ५। ६॥

साखी॥ सबैलोगजहँडाइया, औ अन्धासभैभुलान॥
कहाकोइनहिंमानही, सब एकैमाहँ समान ७

और जे मायाते सभयरहे डेराते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहेकिकै औरई और मतनमें लगिगये और जे अज्ञान आंधरे रहैं ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपावै न किये भूलिही गये सो कबीरजी कहै हैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानै है सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यर्थः और साहब को विना जाने ब्रह्महूमें लीनह्वै संसारहीमें आवै हैं वाको प्रमाण पीछे लिखि आये हैं॥ ७॥

इति सोलहवींरमैनीसमाप्तम्॥ १६॥

अथ सत्रहवीं रमैनी॥ १७॥

चौ० जसजिवआपुमिलैअसकोई। बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासों बात रामकी कही। प्रीति न काहूसों निर्बही २
एकैभाव सकलजग देखी। बाहेर परै सो होयबिबेकी ३
बिषयमोहके फन्दछोड़ाई। जहांजायतहँ काटु कसाई ४
आय कसाई छूरी हाथा। कैसेहु आवै काटों माथा ५

लगे हैं ते पशु हैं उनको ऐसही गला काट्यो जायहै ये कसाई श-रीर को गला काटैहैं यहौ द्वैतज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गला काटै हैं जो संसार में रहतो तो कबहूं दैवयोगते साधुसंग भयो उद्धारहू होतो सो तौने धोखाब्रह्म में लगाय दियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावैंगे ॥ ४ ॥

आय कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटौं माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६

कसाई जे गुरुवालोग तिनकी बनाई पोथी सोई छूरी हाथ में लीन्हे यह ताकेहैं कि कैसेहुकै कौन्यो मतको आवै तो ठगिकै अपने मतमें कैलेइँ माथ काटिलेयँ कहे मूड़िडारैं चेला करिलेयँ सो साहबको छोड़ाइ और और में लगावन वारोहै सो गुरु कसाई है ५ मनुष्य जे बड़े बड़े ज्ञानीलोग हैं ते यही पढ़ावतभये कि एक वही ब्रह्म है जीव नहींहै और कोई या पढ़ाया कि एक जीवही सांच है और सब असांच है ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई । नहिंतौनिश्चयजाहुबिगोई ७

जौन पढ़ना तुम गुरुवालोगनते पढ़्यो है सो अब जनि गोइ राखो और जो गोइराखोगे तो कुमतिही में परेरहौगे जो गोइ न राखोगे तो सन्तलोग समुझायकै भ्रम काटिडारैंगे कैसे कि जो एकब्रह्म होतो तो भ्रम कौन को होतो और जो एक जीवही साहब होतो तो बँधि कैसे जातो सो माया तो बांधनवाली है और जीव बन्धनधारी है और साहब छुड़ावनवालो है यह विचारि साहबको जानो साहब छुड़ाय लेइँगे नहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमति में लागि कै बिगरिजाहुगे ॥ ७ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसुरामको, औछांड़हुदुखकीआस ॥
तर ऊपर धरि चापिहैं, जसकोल्हूकोटिपचास ८

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरन करौ धोखा ब्रह्म और माया इनकी दुःखरूप जो आश सो छांड़ो जो न

छांड़ोगे तो तरे तो मायारूप कोल्हू ऊपर ब्रह्मरूपजाठमें तुमको पेरिडारैगो पचासकोटि कोल्हू कह्यो सो अगणित ब्रह्माण्ड हैं तामें डारिकै ॥ ८ ॥

इति सत्रहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अठारहवीं रमैनी ॥ १८ ॥

चौ० अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई। भूले राम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतौ जिय जरि मूलै जाई २
शब्द न मानै कथै बिज्ञाना। ताते यम दीन्ह्योहै थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा। ते खायल अनबेधल हीरा ४
साखी ॥ संशय साउज देह में, संगहि खेलै जुआरि ॥
ऐसा घायल बापुरा, जीवन मारै झारि ५

अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई। भूलेराम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतौजियजरिमूलैजाई २

अद्भुत पन्थ जो ब्रह्म ताको वर्णत कोईने अन्त नहीं पायो राम जे साहब हैं तिनके भूले कहे बिना जानेते सब दुनिया धोखाब्रह्म माया में भूलिगई १ हे भाइउ! चेतौ तौ चेतौ नहीं तो मायाब्रह्म की आगिमें जरिकै मूलते जाउगे यह कबीरजी कहै हैं नहीं तो यम जीव लैजाइँ जो यह पाठ होय तो यह अर्थ है कि चेतौ तो चेतौ नहीं तो यम लैजायके नरकमें डारिदेइँगे ॥ २ ॥

शब्द न मानै कथै बिज्ञाना। ताते यम दीन्ह्योहै थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा। तेखायल अनबेधलहीरा ४

विज्ञानहूको सार जाते सब शब्द निकसेहैं ऐसो जो रामनाम ताको तो मानै नहीं है और और मतमें लगिकै विज्ञान कथै हैं ताते यमराज जो जैसो कर्मकैरहै ताको तैसो नरक स्वर्गको थान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मन सो शरीररूपी वनमें बसिकै अनबेधल कहे जाको यश रामनाममें नहीं है ऐसो जो हीरा जीव ताको खायगयो कौनी रीतिते खायो सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें, संगहिखेलैजुआरि ॥
ऐसा घायलबापुरा, जीवनमारै झारि ५

जैसे शिकारी बाघको मारै है जो बाघ घायल भयो तो शिकारीको धरिडारै है तैसे संशय साउज जो व्याघ्ररूप मन सो देहरूपी वनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलैहै जब मनोवासना छैकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वैबो है सो व्याघ्ररूप जो मन है सो घायल ह्वैकै बापुरे जे सबजीव हैं तिनको झारादैकै मारै है अर्थात् सबको वही माया धोखाब्रह्ममें लगायदियो और जो यह पाठ होय कि "ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै झारि" तो यह अर्थहै कि ऐसा घायल कहे घाती जो मन सो बापुरे जीवनको झारादैकै मारैहै जनन मरण देइहै ॥ ५ ॥

इति अठारहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवीं रमैनी ॥

चौ० अनहदअनुभवकीकरिआशा। देखो यह बिपरीततमाशा १
यहै तमाशा देखहु भाई। जहँ है शून्य तहां चलिजाई २
शून्यहिबाञ्छा शून्यहिगयऊ। हाथा छोड़ि बेहाथा भयऊ ३
संशय साउज सब संसारा। काल अहेरी सांझ सकारा ४
साखी ॥ सुमिरन करहु सो रामको, काल गहे है केश ॥
नाजानौं कब मारि है, क्या घर क्या परदेश ५

अनहदअनुभवकीकरिआशा।देखोयहबिपरीततमाशा १

अनहद शब्द सुनत सुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू विचारै है कि ब्रह्म मैंहीहौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरहीको है वह ब्रह्म मेरही अनुभव है यह बड़ो तमाशा है ताही की आशाकरै है यह बड़ी विपरीत है ॥ १ ॥

यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई २
शून्यहिबाञ्छाशून्यहिगयऊ। हाथाछोड़ि बेहाथा भयऊ ३

सो हे भाइयो, हे जीवो ! यह तमाशा तुमहूं अनेकन जन्म ते देखते आये हौ परन्तु जहां शून्य है तहां जाइकै मुक्ति ह्वैबो चाहौहौ तुम या नहीं विचारौहौ कि शून्य जो धोखाब्रह्म तामें जो हम जाँयगे तो हमारी मुक्तिकी वाञ्छहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्य है आपनेते झूठेमें बांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहे धोखाब्रह्म के हाथ में ह्वैजाउ हौ अथवा कबीरजी छूट जीवनते कहै हैं हे भाइयो ! देखौ तो तमाशा ये जीव जहां शून्य है धोखा है तहां सब चलेजायँ हैं जौने ज्ञान में साहब भरेपूरेहैं तहां नहीं जायँहैं ॥ २ । ३ ॥

संशय साउज सब संसारा । कालअहेरी सांझसकारा ४

संशय कहे मनरूप जो साउज ताहीको सकल कहे सुरतिया संसार ह्वैरह्यो है अर्थात् मनरूप जीव ह्वैरह्यो है संकल्प विकल्प सब कैरहे हैं सो अहेरी जो काल शिकारी सो सांझ सकार कहे काहू को जन्मतमें मारैहै आदि अन्त कहे मध्यको काल है काहू को आयुर्दायके अन्तमें मारैहै यम वो ॥ ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसोरामको, काल गहे है केश ॥
नाजानों कब मारिहै, क्या घर क्या परदेश ५

सो कबीरजी कहै हैं कि परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो काल है सो केश करमें गहे है या नहीं जानौ हौ धौं कब मारै या घर में या परदेश में अर्थात् साहब के विना स्मरण घर में रहोगे तो न बचोगे जो बनमें जाउगे तो न बचोगे ॥ ५ ॥

इति उन्नीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १९ ॥

अथ बीसवीं रमैनी ॥ २० ॥

चौ० अबकहुरामनामअविनासी । हरितजिजियराकतहुँनजासी १
जहां जाहु तहँ होहुपतङ्गा । अबजनिजरहुसमुझिविषसङ्गा २

रामनामलौलायसोलीन्हा। भृङ्गीकीट समुझि मन दीन्हा ३
भो अतिगरुवा दुखकै भारी। करुजियथतन सो देखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा। त्वहिं नहिं सूझै वार न पारा ५
साखी ॥ इच्छाको भवसागरै, बोहित राम अधार ॥
कहैंकबिरहरिशरणगहु, गोबछखुर बिस्तार ६

अबकहुरामनामअबिनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी १

अविनाशी जो रामनाम ताको अबहूं कहु हरि कहे भक्तन के आरति हरणहारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हे जीव! और मतन में कतहुँ न जा अर्थात् चित चित्तते विग्रह करि सर्वत्र साहिबै को देखु ॥ १ ॥

जहाँजाहुतहँहोहुपतङ्गा।अबजनिजरहुसमुझिबिषसङ्गा २

जौनेन मतमें जाहु हौ तहां पतङ्गही से जरिजाउहौ सो संग जो विषाग्नि ताको समुझि अब जनि जरहु अर्थात् जो इनको संग करहुगे तो मन इन्द्रियादिकन को विषय जो सिद्धान्त कीन्हे है ताहीं में तुमहूंको लगाइ देयँगे तो संसारहीमें परे रहोगे ताते इनको संग त्यागि रामनाम जपौ जो कहौ कौनी रीतिते जपैं राम नाम तो मन वचनके परे है सो आगे कहै हैं ॥ २ ॥

रामनामलौलायसोलीन्हा। भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा३

रामनाम में सो लौ लगाय लीन है कौन जौन भृङ्गी और कीट की ऐसी गति समुझिकै अपने मन दीन्ह है अर्थात् जैसे कीट भृङ्गी को देखत देखत वाको शब्द सुनत सुनत वाको डेरात डेरात तदाकारकैह्वै भृङ्गीहीरूप ह्वै जाय है तैसे रामनाम जपत जाइ है वाको सुनत जाइ है जगत्मुख अर्थते डेरात जायहै और साहब मुख अर्थमें साहबका रूप और अपनो हंसस्वरूप विचारत निज हंसरूप में तदाकार ह्वैजाय है मनआदिक मिटिजाय है शुद्ध रहिजाय है सो अपनेरूप पाय जाय है तब मन वचन के परे जो रामनाम सो आपनेते स्फूर्ति होइ है तामें लौ लगायकै जैसे कीट

भृङ्गी बनिकै औरे कीटको भृङ्गी बनावै है तैसे यहाँ जीव उपदेश करिकै औरेहू को हंसरूप बनावै है सो जो भृङ्गी को शब्द कीट न ग्रहण करै तो कीटही रहिजाय ऐसे जो रामनाम को जीव न ग्रहणकरै तो असारही रहिजाय है तामें प्रमाण अनुरागसागरको " ज्यों भृङ्गी गै कीटके पासा । कीटहि गहि गुरगमि परगासा ॥ बिरला कीट होय सुखदाई । प्रथम अवाज गहै चितलाई ॥ कोइ दूजे कोइ तीजे मानै । तन मन रहित शब्दहित जानै ॥ तब लैगे भृङ्गी निजगेहा । स्वाती दैकर निज समदेहा " ॥ ३ ॥

भोअतिकरुवादुखकेभारी । करुजिययतनजोदेखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा। त्यहिंनहिंसूझैवार न पारा ५

यह संसार भारी दुःख करिकै अति गरुवा बोझा है जीव तू विचारि देखु जो तोको बोझालगै तो रामनामको यतन करु ४ मनकी बात कहे मनते गुरुवनको धोखाब्रह्म तेहिते उठी जो विकाररूप लहरि माया ताको कौनो मन कहिकै तोको वारपार नहीं सूझै है ॥ ५ ॥

साखी ॥ इच्छा के भवसागरै, बोहित रामअधार ॥
कहैं कबीरहरिशरणगहु, गोबछखुरबिस्तार ६

यह जो समष्टि जीवको इच्छारूप भवसागर तामें बोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहीं है सो कबीरजी कहैहैं हरि जे साहेब हैं तिनकी शरण गहु यह भवसागर गऊके बछवा के खुरके सम उतरि जायगो यामें संदेह नहीं है ॥ ६ ॥

इति बीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २० ॥

अथ इक्कीसवीं रमैनी ॥ २१ ॥

चौ० बहुत दुखैहै दुखकी खानी । तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहि जानि युक्ति जो चलई । युक्तिहिते फन्दा नहिं परई २
युक्तिहि युक्ति चलत संसारा । निश्चयकहा न मानुहमारा ३

कनककामिनी घोरपटोरा । संपति बहुत रहे दिन थोरा ४
थोरेहि संपतिगो बौराई । धरमरायकी खबरि न पाई ५
देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई । अमृत धोखे गो बिष खाई ६
साखी ॥ मैं सिरजों मैं मारहूं, मैं जारों मैं खाउँ ॥
जल थल मैंहीं रमिरह्यों, मोर निरञ्जन नाउँ ७

बहुतदुखेहैदुखकीखानी । तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजोचलई । युक्तिहितेफन्दानहिंपरई २
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा । निश्चयकहानमानुहमारा ३

यह दुःखकी खानि जो संसार सो बहुत दुःख है अर्थात् बहुत दुःख देइ है तुम तबहीं याते बचौगे जब सबके मालिक रक्षक जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानौगे आन उपाय न बचौगे १ काहेते जे श्रीरामचन्द्र को जानिकै युक्ति सहित चलैहैं तेई वही युक्तिहीते संसारके फन्दा में नहीं परैहैं सो कबीरजी कहै हैं सो युक्ति आगे लिखैंगे २ या संसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलै है कबीर जी कहै हैं मैं जो निश्चय बात कहौ हौं कि रामनामहीते तेरो उद्धार होयगो याकी युक्ति कोई नहीं मानै है अपनेही मनकी युक्ति चलै है ॥ ३ ॥

कनककामिनी घोरपटोरा । संपति बहुत रहे दिनथोरा ४
थोरेहि संपति गो बौराई । धर्मराजकी खबरि न पाई ५

कनक जोहै कामिनी जोहै घोड़े जेहैं हाथी जेहैं पटम्बर जेहैं ये संपति तो बहुत हैं परन्तु इनके भोग करिबेको दिन तो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतो भोग में बितावै है साहबको कब जानैगो ४ सो तैंतो थोरही संपति में बौराय गयो धर्मराज की खबरि तैं नहीं पाई कि जब मोको धरिलैजाइँगे तब सारी संपति हियई परी रहिजायगी तब कौन भोगकरैगो यह बिचारि साहब को जानो ॥ ५ ॥

देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई । अमृतधोखेगोबिषखाई ६

और दैवयोग जो कदाचित् तुम्हैं धर्मराजको त्रास देखिकै मुख जब कुम्हिलायगयो कहे संसारते वैराग्यभयो तब गुरुवा लोगनके निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं अमृत हौं मन मायादिक ते भिन्न हौं सो बात तो तू सांच विचारी ऐसही है प-रन्तु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूपमें है सो गुरुवालोग नहीं बतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताही के धोखे ते 'अहंब्रह्मास्मि' विष खायगयो भगवत्दास आपने को न मान्यो साहबको न जान्यो सर्वत्र मैंही हौं या मानि कहनलाग्यो ॥ ६ ॥

साखी ॥ मैं सिरजौं मैं मारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथल मैंहीं रमिरह्यों, मोरनिरञ्जननाउँ ७

और मैंहीं जगत्को सिरजौं हौं, महीं मारा हौं, महीं जारौं हौं, जौने अग्निते जारौं हौं ताको महीं खाउँ हौं और जल थल में मैंहीं रमि रह्यो हौं मोर निरञ्जन नाउँ है कैवल्य महीं हौं और अञ्जन जो माया ताते शबलित ह्वैकै मैंहीं सब करौ हौं ॥ ७ ॥

इति इक्कीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवीं रमैनी ॥ २२ ॥

चौ० अलखनिरञ्जन लखै न कोई। जेहिके बँधे बँधा सबकोई १
जेहि झूठो सो बँधो अयाना। झूठी बात सांच कै माना २
धन्धा बँधा कीन्ह ब्यवहारा। कर्म बिबर्जित बसै निनारा ३
षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि बृक्ष छाशाख बखानै। बिद्याअगणित गनै न जानै ५
औरौ आगम करै बिचारा। तेहि नहिं सूझै वार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता। दान पुण्य औ किये बहूता ७

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठै धाइकै, बिन शिर सेंतीजाइ ८

अलखनिरञ्जनलखै न कोई। जेहिके बँधे बँधा सबकोई १
जेहिभूठोसोबँधोअयाना। भूठी बात सांचकै माना २
धन्धाबँधाकीन्ह ब्यवहारा। कर्मबिबर्जित बसै निनारा ३

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव! तूतो आपनेको निरञ्जन मान्यो सो निरञ्जन तो अलख है वाको कोई नहीं लखै है जाके बँधेते कहे मायामें सबकोई बँधेहैं १ हे अजानो! जौने भूठे सो तुम बँधो हौ सो भूठही है तुम सांच मानो हौ सो न मानौ २ धन्धा जो साहबकी सेवा ताको बँधा कहे बांधनवारे तौनेको व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्मते वर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहै है या परमार्थ तुमलोग कहौ हौ और वाही में आरूढ़ होत हौ साहबको नहीं जानौ हौ ॥ ३ ॥

षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारिबृक्ष छा शाख बखानै। बिद्याअगणितगनै न जानै५

षट्रसनको खोटमानि त्यागन करिकै और षट् आश्रम करिकै षट् दर्शन करिकै वही धोखाब्रह्महीको सिद्धान्त मानते भये ४ पुनि चारि वेद, छवोशास्त्र, अगणितविद्या वाच्यार्थ करिकै धोखाब्रह्मको कहैहैं ताको तो तुम ग्रहणकियो तात्पर्यवृत्ति ते जो साहबको कहै है सो तुम न जानत भये ॥ ५ ॥

औरौ आगम करै बिचारा। त्यहि नहिं सूझैवार न पारा६
जप तीरथ ब्रत पूजेभूता। दान पुण्य औ किये बहूता७

अरु औरौ आगम जेहैं ज्योतिष यन्त्र मन्त्र आदि दैकै तेऊ तात्पर्यवृत्तिते जौने साहबको कहै हैं ताको वार पार तो तुमको न सूझिपर्‍यो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखाब्रह्म ताही में लागत भये और और देवता ६ सो यहिप्रकार नानामतन करिकै मानते भये कोई नानादेवतन के जप किये, कोई तीर्थ किये, कोई व्रत किये, कोई भूतनकी पूजा किये कोई दान किये कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्म ते किये ॥ ७ ॥

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जा कोइ पैठै धाइकै, बिन शिरसेंती जाइ ८

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखाब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो नेहको मन्दिर है तामें तू धायकै मति पैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तो बिन शिर कहे सबके शिरे जे साहब तिनके विना सेंतिही जाइगो कछु हाथ न लगैगो तेरे साधन मुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होइँगे अथवा तुम्हारो माथा काटो जायगो वृथा मारेजाउगे ॥ ८ ॥

इति बाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवीं रमैनी ॥ २३ ॥

चौ० अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता।मन भुलान मैगर मैंमन्ता १
सुख बिसराय मुक्तिकहँ पावै ।परिहरिसांच भूंठनिजधावै २
अनल ज्योति दाहै यकसङ्गा । नयन नेह जसजरै पतङ्गा ३
करु बिचार ज्यहि सबदुख जाई। परिहरि भूंठा केरि सगाई ४
लालच लागे जन्म सिराई । जरामरण नियरायल आई ५
साखी ॥ भ्रमको बांध लई जगत, यहिबिधि आवहि जाय ॥
मानुष जन्महि पाइ नर, काहे को जहँडाय ६

अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता।मनभुलानमैगरमैंमन्ता १
सुखबिसरायमुक्तिकहँपावै । परिहरिसांचभूंठनिजधावै२
अनलज्योति दाहै यकसङ्गा । नयननेह जसजरैपतङ्गा३

जौने संसार में अलप तो सुख है और आदिहू में अन्तहू में दुख है ऐसे संसार में मैगर मैंमन्ता कहे मतवारो हाथी जो मन सो भुलाइकै मैंमंता कहे महीं ब्रह्म हौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देह हौं या मानिलियो १ सुखरूप जे साहब हैं तिनको बिसरायकै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहां पावै सांचको छोड़िकै भूठ जो धोखाब्रह्म है तामें तो धावै है यह जीव कैसे सुख पावै २ अनल-

ज्योति जो ब्रह्म है सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहै है अग्नि ब्रह्म को नाम है "अज्ञात्वादग्निनामासौ" कैसे दाहै है जैसे नयननेह कहे देखनके लालच लगे दीपककी ज्योति में पतङ्ग जरै हैं ॥ ३ ॥

करुबिचारज्यहिसबदुखजाई । परिहरिझूठाकेरिसगाई ४
लालच लागे जन्म सिराई। जरामरण नियरायलआई ५

झूठ जो या धोखाब्रह्म है और अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागिकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको विचार करु जाते तेरे सब दुःख जाइँ ४ धोखा ब्रह्मके लालच में लगे कि हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याही में लगे लगे जन्म सिराय गयो जरा जो बुढ़ाई और मरण सो नियराय आयो ॥५॥

साखी ॥ भ्रमको बांधलई जगत, यहि बिधि आवैजाय ॥
मानुषजन्महि पाय नर, काहे को जहँडाय ६

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत् है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै और जाइ है कहे लीन होइ है "मानुषजन्महि पाय नर, काहेको जहँडाय" कहे काहे जड़वत् होय है मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि मनुष्य के मनुष्यै होय हैं हाथी के हाथी होय हैं कछू हाथी के मनुष्य नहीं होय हैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्म को हो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्यरूप जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनही को है ॥ ६ ॥

इति तेईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवीं रमैनी ॥ २४ ॥

चौ० चन्द्रचकोर कसिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीन पलटाई १
चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई । यहिबिधि सिगरे गये बिगोई ३
आगे दैदै सबन गँवावा । मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा ४

चौंतिस अक्षरसों निकलै जोई। पाप पुण्य जानैगा सोई ५

साखी॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

चन्द्रचकोरकसिबातजनाई। मानुषबुद्धिदीनपलटाई १

साहब कहै हैं कि हे जीवो! तुमको गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टान्त जनायकै नाना ईश्वर में लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमा को ताकत ताकत चकोर चन्द्ररूपै है या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमी नहीं लगै है अग्नि खायजाय है तैसे अपनो स्वरूप जो ब्रह्म ताको जब जानिलेहुगे तब तुमको दुःख सुख न जानिपरैगो कोई यह कहै हैं कि जैसे चन्द्रमा चकोर में नेह करैहै ऐसे तुम ईश्वरनमें प्रीति करौगे तो दुःख सुख न जानिपरैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि मैं हंसस्वरूप हौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँगो सो पलटायकै ब्रह्ममें लगायदिये नानादेवतन में लगाय दिये॥ १॥

चारि अवस्था सपनो कहई। झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई। यहिबिधिसिगरेगयेबिगोई ३

चारि अवस्था जे हैं जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ते सपन कहाती हैं तो झूठी फुरी जानत रहै हैं २ वह कैवल्य जो है पँचईं अवस्था तद्रूप हैजाइबो कि महीं ब्रह्म हौं सो मिथ्या है यह बात कोई नहीं जानै है यही बिधि सिगरे जीव बिगरिगये कहे बिगोइ गये॥ ३॥

आगे देदे सबन गँवावा। मानुषबुद्धि न सपनेहु पावा ४
चौंतिस अक्षर सों निकलै जोई। पापपुण्यजानैगा सोई ५

वही धोखाब्रह्मके आगे और कुछ नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वहीं ते है यही बात आगे दैदै कहे विचारिकै सिगरे जे ऋषि मुनि हैं ते आज अपने स्वस्वरूप को गँवावत भये मनुष्यरूप जो मैं तिनके जाननेवाली बुद्धि सपन्यो न पावत भये ४ चौंतिस

अक्षर सों जो निकरैगा सोई पाप पुण्य जानैगा मैं साहब को हौं और मैं लागौं हौं सो पापई करौं हौं या बात मेरो अनिर्वच-नीय निर्वाण जो नाम है ताको जपिकै जानैगो और अपनो स्वस्वरूप जानैगो ॥ ५ ॥

साखी ॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

जो पदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहौगे जो स्मरण करौगे संसार में सोई होउगे वही धोखा में लागिकै पुनि संसारी होउगे वामें ते निकरिकै बाहर न होउगे काहेते कि वहतो अकर्ता है तुम्हारी रक्षा कौन करैगो सो साहब कहै हैं कि सर्वत्र पूर्ण हौं तेरे हुजूर ठाढ़ कहतई हौं कि तैं मेरोहै तू काहे धोखा ब्रह्ममें ईश्वरन में जगत्के नानापदार्थ में लगिकै जन्म गँवाये देत है ॥ ६ ॥

इति चौबीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ॥ २५ ॥

चौ० चौंतिस अक्षरको यही बिशेखा। सहसौ नाम यहीमें देखा१
भूलि भटकि नर फिरि घर आवै।होतज्ञान सो सबन गँवावै२
खोजहिं ब्रह्म विष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

साखी ॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
बड़े बड़े बीरबाचैं नहीं, कहहि कबीर पुकारि ५

चौंतिसअक्षरकोयहीबिशेखा । सहसौ नाम यहीमें देखा१
भूलिभटकिनरफिरिघरआवै । होतज्ञानसोसबनगँवावै २

चौंतिस अक्षर को विशेष धोखई है काहेते हज़ार नाम यही चौंतिस अक्षरै में देखै है अर्थात् जे भरि वचन में आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखई है मिथ्याही सो चौंतिसै अक्षर के भीतर सब है अनिर्वचनीय पदार्थ तोको कैसे मिले १ चौंतिस अक्षरको

विस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञान भूलि भटकिकै जब पार नहीं पावै है तब फिरि थकिकै आपने घटमें आय या कहै है कि एकयेहू नहीं है वेदहु तौ " नेतिनेति " कहैहैं तब अपनो स्वरूप में आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवालोग भटकाइकै अज्ञान में डारि दिये जौन यह विचार कियो कि ये सब अनिर्वचनीय नहीं हैं सो गँवाय दियो अनिर्वचनीय धोखाब्रह्मही को मानत भये ॥ २ ॥

खोजहिं ब्रह्मविष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती३
खोजहिंगणगँधर्बमुनिदेवा । अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

अनन्त जे लोक हैं तिनमें अनन्त जे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति तिनकी भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डन में अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनन्तलोकमें बहुत सेवाकरि गन्धर्व, मुनि, देवता खोजनलगे ॥ ३ । ४ ॥

साखी ॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानैहारि ॥
बड़े बड़े बीर बाचैं नहीं,कहहि कबीर पुकारि५

और यती सती सब मनमें हारि ना मानिकै वही अनिर्वचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि मैं पुकारिकै कहौहौं या माया ब्रह्मके धोखाते बड़े बड़े बीर नहीं बाचैं हैं जे कोई बिरले सन्त साहबको जानै हैं तेई बाचैहैं तामें प्रमाण कबीरजीको " रसना रामगुण रमिरभि पीजै । गुणातीत निर्मूल कलीजै ॥ निरगुण ब्रह्म जपौरे भाई । जेहि सुमिरत सुधि बुधि सब पाई ॥ बिष तजि राम न जपसि अभागे । काबूड़ेलालचकेलागे॥ ते सब तरे रामरस स्वादी । कह कबीर बूड़े बकवादी " ॥ ५ ॥

इति पचीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ छब्बीसवीं रमैनी ॥ २६ ॥

चौ० आपुहि करताभे करतारा । बहुबिधि बासन गढ़ै कुम्हारा १

बिधना सबै कीन यकठाऊं। अनेक यतनकै बनकबनाऊं २
जठरअग्निमहँदियपरजाली। तामें आपु भये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहर आया। तब शिवशक्ती नाम धराया ४
घरको सुत जो होय अयाना। ताके संग न जाय सयाना ५
साँची बात कहौं मैं अपनी। भया देवाना और कि सपनी ६
गुप्त, प्रकट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूंठ गर्ब भूलै मति कोई। हिन्दू तुरुक झूंठ कुल दोई ८
साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, साँची सूरति ढारि ॥
कहहि कबिर ते जन भले, चित्रवन्तहि लेहिं बिचारि ९

आपुहिकरताभेकरतारा। बहुबिधिबासनगढ़ैकुम्हारा १
बिधनासबैकीनयकठाऊं। अनेकयतनकैबनकबनाऊं २

विधि जे ब्रह्मा हैं ते अपनेको कर्ता मानि सब साजु जोरि अनेक यतन कै जगत् बनावत भये जैसे कुम्हार दण्ड चक्र सब साजु जोरिकै बासन गढ़ैहै सो कर्त्तार जो अपनेको कर्ता मान्यो सो वाकी अज्ञानता है काहेते कबीरजी कहैहैं कि सबसाजु आगेहि उत्पन्न ह्वैरहीहै कौन नई साज बनाइ कर्त्तार अपनेको कर्ता मानै साजु तो सब आगेकी उत्पन्न भई है सो कहै हैं ॥ १ । २ ॥

जठरअग्निमहँदियपरजाली। तामेंआपुभयेप्रतिपाली ३
बहुतयतनकै बाहर आया। तबशिवशक्तीनामधराया ४

जब महाप्रलय होइजाइहै तब जौनकाल रहिजायहै सो काल सदा शिवरूप है ताके जठर में कहे पेटमें अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म तामें समष्टिजीव परजालि दिये पराशक्ति को जाल लगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म सो मही हौं यह मानि मायाशबलित होत भयो तामें तौने मायाके प्रतिपाली आपही होत भये अर्थात् जीवनके मानेमात्र माया है ३ सो माया शबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनाम को संसारसुख अर्थ करि पांचौ ब्रह्म आदि सब वस्तु उत्पन्नकै समष्टि

ते व्यष्टि ह्वैकै जगत् उत्पन्न कियो ताको शिवशक्त्यात्मक नाम धरावत भये ॥ ४ ॥

घरकोसुतजोहोयअयाना । ताके संग न जाहि सयाना ५

सो कबीरजी कहै हैं कि हे जीवो ! ये ब्रह्मादिक तुम्हारही सुत हैं तुमहीं समष्टिते व्यष्टि भये हौ कि जो घरको पूत अयान होइ है ताके संग सयान नहीं जाय है ऐसेही ब्रह्मादिक जे अनेक मत करिकै आपनेको कर्ता मानि लिये हैं तिनके संग तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम न परौ तुम साहब को जानो ॥ ५ ॥

साँची बात कहौं मैं अपनी । भयादेवानाऔरकिसपनी ६

सो कबीरजी कहै हैं कि सांचीबात मैं अपनी कहौं हौं अपनी कौनकी मैं नानामतनको छांड़ि साहबको जान्यो है सो तुम नहीं बूझौ हौ औरकी सपनी कहे स्वप्नवत् झूठी नानामतन की बाणी में देवाना कहे बिकल है जीवो ! ह्वै रहेहौ सो नानामत त्यागि साहब को जानो कहे 'औरकी सुनी' ओ या पाठ होय ताको अर्थ या है साँची बात अपनी मैं कहता हूं जो मेरे मतमें साहब को जानता है सोई साँच है या सुनि पुनि और का जो भया सोई देवाना ॥ ६ ॥

गुप्त प्रकट है एकै मुद्रा । काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूठ गर्व भूलै मति कोई । हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई ८

सो हे जीवो ! गुप्त कहे जब समष्टिमें रहे हौ तबहूं और जब प्रकट कहे व्यष्टिमें रहे हौ तबहूं एकही मुद्रा रहेहौ अर्थात् साहिबैके रहे हौ तुम जे नाना मतन में परि नानासाहब मानि ब्राह्मण शूद्र कहते हौ सो झूठे हौ जीवत्व तो एकही है ७ मैं हिन्दू हौं मैं तुरुक हौं यह झूठो गर्ब करिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ तो हिन्दू तुरुक कुल ये दोऊ झूठे हैं तुमतौ साहब के हौ ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, सांची सूरति ढारि ॥

कहहिकबिरतेइजनभले, चित्रवन्तहिलेहिबिचारि ६

जिन यह नानाचित्र बनाइया कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत् में बनायोहै तौनेको सूत्रधारी साहब साँचो है जौन सबको सुरतिदियो है सो कबीरजी कहैहैं चित्रवन्त जो या मन नानादेह देनेवालो याको जो कोई बिचारि लियो कि या मिथ्या है और साँच साहबको जानिलियो ते जन भले हैं ॥ ६ ॥

इति छब्बीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ॥ २७ ॥

चौ० ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा । सात द्वीप पुहुमी नौखण्डा १
सत्य सत्यकै बिष्णु दृढ़ाई । तीनिलोकमहँ राखिनि जाई २
लिङ्गरूप तब शंकरकीन्हा । धरती कीलि रसातल दीन्हा ३
तब अष्टङ्गी रची कुमारी । तीनिलोक मोहनिसबभारी ४
द्वितियानामपार्वति भयऊ । तपकरता शंकर को दयऊ ५
एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भो चारी ६
शर्मन वर्मन देवो दासा । रजगुण तमगुण धरणि अकासा ७

साखी ॥ एक अण्ड ॐकारते, यह जग सब भयो पसार ॥
कहकबीर सबनारिरामकी, अबिचलपुरुषभतार ८

ब्रह्माको दीन्हों ब्रह्मण्डा । सातद्वीपपुहुमी नौखण्डा १
सत्यसत्यकै बिष्णु दृढ़ाई । तीनिलोकमहँराखिनिजाई २

अष्टाङ्ग कौनहै "भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच । अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा" ऐसी जो इच्छारूपी नारि अष्टाङ्गी सो ब्रह्माको ब्रह्माण्ड देतभई और सातद्वीप नवौखण्ड पृथ्वी बिष्णुको दैकै तीनिलोकमें राखिनि कहे व्यापक करिदेत भई और बिष्णुको नाम सत्य धरावत भई सो आठ नाम में प्रसिद्ध है "हरिः सत्यो जनार्दनः" सो जब ब्रह्मा बिष्णु दोऊ अपने अपने को मालिक मानि लरे तब महादेवजी कह्यो कि हम लिङ्ग बढ़ावै हैं जोई अन्त लैआवै सोई बड़ो ॥ १ । २ ॥

लिङ्गरूपतबशंकरकीन्हा । धरतीकीलरसातलदीन्हा ३

तब महादेवजी सातलोक नीचे के सात ऊंचे के तामें कील-वत् लिङ्ग बढ़ावत भये ब्रह्मा, विष्णु, दोऊको पठयो कि जाय अन्त लै आवो सो विष्णु जायकै या कह्यो कि हम अन्त नहीं पाये ब्रह्मा कह्यो हम अन्त लै आये सुरभी के दूधते नहवायो, केतकी के फूलते पूज्यो है सो सुरभी और केतकी साखी हैं तब महादेवजी तीनोंको झूठा जानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्य होउ, सुरभीको कह्यो तुम्हारो मुख अशुद्ध होइ, केतकी को कह्यो हम पर न चढ़ो और विष्णुको प्रसन्न ह्वैकै या कह्यो कि तीनलोक में पूज्य होउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणन में कथा प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

तबअष्टङ्गीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसबझारी ४
द्वितियानाम पार्बतिभयऊ। तपकरताशंकरकोदयऊ ५

तब अष्टङ्गी जो कारणरूपा शक्ति सो प्रसन्न ह्वैकै तीनि लोककी मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तप करता जे दक्ष हैं तिनके द्वारा महादेवजीको देत भई तौनेहीको दूसरो पार्वती नाम भयो ॥४।५॥

एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भै चारी ६
शर्मनवर्मनदेवोदासा। रजगुणतमगुणधरणि अकासा७

एकै पुरुष जो है ब्रह्म अरु एकै नारी जो है माया ताते चारि खानिके जीव उत्पन्न होतभये अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्-भिज ६ और शर्मन, वर्मन, देवो, दासा कहे शर्मन ब्राह्मण, वर्मन क्षत्रिय, देवो वैश्य, दासा शूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता, वर्मन कहे बक्ता, अरु देवता व उनके दास रजोगुणी, तमोगुणी व धरती और आकाश होतभये ॥ ६ । ७ ॥

साखी॥एकअण्ड ओंकारते, यह सब जगभयो पसार ॥
कहकबीरसबनारिरामकी, अबिचलपुरुषभतार ८

मङ्गलमें पांच ब्रह्म पांच अण्डमें राख्यो है या कहि आये हैं

सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जो है अण्डप्रणवता प्रतिपाद्य जो ब्रह्म सो माया शबलित ह्वै इच्छा आदि अष्टाङ्गी उत्पन्नकै जगत् पैदा कियोहै सो कबीरजी कहैहैं कि धोखा वही है प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं काहेते रामनामहीके जगत्मुख अर्थते प्रणव प्रकटभयो है ताते प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनाम को साहबमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हे जीवो ! तुम सब रामचन्द्रहीकी नारी हौ अविचल कहे न चलायमान निर्बिकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित्शक्ति माया अष्टाङ्गीआदि अचित् शक्ति ई दूनौं शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रहीहैं इहां कबीरजी माया में सब परेहैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबीरजी कि तुम रामकी नारी हौ और पुरुष करौगी तो मारी जाउगी ॥ ८ ॥

इति सत्ताईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवीं रमैनी ॥ २८ ॥

चौ० असजोलहाकामर्मनजाना । जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़ बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २
सहस तार लै पूरिन पूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३
कहहिं कबीर कर्मसों जोरी । सूत कुसूत बिनय भल कोरी ४

असजोलहाकाकर्मनजाना । जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाशदुइगाड़बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २

यहि भांतिको जोलहा जो मन है जौन जगत् में ताना पसार्‌यो है कहे बाणी पसार्‌यो है ताको मर्म कोई न जानत भयो भतार श्रीरामचन्द्रको भूलिगये धोखाब्रह्म नानापति खोजन लग्यो १ महि और आकाश कहे अर्ध ऊर्ध्व दुइ गड़वा बनावत भये तामें चन्द्र सूर्य इड़ा पिङ्गला हैं तिनकर नरा भरावत भये ॥ २ ॥

सहसतारलै पूरिनपूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३

कहहिं कबीर कर्मसोंजोरी । सूत कुसूत बिनयभलकोरी ४

अरु तार जो है प्रणव ताको हजारन दोनों कुम्भक में जपत भये अजहूं लों वाहीमें लगेहैं और यह कहै हैं कि कठिन दूरि है३ कबीरजी कहैहैं जब तानाको ताग टूटि जाइहै तब कोरी भिजैकै जोरि देइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरि देइ है सो कर्मको लाठिनमें बांधिकै सूत जो है जीव कुसूत जो है वाणी ताको जोलहा जो मन है सो बिनय है अथवा विद्या-अविद्या सूत कुसूत बिनय है जब वस्तु तैयार होइजाय है तब जोलहाको बिनिबो छूटैहै सो धोखाब्रह्ममें लागि अनादिकालते बिनतईहै जब साहबको जानै तब साधनरूप कर्म करिबो छूटिजाइ हंसरूप साहब देइ जरामरण मिटिजाइ ॥ ४ ॥

इति अट्ठाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २८ ॥

अथ उनतीसवीं रमैनी ॥ २९ ॥

चौ० बज्रहु ते तृण क्षण में होई । तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरू जानि परिहरई । कर्मकबांधल लालच करई २
कर्म धर्म बुधिमति परिहरिया । झूठानाम सांचले धरिया ३
रजगति त्रिबिध कीन परकाशा।कर्म धर्म बुधिकेर बिनाशा ४
रविके उदय तारा भो छीना । चरवेहर दोनों में लीना ५
बिषकेखाये बिष नहिं जावै । गारुड़सोइ जो मरतजिआवै ६
साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों, पलकहिमोंडसिजाय ॥
बिषहर मन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ७

बज्रहुते तृण क्षणमें होई । तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरूजानिपरिहरई । कर्मकबांधललालचकरई २

वज्रहु तृण क्षण में करिदेइ है अरु तृणते वज्र करिदेइहै ऐसे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को जानो १ निझरूनरू कहे जिनको माया ब्रह्म को धोखा निझरि गयो कहे मिटि गयो ऐसे जे नर हैं

ते पूरा गुरु पाइकै परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै सम्पूर्ण जगत् के कर्म त्यागिदेयँ हैं और जे कर्ममें बँधेहैं ते अनेक लालच करै हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्म मिलन की कोई ईश्वरन की ॥ २ ॥

कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया । झूठानामसांचलैधरिया ३
रजगतित्रिबिधिकीनपरकाशा। कर्मधर्मबुधिकेरबिनाशा ४

साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधि है ताको त्यागि देते भये झूठे झूठे जे देवता हैं तिनको नाम सांच मानिकै जपत भये ३ गुरुवालोग रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी तीन प्रकारके मत प्रकाशकैकै साहब के मिलनवारो जो कर्म-धर्म बुधि है ताको नाश करि देत भये ॥ ४ ॥

रबिके उदय तारा भो छीना । चरबेहरदोनों में लीना ५
बिषकेखाये बिषनहिंजावै । गारुड़सोजोमरतजिआवै ६

गुरुवालोग हे जीवो ! तुमको उपदेश देयँ हैं जैसे सूर्य के उदय मों ताराको तेज क्षीण ह्वैजाय है ऐसे जब ज्ञान भयो जीवत्व मिट्यो तब चर और बेहर जो अचर ये दोनों में लीन ह्वैजाय है चर अचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानै है ५ सो साहब कहै हैं कि हे जीवो ! ऐसो उपदेश जो गुरुवालोगोंने तुम्हैं दियो सो ठीक नहीं है काहेते कि संसार विष उतारिबे को तुम धोखा ब्रह्म में लगे हौ सो विषके खाये विष नहीं जाइहै यह धोखा ब्रह्म विषरूपै है संसार देनवारो है गारुड़ सो कहावैहै जो मरतमें जिआइलेइ सो मेरो ज्ञान धोखाब्रह्म विषते बचाइ कालते बच इ लेइ ताको जानो ॥ ६ ॥

साखी॥ अलखजोलागीपलकमों,पलकहिमोंडसिजाय ॥
बिषहरमन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ७

अलख जो वह ब्रह्म है सो सबके पलकमें लाग्यो है अर्थात् पल पल में ध्यान करै है और एक पलही में डसिजाय है

अर्थात् जो गुरुवनके मुँहते कढ़्यो सो पलै में वा ज्ञान लगिजाय है सो साहब कहै हैं कि तैं मेरो है मेरी तरफ़ आउ यहि विष को हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानतही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काह करौं ॥ ७ ॥

इति उनतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २९ ॥

अथ तीसवीं रमैनी ॥ ३० ॥

चौ० औ भूले षटदरशन भाई। पाखँडबेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना। चारो बद्ध चतुरगुण मौना २
जैनी धर्मक मर्म न जाना। पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुवा चम्पा फूला। मानों जीव कोटि समतूला ४
औ पृथिवी को रोम उचारै। देखत जन्म आपनो हारै ५
सन्मथ बिन्दुकरै असरारा। कलपै बिन्दु खसै नहिं द्वारा ६
ताकर हाल होय अघकूचा। छा दरशन में जौन बिगूचा ७
साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै, रह्यो सकल घट पूरि ८

औभूले षट दरशन भाई। पाखँडबेषरहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना। चारोबद्ध चतुरगुण मौना २

पाखण्ड वेष जो धोखाब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्यो है ताही में षट्दर्शन जे हैं तेऊ भूलिगये १ यह जो धोखाब्रह्म को ज्ञान है सो जीव जो है ताको सीव जो कल्याण है सो नशावनवारो है और चारों प्रकारके जीव जे हैं तेऊ बद्ध हैं जे चतुर हैं ते गुण-मौनाकहे गुणातीत हैं परन्तु वोऊ धोखाब्रह्महीमें हैं ॥ २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना। पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुवा चम्पा फूला। मानों जीवकोटि समतूला ४

अरु जैनी जे नास्तिक हैं ते धर्मको मर्म नहीं जान्यो काहेते कि बांधे तो मुँहे पट्टीरहे हैं कि कहूं किरवा न घुसिजाय जीवको

बचावैहैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिन वृक्षनमें जीव हैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जे पारसनाथ देव हैं तिनमें चढ़ावै हैं ३ दवना व मरुवा और चम्पाके फूल को तोरिकै कोटिन जे जीव हैं ते सूंघिकै अघाय हैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्ति में चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ो! प्रत्यक्ष जे जीव वृक्ष हैं तिनके पत्रको तोरिकै जड़ जो पाषाण है तामें काहे को चढ़ावो हौ तुम तो प्रत्यक्ष प्रमाण मानौ हौ कर्म किये फल होय है या मानतही नहीं हौ पाषाण पूजे कहा फल होयगो ॥ ४ ॥

औ पृथिवीको रोम उचारै। देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथ बिन्दु करै असरारा। कलपै बिन्दुखसै नहिं द्वारा ६
ताकरहालहोय अघकूचा। छादरशनमें जौन बिगूचा ७

और पृथ्वी के रोमा जे हैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावै हैं और शिष्यनकी स्त्रिनको देखिकै भोग करिकै अपनो जन्म हारि-देइहैं कहे नरकको जायहैं ५ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दु को असरार कहे सरल करैहैं और कन्यन ते भगिनी नाते और उन की स्त्रिन ते भोग करै हैं तब वह बिन्दु ऊपरते नीचेको कल्पत है कहे बढ़त है और पुनि नीचेते मेरु दण्ड ह्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लैजाइहै ६ सो जे जैनधर्मी हैं छःदर्शन में बिगूचा कहे भूलि गये हैं तिनकी और जिनको कहिआये हैं वीर्य बढ़ावनवारे तिनको हाल अघकूचा कहे नरकनमें कूचे जाइ हैं ॥ ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकट है, रह्योसकलघटपूरि ८

अमरपद कहे आत्माको जो स्वस्वरूप है सो साहबको अंश है दास है सोई अमर है ताको ज्ञान नियरेते दूरि है और बाहिरे है इहां नियरेते दूरि कह्यो ताते अपने को ज्ञान नहीं है और बा-हिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परन्तु जो सतगुरु भेद बतावै है तो ज्ञान होइहै आत्मा के स्वरूपको जानैहै ताको साहब

निकटही है काहे घट घट में तो पूर्ण है तो आत्माके निकटैहै ॥८॥

इति तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३० ॥

अथ इकतीसवीं रमैनी ॥ ३१ ॥

चौ० स्मृति आहि गुणनको चीन्हा । पापपुण्यको मारग लीन्हा १
स्मृति बेद पढ़ै असरारा । पाखण्डरूप करै अहँकारा २
पढ़ै बेद औ करै बड़ाई । संशय गाँठि अजहुँ नहिं जाई ३
पढ़िकैशास्त्रजीवबधकरई । मूड़ काटि अगमनकै धरई ४
साखी ॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

स्मृतिआहिगुणनको चीन्हा । पापपुण्यकीमारगलीन्हा१
स्मृति बेद पढ़ै असरारा । पाखँडरूप करै अहँकारा २

स्मृति कहे स्मृति गुणनको चीन्हा आप कहे तीनोंगुण स्मृति में देखिपरै काहेते कि पाप पुण्यको मार्ग कीन्हे हैं अर्थात् पाप पुण्य के मार्ग वहीते जानिपरै हैं १ रा रा जो जीव स्मृति वेदका अस पढ़त है पाखण्डरूप ह्वैकै या अहंकार करै है जानिबेके लिये नहीं पढ़ै है अर्थात् हम विद्यामें जीतै कोई विद्यावान् जानि हमैं मानै चेला होइ इत्यादि कछू आपने पढ़ै है ॥ २ ॥

पढ़ै बेद औ करै बड़ाई । संशय गांठि अजहुँ नहिं जाई३
पढ़िकै बेद जीव बध करई । मूड़काटि अगमन कै धरई ४

बेद पढ़ै है सब देवतन की बड़ाई कहे स्तुति करै है अथवा अपनी बड़ाई करै है कि महापण्डित हौं संशयकी गांठि जो परि गई है सो अजहूं नहीं जाइहै वेदान्तशास्त्र आदि पढ़ै है आत्मा सर्वत्र है या कहै है पै चैतन्य जो जीव है ताको मूड़ काटिकै पाषाणकी मूर्ति है ताके आगू धरै है ॥ ३ । ४ ॥

साखी ॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय॥
अनुभव भावन दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

कबीरजी कहैहैं कि यहि पाखण्डते बहुत जीवन को सतावत भये उनको अनुभवको भाव नहीं दरशै है कि जैसे हम मारै हैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जबभर जिये हैं तबभर अपनी इच्छा नहीं करै हैं जेहिते बचैं॥ ५ ॥

इति इकतीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवीं रमैनी ॥ ३२ ॥

चौ० अन्ध सो दर्पण बेद पुराना। दरवी कहा महारस जाना १
जस खर चन्दन लादेभारा। परिमलबास न जान गँवारा२
कह कबीर खोजै असमाना।सोनमिलाजोजायअभिमाना३

जैसे आँधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै और दरवी जो करछुली है सो पाकके रसको कहाजानै १ और गदहा चन्दनको लादे चन्दनकी सुबास कहाजानै तैसे गँवार जे हैं ते वेद पुराणको तात्पर्यार्थ जे साहब हैं तिनको कहा जानैं जो गरवीपाठ होय तो या अर्थ है अहंकारीलोग मधुररसको का जानैं २ सो कबीरजी कहैहैं कि आसमान जो निराकार धोखाब्रह्म ताको खोजै हैं सो वातो झूठई है सो पुरुष याको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्म को अभिमान जाय और साहब को जानिलेय ॥ ३ ॥

इति बत्तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३२ ॥

अथ तेंतीसवीं रमैनी ॥ ३३ ॥

चौ० बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १
आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठी मोह कालको धन्धा २
बँधवतबन्ध छोड़ि ना जाई। बिषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरे लखतसकलजग लूटा। दासकबीर राम कहि छूटा ४

साखी ॥ रामहि राम पुकारि ते, जीभ परोगोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदि पियनकी होस ५

बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १

यहां कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड ये तीनों

की कठिनता देखाइ तात्पर्यवृत्तिते छड़ाइ साहबमें लगावै है क-
बीरजी कहैहैं कि हे भाइउ! जौनी स्मृति को कर्म प्रतिपादक अर्थ
करि कर्मरूप जेवरीमें तुम बँधिगयेहौ स्मार्त भयेहौ सो स्मृति
वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको
तात्पर्य कर्मके छड़ाइबेमें है धौं कर्मके बांधिबेमें है तो स्मृतिको
अर्थ कब जानोगे सो वेदको तात्पर्य तो कर्मते छड़ायबेही में है
कैसे जैसे जीवनकी मांसमें आशक्ति स्वभावईते है वैसे छोड़ावै
तो न छूटै ताते वेद नियम बतावैहै कि मांस खाय तो यज्ञमें खाय
ताते या आयो कि जब बहुत श्रम करि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञ
करैगो तब थोड़ा मांस विना स्वादका पावैगो तामें या विचारैगो
कि या थोड़े मांस विना स्वादके खाये यामें कहाहै या विचारि
मांस छोड़ि देयगो या भांति कर्मकाण्ड को तात्पर्य निवृत्तिही में
है और स्मृति नाना देवतनकी उपासना कहैहैं सो उन पूजनकी
यन्त्र मन्त्र की पुरश्चरणकी विधि कठिनहै जो करतमें सिद्धभयो
तो उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तो वैकलाइकै
मरिजाइ है या भांति उपासनाकाण्डको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है
और स्मृति ज्ञानकाण्ड जो कहै हैं सो मनको साधन कठिन है
काहेते कि जो " अहंब्रह्मास्मि " मान सर्व कर्मनको त्यागिदियो
और दूसरी बुद्धि न गई तो पतित ह्वै जाय है तामें एक इतिहास
है एक राजाके गोहत्या लगी सो हत्या आई तब राजा कह्यो कि
सर्वत्र ब्रह्महीहै हमहूं ब्रह्म हैं हमको हत्या काहेको लगैगी हाथके
देवता इन्द्र हैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो
तब वह हत्या राजाकी बेटीके पास गई सो वो शृंगारकरि रानी
के पलंगमें परिरही तहां राजा आये कन्याको परी देखी तब कह्यो
कि तू कहां परीहै तब कन्या ने कह्यो जैसे रानी तैसे मैं ब्रह्म तो
एकहीहै तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिर में चढ़िबैठी या
भांति ज्ञानकाण्डहू को तात्पर्य निवृत्तिही में है कि जौनसरल उ-
पाय वेद तात्पर्य कैकै बतावै है कि मनादिकन को छोड़िकै राम

नाम को जपै साहबको ह्वै जाय तो मुक्ति ह्वैजाय तामें प्रमाण "द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं प्रति जगाम कथं नु भगवन् गां पर्य्यटन्कलिं स तरेयमिति सहोवाच भगवत् आदिपुरुषस्य नारायणस्य नाम्नेति नारदः पुनः पप्रच्छ भगवतः किंतन्नामेति सहोवाच हरेराम हरेराम रामरामहरेहरे" (इतिश्रुतिः) आदिपुरुष भगवान् नारायणके नाम हैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो और पूछ्यो कि कौन नाम है तब रामनामको बतायो तेहिते उद्धारकर्ता रामनामही है पुनि स्मृतिहू कहै है "सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः। एकएवपरोमन्त्रो रामइत्यक्षरद्वयम्" तातें वेदको तात्पर्य कर्मकाण्ड–उपासनाकाण्ड–ज्ञानकाण्ड तीनों के त्यागमें है साहबके मिलायबे में है तामें प्रमाण "सर्वे वेदायत्पदमामनन्ति" (इतिश्रुतिः) और कबीरजीहू ने कह्योहै कि वेदको अर्थ उलटिकै कहे तात्पर्यते समुझै तो तौने अर्थ वेद को सांच हैं अपरोक्ष अर्थ तो झूठो है तामें प्रमाण "दौरधूप सब छोड़ो सखिया, छोड़ो कथापुरान। उलटि वेदका भेदलखौ, गहि सारशब्द गुरुज्ञान" दूजो प्रमाण "आसन पवन किये दृढ़रहुरे। मनको मैल छांड़ि दे बौरे॥ का शृङ्गी मूड़ा चमकाये। क्या बिभूति सब अङ्गलगाये॥ क्या हिन्दू क्या मूसलमान। जाको साबित रहै इमान॥ क्या जो पढ़िया वेदपुरान। सो ब्राह्मण बूझै ब्रह्मज्ञान॥ कहै कबीर कछु आननकीजे। रामनामजपिलाहालीजै" सो स्मृति में जो तुमको नाना अर्थ भासमान होय हैं सोई बन्धन रूप जेवरि कमरमें लेतै आईहै सो वा जेवरि तुम्हारीही बरीहै॥१॥

आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठा मोह कालको धन्धा २

सो आपही स्मृतिको कर्मप्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरी बरिकै आपही गर बांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठा जो मोह है तामें परिकै कालको धन्धा बनावत भयो अर्थात् नानादेह धरत भयो काल मारत भयो साहबको जो तात्पर्य ते स्मृति बतावै है ताको मास बुझावत भयो॥ २॥

बँधवतबन्धछोंड़िनाजाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेदेखत सबजगलूटा । दासकबीर रामकहि छूटा ४

सो बांध तो बांध्यो पै वह बन्धते छोड़्यो नहीं छूटै है विषय में सब दुनिया भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तो छागर मारि बलिदान दै खाइलियो और सुरापान हू करिबेको चाह्यो और वेश्या राखिबो चाह्यो तो बाममार्गलियो इत्यादिक अर्थ करिकै ३ सो कबीरजी कहे हैं कि हमारे देखत देखत यह माया सम्पूर्ण जगको लूटिलियो सो मैं तो रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ॥ ४ ॥

साखी ॥ रामहिं राम पुकारते, जीभ परी गोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदिपियनकीहोस ५

मोको रामै राम पुकारत पुकारत कि राम में लगौ जीभमें रोस परिगयो कहे ठहर परिगयो पै जीव न मानतभये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि सीधे राम कहै तरिजाय वही धोखाब्रह्म में लगाइकै नानामत दक्षिण बामादिक करिकै खोदिकै जलपियन की होस करैहै कहे आशा करै है सो ये तो सब धोखाही है मुक्ति कैसे होयगी ? सीधे रामजपि स्वामी सेवक भावकरि संसारसागर ते उतरि काहे नहीं जाय है ॥ ५ ॥

इति तेंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवीं रमैनी ॥ ३४ ॥

चौ० पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई । निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई १
कहँ बसै पुरुषकवनसोगाऊँ।सो म्वहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ २
चारि वेद ब्रह्मा निज ठाना । मुक्तिक मर्म उन्हौं नहिं जाना ३
दानपुण्यउन बहुतबखाना । अपनेमरनकि खबरि नजाना ४
एक नाम है अगम गँभीरा । तहँवाँ अस्थिर दास कबीरा ५
साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥

आवागमन कि गम नहीं, तहँ सकलौ जगजाय ६

पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई ।निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई १
कहँबसैपुरुषकवनसोगाऊँ।सोमोहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ२

हे पण्डितौ ! पढ़ि पढ़ि के चतुराई करौ हौ सो अपनी मुक्ति तो समुझाइ कहौ कहांते तिहारी मुक्ति होइहै जौनेको मुक्ति माने हौ सो ब्रह्म धोखा है १ अरु वह ब्रह्मलोक प्रकाश है सो जाके लोक को प्रकाश है सो वह पुरुष कहां बसै है ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बतावो वह कौन है ॥ २ ॥

चारिबेदब्रह्मानिजठाना । मुक्तिकमर्मउन्हौंनहिंजाना ३

चारिवेद को हम कियो है और हमहीं जानैहैं हमहीं पढ़े हैं यह ब्रह्मा मानत भये पै वेद को तात्पर्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी ह्वैकै जगत्की उत्पत्ति काहेको करते ब्रह्महूको भ्रम भयो है सो प्रमाण मङ्गलमें कहिआये हैं तो पण्डित कहाजानै वही धोखामें पण्डित लोग लगावतभये कि वह जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है सो तुहीं है "अहंब्रह्मास्मि" यह भावना करु सो वातो जीवही अनुभव है जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहां बतावै वाको तो अनामा कहै हैं अरु वाको वस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देश काल वस्तुते रहित कहै हैं सो जाके नामरूप नहीं है देश काल वस्तुते रहितई है सो वह है कि नहीं है जो कहौ अनुभवमें तो आवै है तबतो अनुभवौ तो जीवहीको है जो यह बिचारिबो धोखाई भयो तो जीवब्रह्म कैसे होइगो ॥ ३ ॥

दानपुण्यउनबहुतबखाना।अपनेमरनकीखबरिनजाना ४
एक नामहै अगमगँभीरा । तहवां अस्थिर दासकबीरा ५

अरु कर्मकाण्डवारे दान पुण्य बहुत बखान्यो है पै अपने मरिबे की खबरि नहीं जान्यो कि यह काल बहुत दान पुण्यवारेन को खाइ लियो है हम कैसे बचैंगे ४ जौने नाममें लगे जन्म मरण

नहीं होइ है और अगमहै कहे जे सन्तलोग हैं तेई पावै हैं अरु गम्भीर पद है कहे गहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाम में मैं स्थिर हौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥
आवागमनकी गम नहीं, तहँसकलौजगजाय६

वो ब्रह्म कैसो है कि चींटी जो बाणी है सो नहीं पहुँचै और राई जो बुद्धि है सो नहीं ठहराय अर्थात् मन वचन के परे है और आवागमन की गम नहीं है अर्थात् न वहांते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात् मिथ्या है तहां सिगरो जग जाय है ॥६ ॥

इति चौंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवीं रमैनी ॥ ३५ ॥

चौ० ॥ पण्डित भूले पढ़ि गुण बेदा । आपु अपनपौ जानु न भेदा१
संध्या तर्पण औ षटकर्मा । ई बहुरूप करहिं अस धर्मा२
गायत्री युग चारि पढ़ाई । पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३
और के छुये लेतहौ सींचा । तुमते कहौ कौनहै नीचा ४
यहगुणगर्बकरौ अधिकाई । अतिकेगर्ब न होइ भलाई ५
जासु नाम है गर्वप्रहारी । सो कस गर्बहि सकैसिहारी६

साखी ॥ कुल मर्यादाखोइकै, खोजिनि पद निर्बान ॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये बिदेही थान ७

पण्डित भूलेपढ़िगुणबेदा । आपु अपनपौजानु न भेदा१

पण्डित जे हैं ते गुण भेद कहे त्रैगुण्यविषयक जो वेद है ताको भूलिगये कहे वेदको तात्पर्य त्रैगुण्य जानत भये कौन तात्पर्य न जान्यो सो कहै हैं कि न आपको जान्यो कहे अपने स्वस्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंश हौं और अपनपौ न जान्यो कहे याके प्रियसखा साहबहैं तिनहीं ते जीवको अपनपौ है तिनको न जान्यो यह देश बोली है कि फलानेसों अपनपौ है

कहे सख्य है अरु जीव साहबको सखा है तामें प्रमाण "द्वासुपर्णास्युजायाया" (इति श्रुतेः)॥ १॥

संध्या तर्पण औ षटकर्मा[1]। ईबहुरूपकरहिं असधर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३

अरु संध्या तर्पण और षट्कर्म इनहीं आदि दैकै बहुरूप कहे बहुतभांति के जे धर्म हैं तिनको करै हैं २ अरु साक्षात् वेदमाता गायत्री ताको चारियुग में ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य उपदेश पावै है कहो मुक्ति केहिकी भई है काहेते वाको तात्पर्य तो यहहै कि जब साहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तो मुक्ति होइ सो साहबको स्वरूप और आपनो स्वस्वरूप तो जानतई नहीं है मुक्ति कैसे पावै॥ ३॥

और के छुये लेतहौ सींचा। तुमते कहौ कौनहै नीचा४
यह गुणगर्व करौ अधिकाई। अतिकेगर्ब न होइभलाई५
जासु नाम है गर्वप्रहारी। सो कसगर्बहिसकै सिहारी ६

और को छुवौहौ तो गङ्गाजल सींचौ हौ कि पवित्र ह्वै जाय सो कहो तुमहींते कौन नीच है ४ मल मूत्रादिक तुमहींमें भरेहैं और अपने गुणको गर्ब अधिक तुम करतेहौ सो अतिगर्ब किये भलाई नहीं होइहै काहेते कि ५ जाको नाम गर्वप्रहारी है सो कैसे गर्व को सिहारि सकै वह जो परमपुरुष है सो गर्वप्रहारी है तिहारो गर्व कैसे सहैगो॥ ६॥

साखी॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनिपदनिर्बान॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये बिदेही थान ७

जे कर्मको त्याग किये हैं तिनको गांठिहूको धर्म गयो आपनी कुल मर्यादा तो पहिले खोइदियो है और निर्बानपदको खोजत भये अंकुर जो है सुरतिबीज जो है शुद्धजीव आत्माबीज जो

[1] "इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा। अतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते" (इति स्मृतिः)॥

है साहब ताको नशायके बिदेही जो है ब्रह्म निराकार ताहीके थान भये कहे आपनेको ब्रह्म मानतभये सो जाको अनुभव है ब्रह्म ताको तो भूलिहीगये विना अंकुरपाले कैसे होइगो अर्थात् धोखही में परे रहिगये वामें कुछ नहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजीको "अंकुर बीज जहां नहीं, नहीं तत्त्व परकाश । तहां जाय का लेउगे, छोड़हु झूठी आश" अर्थात् चेष्टारहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछ वस्तुही नहीं है मिलिबोई कहांकरै ॥ ७ ॥

इति पैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवीं रमैनी ॥ ३६ ॥

चौ० ॥ ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई १
दुसरसयानको मर्म न जाना । उत्पतिपरलयरैनिबिहाना २
बाणिजएकसबनमिलिठाना । नेम धर्म संयम भगवाना ३
हरि अस ठाकुरते जिन जाई । बालनभिस्तगाँवदुलहाई ४
साखी ॥ ते नर मरिकै कहँ गये, जिन दीन्हों गुरु छोट ॥
राम नाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई १
दुसरसयानकोमर्म न जाना ।उत्पतिपरलयरैनिबिहाना २

ज्ञानी जे हैं चतुर जे हैं बिचक्षण जे हैं तिनहीं लौं जेईलोग हैं अर्थात् सूक्ष्म ते सूक्ष्म ताहूते सूक्ष्म लौं विचारनवारे जे अद्वैत-वादी सबलोग हैं ते एक जो ब्रह्म ताहीमें सयान जो भये कि महीं ब्रह्म हौं यही मानतभये तो वे सयान नहींहैं १ दूसर सयान जे द्वैतवादी हैं जे साहबको और आपनेहीको मानै हैं ताको तो मरमई नहीं जानै हैं भूलिकै उत्पति परलय कहे संसारकी जो उ-त्पत्ति प्रलय होतरहै है ताहीमें रैनि बिहाना कहे दिन राति जन-मत मरत रहैहैं ॥ २ ॥

बाणिजएकसबनमिलिठाना । नेमधर्मसंयमभगवाना ३

हरिअसठाकुरतेजिनजाई। बालनभिश्तगाँवदुलहाई ४

एक बणिज सब मिलि ठानत भये नेम, धर्म, संयम इत्यादिक जे सब साधन हैं तिनहींको भग कहे ऐश्वर्य मानिकै तिनमें सब लागतभये ३ हरि कहे आरतिके हरनहारे जे साहब हैं तिनते जिन जाइकहे जे जे फरक ह्वैगये हैं ते बालन कहे बालककी ऐसी है बुद्धि जिनकी ऐसे जे जीव हैं ते भिश्तगाँव दुलहाई कहे भिश्त जो स्वर्ग है ताहीको दुलाहाइकै गावतभये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्गमें जाइ अप्सरनते भोगकरैं यही गावत भये॥४॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँगये, जिन्हदीन्हों गुरु छोट॥
रामनाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

जिनको गुरु छोट दियोहै अर्थात् थोरे अक्षरको मन्त्र दियो और जो घोट पाठ होइ तो यह अर्थहै कि गुरु उनको मूड़ घोटि दियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा जूंठ प्याला को घोटादेदियो पियाय दियो ते नर जे हैं हिन्दू मुसलमान ते मरिकै कहांगये अर्थात् कहूं नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोट वस्तु जो नाना देवतनकी उपासना धोखा ब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छांड़ो अन्तमें उबार रामनामही करैगो तामें प्रमाण "मनरे जबते राम कह्योरे। फिरि कहिबे को कछु न रह्योरे॥ काभो योग यज्ञजपदाना। जो तैं रामनाम नहिं जाना॥ काम क्रोधदोउभारे। गुरुप्रसादसबतारे॥ कहै कबीर भ्रमनाशी। राजाराम मिले अबिनाशी"॥ ५ ॥

इति छत्तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३६ ॥

अथ सैंतीसवीं रमैनी ॥ ३७ ॥

चौ० एक सयान सयान न होई। दुसर सयान न जानै कोई १
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लै जाई २
पँचयें सयान न जानै कोई। छठयें महँ सब गैल बिगोई ३

सतयें सयान जो जानौ भाई। लोक बेद मो देहु देखाई ४

साखी ॥ बिजक बतावै बित्तको, जो बित गुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै बिरला कोइ ५

एकसयान सयान न होई। दुसर सयान न जानै कोई१
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लैजाई२

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयानहैं अर्थात् वाही को सांच मानै हैं और सब मिथ्या है ते सयान नहीं हैं और दूसर माया में जे सयान हैं वे कहैं हैं कि मायाको हम जानै हैं सो माया तो सत् असत् ते बिलक्षण है ताको कोई जानतही नहीं है कि कौन वस्तु है १ अरु तीसर जो जीव तामें जे सयान हैं कि जीवात्मै सबका मालिक है या विचारै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं ते सयान जो जीव है ताको खाइ हैं कहे पाखण्डमत में लगाइ नरक में डारि देइ हैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयान हैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपने लोकको लैजाय हैं ॥ २ ॥

पँचयें सयान न जानै कोई। छठयें महँ सबगयेबिगोई ३
सतयेंसयानजोजानौभाई। लोक बेद महँ देहु देखाई ४

और पाँचौं इन्द्रिनकी विषय तिनमें जे सयान हैं तेतो वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठौं है मन ताही ते सबै गैल बिगोइगई है ३ सातवें सयान जो साहब ताको जो जानौ तो हे भाई! लोक वेदमें मैं देखायदेउँ कि जेते वर्णन करिआये तिन ते साहब परे है ॥ ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावैबित्तको, जोबितगुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै बिरला कोइ५

श्रीकबीरजी कहैं हैं कि, जैसे जौन बित्त गुप्त होय है कहे गाड़ा होइ तौने धनको बीजक बतावै है तैसे सारशब्द जो राम नामबीजक सो साहबमुख अर्थमें जीवको बतावै है कि साहबको

है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरला साधु बूझै है ॥ ५ ॥

इति सैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवीं रमैनी ॥ ३८ ॥

चौ०यहिबिधिकहौं कहा नहिं माना। मारगमाहिंपसारिनिताना १

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा । ओटतकाततभर्मनभागा २

भर्मै सबघट रह्यो समाई। भर्म छोड़ि कतहूं नहिं जाई ३

परै न पूरि दिनौंदिन छीना। जहां जाहु तहँ अङ्गविहीना ४

जोमतआदिअन्तचलिआया। सोमत उनसबप्रकटसुनाया ५

साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीश चढ़ाय ॥

सन्तोहै संतोष सुख, रहहु तौ हृदय जुड़ाय ६

यहिबिधिकहौंकहानहिंमाना। मारगमाहिं पसारिनिताना १

कबीरजी कहैं हैं कि सतयुग में सत्यसुकृत नामते त्रेता में मुनीन्द्र नामते द्वापरमें करुणामय नामते कलियुगमें कबीर नामते मैं चारो युगमें जीवनको रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें ताना पसारत भये कहे अपने अपने मतमें अर्थ करिलेते भये ॥ १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा। ओटतकाततभर्मनभागा २

और रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत भये अर्थात् जहां जहां अर्थ नहीं लगैहै तहां तहां अपने मतमें योजित करतभये और ओटत कातत कहे शङ्कासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटब कातब पीछे कह्यो सो प्रथम शङ्का समाधान करिकै काति ओटिकै ताना तनत भये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेर फेर शङ्का समाधान करि ओटि काति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धान्त न भयो ॥ २ ॥

भर्मै सबघट रह्यो समाई। भर्म छोड़ि कतहूं नहिं जाई ३

तब होते न तुरुक औ हिन्दू । मायके रुधिर पिताके बिन्दू २
तब नहिं होते गाय कसाई । कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबना रह्योहै कुल औ जाती । दोजख भिश्त कहां उतपाती ४
मनमसलेकी खबरि न जानै । मतिभुलान दुइदीन बखानै ५

साखी ॥ संयोगे का गुनरवै, बिन योगे गुणजाय ॥
जिह्वास्वादकेकारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

आदम आदिसुद्धिनहिंपावा । मामा हौवा कहँते आवा १
तब होते न तुरुक औ हिन्दू । मायकेरुधिरपिताकेबिन्दू २

आदि आदम जे ब्रह्मा ते मामा कहे जगत्पिता हौवा नाम ऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सों ब्रह्महीं सुधि ना पायो कि कहां ते आई है १ तब आदिमें न हिन्दू रहे न तुरुक रहे और मायके रुधिरते पिता के बिन्दुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो ॥ २ ॥

तबनहिंहोतेगायकसाई । कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबनरह्योहैकुलऔजाती । दोजखभिश्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकीखबरिनजानै । मतिभुलानदुइदीनबखानै ५

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो बिसमिल्ला कहिकै हलाल कौहै सो किन फुरमाई है ३ अरु तब न कुल रह्यो और न जाति रही दोजख भिश्त कहां रह्यो है ४ मनके मसलेकी सुधि न जान्यो कोई मेरे मनैके बनाये हैं दोनों दीन और अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिन्दू है न मुसल्मान है मतिहीन दुइदीन बखानत भये ॥ ५ ॥

साखी ॥ संयोगे का गुणरवै, बिनयोगे गुणजाय ॥
जिह्वास्वादकेकारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

जब मनको आत्माको संयोग होइ है तबहीं संकल्प होइ है और तबहीं गुण होइहै अरु जब मनको आत्माको संयोग नहीं होइ है तब गुण जाइहै कहे गुणौ नहीं रहैहै अरु संकल्पौ नहीं रहै है सो नर जे हैं ते जिह्वा सुखके कारण और शिश्न इन्द्रिय

सुखके कारण बहुत उपाय करतभये और मन व आत्माको संयोग छोड़ावनको उपाय करतभये और जे मन आत्माको संयोग छोड़्यो है ते आपने स्वस्वरूप को प्राप्त भये हैं ॥ ६ ॥

इति चालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४० ॥

अथ इकतालीसवीं रमैनी ॥ ४१ ॥

चौ० अम्बुकिराशि समुद्रकि खाई। रविशशि कोटि तेंतिसौभाई १
भँवरजालमें आसनमाड़ा। चाहत सुख दुख संग न छाड़ा २
दुखका मर्म काहु नहिं पाया। बहुतभांतिके जग बौराया ३
आपुहि बाउर आपु सयाना। हृदयाबसत राम नहिं जाना ४
साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरि के दास ॥
जामें भया न यामिनी, भामिनिचलीनिरास ५

अम्बुकिराशिसमुद्रकीखाई। रविशशिकोटितेंतिसौभाई १
भँवरजालमेंआसनमाड़ा। चाहतसुखदुखसङ्गनछाड़ा २

अम्बु कहे बिन्दु ताकी राशि शरीर है समुद्र जो है संसारसागर ताकी खाई है अर्थात् संसारहीमें सब शरीर परे हैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहे आवैहैं तैसे नानाजीवनके शरीर परे रहैहैं और सूर्य चन्द्रमा तेंतीस कोटि देवता १ यही संसारसागरके भँवरजालमें परे कबहूं नरकको जाय हैं कबहूं स्वर्गको जायहैं याही भांति सब जीव और सब देवता चाहत तो सुख को हैं कि हमको सुख होय पै दुःखरूप जो संसार है ताको संग नहीं छोड़ै हैं ॥ २ ॥

दुखकामर्मकाहुनहिंपाया। बहुत भांतिकेजगबौराया ३
आपुहिबाउरआपुसयाना। हृदयाबसतरामनहिंजाना ४

वह दुखरूप जो संसार है ताको मर्म कोई न जानत भयो बहुत भांति करिकै जगमें सबजीव बौराय गये ३ सो जीव जे हैं ते आपुहीते बाउर होत भये अरु आपहीते सयान होत भये हृदय में बसत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जानतभये अर्थात्

तुम कोई नहीं रहेहौ तुम सब हमरे साहब के लोक प्रकाश में रहेहौ १ अपने को रामतौ कहौहौ तुम्हारी सेवा कौनहै कहां वेद पुराण में लिखोहै कि इनकी सेवा किये मुक्ति होइगी सो तुम देवता बने फिरौहौ परन्तु मोको समुझाय के कहौ तो कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्ति भई है ॥ २ ॥

फुर फुर कहउँ मारु सब कोई। झूठे झूठा संगति होई ३

जो कोई फुरफुर कहैहै तो सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुम सांचहौ साहबकेहौ तो सब मारन धावैहै शास्त्रार्थ करि लरैहै काहेते लोक में रीति है कि झूठेकी झूठनसों संगति होयहै सो सांच जो जीव सो झूठामन उत्पत्ति करिकै झूठा जो धोखाब्रह्म ताहीकी संगति होत भई ॥ ३ ॥

आंधर कहै सबै हम देखा। तहँदिठियार पैठि मुँहपेखा४

साहबके ज्ञानते बिहीन जे आंधर हैं ते या कहै हैं कि वेद शास्त्र पुराण में अर्थ सब हमने ब्रह्मरूपई देखा है जाके देखेते सब को ज्ञान हमको ह्वै गयो तामें प्रमाण " येनाश्रुतं श्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं विज्ञातं भवति" तहां दिठियार जे साहबके देखनवारे ते वोई श्रुतिन में साहबमुख अर्थ देखै हैं कैसे जैसे 'येनाश्रुतं श्रुतं' कहे जौने रामनामके सुने जो नहीं सुनाहै सोऊ सुनै अस होइजाइहै काहेते वेद शास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसे हैं और जौने रामनामके जानेते यह जो अमतहै सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मत होइ जाइहै अर्थात् परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको चित अचित विग्रही सब को मानै है और मन वचन के परे जे अविज्ञात साहब ते रामनाम साहबमुख अर्थ में व्यञ्जित होयहै अथवा रामनामको जानिकै साधन किहेते साहब हंसरूप दै जानेजाइ है ॥ ४ ॥

यहिबिधिकहौंमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदयाहोई ५
कहहिं कबीर हंसमुसकाई। हमरे कहले छुटिहो भाई ६

सो या भांतिते मैं सब जीवनको समुझाऊं हौं पै कोई बिरला मानैहै कौन मानैहै जौन जस मुखते कहैहै तैसे हृदय ते होइ है ५ कबीरजी कहै हैं कि मुसकाई मुसकैं बँधीं जीवो हमारेही कहेते तुम छूटौगे औरीभांति न छूटौगे और मुकुताई पाठ होय तो या अर्थ मुक्ति होबेकी है इच्छा जिनके ॥ ६ ॥

इति बयालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तेंतालीसवीं रमैनी ॥ ४३ ॥

चौ०जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा । नरकगयेतेहिनरकहिबासा १
आवत जात न लागहि बारा । काल अहेरी सांझ सकारा २
चौदहि विद्या पढ़ि समुझावै । अपने मरनकि खबरि न पावै३
जाने जिवको परा अँदेशा । झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगति छोंड़ि करै असरारा । उबहै मोट नरक की धारा ५
साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष बिचार ॥
ते नर चौरासी भ्रमहिं, जबलगि शशिदिनकार ६

जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा। नरकगयेतेहिनरकहिबासा१

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्मा है सोई मालिक है दूसर नहीं है एकै है ते नर की मुक्तिकी बातें कौन कहै वे स्वर्गहू नहीं जायहैं नरकमें जायकै नरकहीमें बास किये रहै हैं काहेते नरकही जाय हैं कि इहां तो तीर्थ, व्रत, संयम जो स्वर्ग जावे को उपाय है ते तो मिथ्या मानि छांड़ि दियो जीवात्मै को मालिक मान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षाकरै और वेद, पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनको उपाय एकौ न कियो जब यमदूत मोगरालैकै मारनलगे बांधिकै कांटा में काढ़िलावनलगे तब मूढ़ पुकारनलाग्यो गुरुवालोगनको ते रक्षा न किये और गुरुवालोगनहूं की वही हवाल देखनलग्यो सो साहबको नाम तो सब छांड़िकै लियो नहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहां स्वर्गजाबेवारो सुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटके से पाद जन्म

गँवाइ दिये न इतके भये न उतके भये तामें प्रमाण " रामनाम जान्यो नहीं, कहा कियो तुम आय ॥ इतके भये न उतके, रहिया जनम गँवाय" ॥ १ ॥

आवतजातनलागहिबारा । कालअहेरी सांझसकारा २
चौदहबिद्यापढ़िसमुझावै । अपनेमरणकिखबरिनपावै३

आवत जात बार नहीं लगै है कहे पुनि पुनि जन्म लेइहै काल जो अहेरी है सो सांझ सकार उनहीं को खाय है वही बासना उनकी बनीरहै है फेरि वाही मनमें आरूढ़ह्वै फेरि वही नरकही को जायहै २ और चौदहौ विद्या पढ़िकै गुरुवालोग जे हैं ते औरैको तौ समुझावै हैं परन्तु अपने मरणकी खबरि नहीं पावै हैं ॥ ३ ॥

जानोजियकोपराअँदेशा । झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगति छोड़ि करै असरारा । उबहै नर्कमोट को भारा ५

जे जीवात्महीं को जानै हैं साहबको नहीं जानै हैं तिनहीं को अंदेश परै है काहेते कि सब झूठही है वही सँदेश कहै हैं जब यमदूत मारनलगे तब वा मारु देखि उनको अँदेश परै है कि हमारी रक्षा कौनकरैहै सो या पापिनकी दशा गरुड़पुराण में प्रसिद्ध है ४ साहबके जाननवारे जे साधु हैं तिनकी संगति छोड़िकै जे असरार कहे कफरई करै हैं अपने जीवात्मै को मालिक मानैहैं साहबको नहीं जानै हैं उ कहे वे जे दुष्ट हैं ते बहै मोटनरकको भारा कहे नरकको है भार जामें ऐसी जो माया की मोटरी ताही को बहै कहे ढोवै हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष बिचार ॥
तेनरचौरासी भ्रमहिं,जबलगिशशिदिनकार ६

कबीरजी कहै हैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु और जे साहबके बतावनवारे हैं सो येई गुरु हैं जो कोई इनकी वाणीको मिथ्या मानै है सोई गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही और मनमुखी कहे अपने मनैते नारि नर बिचारिकै जे एक जीवात्महींको मालिक

मानै हैं ते चौरासी लक्ष योनिही में जबलगि सूर्य चन्द्रमा रहैं हैं तबलगि वाहीमें परे रहै हैं ॥ ६ ॥

इति तैंतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चौवालीसवीं रमैनी ॥ ४४ ॥

चौ० कबहुँ न भये संग औ साथा । ऐसो जन्म गँवाये हाथा १
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना । साधुसंगतुम नहिं पहिंचाना २
अब तौ होइ नरक में बासा । निशिदिनपरेलबारकेपासा ३
साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया, कहै कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवस परतहै धार ४

कबहुं न भये संग औ साथा । ऐसो जन्म गँवाये हाथा १

साहबके जाननवारे जे साधु तिनको सत्संग कबहूं न कियो और उनके बताये साहबको साथ कबहूं न कियो जेहिते आवागमनरहित होय मनुष्य ऐसो जन्म अपने हाथ ते गमाय दियो ॥ १ ॥

बहुरि न ऐसो पैहौ थाना । साधुसंगतुमनहिंपहिंचाना २
अबतोरहोइनरकमें बासा । निशिदिनपरेलबारकेपासा ३

ऐसो थान कहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिंचान्यो है साधुसंग करो जो पूरा गुरु पाइजाउगे तो उबार ह्वै जाइगो २ धोखा जो है ब्रह्म और माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लबरा तिनके पास में निशिदिन पर्‌यो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मों बास होइगो ॥ ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया, कहैं कबीर पुकार ॥
चेतवाहोहु तौ चेतिले, दिवसपरतहैधार ४

दूनों ब्रह्ममायाके धोखामें सबको नरक जात देखिकै कबीर जी पुकारिकै कहै हैं कि चेतिबे को होइ तो चेतौ नहीं तो दिनैकै तिहारे ऊपर धार परै है कहे गुरुवालोगनको डाकापरै है भाव यह

है जो गुरुवालोगन को डाका तुम्हारे ऊपर परैगो और वह ब्रह्म को उपदेश करैगो और तुम्हारे वह धोखा दृढ़ परिजाइगो तो तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूं वह धोखाते काहूके फेरे न फिरोगे अर्थात् काहूको कहा न मानोगे तो संसारहीमें परेरहोगे बहुत बड़े बड़े वही धोखाते ब्रह्ममें परिकै मरिगये साहबको न जानत भये सो आगे कहैहैं ॥ ४ ॥

इति चौवालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवीं रमैनी ॥ ४५ ॥

चौ० हिरणाकुश रावण गये कंसा। कृष्णगये सुर नर मुनिबंसा १
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना। बड़ सबगयो जो रहे सयाना २
समुझिनपरीरामकी कहानी। निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगोपन्थ थकित भो पवना। दशौदिशा उजारिभोगवना ४
मीनजाल भोई संसारा। लोह कि नाव पषाणको भारा ५
खेवै सबै मरम नहिं जाना। तहिबो कहै रहै उतराना ६

साखी ॥ मछरी मुख जस केचुवा, मुसवन मुँह गिरदान ॥
सर्पन माहँ गहे जुवा, जाति सबनकी जान ७

हिरणाकुशरावणगयेकंसा। कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मागये मरमनहिंजाना। बढ़सबगये जो रहेसयाना २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश, रावण, कंस ये मरिजात भये और इन तीनोंके मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मर जातभये दशौ अवतार निरञ्जन नारायणै ते ह्वै हैं या हेतुते मरिजानवारे तीनि कह्यो मारनवारो एकही कह्यो और सुर, नर, मुनि इनके वंशवारे तेऊ मरिगये और ब्रह्मा आदिक जे बड़े बड़े सयान रहैं तेऊ वेदको तात्पर्य न जान्यो मरिगये ॥ १। २ ॥

समुझिनपरीरामकीकहानी। निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगो पन्थथकितभोपवना। दशौदिशा उजारिभोगवना ४

रामकी कहानी कहे रामनामकी कहनि जो चारों वेद कहेहैं सो काहू को न समुझिपरी धौं निरबक दूधही है धौं पानिही पानी है अर्थात् जिन को परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको ज्ञानभयो वेद को तात्पर्य बूझ्यो साहबमुख अर्थ लगायो सो दूधही पियत भयो और जो जगतमुख अर्थ में लग्यो सो पानिही पानी पियत भयो साहब मुख अर्थ न जान्यो एते सब मरिगये ३ अपने अपने पन्थ चलावतभये जब पवन थकित भयो कहे श्वासारहित भई तब दशोदिशा कहे दशौ इन्द्रिनद्वारके जे देवता ते जातरहे तब दशद्वार को जो शरीर गाउँ सो उजारि ह्वैगयो कहे मरिगये याते या आयो कि जे नानामत चलावै हैं मत यहै रहिजायहै जा श-रीर में मरिकै गये ताहीकी सुधि रहै है ॥ ४ ॥

मीनजालभोई संसारा । लोह कि नाव पषानको भारा ५

याही रीतिते मरत जियत जे मीनरूप जीव हैं तिनको यहि संसारसमुद्रमें वाणी जाल फन्दनको भयो सो जे जालमें फँदे ते तो अविद्याके जालमें फँदेही हैं जे उबरे चाहेहैं ते जड़वत् जो मन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जो अविद्यारूपी लोहेकी नाव तामें चढ़े सो वह बूड़िही जायगी फिर वही संसार में परे रहै हैं ॥ ५ ॥

खेवै सबै मर्म नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ६

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहे वही धोखाब्रह्म में लगावै हैं और या कहै हैं कि हम मर्म जान्यो है तुम यामें लगौ पार ह्वै जाउगे सो वह जो संसारसमुद्र में अविद्यारूपी नाव मन पाषाण ले भरी बूड़िही जायगी तामें गुरुचेला दोऊ बूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् वेदान्त आदि नानाशास्त्रनमें नानातर्क उठाय उठाय वि-चार करतऊ जायहैं संकल्प विकल्प नहीं छूटै तात्पर्य तो जानै नहीं और जन्मभरि चेला पूछतई जायहै परन्तु तबहूं यही कहै हैं कि तुम संसारसमुद्रमें उतराने हौ कहे उबरेहौ यह नहीं विचारैहैं

कि संकल्प विकल्प छूटबई नहीं कियो संसारते कैसे उबरैंगे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मछरीमुखजस केचुवा, मुसवन मुँह गिरदान ॥
सर्पन माहँ गहेजुवा, जाति सबनकी जान ७

जैसे मछरीके मुखमें केंचुवा मुसवानके मुँहमें गिर्दान अर्थात् जब मूस गिर्दानको रँगदेख्यो तब लाल मास अथवा लाल फल जानि धरनधायो जब फूंक मार्‍यो तब आँधर ह्वैगयो गिर्दानही मूसको खायलियो और सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूंदरको धरैहै जो उगिलै तो आँधर ह्वैजायहै खाय तो मरिजाय ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्मकाण्डी हैं ते जैसे मछरी केचुवाको जब खाय है तब मुँहमें बर्वा चुभिजायहै वाही में फँसिजाय है तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्म करैहै जनन मरण नहीं छूटैहै काल खायलेइ है और जे ज्ञानकाण्डी हैं ते साहबको ज्ञान तो काचो है अपने शास्त्रबल या कहै हैं कि हम समुझायकै पाखण्ड-मतवारे जे हैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या विचारि तिनके यहां गये सो वे धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मार्‍यो कि आँधरे ह्वैगये साहब को जौन ज्ञान रहै सो भूलिगये तो उनके खावे को पै वोई उलटिकै खागये और उपासनाकाण्डी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपासना धर्‍यो सोतौ छोड़तही नहीं बनैहै डरैहै कि देवता खफा न होइ आँधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवता के लोक गये और फेरि आये जन्म मरण नहीं छूटैहै जैसे सांप छछूंदरको धर्‍यो परन्तु न उगिलत बनै न लीलत बनै ताते कबीर जी कहैहैं कि साहब को जानो जनन मरण उनहीं के छुड़ाये छूटैगो ॥ ७ ॥

इति पैंतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४५ ॥

अथ छियालीसवीं रमैनी ॥ ४६ ॥

चौ० बिनसै नाग गरुड़ गलिजाई । बिनसै कपटी औ सतभाई १

बिनसैपापपुण्यजिनकीन्हा । बिनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा २
बिनसै अग्नि पवन अरु पानी । बिनसै सृष्टि जहांलौं गानी ३
विष्णुलोक बिनसै छनमाहीं । हो देखा परलयकी छाहीं ४
साखी ॥ मच्छरूप माया भई, यमरा खेलहि अहेर ॥
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे, सुर नर मुनि केहिकेर ५

जे भर ब्रह्माण्ड के भीतरहैं ते सब नाशवान् हैं संसारसमुद्र में ऐसो माया लपेट्यो कि यह मत्स्यजीव माया ह्वै गई अर्थात् मिलिगई है कहे जीवनको शरीर में डारिदियो है शरीरही देखेपरे है जीवको खोज नहीं मिलै है भीतर बाहर मन मास आदिक वह जड़मायही देखिपरैहै यमराजो धीमर काल है सो शिकार खेलैहै ताते कोई नहीं उबरै है कोई हालही मरैहै कोई महाप्रलय में मरै है ॥ १ । ५ ॥

इति छियालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४६ ॥

अथ सैंतालीसवीं रमैनी ॥ ४७ ॥

चौ० जरासन्ध शिशुपाल सँहारा । सहसअर्जुनै छल सों मारा १
बड़छल रावणसो गये बीती । लङ्कारह कञ्चनकी भीती २
दुर्योधन अभिमानहिं गयऊ । पाण्डवकेर मरम नहिं पयऊ३
मायाके डिभगे सबराजा । उत्तम मध्यम बाजन बाजा ४
छांचकवैवितधरणि समाना । यकौ जीव परतीति न आना५
कहँलौं कहौं अचेते गयऊ । चेत अचेत झगर यकभयऊ६
साखी ॥ ई माया जग मोहनी, मोहिसि सब जगधाय ॥
हरिचन्द्र सतिके कारने, घर२ सो गो बिकाय ७

ये जे राजा बड़े २ गनाय आये ते सब मारे परे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकरिकै गये सो कहांलौं मैं कहौं चित अचितके झगरा ते कहे चित जीव अचित माया ई दूनौं के संयोग ते सब जीव पृथ्वी में मिलिगये अपने शुद्ध आत्मा को न जानत भये यह माया जोहै जगमोहनी सो सब जगको धायकै मोहिलेत

भई हरिश्चन्द्र जे राजा हैं ते सत्यके कारणे विद्यामायामें बँधिके घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ॥ १ । ७ ॥

इति सैंतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ॥ ४८ ॥

चौ० मानिकपुरहि कबीर बसेरी । मद्दति सुनो शेष तकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुर थामा । भूसी सुनी पिरनके नामा २
इकइसपीर लिखे तेहिठामा । खतमा पढ़ैं पैगसर नामा ३
सुनिबोलमोहिंरहा न जाई । देखि मकुरवा रहे लोभाई ४
हबीबी औ नबीके कामा । जहँलों अमल सो सबेहरामा ५

साखी ॥ शेखअकरदी शेख सकरदी, मानहु बचन हमार ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, देखो दृष्टि पसार ६

प्रकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहांसे खतकी मद्दति सुन्यो जिन पीरनके स्थान १ जमनपुर में सुन्यो ते भूसीपार में आये तहां मैंहूं गयों २ इकैसौ जे पीरहैं तिनके नामलिखेहैं कि ये सब पैग़म्बरैकेर फ़ातियां देइ हैं और कलमा पढ़ै हैं ३ सो उनके बोल सुनि २ मो पै नहीं रहाजाय है मकुरवा देखि २ ये सब भुलायरहेहैं यह जानिकै तहां मैं जाइकै कह्यो कि ४ हवी कहे देवतनको खाना अथवा हवी फ़ारसीमें दोस्तको कहै हैं और जहां भर नाम है नवीके जे तुम लेतेहौ और नवी के जहां भर काम है जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हराम हैं काहेते अल्लाह तो मन वचन के परे है ५ हे शेखअकरदी, हे शेख सकरदी ! हमारो कहो जो वचन है सो सब सांच मानो आदि अन्तमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहांभर मन वचन में पदार्थ आवै हैं सो सब माया को पसार है अल्लाह नहीं है सो कबीरजी के चौबिसपरचैसे खत के लिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भयज्ञान में विस्तारते हैं ॥ ६ ॥

इति अड़तालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवीं रमैनी ॥ ४९ ॥

चौ० दरकी बात कहौ दुर्वेशा। बादशाह है कौने भेशा १
कहां कूच कहँ करै मुकामा। कौनसुरतिकोकरौंसलामा २
मैं तोहिं पूछौं मूसलमाना। लाल जर्दकी नाना बाना ३
काजी काज करौ तुम कैसा। घर २ जबै करावो वैसा ४
बकरीमुर्गीकिनफुरमाया। किसकेहुकुमतुमछुरीचलाया ५
दर्द न जानै पीर कहावै। बैता पढ़ि २ जग समुझावै ६
कहकबीरयकसय्यदकहावै। आपुसरीका जग कबुलावै ७
साखी ॥ दिन भर रोज़ा धरतहौ, राति हततहौ गाय ॥
यह तो खून वह बन्दगी, क्योंकर खुशी खोदाय ८

और पदको स्पष्टही है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्द तो तिहारे दिलमें आवती नहीं है गला कटावते में अल्लाह को बागी चाखऐब करतेहौ अरु बैतैं पढ़ि २ के पीर कहावतेहौ और जगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बेपीर पीरभर कहवावतेहौ ६ सो कबीरजी कहै हैं कि एक सय्यद जो है वह पीर गुरुवा सो जैसा आप खुआरहै और तैसे सबको खुआरकरै है ७ दिनको तो रोज़ा धरते हौ और बन्दगी करतेहौ और रातिको गाई हततेहौ कहे मारते हौ सो यह तो खूनकरतेहौ बहुत भारी और वह बन्दगी बहुत थोरी करतेहौ दिनको न खायो रातिहीको खायो क्योंकर तिहारे ऊपर खोदाय खुशी होय ताते यह कि वह तो साहबको है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहीं के हाथ तुम्हारऊ गला वह साहब कटावैंगे ॥ ८ ॥

इति उनचासवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४९ ॥

अथ पचासवीं रमैनी ॥ ५० ॥

चौ० कहतेमोहिंभयलयुगचारी। समुझतनाहिंमोहिसुतनारी १
बंशआगिलागि बंशैजरिया। भ्रमभुलाय नल धन्धेपरिया २
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई। मृगी के फन्दे मिरगा परई ३

लोहै लोह काटजसआना। तियकै तत्त्व तिया पहिंचाना ४
साखी ॥ नारि रचन्ते पुरुष है, पुरुष रचन्ते नार ॥
पुरुषहि पूरुष जो रचै, तेहि बिरले संसार ५

चारिउ जग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहते कोई समुझत नहीं है १ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारिदेइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रम में भुलायकै नर धन्धे में परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासना में परिकै जरै है कोई सुत नारी के धन्धे में परिकै जरै है २ जैसे हथिनीके फन्दे हाथी रहैहै मृगी के फन्दे मृगा परै है कहे फँदिजाय है ऐसे जीवके फन्दमें जीव परेहै जैसे लोहते लोह कटिजायहै तैसे जीवहीते जीव यह मारो परै तियकी तत्त्व स्त्री पहिंचानैं स्त्री जो ऊंटिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमिजाय है काहेते साहबको तो जानै नहीं जीव जीवही सों विश्वास मानै माया में मिलिकै या जीव मायाही में रह्यो है ताते माया कही पदार्थ में विश्वास मानैहै ३।४ नारीते पुरुष रचि जाइहै कहे मायाते सब पुरुष भये हैं और पुरुष जो है शुद्धसमष्टिजीव ताहीते माया भई है और पुरुष जोहैं शुद्धजीव सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके बादशाह तिनमें रचै कहे प्रीति करै ऐसो कोई बिरलाहै ॥ ५ ॥

इति पचासवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवीं रमैनी ॥ ५१ ॥

चौ० जाकरनाम अकहुवाभाई। ताकर कहां रमैनी गाई १
कहैको तात्पर्य है ऐसा। जस पन्थी बोहित चढ़िवैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहत चला पुनिजाता ३
रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ। मन अस्थिर नहिं बोलै काऊ ४
साखी ॥ तनरहतै मन जातहै, मनरहते तन जाय ॥
तनमन एकै ह्वैरह्यो, हंस कबीर कहाय ५

जाकर नाम अकहुवा भाई। ताकर कहाँ रमैनी गाई १

जाको नाम अकह है ताको तो हिन्दू मन वचनके परे कहते हैं और मुसलमान "बेचून, बेचिगून, बेसुभा, बेनिमून" कहते हैं सो हम पूछतेहैं हिन्दू कहै हैं कि वह तो निराकार होतो तो कहै हैं कि वेद मेरी श्वासा है शरीर न हो तो तौ वेद श्वासा कैसे होतो जो कहो वेद तो माय कहे तो मिथ्याके बताये तुमहीं सांच पदार्थ कैसे जानिहौ जो कहै साकार है तो मध्यम परमान ठहराय तो अनित्य होइ है अकहुवा न होइगो अरु जो मुसलमान निराकार कहै हैं कि उसके आकार नहीं है तो मूसा पैग़म्बरको कोहतरकै पहाड़ में छँगुनी देखायो सो वह पहाड़ क्षार ह्वैगयो जो शरीर न होतो तो छँगुनी कैसे देखावतो कुरान में लिखैहै कि जिस तरफ़ अपना मुँह फेरै तिसी तरफ़ साहबका मुँह है और सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथ है और अल्लाह महम्मदसों कहते हैं कि जिसका हाथ पकरा तूने तिसका हाथ पकरा मैं तब सों इन लीलोंते यह आवताहै किउसके शकल है पै जिसतरहका उसका शकल है सो कोई नहीं कहिसकै है काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होय तो उसकी उपमादैकै समुझाय सक्के सो उसकी शकल तो कोई नहीं समुझाय सक्का है लेकिन जो कोई उसकी शकल देखा है सोई जानता है जैसी उसकी शकल है लेकिन बयान नहीं कर सक्का है और कुरान ख़ोदाको कलाम है कहे बात हैं जो बदन न होता तो कलाम कैसे कहते सो निराकार साकार के परे अकह जो साहब है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि वर्णन की कथा ज़बान में किस तरहसे कहौ वचनमें तो आवै नहीं है अथवा जाकर नामै अकहुवाहै ताको रूप अकहुवा बनै है तिसकी कथा कहां कहैं जो वाहू अकहुवा होयगी जो ऐसाभया तो जानि न परैगो किसूको मिथ्या होइजाइगो तौनेको कबीरजी कहै हैं कि सबको हमको अकहुवा है कछू उसको साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हम ताहीकी कही रमैनी गाइतहै सो जो कछु रमैनी में लिख्यो है सो सांचही है ॥ १ ॥

कहै को तात्पर्य है ऐसा। जसपन्थी बोहितचढ़ि वैसा२
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहा चला पुनि जाता३

जौन कहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांव शरीरसे साहब नहीं मिलैहै काहेते मन वचनके परेहै साहब और जो हमसों साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतु यह है साहब विचार्‌यो कि मनवचके परे जो मैंहौं सो विना मेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जो कहौ साहबको कापरी है न जानैंगे जीव तो साहबके दयालुताकी हानि होइहै याते उपदेश करै कहैहैं सो जौने अकह रामनाम के जपेते साहब प्रसन्न है हंसरूप देइ है तौन रामनाम रमैनी ते जानिकै काहेते कि "इच्छाकरभवसागर, बोहितरामअधार। कहहिं कबिर हरि शरणगहु, गोबछ खुर बिस्तार" ऐसी साखी रमैनी में लिखी है तेहिते या अर्थ आया कि संसारसागर पार होवैको एक रामनामही जहाज मानि नामार्थ में जो शरणकी विधि है ताको अनुसंधान करत रामनाम जपै २ यह रहनि गहनि कैकै जैसे बछवाको खुरलोग उतरिजाय हैं ऐसो संसारसागर में रामनाम को अभ्यासकै तरिजायहैं कैसे जैसे नाव को चढ़ैया नाव में बैठाहै पै पार होत जाय है ऐसे रामनाम को जपैया संसारसागर में बैठो देखो परै है परन्तु पार को चलो जाय है ॥ ३ ॥

रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ। मनअस्थिरनहिंबोलैकाऊ४

इस तरहके जे हैं जिनके वदन कहे संभाषण करिबे ते जीवनको स्वागको सुभाउ कहे ब्रह्म ह्वैजावो चतुर्भुजादिकनके लोक में जाइ चतुर्भुज ह्वैजावो और नानादेवतनके लोकजाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै संसार तो छूटिही जायहै सो वे बोलै हैं और मन स्थिरह्वैगयो है कहे मनको संकल्प विकल्प तो छूटै नहीं है मनते भिन्न ह्वैबो कहा है कि संकल्प विकल्पही मनको स्वरूप है जब संकल्प विकल्प छूटिगयो तब मनते भिन्न ह्वै गयो सो कैसे मनते भिन्न होइगो सो साधन आगे कहे हैं ॥ ४ ॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै, मन रहते तन जाय ॥
तन मन एकै ह्वैरहौ, हंस कबीर कहाय ५

तन जो है वा शरीर स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण सो अर्थ अनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वैगयो तब मन जातरहै है और मन जायहै तब चारिउ शरीर जात रहैहैं सो जब तन मन एकह्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बंधेहैं सो प्राण और मनको एकघर करिदेइ सो नाम जपि बिधि जानि तब संकल्प विकल्प मनको छूटिजाय है मन तो संकल्प विकल्परूप है सो जब संकल्प विकल्प छूट्यो तब मन नाश ह्वैगयो तब चारिउ शरीरको हेत जो है ज्ञान सोऊ जातरहै है तब चारिउ शरीर भिन्न ह्वै जाय हैं एक शुद्ध आत्मा में स्थिर ह्वैरहे हैं मुक्ति ह्वै जाय हैं जैसे पूर्वशुद्ध समष्टिरूप में रह्यो है तैसे सो ह्वै गयो जैसे समष्टिजीव में जब रह्यो है तब जगत् को कारण रह्यो आयो है साहबको न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वैगयो है तैसे यह जो शरीरन में साहबको भजन करिराख्यो साहबको जानि राख्यो सो जब मनआदिक याके छूटि गये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो काहेते कि रामनाम को साहब मूर्ख जानिराख्यो है सो मङ्गल में साहब कहिआये हैं कि जो रामनाम जपिकै मोको जानै तो मैं हंसरूप दै अपनेपास बुलाय लेऊं याही ते साहब हंसरूप देइ है तब वह कायाको बीर जीव हंस कहावै है कैसे हंस कहावै है कि असार जे हैं चारिउ शरीर और मन मायारूप पानी ताको छोड़िदियो और सार जो है साहबको ज्ञानरूप दूध ताको ग्रहण कियो और अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सो कबीरजी लिखबै कियो है शब्दमें निर्मल नाम चुनि चुनि बोलै अरु अकह रामनामईहै अरु अकह निर्गुण सगुण के परे है श्रीरामचन्द्रई हैं तामें प्रमाण "रामके नामते पिण्डब्रह्माण्ड सब रामको नाम सुनि भर्ममानी । निर्गुण निरङ्कार के पार परब्रह्म है तासुको नाम

रङ्कार जानी ॥ विष्णुपूजाकरै ध्यान शङ्कर धरै भनहि सुविरचि बहुबिबिध बानी । कहैं कब्बीर कोइ पार पावै नहीं रामको नामहै अकह कहानी" ॥ ५ ॥

इति इक्यावनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवीं रमैनी ॥ ५२ ॥

चौ० ज्यहिकारणशिवअजहुँबियोगी । अङ्गविभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपार न पावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २
ऐसीविधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांति दिखाई देऊ । गुप्तै रहि सुभाव सब लेऊ ४
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमरमानै नहीं, किमिछूटैभ्रमजाल ५

ज्यहिकारणशिवअजहुँबियोगी।अङ्गविभूतिलायभेयोगी१
शेषसहसमुखपारनपावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २

जाके कारण शिव अङ्गमें विभूति लगाइकै योगी भये परन्तु अजहूँलों वासों वियोगी हैं काहे ते कि जो वियोगी न होतो तो तमोगुणाभिमानी काहे रहते १ और शेष सहसमुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तेहि ते सहित जीवनको समुझावै है काहेते जीवनको हित मानिकै समुझावैहै कि मोको जानिकै मेरेपास आवै संसार दुःख न पावै॥२॥

ऐसीबिधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांति दिखाई देऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ४

साहब कहा समुझावै है कि जैसो पूर्व कहिआयेहैं नामार्थ में लिखि आये हैं शरणकी विधि तैसो अनुसंधान करत रामनाम जपिकै निरन्तर जो छठयें मास या होइ तो जो या शरीरते करै है छामहीनामें दर्शन सो पावै है याही भांतिसों जो मोको ध्यावै तो छठयेंमास मेरो दर्शन पावै कहे छठौ जो हंसस्वरूप तामें

स्थिर ह्वैकै ३ तो कौनिउँ भांतिसों मैं देखाइ देउहौं और निशिदिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभावलेउ और जो दृढ़ होइ तो राम नाम का साधक हेत ताको छठौं शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछे २ रघुनाथजी नित्य बनेरहत हैं तामें प्रमाण "रामरामेतिरामेति रामरामेतिवादिनम् । वत्संगौरिवगौर्यर्च्या धावन्तमनुधावति" ॥ ४ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीरपुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमर मानै नहीं, किमिछूटै भ्रमजाल ५

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि जिनको शेष शिवादिकने पार नहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजु कालिह ऐसे सुलभ ह्वैगये हैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपाय करैं तो छठयें शरीर में मोको पाइजाइँ ते साहबको कह्यो मैं यतनो समुझावत हौं पै सब बेवकूफ़ हैं जीवन को हवाल उहै है कहे वही मायाके नानामतन में लगेहैं वहीको विचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायो है हमारो कहो यतनेहू पै नहीं मानैहैं सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसे छूटै ॥ ५ ॥

इति बावनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५२ ॥

अथ तिरपनवींरमैनी ॥ ५३ ॥

चौ० महादेव मुनि अन्त न पावा । उमासहित उन जन्म गँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिं कोई । मन निश्चल कहु कैसे होई २
जौ लग तन में ऐहै सोई । तौ लग चेत न देखौ कोई ३
तबचेतिहौजबतजिहौप्राना । भया अनत तब मनपछिताना ४
इतनासुनतनिकटचलिआई । मनको बिकार न छूटै भाई ५

साखी ॥ तीनि लोकमों आयकै, छूटि न काहु कि आश ॥
यक आंधर जग खाइया, सब जग भया निराश ६

उनते अधिक सिद्धि कौन साध्यो है जाको मन निश्चल होइ अर्थात् सिद्धि साधे मन निश्चल नहीं होय है २ जबलग शरीर

में मन है तबलग चेतन करिकै अथवा महा महा देवता जे हैं और बड़े बड़े मुनि जे हैं ते अन्त नहीं पायो जो कोऊ जान्यो है ते वोही साधन ते जान्यो है कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोई नहीं देखै हैं ३ कबीरजी कहैहैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे तब कहां चेतौगे यह काकु है जब अनतही जानना शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तो यह अर्थ है कि तुम जो अयानेभये साहबको न जान्यो हमार कहा मानबई न कियो तो अब पछिताना क्या है पछितातो काहेको है संसार पीर स्त्रहो ४ यह सब जगत् शास्त्रनमें सुना है कि मौत निकट चलीआवैहै हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथैहै मनको विकार नहीं छोड़े है ५ तीनि लोक में आइकै सब मरि गयो परन्तु काहूकी आशा न छूटत भई एक आंधर जो है मन सो जगत् को खाइलियो सब जगत् परमपुरुषके मिलिबेको निराश ह्वैगयो इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुष को कबहूं नहीं देखै है काहेते कि साहब मन वचन के परेहै आपही शक्ति देइहै जीव को तबहीं देखै है ॥ ६ ॥

इति तिरपनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५३ ॥

अथ चौवनवींरमैनी ॥ ५४ ॥

चौ० मरिगयेब्रह्माकाशिकेवाशी। शीव सहित मूये अविनाशी १
मथुरा मरिगयेकृष्णगुवारा। मरि मरि गये दशौ अवतारा २
मरिमरिगयेभक्तिजिनठानी। सर्गुणमें जिन निर्गुण आनी ३
साखी ॥ नाथ मछन्दर ना छुटै, गोरखदत्ता व्यास ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, सबपरे कालके फाँस ४

ब्रह्मा जे हैं काशीके बासी शंभू जेहैं तिनते सहित अविनाशी जे विष्णु ते मरिगये सो अविनाशी सबकोई कहतई है और मरिबो कहैहैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महाप्रलय में तिरोधान ह्वै पुनि प्रकटहोइहैं याते अविनाशी कह्यो है १ मथुरा

के कृष्ण व गुवार और दशौ अवतार तेऊ मरि कहे तिरोधान ह्वै गये कहांगये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हज़ारन ब्रह्मा, विष्णु, महेश और दशौ अवतार ठाढ़े हैं जाको जौने ब्रह्माण्डको हुकुम होइ है सो तहां अवतार लै पुनि अपने अंशन में लीन होइ है तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमान्प्रति "आसीनं तमनुध्याये सहस्रस्तम्भमण्डिते। मण्डपे रत्नसङ्गे च जानक्या सह राघवम्॥ मत्स्यः कूर्मश्च कृष्णश्च नारसिंहाद्यनेकधा। वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च। देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च॥ पृष्णिगर्भो मधून्माथी गोविन्दोमाधवोऽपि च। वासुदेवो परोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनाम महेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वं तं मूलत्वं निरीश्वरः॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिः साक्षी गतिः प्रभुः। विष्णुः स्वयं स विष्णूनांपतिर्वेदान्तकृद्विभुः॥ ब्रह्मा स ब्रह्मणांकर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणां सपतीरुद्रो रुद्रकोटिनियामकः॥ चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च। अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च। सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीरामइतीरितः२" और जिन सगुणमें भक्तिको ठानी है तेऊ मरिगये और जे निर्गुण आन्यो है तेऊ मरिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ मरिगये ३ और मछन्दर, गोरख, दत्तात्रेय और व्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब काल के फाँसमें परत भये कहे महाप्रलयमें नाश ह्वैगये महाप्रलय में जब ब्रह्मा मरे हैं तब कोई नहीं रहे हैं॥ ४॥

इति चौवनवींरमैनीसमाप्तम्॥ ५४॥

अथ पचपनवीं रमैनी॥ ५५॥

चौ० गये राम अरु गये लक्ष्मना। संग न गै सीता असि धना १
जातकौरवनलाग न बारा। गये भोज जिन साजल धारा २

गे पाण्डव कुन्तीसी रानी। गेसहदेव जिन मति बुधिठानी ३
सर्ब सोनेकै लङ्क उठाई। चलत बार कछु संग न लाई ४
कुरियाजासुअन्तरिक्षछाई। सो हरिचन्द्र देखि नहिं जाई ५
मूरुखमानुषअधिकसँजोवै। अपना मुवल और लगिरोवै ६
इन जानै अपनो मरि जैबै। टका दश बिढ़ै और लै खैबै ७
साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

गये राम अरु गये लक्ष्मना। संग न गे सीताअसिधना १

देवतन मुनिनको कहि आये हैं अब राजनको कहै हैं काहेते कि आगे दशअवतार कहिआये हैं इहां पुनि राम कहै हैं तहां इहां जे जीव रामराजा भये ताको और लक्ष्मणको महाभारत सभापर्व में नारद युधिष्ठिर ते कह्यो है राजन के गिनती में यमकी सभामें तिनको कहै हैं कि राम गये लक्ष्मण गये और संगमें सीता असि नारी न जातभई जो यह अर्थ कोई न मानै तो यह कहै हैं कि नारायणके अवतार रामचन्द्र हैं तिनहींको जाइबो कबीर कहै हैं तो कबीरजी तो सांचके कहवैया हैं झूठी कैसे कहैंगे सब रामायणमें वर्णन है कि प्रथम जानकी शरीरते सहित गई हैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जात भये जिनके संग श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति शरीरसहित चलीजाती है सो जो कबीरजी व राजा जे भये हैं तिनको जाइबेको न कहते तो संग में सिया असि धना न गई यह कैसे लिखते ॥ १ ॥

जातकौरवनलागिनबारा। गयेभोज जिनसाजलधारा २
गे पाण्डवकुन्तीसी रानी। गेसहदेवजिनमतिबुधिठानी ३
सर्बसोनेकी लङ्क बनाई। चलत बार कछु संग न लाई ४

और कौरवनको जात बार न लग्यो और राजा भोज गये जिन धारानगरी को बसायो है कहे साज्यो है जरासन्ध के पुत्र हैं भोज ते कलियुग के राजा सब आय गये २ और पाण्डवा जे हैं

व कुन्ती ऐसी रानी जो है और सहदेव जे हैं ते सब जातभये जे पण्डित हैं तिनहूं में अपनी मति कहे बुद्धि अधिक ठानत भये कहे करत भये ३ और सब लङ्का सोनेकै रावण बनायो पै चलतवार संगमें न गई ॥ ४ ॥

कुरियाजासुअन्तरिक्षछाई । सोहरिचन्द्रदेखिनहिंजाई ५

और जाकी कुरिया अन्तरिक्षमें छाई है कहे स्वर्ग में महल वनो है इन्द्रते अधिक सिंहासन मैं बैठे हैं ऐसे जे हैं हरिश्चन्द्र राजा तेऊ नहीं देखि परै हैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भाव यह है कि महाप्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाइ है ॥ ५ ॥

मूरुखमानुषअधिकसँजोवै । अपनामुवलऔरलगिरोवै ६
इन जानै अपनो मरिजैबै । टका दशबिढ़ै और लैखैबै ७

मूरुख जो मनुष्य है सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवैहै अर्थात् और को मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सबको मरिबो देखतई जाय हैं और रोवै हैं अपने मरनकी चिन्ता नहीं करै हैं ६ या नहीं जानै हैं कि जेते दिन बीति गये जेतने मरिगये और मरिही जायँगे यहै विचारै हैं कि और दश टका बिढ़वैं जाते बहुतादिन बैठे खायँ ॥ ७ ॥

साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

जीति जीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशस्वी दशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करै हैं उनके सुकृतको यश जगतहीमें रहिगयो उनके साथ न गयो और अयशस्वी रावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब कोई निन्दा करै हैं जाके दुष्कृतको अयश जगतही में रहिगयो ॥ ८ ॥

इति पचपनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५५ ॥

अथ छप्पनवीं रमैनी ॥ ५६ ॥

चौ० दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उमगै काऊ १
कन्ध न देइ मसखरी करई। कहुधौं कौनिभाँति निस्तरई २
अकरमकरै करमको धावै। पढ़ि गुणि बेद जगत समुझावै ३
छूछे परे अकारथ जाई। कह कबीर चितचेतहु भाई ४

दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उबरै काऊ १

कबीरजी कहै हैं कि जे रोज़ रोज़ ज्ञानाग्नि करिकै कर्म को जारै हैं और अपने जीवत्वको जारै हैं कि हम ब्रह्म ह्वै जायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूके कर्महीं जरे न कोई ब्रह्महीं भयो अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगये हैं कर्म जाको अर्थात् कर्महीं नहीं है ऐसो जो ब्रह्म ताको पायो है अर्थात् कोई नहीं पायो है जो कहो जड़भरतादिक पायो है तो वे जो ब्रह्महीं ह्वै जाते तो दूसरो मानिकै रहूगणको कैसे उपदेश करते कपिलदेव सगरके लरिकन काहे जारिदेते और सनकादिक जय बिजय को काहे शाप देते सो तुम ब्रह्म ह्वैबेकी आशा न करो जो संसार में परे रहौगे तो कबहूं सत्संग पायकै उद्धारहू होइजाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़ में परौगे तो गड़िजाउगे कबहूं न उमगौगे अर्थात् तिहारो कतहूं उद्धार न होइगो ॥ १ ॥

कन्धनदेइ मसखरी करई। कहुधौं कौनभांति निस्तरई २

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तार होय समीचीन साधुनको सत्संग तो मिलै नहीं है गुरुवालोगको सत्संग मिलै है ते मसखरी करै हैं मसखरी कौन कहावै जो आपतो जानै और औरेनको ठगै सो गुरुवालोग आपतो जानै हैं कि या झूठा ब्रह्म में हम लागे हमारे हाथ कछु बस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जो साहब में लगै हैं जीव तिनको कांधा तानादिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्ट तो न किये कि भले लगे हैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं "अहं ब्रह्मास्मि" मानौ तो तुमको अनेक प्रकारकी

ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होइ है साहब को ज्ञान छांड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारिदिये ॥ २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै । पढ़िगुणिबेदजगतसमुझावै ३
छूंछे परै अकारथ जाई । कह कबीर चित चेतहु भाई ४

कैसे हैं वे गुरुवालोग करत तो अकरममत है कि हमको करम त्याग है हम संन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं और करम करिबेको धावै हैं और वेदको पढ़िगुणिकै जगत्को समुझावै हैं कि निष्कर्म होउ चाहई ते सब विकार है चाह छोड़िदेउ और आप भाजीके लिये बज़ार में झगरै हैं सो उनके कहे जीवनको कैसे समुझिपरै ३ उनको उपदेश अकारथई जायहै और जो सुनै है सो छूंछई परै है अर्थात् कछू वस्तु हाथ नहीं लगै है सो कबीरजी कहै हैं कि हे भाई ! चित चेत करो जेहिते कनक कामिनीरूप माया ते और धोखा ब्रह्म ते बचि जाउ ॥ ४ ॥

इति छप्पनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवीं रमैनी ॥ ५७ ॥

चौ० कृतिया सूत्रलोक यक अहई । लाख पचासके आगे कहई १
बिद्या वेद पढ़ै पुनि सोई । बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता । वाहु के भर्म भये संकेता ३
साखी ॥ खग खोजनको तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहौ, झूठा है हङ्कार ४

कृतियासूत्रलोकयकअहई । लाखपचासकेआगेकहई १

अथ कृतिया कहे यह कृत्रिम जो है कर्म "अहंब्रह्म" मानिबो सो यह लोकमें एक सूत्रके बरोबर है कहे रसरी के बरोबर है जीवनके बांधिबेको मङ्गलमें कहेउ आयेहैं कि ब्रह्ममें अणिमादिक सिद्धियाँ होइहैं सो वह कृत्य करिकै कहे ब्रह्म मानिकै पचासलाख

बर्षके आगेकी कहै हैं सो पचासलाख यह उपलक्षण है अर्थात् भूत-भविष्य-वर्तमान सब कहै हैं ॥ १ ॥

बिद्या बेद पढ़ै पुनि सोई। बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता। वाहुके भर्म भये संकेता ३

बिद्या जो है वेद जो है सो सम्पूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौन बात कहै हैं तौन परतक्ष होइहै कहे वाक्यसिद्धि ह्वैजाइ है २ वे विद्याके वेत्ता कहे जनैया जे लोगहैं ते वह बातको पहुँचि कहे पहुँचतभये अणिमादिक सिद्धि होत भई और ब्रह्मको जानत भये परन्तु साहबको जो है साकेतलोक ताके जानिबेको उनहूंको भ्रम भयो अर्थात् साहबको लोक न जानत भये ॥ ३ ॥

साखी ॥ खगखोजन को तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहौ, झूठा है हङ्कार ४

और खग जो है हंस तिहारो स्वरूप ताके खोजिबे को तुम चल्यो कि हम अपने आत्माको स्वरूप जानैं सो साहब अगम अपार जो धोखाब्रह्म सों लग्यो है वाहीको अपनो स्वरूप मानि लियो है जब कुछ संसार तुमको छूट तब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म है ताही को "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै बैठ्यो सो वह अगम है काहूकी गम्य नहीं है अपार है अर्थात् झूठा है भाव यह है कि जब साकेतलोक को जानोगे तब साकेतनिवासी जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको जानोगे तब वे हंसस्वरूप दै अपने धाम को लैजायँगे तबहीं जन्म मरणते रहित होउगे तब हंसस्वरूप पावोगे औरी भांति संसार ते न छूटोगे न सिद्धि प्राप्त भये न ब्रह्म भये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजी को दोहा "बारि मथे घृत होइ बरु, सिकताते बरु तेल। बिनु हरिभजन न भव तरै, यह सिद्धान्त अपेल १" और कबीरहूजी को प्रमाण "राम बिना नर ह्वैहौ कैसा। बाटमाँझ गोबरौरा जैसा" ॥ ४ ॥

इति सत्तावनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवीं रमैनी ॥ ५८ ॥

चौ० तैं सुत मानु हमारी सेवा । तो कहँ राजि देहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई २
उतपति परलै देउ देखाई । करहु राज्य सुख बिलसहु जाई ३
एको बार न जैहै बाँको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको ४
जाय पाय देहो सुखधाना । निश्चय बचन कबीरको माना ५
साखी ॥ साधुसन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदिअन्त उत्पति प्रलय, सब देखा दृष्टिपसार ६

तैं सुत मानु हमारी सेवा । तोको राजिदेहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई २

वही लोकके गये जन्म मरण छूटैहै सो कबीरजी साहिबैकी उक्ति कहै हैं साहब कहै हैं हे सुत, हे जीव ! तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहैहै कि मैं इनको दास हौं तिन देवतनकी राज्य मैं तोको देहुँगो अर्थात् मेरो पार्षद जब होयगो तब सबके ऊपर ह्वै जायगो ते देवता तुम्हारही सेवा करैंगे १ और गम जो है जगत् दुर्गम जो है निर्गुणब्रह्म ये दूनों धोखा जे गढ़ हैं ते तोको छोड़ाय देउँगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउँगो और वह धोखाब्रह्म में न लगन देउँगो जो जीवनको संसारी करिदेइहैं तब सगुण निर्गुणके परे जो और कछु बात है सो मेरे पार्षद कहै हैं सो तैंहूं मेरे नगीच आइकै सुनैगो ॥ २ ॥

उतपतिपरलैदेउदेखाई । करहुराज्यसुख बिलसहुजाई ३

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनीभांति सो मेरे प्रकाशके भीतर समष्टिजीवते होइहै सो मैं ऊंचेते तोको देखाइ देउँगो और जगत्में आयकै जो मोको जानिकै मेरी भक्ति करै हैं सो सुख है सो तैंहूं मेरी भक्ति करिकै संसाररूपी राज्य में जाइकै सुखसों बिलसैगो तोको संसार बाधा न करिसकैगो जगत्रूपी राज्य के विषयानन्द ब्रह्मानन्द आदिक जे सुख हैं ते सुख नहीं हैं जो कहो साहब

के लोक जाइ फेरि कैसे आवैगो उहाँ गये तो अपुनरावृत्ति कहि आये हैं तो कबीरजी वीरसिंह देवको साहबके लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत् बाधा नहीं करिसकै है वे साहब लोकही में हैं काहेते कि साहबको लोक प्रकाश सर्वत्र व्यापक है साहबकी सकल सामग्री साहबके रूपई बर्णन करि आयेहैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्र पूर्ण है तो साहबको लोक और साहब सर्वत्र पूर्णई है जे साहबको जानै हैं और जगतऊमें हैं तो साहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ॥ ३ ॥

एको बार न जैहै बाँको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको४
जायपायदेहौंसुखधाना । निश्चयबचनकबीरकोमाना ५

एको बार न बाँको जाइगो जन्म मरण तेरो छूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो ४ और संपूर्ण जे पाप हैं ते रहैंगे और सुखको धाना कहे समूह तोको देउँगो सो साहब कहैहैं कि हे जीव! कबीरजी को वचन तुम निश्चय मानिकै मेरे पास आवो ॥ ५ ॥

साखी ॥ साधु सन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदिअन्तउत्पति प्रलय, सबदेखादृष्टिपसार ६

जे हमारो कह्यो वचन प्रमाण मान्यो है तेई साधु हैं कहे साधन करणवारे हैं और तेई सन्त हैं तिनहीं के मनादिक शान्त ह्वैगये हैं और तेई आदि, अन्त, उत्पत्ति, प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बात जानिलियो है ॥ ६ ॥

इति अट्ठावनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवीं रमैनी ॥ ५९ ॥

चौ० चढ़त चढ़ावत भड़हरफोरी । मन नहिं जानै को करिचोरी १

चोर एक मूसल संसारा । बिरलाजन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी । एकै राम सकल रखवारी ३

साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सब चले, अनभितियन को चित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

चढ़तचढ़ावतभड़हरफोरी । मननहिंजानैकोकरिचोरी १
चोर एक मूसलसंसारा । बिरला जन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमिलैबारी । एकै राम सकल रखवारी ३

गुरुवालोग आप प्राण चढ़ावै हैं अरु औरको सिखै सिखै प्राण चढ़वावै हैं सो यही प्राण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरि कै वही धोखाब्रह्म में लीनभये मनते या नहीं जानै हैं कि साहब के ज्ञानकी चोरी को करै है वही धोखाब्रह्मही तो करै है यह नहीं जानैहैं वाहीमें लगे हैं १ सो चोर एक जो धोखाब्रह्म है सो संसार भरेको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्मही के ज्ञानको सब दौरे हैं परमपुरुष को नहीं दौरे हैं तेहिते कोई बिरलाजन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है २ जे श्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमि को बारीके सम रखवारी कहे रक्षा करैहैं इहां एकै राम रखवार है यह जो कह्यो ताते बाँधनवारे धोखा देनवारे बहुत हैं पै बन्धन ते छोड़ावनवारे एक श्रीरामचन्द्रई हैं दूसरो नहीं है स्वर्गते ऊपर के भूमिते मध्यके पाताल ते नीचे के लोक सब आये ॥ ३ ॥

साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सबचले, अनभितियनको चित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

अनभितिया को चित्त जो धोखाब्रह्म है तौने में लगिकै सम्पूर्ण जे जीवहैं ते पाहन ह्वैगये कहे जड़वत् ह्वैगये वे धनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्रको न जानतभये जौन ब्रह्मते सबजीव मिताई कियो सो अनहित भये कहे संसारमें डारनवारो धोखई ठहर्‍यो ॥ ४ ॥

इति उनसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५९ ॥

अथ साठवीं रमैनी ॥ ६० ॥

चौ० छांड़हु पति छांड़हु लबराई । मन अभिमान टूटि तब जाई १
जनचोरी जो भिक्षा खाई । फिरिबिरवा पलुहावन जाई २
पुनिसंपति औ पतिको धावै । सो बिरवा संसार लै आवै ३

साखी ॥ झूठा झूठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहि कारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

छांड़हुपतिछांड़हुलबराई । मन अभिमानटूटितबजाई१
जनचोरी जो भिक्षाखाई । फिरि बिरवा पलुहावन जाई २
पुनि संपति औ पतिको धावै । सो बिरवा संसारलै आवै३

कबीरजी कहै हैं कि नाना देवता जो पतिमानौहौ और लबराई जो धोखाब्रह्म है ताको छोड़िदेउ न छोड़ोगे तो पुनिकै जब संसार आवोगे तबतो अभिमान दूरि होजाय अर्थात् नाना देवतनही की सुधि रहिजायगी न धोखाब्रह्महीकी सुधि रहिजाइगी १ काहे ते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ सो आगे कहै हैं जीव या सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षा मांगि खाय हैं और फिरि फिरि बिरवारूप देवतनको पलुहावै कहे प्रश्नकरे जायहैं पुनि उनहीं सों सम्पति कहे नाना ऐश्वर्य होय सिद्धि होय और पति कहे राजा होय इन्द्र होय याको धावै हैं सो वे बिरवारूप जे देवताहैं ते फिरि फिरि संसारमें लै आवै हैं जन्म मरण होय है ॥ २ । ३ ॥

साखी ॥ झूठा झूठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

सो झूठा जो ब्रह्म है ताको झूठ समुझिलेउ अरु देवता संसारहीमें हैं सो यह संसार जो है ताको मिथ्या मानिलेउ और सब को कारण जौन सर्वत्र है जाको पूर्व कहि आये हैं कि एकै राम रखवारी करै हैं सो मैंहींहौं तिहारो पति तुम मोमें लगौ जाते

तुम्हारो उबार ह्वैजाइ जिनको तुम पति मानिराख्यो है ते तुम्हारे पति नहीं हैं वे बांधनेवारे हैं ॥ ४ ॥

इति साठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६० ॥

अथ इकसठवीं रमैनी ॥ ६१ ॥

चौ० धर्मकथा जो कहतै रहई । लबरी नित उठि प्रातै कहई १
लबरिविहानेलबरीसाँझा । यक लाबरि बस हृदयामाँझा २
रामहुँकेर मर्म नहिं जाना । लै मति ठानी बेद पुराना ३
बेदहुकेर कहा नहिं करई । जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४

साखी ॥ गुणातीत के गावते, आपुहि गये गमाय ॥
माटीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

धर्मकथा जो कहतै रहई । लबरी नितउठि प्रातै कहई १

धर्म की कथा जो कहतई रहै हैं कि स्त्री आपने पतिहीको जानै और दूसरेको पति करि न जानै परन्तु धर्म कछु जानै नहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह साहबकी शक्ति है याके पति साहब हैं तामें प्रमाण "अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्" (इति गीतायाम्) "वासुदेवः प्रमाणैकः स्त्रीप्रायमिदं जगत्" दूसर कबीर का प्रमाण "दुलहिन गावो मङ्गलचार । हमरे घर आये रामभतार ॥ तनरति करि मैं मनरति करिहौं पाँचौ तत्त्व बराती । रामदेव मोहिं ब्याहनऐहैं मैं यौवन मदमाती ॥ सरिरसरोवर बेदी करिहौं ब्रह्मा बेद उचारा । रामदेव सँग भावरि लेहौं धनि धनि भाग हमारा ॥ सुर तेंतीसौ कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरुष एक अबिनाशी" ते साहब को या जीव नहीं जानै है और औरमें लगै है बड़े प्रातःकाल उठिकै लबरी कहैहै कि हमहीं राम हैं दूसरो नहीं है अथवा जब जीव जन्म लेइहै सो प्रातःकाल है जब गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्यो है कि तुम मोको गर्भ ते छुड़ायो मैं तिहारो भजन करौंगो और जब गर्भते

निकस्यो जन्म लियो तब वह बात लबरी के डाल्यो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहाँ कहाँ करन लग्यो ॥ १ ॥

लबरिबिहानेलबरीसाँझा। यकलाबरिबसहृदयामाँझा २
रामहुँकेरमर्म नहिं जाना। लै मति ठानी बेद पुराना ३

सो यहि तरह ते लबरी बिहाने कहै है और साँझ के लबरी कहै है कहे आपन व गुरुके और देवताकी एकता मानै है काहेते तीनि हैं कि एक लबरी जो है माया सो हृदय में बसै है सोई सब लबरी कहावै है २ सो भला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वह तो धोखाहै जो कछू वस्तु होइ तो जानै परन्तु साँच व सर्वत्र पूर्ण और सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि जो कोई मेरे सम्मुख होइ ताको मैं छुड़ाय लेउँ या जीव न जानत भये साहब छुड़ाइ लेइ है तामें प्रमाण "अबहीं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारो" याही हेतु सुरति दियो है मति लैकै कहे ग्रहण करिकै वेद पुराण के अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धान्तन में लगाय देइ है ॥ ३ ॥

वेदहु केर कहा नहिं करई। जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४

सिद्धान्त तौ एकै होइ है साहब को सिद्धान्त जो तात्पर्य वृत्ति करिकै यह कहैहै सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेद में जो सुकर्म लिखे हैं सो करिकै नरक ते तो बचै सो वेदहू की कही जो विधि निषेध है सोऊ नहीं करै है ऐसो मूढ़ यह जीव शोकरूपी अग्नि में जरतै रहैहै सुस्त नहीं परै है सुचित्त नहीं होय है अर्थात् इहाँ कुछ छोड़यो उहाँ धोखा जो ब्रह्म है तहाँ कुछ न समझ्यो और ईश्वर जे हैं तिनहूं को काहू न मान्यो और सबके रखवार दयालु जे श्री रामचन्द्र हैं तिनहूं छोड़यो तेहिते मूर्ख ऊंटके पाद ह्वैगयो न ज़मीन को न आसमान को वाको कौन बचावै जो कहो आत्मा को चीन्हिकै बचिजाय तो जो आत्मा में एती शक्ति होती तो बन्धनमें न परतो आपही बचिजातो ताते सबके रखवार जे साहब हैं तिनहीं के बचाये बचै है ॥ ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहि गये गमाय ॥
माटीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

गुणातीत जो साहबको लोक ताके गावते कहे प्रकाशते जहां समष्टि जीव रहै हैं तहां आपुही रामनामको साहबमुख अर्थ गमाय कै संसारमुख अर्थ करि संसारी ह्वैगयो शरीर धारण कियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो और पवनमें पवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये और जो 'गुणातीतके गावते' यह पाठ होइ तो यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखाब्रह्म ताको गावत गावत साहब को गवांइ जात भये ॥ ५ ॥

इति इकसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवीं रमैनी ॥ ६२ ॥

चौ० जो तोहिं कर्ता वर्णबिचारा । जन्मत तीनिदण्ड अनुसारा १
जन्मत शूद्रभये पुनि शूद्रा । कृत्रिमजनेउ घालि जगदुंद्रा २
जो तुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । और राह तुम काहे न आये ३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया । पेटै काहेन सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छांडुकपटनलअधिकसयानी । कह कबीर भजु शारँगपानी ६

जोतोहिंकर्ताबर्णबिचारा । जन्मततीनिदण्डअनुसारा १

जे तोको ब्रह्मा वर्णको विचारकियो कि ये ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं मुसलमान हैं सो एतो शरीरके धर्म हैं तीनि दण्ड जे हैं संचित-क्रियमाण-प्रारब्ध तिन के कर्म के अनुसारते जन्मत कहे जन्मलेइ हैं ॥ १ ॥

जन्मतशूद्रभयेपुनिशूद्रा । कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । औरराहतुमकाहेनआये ३

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तब तैं शूद्रई रहैहै काहेते कि संस्कार कुछ नहीं रहैहै और जब मरैहै तब अशुद्धई रहैहै शिखा

जनेऊ दूनों आगीमें जरिजाइ हैं तबहूं शूद्रै ह्वै जाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगत् में द्वन्द्व मचाइ दियोहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्रिय हैं ये वैश्य हैं ये शूद्र हैं २ जो कहो हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह ह्वै काहे आये ब्रह्माण्ड फोरिकै आवते आंखीके राह ह्वै आवते अशुद्ध राह ह्वै काहे आये अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै और न तैं आपनी शक्ति ते आइसकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्न करै है कर्मही ते तैं आवै है तेहिते जन्म ते तो शूद्र हौ संस्कारते द्विज भये वेद अभ्यास कियो तब विदभये और जब ब्रह्म को जानैगो तब ब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तोमें आवै है अहंब्रह्मता धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूंको तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मण कैसे होइगो जब तैं साहब को जानैगो तबहीं ब्राह्मण होइगो ॥ ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया । पेटैंकाहे न सुरतिकराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५

और जो तू कहै है कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्न हैं तो पेटै काहे न सुरति करायो तेहिते तुरुकिनी के पेटते भये ते मुसलमान नहीं है ४ कारी पीरी गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तो का बिलग होइ है ऐसे आत्मा तो एकही जातिहै हिन्दू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ॥ ५ ॥

छांडुकपटनलअधिकसयानी।कहकबीरभजुशारँगपानी६

आपनी सयानी अधिक करिकै जो कपट करिराख्यो है सो छोड़ि दे विचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिन्दूहै न तुरुकहै तैं जाको अंश है ऐसे शारँगपाणि जे साहब हैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारँगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतु है कि धनुष बाण लिये तेरी रक्षा करिबेको तैयार हैं औरै औरै में लगे हैं जो साहबमें लागैहैं

सोई सबते श्रेष्ठहोयहैं तामें प्रमाण "विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविन्द-नाभपादारविन्दविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनो वचने हितार्थप्राणं पुनाति सकुलं न तु भूरिमानः १"(इति भागवते) ६॥

इति बासठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवीं रमैनी ॥ ६३ ॥

चौ० नाना वर्णरूप यक कीन्हा । चारि बर्ण उन काहुन चीन्हा १
नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिन बेद बखाना । बेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैं नयननहिं सूझा । भोअयान तब कछुव न बूझा ४

साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके बेष ॥
घट घट अबिनाशी बसै, सुनहु तकी तुम शेष ५

नानाबर्णरूप यक कीन्हा । चारिबर्णउनकाहुनचीन्हा १
नष्टगयेकरतानहिंचीन्हा । नष्टगये औरहि मनदीन्हा २
नष्टगयेजिन बेदबखाना । बेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैंनयननहिंसूझा । भोअयानतबकछुवनबूझा४

साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके बेष ॥
घटघटअबिनाशीबसै, सुनहुतकीतुम शेष ५

वर्ण धर्मखण्डन करि आये अब सब वर्णको एक मानि जे साहबको भूले हैं तिनको खण्डनकरै हैं नानारूप जे जीव हैं तिनको एक वर्ण कहे एक रङ्ग करिदेत भयो 'अहंब्रह्मास्मि' करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरो नहीं है चारिउ वर्ण वहीको वर्णन करत भये यह न जानतभये कि यह धोखाब्रह्म को खाइ लेइ है १ फिरि फिरि सब जीव नष्ट ह्वैगये कहे मरि गये उद्धार-कर्ता जो साहब है ताको न चीन्हतभये और औरहि जो वा धोखा ब्रह्म है तौनेमें मन दैकै नष्ट ह्वैगये अर्थात् लीन ह्वैगये साहबको

---

१ धर्मश्च सत्यं च दमस्तपश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितीक्षाऽनसूयाः । यज्ञश्च दानं च धृतिः श्रुतं च व्रतानि वै द्वादश ब्राह्मणस्य ॥

तो जाने नहीं फिर संसारी भये २ जे वेदको बखानि बखानिकै पढ़ि पढ़िकै औरनको अर्थ सुनावैहैं ते वेद पढ़्यो परन्तु भेद न जान्यो कहे वेद को तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वैगये सब वेदको भेद साहब है तामें प्रमाण " सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति " ३ बिमलष जो साहब मन वचनके परे ताको खं कहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि वह नहीं है आकाशवत् ब्रह्महीं पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्र तौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि परै जब न सूझि पर्‍यो तब अज्ञान ह्वैगये " नेति नेति " कहनलगे कि अकथ है कबीर का प्रमाण " बेद बिचारि भेद जो जानै। सतगुरु मर्म शब्द पहिंचानै " ४ गुरुवालोग कहैहैं कि वही जो है अविनाशी सो सबके घट घटमें सबको नाच नचावैहै और नटके वेष आपो नाचैहै सो कबीर शेषतकी सों कहै हैं कि हे शेषतकी ! जो सबको नाच नचावैगो आप नट के वेष नाचैगो सो अविनाशी कैसे होइगो ? काहेते कि नट एक वेष लै आयो पुनि वह वेष छोड़िके और वेष लैआयो याही भांति नानावेष नट धारणकरै हैं ते सब अनित्य हैं नानावेष धरिबो तो मायाके गुण हैं वह मायाके परे कैसे होइगो और जब मायाते परे न होइगो तो अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेषतकी ! तुम सुनो वाहू विचार करत करत जो शेष रहिजायहै सो तुमहौ वातो तुम्हारही अनुभव है अथवा तुम शेष हौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेष हौ कहे अंश हौ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६३ ॥

अथ चौंसठवीं रमैनी ॥ ६४ ॥

चौ० काया कञ्चन यतन कराया। बहुत भांतिकै मन पलटाया १
जो सौबार कहौ समुझाई। तहिबो धरा छोड़ि नहिंजाई २
जनके कहे जोजनरहिजाई। नवो निद्धि सिद्धी तिन पाई ३
सदा धर्म तेहि हृदयाबसई। राम कसौटी कसतै रहई ४

जोरि कसावै अन्तै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी॥ ताते परी कालकी फांसी, करहु आपनो शोच॥
जहां संत तहँ संत सिधावै, मिलि रहे पोचै पोच ६

कायाकञ्चनयतन कराया। बहुतभांतिकै मन पलटाया १
जोसौबारकहौं समुझाई। तहिबो धरा छोड़िनहिंजाई २
जनकेकहेजोजनरहिजाई। नवो निद्धिसिद्धी तिनपाई ३
सदाधर्मतेहिहृदयाबसई। राम कसौटी कसतै रहई ४
जोरि कसावै अन्तै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी॥ तातेपरीकालकी फांसी, करहु आपनो शोच॥
जहां सन्त तहँसन्त सिधावै, मिलिरहे पोचै पोच६

कबीरजी कहै हैं कि ई जीवनके कायाको हम बहुत यतन करवाया और बहुत भांति ते मन पलटाया कि तू धोखा को त्यागि कञ्चन आपनेस्वरूपको जानो १ या बात यद्यपि मैं सौबार समुझाऊंहौं ताहूपै ऐसो धोखाको धख्यो कि छोंड़ि नहींजाय सो जे जन गुरुवाजनके कहे रहिजायहैं धोखाको नहीं त्यागै हैं २ ते नवोनिद्धि पावै हैं और निर्गुण सगुणके परे मैं जो बात कहौहौं ताको कहांबूझै ३ जे मेरो कह्यो बूझैहैं कि हम साहब के हैं या धर्म जिनकेहृदय में बसैहै ते साहबके रूप कसौटी में आपनो कञ्चनस्वस्वरूप कसतई रहै हैं और जे साहब नहीं कसैहैं गुरुवालोगनके कसावै जाइहैं ते वे बाउरऊ निराकार ब्रह्म तामें आपही बौरायजाय हैं जो और को और कहै सो बाउर है ४। ५ सो हे जीवो! तुम साहब के होइकै धोखा में लागे ताहीते कालकी फांसी में परेहौ सो आपने छूटिबे को शोच करौ देखो तो जहां सन्त रामोपासक हैं तहैं सन्त जाइहैं आपनोस्वरूप जानि छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगन को उपदेश लेइ हैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहे हैं॥ ६ ॥

इति चौंसठवींरमैनीसमाप्तम्॥ ६४॥

अथ पैंसठवीं रमैनी॥ ६५॥

चौ० अपने गुणके औगुण कहहू। यहै अभाग जो तुम न बिचरहू १
तुम जियरा बहुतै दुखपाया। जलबिन मीनकवनसचुपाया २
चातकजलहल भरे जो पासा। मेघ न बरसै चलै उदासा ३
स्वांग धर्‌यो भवसागर आसा। चातकजलहलआशैपासा ४
रामै नाम अहै निजसारू। औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचित है सपनेनिधि पाई। हियनमाहँ कहँ धरै छिपाई ६
हरि उतङ्ग तुमजातिपतङ्गा। यमघर कियो जीवको सङ्गा ७
हिय न समाय छोड़ नहिं पारा। झूठलोभ तैं कछुन बिचारा ८
अस्मृति कहा आपु नहिं माना। तरिवर छल छागरहैजाना ९
जियदुरमति डोलै संसारा। तेहि नहिं सूझै वारनपारा १०
स.खी॥ अन्धभया सबडोलई, यह कोइ नहिं करै बिचार॥
हरिकि भक्ति जाने बिना, भवबूड़ि मुआ संसार ११

अपनेगुणकेऔगुणकहहू। यहैअभागजोतुमनबिचरहू १
तुमजियराबहुतैदुखपाया। जलबिनमीनकवनसचुपाया २
चातकजलहलभरे जो पासा। मेघनबरसैचलैउदासा ३
स्वांगधर्‌योभवसागरआसा। चातकजलहलआशैपासा ४

स्वतः सिद्ध तुम साहबके दास हौ या जो आपनो गुण ताको अवगुण कहौ हौ कि हम ब्रह्म हैं सो या नहीं विचारौहौ कि हम ब्रह्म हैं कि दास हैं याही तुम्हारी अभाग है दासभूत प्रेतमान "दासभूतः स्वतः सर्वदात्मनः" परमात्मा में बहुत दुःख पायोहै जो छाया पाठ होय तो बहुत दुख में आयो सो जब विना कौनो सचुपायो है नहीं पायो ऐसे विना साहब के जाने सचु न पावोगे १।२ जैसे जब मेघ स्वातीको जल नहीं बरषै हैं तब चातक उदासै रहै है कहे पियासै रहै है जो नजीक समुद्रौ भरो होय तो कहा होइ ऐसे स्वामी मेघसम रामोपासक पूरा गुरु तुम नहीं पायो जो साहबको बताइदेइ ताते तुम उदासई गया और और

में लगावनवारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पै जनन मरण छूट्यो ३ भवसागर ते पार होवे की आशाकरि स्वांग जो धोखा ब्रह्म तौनेको तुम धर्यो कि "अहंब्रह्मास्मि" मानिसंसारते छूटि जाइँगे सो तुम्हारी आशा चातककी भई कि स्वाती तो पायो नहीं जो वहुत जल है पै विना स्वाती चातककी आशा फांसही ह्वैगई अथवा स्वांग धोखाब्रह्मको जो तुमधर्यो है सो साहबकी आशा कहे दिशा नहीं है भवसागरहीकी आशा कहे दिशाहै ॥ ४ ॥

रामै नाम अहै निज सारू। औ सबझूठ सकल संसारू५
किञ्चितहै सपनेनिधिपाई। हियनमाहँ कहँधरै छिपाई ६
हरिउतङ्गतुमजाति पतङ्गा। यमघरकियोजीवकोसङ्गा ७
हियनसमायछोड़नहिं पारा। झूठलोभतैंकछुनबिचारा ८
अस्मृतिकहाआपुनाहिंमाना। तरिवरछलछागरह्वैजाना ९
जियदुरमतिडोलैसंसारा। तेहिनहिंसूझै वारनपारा १०

हे जीवो! तुम यह विचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साहबमुख अर्थ समुझिकै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहबको स्वरूप और तुम्हारो स्वरूप रामनामही में है और सब कहे सब ब्रह्मई है यह जो मानि राख्यो है सो धोखाहै झूठा है और मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठे हैं ५ जो "अहंब्रह्मास्मि" ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठी है तैंतो किंचित् कहे अणुहै वा विभु है झूठ लोभते कछु न विचारा तुम्हारे हिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभावित होइ है याको छोड़िदेव और वाको पार नहीं है कहे लबरी और न होय है याते झूठ लोभ किये है कि मैं ब्रह्म होइ जाउँगो सो कछु न विचारा काहेते अच्छा विचार नहीं किये है अथवा कछू न विचारा कहे वा विचार कछू नहीं है मिथ्या है ६।७। ८ जौन स्मृति बतावै है "स्याज्जीवनेच्छा यदिते स्वसत्तायां स्पृहा यदि।

आत्मदास्यं हरेः स्वाम्यं संभावं च सदा स्मर १ " सो तुम स्मृतिको कहा आप कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्म में लगिके अपनेको ब्रह्ममानिके तरिवर जो है संसार ताको छल जो है धोखाब्रह्म सोई है छागर कहे बोकरा ताही ह्वैके कहे वह ब्रह्म ह्वैके तुम जान्यो कि हम चरिलेइँ अर्थात् संसारते छूटिजाइँ सो येतो बड़ो संसाररूपी वृक्ष कहा धोखाब्रह्म बोकरा चरोच-रिजाइ है ६ जौन जीमें दुर्मति करिकै संसार में डोलौहौ कहे फिरौहौ सो ' अहंब्रह्म ' माने संसारको वारापार न पावोगे वह तो धोखा है ॥ १० ॥

साखी ॥ अन्धभयासबडोलईयह,कोइ नहिं करैबिचार॥
हरिकिभक्तिजाने बिना,भवबूड़िमुआसंसार ११

श्रीकबीरजी कहे हैं कि मैं येतो समुझाऊं हौं परन्तु सब सं-सार की आंखी फूटिगई हैं अन्धभया सब डोलै है कहे फिरै हैं यह विचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसारदुःख हरै सो हरि जे हैं सबके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति विना जाने भव जो है धोखाब्रह्म तौनै है भ्रम को समुद्र ताहीमें संसार बूड़िमुआ कहे संसारीजीव बूड़ि मुये ॥ ११ ॥

इति पैंसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६५ ॥

अथ छाछठवीं रमैनी ॥ ६६ ॥

चौ० सोई हितू बन्धु मोहिं भावै। जात कुमारग मारग लावै१
सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई२
सो झूठा जो सुतकै तजई। गुरुकी दया रामको भजई३
किंचितहै यकजगतभुलाना।धनसुतदेखिभयाअभिमाना४

साखी ॥ जिय जो नेक पयान किय, मन्दिर भया उजार ॥
मरे जे जियते मरिगये, बाचे बाचनहार ५

सोई हितू बन्धु मोहिं भावै। जात कुमारग मारग लावै १

बाचनहार कहे जे पांचौ शरीर ते बचिकै पार्षदरूप पाचनद्वार रहे ते बाचे ॥ ५ ॥

इति छाछठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सतसठवीं रमैनी ॥ ६७ ॥

गुरुमुख चौ०॥ देह हलाये भक्ति न होई। स्वांगधरे बहुतै नर जोई १
धिंगाधिंगी भलो न माना। जो काहू मोहिं हृदय न जाना २
मुखकछुऔरहृदयकछुआना।सपन्योकबहूंमोहिंन जाना ३
ते दुख पावैं यहि संसारा। जो चेतौ तौ होहु निनारा ४
जो नर गुरुकी निन्दा करई। शूकर श्वानजन्म सो धरई ५
साखी॥ लखचौरासीयोनिजीवयह, भटकि भटकि दुख पावै॥
कह कबीर जो रामहिं जानै, सो मोहिं नीके भावै ६

गुरुमुख॥देहहलायेभक्तिनहोई। स्वाँगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगाधिंगीभलो न माना। जो काहूमोहिंहृदय न जाना २

देह हलाये कहे पेट हलाय कुण्डलिनी उठावै है और स्वांग धरे कहे कोई खाख लगावै है कोई जटा नहीं बढ़ावै है कोई टोपी दै अलफी पहिरि कुबरी लेइहै कोई कोई तिलकै नहीं देइहै कोई बेंड़ा तिलक देइहै कोई नाकते तिलक देइहै कोई काठफल पाषाण अस्थि इत्यादिकी माला पहिरै है ऐसे स्वाँगधरे नरनको देखेहै सो विना साहबके जाने भक्ति होइहै नहीं होइ है १ धिंगा धिंगी कहे बड़े बड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बड़े बड़े धिंगा ह्वै रहे हैं और बड़ी बड़ी धिंगी ह्वैरही हैं भलो जो साँचमत ताको नहीं मानै हैं साहब कहै हैं जो कोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पावै है नहीं पावैहै ॥ २ ॥

मुखकछुऔर हृदयकछुआना। सपन्योकबहूंमोहिंनजाना ३
ते दुखपावहिं यहि संसारा। जोचेतौतौहोहुनिनारा ४
जोनरगुरुकीनिन्दाकरई। शूकर श्वानजन्म सो धरई ५

मुखमें तो और है कि हम संन्यासी हैं हम साधु हैं हम ब्रह्मचारी हैं और हृदयमें और है धन मिलै को उपाय खोजै हैं ते नर सपन्यो कबहूं मोको नहीं जानिसकैहैं ३ सो ऐसे जे प्राणी हैं ते यहि संसार में दुःख नाना प्रकारके पावैहैं सो हे जीवो ! तुम चेतकरो तो इनते न्यारा है जाउ ४ और जे तात्पर्यवृत्ति करिकै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरु हैं तिनकी जो कोई निन्दा करै हैं कि जोई वर्णन करै हैं सो सब मिथ्या है ते मरिकै श्वान अरु शूकर को जन्म धारण करै हैं ॥ ५ ॥

साखी॥लखचौरासीयोनिजीवयह,भटकिभटकिदुखपावै।
कहकबीरजोरामहिंजानै, सोमोहिं नीके भावै ६

साहब कहै हैं कि मेरो भक्त कबीर कहै है कि चौरासी लाख योनिमें जीव यह भटकि भटकि दुःख पावै है सो तिनमें जो कोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भावै है सो ऐसो प्रकट कबीर बतावै है ताहूको और और अर्थकरि और और लगैहैं सो मोको नहीं जानै हैं ॥ ६ ॥

इति सतसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६७ ॥

अथ अड़सठवीं रमैनी ॥ ६८ ॥

चौ० तेहि वियोगते भये अनाथा । परिनिकुञ्जबन पावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जे जानै । जो समुझै सो भलो न मानै २
नटवर बन्द खेल जो जानै । ताकर गुण जो ठाकुर मानै३
उहै जो खेलै सबघटमाहीं । दूसर को लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै । कैसहुकै जन पूरा पावै ५
साखी ॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर ॥
लागै तो भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर ६

तेहिवियोगतेभयेअनाथा । परिनिकुञ्जबनपावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जो जानै । जो समुझै सो भलो न मानै२

सम्पूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं के वियोग अनाथ ह्वैगये निकुञ्जवन जो वाणी को जाल है नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्त मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के मिलनेके पाथ कहे पन्थ न पावत भये १ जिनको पूर्व कहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीव! जो तैं जानै तो वेदहू वे मतवारेनको नकलई कहै हैं तो जो साहब को समुझैहै सोऊ उनको नहीं मानैहै नकलई मानैहै ॥ २ ॥

नटवरबन्द खेल जो जानै। ताकरगुण जो ठाकुर मानै ३
उहै जो खेलै सबघटमाहीं। दूसरको लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै। कैसे कै जन पूरा पावै ५

अब योगिनको कहै हैं नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहे यह जीव आत्मा को ब्रह्माण्ड में चढ़ाइकै फिरि उतारै जानै है ताको गुण यह है कि समाधि लगि जाइ है कहे ब्रह्मरूप ह्वै जाइ है सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानै है ३ अर्थात् जौन ब्रह्म में ह्वै जाउहौं तौनै घट घट में है दूसरे की कछु नहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछु नहीं है ४ सो जे यह मत करै हैं तिनको भलो पोच कहे नीको नागा अवसर आवत है अर्थात् जब जीवमें लीन ह्वै ब्रह्मरूप ह्वै जाइहै यातो भलो अवसर और जब समाधि उतरि गई जैसेकै तैसे ह्वैगई या पाँच अवसर ह्वै सो कैसे कै जन पूरो ज्ञान पावै कि हम पूर्णब्रह्म हैं तो सर्वत्र पूर्ण हैं जो या ब्रह्म ह्वै जातो तो समाधि उतरेहू में वही वृत्ति बनी रहती ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर ॥
लागै तौ भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर ६

जेकरे शर लागैहै सोई बाण लागेकी पीर जानै सो जो कोई समाधि लगावै है सोई समाधि उतरे को दुःख जानै है सो समाधि तो तोर लागै है ना भागु समाधिही लगाये रहु सो तेरो

भागिबो तो बनतई नहीं है समाधि उतरेही आवै है याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहै हैं सुखसिन्धु जे साहब हैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधि लगी रहै है अर्थात् जो एकहू बार साहब के सम्मुख भयो है सो फिरि नहीं संसार में बच्यो है तामें प्रमाण "एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय इति" अथवा जाके बाण लगैहै सोई पीर जानै है सो जो साहेबमें लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानै हैं कि हम योग में यज्ञादि में लगिकै नाहक जन्म गँवाये सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको दुर्लभ जानि तैं लागु तौ भागु न साहब सुखसिन्धु है तिनको तू निहारु तो ये सब धोखनकी पीर दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरो न गनैंगे तामें प्रमाण "कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यते। न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया" (इति बाल्मीकीये) ॥ ६ ॥

इति अड़सठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ उनहत्तरवीं रमैनी ॥ ६९ ॥

चौ० ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरै लये गफ़िलाई १
महादेव का पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाट बाट में लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपची जोरी ४
कब नारदबन्दूख चलाया। ब्यासदेव कब बम्ब बजाया ५
करहिं लड़ाई मतिकेमन्दा। ईहैं अतिथि कि तरकसबन्दा ६
भयेबिरक्तलोभमन ठाना। सोना पहिरि लजावै बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गांव पाय यश चलो करोरा ८
साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरै लये गफ़िलाई १

महादेव को पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाटबाट में लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्ते मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपची जोरी ४

श्रीकबीरजी कहे हैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहबको तो जानै नहीं हैं गाफ़िल ह्वैके भूले भूले फिरै हैं १ अरु महादेवको पन्थ जो तामसशास्त्र है सो चलावै हैं और बड़े महन्त कहावै हैं २ सबके देखावन को हाट में और पहारन के बाट में तारी लगायकै बैठे हैं और सिद्ध कहावै हैं और सबके देखावन को यह कहैहैं कि संन्यासी को धर्म नहींहै कि द्रव्य लेय और हाथ छुवै परन्तु जो कोई चढ़ाइकै चलो जाइहै ताको चिमटाते लैकै कमण्डलुमें डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ३ दत्तात्रेय कबै मवासिनको शत्रुन को तोरयो है और शुकदेव कबै तोपख़ाना अपने साथ जोरिकै चलायो है ॥ ४ ॥

कब नारद बन्दूख चलाया। ब्यासदेव कब बम्बबजाया ५
करहिंलराई मतिके मन्दा। ईहैं अतिथिकितरकसबन्दा ६
भये बिरक्त लोभमनठाना। सोना पहिरि लजावैंबाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गाँवपाय यशचलोकरोरा ८

और नारदमुनि कबै बन्दूख चलायो है और व्यासदेव कबै नगारादैकै काहूके ऊपर चढ़े हैं ५ ई संन्यासी बैरागी मतिके मन्द लड़ाई करै हैं ई अतिथि हैं तरकसबन्द सावन्त हैं ६ भये तो बिरक्त संन्यासी परन्तु लोभ करिकै रोज़गार करै हैं सोना पहिरि कै बानाको लजावै हैं ७ और घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संग लेतभये और काहू राजाते गांव पायो करोरपती है या यश चलायो बड़े ज्ञानी हैं बड़े भक्त हैं या यश चलायो ॥ ८ ॥

साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

लाव लश्कर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहे हैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्ष की अवस्था बनीरहैहै ऐसे ब्रह्माके पुत्र तिनहूंको या मजा होय तो कबीरजी कहैहैं कि स्त्रीनके साथमें सुन्दरी का सोहै है नहीं सोहै है कबहूं दाग लगावतई है जैसे कारीहांड़ी हाथमें लेइ तो दागलागि ही जाय है ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्रीरहैहै ते पाखण्डिनको दाग लगतै है तिनते नहीं बचे हैं नामके तो संन्यासी बैरागी हैं अखाड़ा गृहस्थी बांधे हैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखण्डी हैं ते मायारूपई ह्वैरहे हैं तेई मायारूपी सुन्दरी कहे स्त्री हैं तिनको संग न करै और जो संग करै तो दाग लगवई करै सो जीव ते पाखण्डिनको संग न करै तामें प्रमाण "पुंसां जटाधरणमोजवतां वृथैव मेधाविनामखिलशौचनिराकृतानाम्। तोयप्रदानपितृपिण्डबहिष्कृतानां संभाषणादपि नरा नरकं प्रयान्ति" (इति विष्णुपुराणे) ॥ ९ ॥

इति उनहत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ६९ ॥

अथ सत्तरवीं रमैनी ॥ ७० ॥

चौ० बोलाना कासों बोलियेभाई। बोलतही सबतत्त्व नशाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा। सो बोलिय जो परै बिचारा २
मिलै जो सन्तबचनदुइकाहिये। मिलै असन्त मौन ह्वै रहिये ३
पण्डितसों बोलिय हितकारी। मूरुखसों रहिये झखमारी ४
कह कबीर ई अधघट डोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै ५

बोलाना कासोंबोलियेभाई। बोलतही सब तत्त्व नशाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा। सो बोलिय जो परैबिचारा २

बैरागिनकी संन्यासिनकी दशा जैसी ह्वैरही है सो पूर्वकहि आये सो ऐसे पाखण्डी संसारमें ह्वै रहे हैं बोलाना कासों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाइ जाइहैं तत्त्व कहावैहै यथार्थ सो साहब के जे नामरूप लीलाधाम यथार्थ हैं ते नशाइ जाइ हैं कहे

भूलिजाइ हैं १ बोलत बोलत बिकारई बाढ़ै है ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को विचार ठीक परिजाइ कौनी तरहते सांच विचार ठीक परै सो कहै हैं ॥ २ ॥

मिलैजोसन्तबचनदुइकहिये। मिलैअसन्तमौनह्वैरहिये३ पण्डितसोंबोलियहितकारी। मूरुखसोंरहियेझखमारी ४

जो सन्त मिलै तौ द्वै बचन कहबऊ करिये द्वै बचन कह्यो ताको भाव यह है कि थोरई आपने प्रयोजनमात्र बोलिये और सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़ैहै और असन्त मिलै तो मौन ह्वैरहिये बोलिये न काहेते कि उनके संगते अज्ञान बाढ़ैहै ३ तेहिते पण्डितसों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि पण्डित जेहैं ते सारासार को विचार करिकै सारपदार्थ जे साहबहैं तिनको ठीक करिकै असार जो है धोखाब्रह्म और माया ताको छोड़ि दियोहै वे साहबको बतावैंगे और मूरुख सों बोलिबो झखमारी है काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तो अपने स्मरण की हानि होइ है वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तब आपही झखमारि कै रहिजाइगो पीछे क्रोध होइगो अरु मूरुख नहीं समुझैहै तामें प्रमाण गोसाईंजीको (सोरठा) "फरै न फूलै बेत, यदपि सुधा बरषै जलद। मूरुखहृदय न चेत, जो गुरु मिलैं बिरञ्चिसम १ पानीको पान,भीजे तो बेधे नहीं।त्यों मूरुखको ज्ञान, बूझै तौ सूझै नहीं"॥४॥

कह कबीर ई अधघट डोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जे सत्संगऊ करैहैं और मूरुखहू सों बोलैहैं शास्त्रार्थ करैहैं व और और मतको सिद्धान्तजानो चाहैहैं कि हमारे मत ठीक है कि औरऊ मत ठीक है परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परे हैं यह सिद्धान्तको निश्चय नहींहै ते अधघट जे हैं और और मतवारे इनके समुझाये नहीं समुझैहैं और असन्तसंग करिकै बिचारकी हानि होइ है कहा हानि होइहै कि औरऊको बिचार मन पर न लागैहै अपने मतमें भ्रम होनलगै

है आपनो ठीक नहीं ठीक है जैसे आधी गगरी जलसे भरी होइ तो वाको जल डोलैहै ऐसे साहब में उनको ज्ञान तो पूरो नहीं ताते डोलैहै और जो पूरा सो बीचलैके बोलैहै औरे प्रश्न सुनिके वाको विचार लैलियो कहे समझिलियो कि यह बोलिबो अधिकारी है हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलैहै जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलैहै और जल वामें नहीं अमाय है ऐसे वे तो साहब के ज्ञान में पूरहैं सो उनको ज्ञान डोलै नहीं है अरु और मतन को सिद्धान्त के जे ज्ञान हैं ते उनके अन्तःकरणमें नहीं समाय हैं॥५॥

इति सत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७० ॥

अथ इकहत्तरवीं रमैनी ॥ ७१ ॥

चौ० सोग बधावासमकरिजाना। ताकी बात इन्द्र नहिं जाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्ति कै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई। जैसे काग चील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी। राजपाट सब गनै उजारी ४
जैसे नरक तसचन्दनमाना। जस बाउर तस रहै सयाना ५
लपसी लौंग गनै यकसारा। खाँड़े परिहरि फांकै छारा ६

साखी ॥ यहि विचार ते बह गयो, गयो बुद्धि बल चित्त ॥
दुइ मिलि एकै है रह्यो, काहि बताऊं हित्त ७

सोगबधावा समकरिजाना। जाकीबात इन्द्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई। जैसे कागचील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी। राजपाटसब गनै उजारी ४

औरै पदको अर्थ स्पष्ट है १। २।३ अब फिरि साहब के जनैयनको कहैहैं कि भिश्ति कहे स्वर्गको मानै हैं तैसे नारी कहे दोजख को मानै हैं अरबीकी किताबनमें भिश्तिको जिन्नत और दोजखकी नाईं अर्थकै सम्बन्धते बहुत जगह कह्यो है अथवा

नार कहे आगि सो जामें होय ताको नारी कहै हैं अर्थात् नरक और भिश्ति पाठहोय तो जैसे भिश्ति कहे देवालको मानैहैं तैसे नारीको मानै हैं और राजपाट जो है जगत् ताको उजारई गनै हैं कि संसार हई नहीं है चित अचितरूप साहबईके हैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण "नरक स्वर्ग अपवर्ग समाना। जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना" ॥ ४ ॥

जैसे नरकतसचन्दनमाना। जसबाउर तसरहै सयाना ५
लपसीलौंगगनै यकसारा। खाँड़े परिहरि फांकै छारा ६

जैसे नरक कहे विष्ठाको तैसे चन्दनको मानै हैं और हैं तो सयान कहे साहबको जानै हैं परन्तु रहत बहुत बाउरही के तरह हैं ५ और जे साहबको नहीं जानै हैं आपही को ब्रह्म मानै हैं तिनको कहै हैं लपसी लौंगको एकई मानै हैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकै हैं अर्थात् ताहूको एकही गनै हैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानै हैं जो कहो समान दृष्टि करतई हैं साहब के गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपही को ब्रह्म मानै हैं और खांड़ परिहरिकै छार फांकै हैं ताको भाव यह है खांड़ साहब जे मिठाई ताके देनेवारे तिनको छांड़िकै छार फांकै हैं जामें सार कछु नहीं है 'अहं ब्रह्मास्मि' ज्ञान करै हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ यहिबिचारते बहगयो, गयोबुद्धिबलचित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वै रह्यो, मैं काहिबताऊंहित्त ७

श्रीकबीरजी कहै हैं विचारत बुद्धि को बल जो है निश्चय करिकै 'अहंब्रह्म' मानि सो येहू जात रह्यो और चित्त जो है सोऊ जात रह्यो मनो नाश बासना क्षय ह्वै गई कछु बासना न रहगई दुइ जे हैं ब्रह्म और जीव ते मिलिकै एकही ह्वै रहे जैसे जल मिलिकै एकै ह्वै जाय है हितुवा वह कहावै हैं जो रक्षा करै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्ममें लीनहोइ हैं पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिले आवै है तब तो दूसरो यह मानतै नहीं है मैं

काको हितुवा बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ और जो साहब हितुवा मानै रक्षक मानै तो साहब याको हंसस्वरूप दैकै आपने पास बोलाइलेइ इहां मायाकी गति नहीं है तो पुनि धरिके जीवको संसारी करै ॥ ७ ॥

इति इकहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७१ ॥

अथ बहत्तरवीं रमैनी ॥ ७२ ॥

चौ० नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा । तामें भरमि रहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही । बुध अधबुध अचरजयककही ३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई । बुध अधबुध अचरज बड़ होई ४

नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा । तामें भरमिरहा संसारा२
दिना सातलौंवाकी सही । बुधअधबुधअचरजयककही३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई । बुधअधबुधअचरजबड़होई४

एक नारि जो यह माया है सो संसार में आवतभई न वाके महतारी है और न वह बापते उत्पन्न है अर्थात् अनादि है १ अरु न वाके गोड़ है न मूड़ है न प्राण है न आधार है अर्थात् निराकार है भर्मई है ताहीमें संसार भरमि रह्यो है २ और सातो जे वार हैं दिन तिनमें वही माया की सही है अर्थात् काल में वही अमिसी है और सातोवार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारों ओर बिस्तार है बुध जो है पण्डित निर्गुणवारे जे सारासार के विचार करिकै आपही को ब्रह्म मानै हैं और अधबुध जे हैं आधे पण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनों में आश्चर्य जो है माया ताको एक कहैहैं दूनोंमें यह माया बरोबरि ब्याप्त है ३ श्रीकबीर जी कहै हैं कि यह बड़ो आश्चर्य है तौ कछु नहीं है और वही माया

की बन्दना निर्गुण सगुणवारे दोऊ करै हैं जो मन वचन में आवै है सो मायाही है ॥ ४ ॥

इति बहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७२ ॥

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७३ ॥

गुरुमुखचौ० चलीजाति देखायकनारी। तरगागरि ऊपरपनिहारी १
चलीजाति वह बाटै बाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २
जाड़नमरै सुपेदी सौरी। खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझ सकार दिया लै बारै। खसम छोड़ि सुमिरै लगवारै ४
वाहिकेसङ्गमें निशिदिनराँची। पियसों बात कहै नहिं साँची ५
सोवत छाँड़िचली पियअपना। ईदुख अबधौंकहौं क्यहिसना ६
साखी ॥ अपनी जाँघ उघारिकै, अपनी कही न जाय ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जन गाय ७

चलीजाति देखा यक नारी। तर गागरि ऊपरपनिहारी १
चलीजात वह बाटैबाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २

सुरतिरूपी जो नारी सोई है दूती ताको हम चलीजातदेखा है हृदय जो गगरी है सो तरे है और सुरतिउठी सो ऊपर सुधा सरोवर में जलभरनको गई शीश में पहुँची १ वह सुरति जब चलै है तब षट्चक्र बेधिकै राह राह जाय है काहेते कि नाभी में "मणिपूरक चक्र" है तामें शीश दिये नागिनी बैठी है सोई षट्कहे पलँग है सो ऊपर है ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सोरहे है तहां ते सुरति उठै है तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राण जाय है ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदी सौरी। खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझसकार दियालैबारै। खसमछोड़िसुमिरै लगवारै ४

सुपेदी कहे रजाई जो है यह शरीर सो जाड़न मरै है अर्थात् शीत उष्ण वहीको लगैहै सौरी कहे सुपेदीको सुमिरण करिकै

जाड़न मरैहै अर्थात् जबलग देहाभिमान है तबलग शीत उष्णहै आत्मा को नहीं लगै है साहब कहैहैं कि वह जो है आत्मा मेरी घरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरी शक्ति सो मैं जो हौं याको खसम ताको नहीं चीन्हैं है त्यहिते बौरी कहे बौरायगई ३ साँझ सकार दियालैबारैहै कहे समाधिलगायकै ज्योतिको बारिकै कुण्ड-लिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वही ज्योतिमें मिलाये है और याको मैं खसम हौं सो मोको छोड़िकै लगवार जो है धोखाब्रह्म ताको सुमिरै है ॥ ४ ॥

वाहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची ।पियसोंबातकहैनहिंसाँची५
सोवतछांड़िचलीपियअपना ।ईदुखअबधौंकहबक्यहिसना६

सुरतिरूपी नारी जो है दूती ताहीके साथ ह्वैकै वही धोखाब्रह्म में निशिदिन रचिरही है कहे प्रीति करि रही है पिय जो मैं हौं तासों सांची बात नहीं कहैहै सांची बात कहाहै कि मैं तिहारो हौं यह जो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्ति को छोड़ाय लेउँ साहब की यह प्रतिज्ञा है जो मोको जानै मोको गोहरावै तो मैं संसार ते छुड़ाइ लेउँ तामें प्रमाण " अबहूं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारै ५ " सो जीवरूपा शक्ति मोको न जान्यो मोको न गोह-रायो सोवत रहि गई जागत न भई सोवत में मोको छोड़ि स्वप्न देखनवाली संसारी ह्वैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्राप्त भई तब संसार में परिकै नाना दुःख पावै है सो यह दुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तो जानै नहीं है अरु और सब स्वप्नते झूठे हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ अपनीजाँघउघारिकै, अपनी कही न जाइ ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जनगाइ ७

साहब कहै हैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपा शक्ति मोको छोड़िकै संसारी ह्वैगई सो अपनी जङ्घा जो उघारिहोइ तो कोई कहां अपनो गिल्ला करै है नहीं करै है ऐसे मेरी शक्ति यह जीव

सो जो और और लगवार जो हैं सो यह दुःख का मोसों कहि जाइ है नहीं कहि जाइ है कितो मेरो दिल जानै है याको उद्धार ह्वै जाइ याही चाहौहौं और कि मेरेजन जे हैं ते मेरो सौशील्य दया वात्सल्यादिक गुण गान करिकै जानै हैं कि साहब में निर्देह सौशील्यादिक गुण हैं जीवको उद्धारई चाहै हैं और तो अज्ञानीजीव अपनो भूल न जानैंगे याही जानैंगे कि जो साहब सबको मालिक है सब करिबेको समर्थ है ताकी जो इच्छा होती तो हम सब जीव के बन्ध ते तामें प्रमाण " सो परन्तु दुख पावत, शिर धुनि धुनि पछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाय ॥ ७ ॥

इति तिहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७३ ॥

अथ चौहत्तरवीं रमैनी ॥ ७४ ॥

चौ० तहिया गुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमल पत्र तरङ्ग यकमाहीं। सङ्गहि रहै लिप्त पै नाहीं २
आश ओस अण्डन महँ रहई। अगणितअण्डन कोई कहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४
धर्म कहै सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५
ढोर पतङ्ग सरै घरियारा। तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पन्थ नहिं जोहै सोई ७
साखी ॥ भर्मक बांधलई जगत, कोइ न किया बिचार ॥
हरिकि भक्ति जाने बिना, भवबूड़ि मुवा संसार ८

तहियागुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमलपत्र तरङ्ग यक माहीं। सङ्गहिरहै लिप्तपै नाहीं २
आशओसअण्डनमहँरहई। अगणितअण्डनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४

जब जीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो

और गुप्त कहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहे हैं और न तेहिजीवके सोगरह्यो और न मायारहीहै १ जैसे कमलपत्र में जल रहैहै पै कमलपत्र में लिप्त नहीं रहै है तैसे यह आत्मा में मायाब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं परन्तु मायाब्रह्म में आत्मा लिप्त न रह्यो २ ब्रह्महैबेकी जो आशा है सोई पियासहै सो ओस चाटे कहूं पियास जाइ है नहीं जाइहै ओसके सम जो है ब्रह्मानन्द सो जीवरूप जे हैं अण्ड तिनमें रहैहै अर्थात् कारणरूपते जीव में बनो रहै है जब समष्टिजीव रह्योहै तब रहे तो अगणित हैं अण्ड परन्तु सब मिलि एकई कहावत रह्योहै अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ३ निराधार जो निराकार ब्रह्म है जामें सबजीव भरेहैं ताको आधार लै जानिये कि साहबके लोक में है अर्थात् साहबके लोकको प्रकाशहै तबतो समष्टिरही याही रामनाम लैके वाणी उचरी कहे प्रकटभई इहां रामनाम लैके वाणी प्रकटभई ताको हेतु यह है कि वाणी में जगत् प्रकटकरिबेकी शक्ति नहीं रही रामनाम को जगत्मुख अर्थ लैके वाणी उचरी है पांचोब्रह्म समेत जगत् उत्पत्ति कियो है सोई इहां सिद्धान्त करै है ॥ ४ ॥

धर्म कहैं सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५
ढोरपतङ्गसरै घरिआया। तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पन्थ नहिं जोहै सोई ७

वेदशास्त्र में आत्मा को धर्म कहैहैं कि आत्मा चित्त है याते चित्त धर्म है जैसे जल में जल मिलै तो एकई होजाइ है ऐसे चिन्मात्र जो ब्रह्म है तामें मिलिकै चित्त जो है जीव सो एकई ह्वै जाय काहेते कि दुहुनको चित्तधर्म एकई है और जातीकहे सब जाति जे जीव हैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हैं हैं कि मैं साहबको अंश हौं जाति करिकै वहीहौं कछु स्वरूप करिकै नहींहौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञ है मैं अल्पज्ञ हौं वह विभु है मैं अणु हौं वह स्वतन्त्र है मैं परतन्त्र हौं यह जो कहैहैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतौ

वाणी को विस्तार है सामान्यधर्मलैके कहै हैं ५ ढोर पतङ्ग घरिआर आदिक जामें सरै हैं ताही जल में सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी वाणी में सब मरि मरि समाइहै और पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै और जौन सबजीवको फंदाये है तौनीही वाणी में कहे सब आचार करैहै अथवा वही वाणीको आचरण करैहै आपनेको ब्रह्म मानैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ६ यह वाणीके फन्दते बाहरह्वैके परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें जो लागै तो पुनि न जगत्के पन्थको जोहै अर्थात् फिरि न जगत्में आवै॥७॥

साखी ॥ भर्मकबांधलईजगत, कोइनहिंकियाबिचार ॥
हरिकिभक्किजानेबिना, भवबूड़िमुवा संसार ८

यहि भांति भर्म जो माया शबलित ब्रह्म त्यहि करिकै बँध्यो जो यह संसार है ताको कोई नहीं विचार कियो हरि कहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्य्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्कि के विना जाने भर्मकेसमुद्र में संसार बूड़ि मुवा कहे संसारीजीव बूड़ि मुयो ॥ ८ ॥

इति चौहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७४ ॥

अथ पचहत्तरवीं रमैनी ॥ ७५ ॥

चौ० तेहिसाहबके लागो साथा । दुइ दुखमेटिकै होहु सनाथा १
दशरथकुल अवतरि नहिं आया । नहिंलङ्काके रायसताया २
नहिं देवकिके गर्भहि आया । नहीं यशोदा गोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिं करिया । पैठिपताल नहीं बलिछलिया ४
नहिं बलिरायसो माड़ीरारी । नहिं हिरण्यकुशबधलपछारी ५
बराहरूपधरणी नहिं धरिया । क्षत्री मारि निक्षत्रनकरिया ६
नहिं गोवर्धन करतेधरिया । नहीं ग्वालसँगबनबनफिरिया ७
गण्डकशालग्रामनशीला । मत्स्य कच्छ ह्वैनहिं जलहीला ८
द्वारावती शरीर न छांड़ा। लै जगनाथ पिण्ड नहिं गाड़ा ९

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वा पन्थे मतभूल ॥
जेहि राखे अनुमानकरि, थूल नहीं अस्थूल १०

तेहिसाहबकेलागो साथा। दुइदुखमेटिकैहोहु सनाथा १

जिनको पूर्व कहिआये हैं ते हरि कहे रक्षक मन वचनके परे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके साथ में लागो दूनों जे दुःख हैं निर्गुण और सगुण तिनको मेटिकै सनाथ होउ कहे नाथ जे साहब हैं तिनते सहित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुणके सगुणके परे हित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परेहै कबहूं जब कौन्यो कल्प में बाणनके युद्धकी इच्छा होइ है तब आपही प्रकट ह्वैकै प्रतापी नामको रावण होइहै तासों बाणनको युद्ध करैहै और फिर शरीर सहित को चले जाइहै और बहुधा जे अवतार होइहैं तो नारायणै अवतार लेइहैं ॥ १ ॥

दशरथकुलअवतरिनहिंआया।नहिंलङ्काकेरायसताया २
नहिंदेवकिकेगर्भहिआया । नहीं यशोदागोदखेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया।पैठिपतालनहींबलिछलिया ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दशरथ के इहां अवतार नहीं लियो दशरथ के इहां अवतार लै नारायणै रावण को मारे हैं २ अरु वे साहब देवकीके गर्भ में नहीं आयो अरु वाको यशोदा गोद में नहीं खेलायो ३ अरु वे साहब पृथ्वी रमण ह्वैकै म्लेच्छन को दमन अर्थात् बामन-रूप नहीं धर्यो ॥ ४ ॥

नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी।नहिंहिरणाकुशबधलपछारी५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया।क्षत्रीमारिनिक्षत्रनकरिया ६
नहिंगोवर्धनकरगहिधरिया। नहींग्वालसँगबनबनफिरिया७

अरु वे साहब बलिरायसों रारि नहीं मांड़्यो कहे मोहनी अवतार लै देवतनको अमृत पिआय दैत्यनको वारुणी पिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूपह्वै नहीं मास्यो और हिरण्यकशिपु को पछारिकै नहीं बाध्यो कहे नहीं बध्यो अर्थात् नृसिंहरूप नहीं धस्यो ५ अरु वे साहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहीं धस्यो और क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुरामको अवतार नहीं लियो ६ अरु वे साहब करते गोवर्धन को नहीं धस्यो अर्थात् गोविन्दरूप नहीं धस्यो और न ग्वाल के संग वन वन में फिस्योहै याते हलधररूप नहीं धस्यो ॥ ७ ॥

गण्डकशालग्रामनशीला ।मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला८
द्वारावती शरीर न छाड़ा । लैजगनाथपिण्डनहिं गाड़ा९

अरु वे साहब गण्डक में शालग्राम की शिला नहीं भये और न मत्स्य कच्छ ह्वैके जलमें परे हैं ८ अरु वे साहब द्वारावती में शरीर नहीं छोड़ोहै अर्थात् कालस्वरूप नहीं धारण कियो जौन जौन फिरि द्वारावती में छोड़्यो है और जगन्नाथ के उदर में ब्रह्म जो इधा में तेजराख्यो है सो वे साहबको तेज नहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायण हैं और सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ॥ ९ ॥

साखी॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वापन्थेमतिभूल ॥
ज्यहिराखे अनुमानकरि,थूल नहीं अस्थूल १०

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि वा पन्थे मतिभूल कहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमान करि कहे अनुमान करि राख्योहै ब्रह्म को सोऊ वे साहब नहीं हैं और अस्थूल नहीं अस्थूल कहे न स्थूल होइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं हैं ताते सगुण निर्गुण साकार निराकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथ के इहां नारायण अवतार लेइ हैं तिनको रामनाम होइ है तिनहीं रामरूपते सगुण निर्गुणके परे हैं ॥ १० ॥

इति पचहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७५ ॥

अथ छिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७६ ॥

चौ० माया मोह कठिनसंसारा। यहै बिचार न काहु बिचारा १
मायामोह कठिनहै फन्दा। होय बिबेकी सो जन बन्दा २
रामनाम लै बेराधारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३

साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरे से नहिं काम॥
आदि अन्त औ युगयुगै, रामहिंते संग्राम ४

मायामोह कठिन संसारा। यहै बिचारनकाहुबिचारा १

मायामोह रूप ते संसारको देखैहै कहे नानापदार्थ भिन्न देखै है याहीते संसार कठिन है यामें व्यङ्ग्य यह है कि जो संसारको भगवत् चिदचित् विग्रहरूप करिके देखै तो संसार उतरिजायबे को सरखै है सो यह बिचार कोई न बिचार्‍यो ॥ १ ॥

मायामोह कठिन है फन्दा। होय बिबेकी सो जनबन्दा २

अरु यह संसार में मायामोहरूप कठिन फन्दा है जो संसारमें सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत् चिद-चित् विग्रहरूप देखै और विवेकी होइ सोई जन साहब को बन्दा है ॥ २ ॥

रामनाम लै बेरा धारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३

और रामनाम जो है बेरा ताको आधार लैकै जो कोई साहब को जान्यो है ताको उबार ह्वै गयो है सो तैंहूं रामनाम जो है बेरा ताको आधार ले कहे रामनाम में आरूढ़ हो साहबको जानु तौ तैं संसारसमुद्र को पार ह्वैजाय ॥ ३ ॥

साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरेसे नहिं काम॥
आदि अन्त औ युग युगे, रामहिंते संग्राम ४

श्रीकबीरजी कहे हैं कि यह रामनाम अतिदुर्लभहै मोको और से काम नहीं है आदि अन्त में और युगयुग में मोसों रामैंते सं-ग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाम में जो जगत्मुख अर्थ है ताको खण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण

करौ हौं अर्थात् जब जगत्की उत्पत्ति नहीं भई है तब और युग युगन में कहे मध्य में अन्त में कहे जब मुक्त ह्वैगयो तबहूं राम नामही ते संग्राम कियो है अर्थात् रामनाम को बिचार करत रहौ हौं ॥ ४ ॥

इति छिहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७६ ॥

अथ सतहत्तरवीं रमैनी ॥ ७७ ॥

चौ० एकै काल सकल संसारा। एकै नाम है जगत पियारा १
तियापुरुष कछु कथो न जाई। सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजाय नहिं बोली। हलुकागरुआजाय न तोली३
भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं४
साखी ॥ अपरम परम रूपमगुरंगी, नहिं त्यहि संख्या आहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

एकै काल सकल संसारा। एकै नाम है जगतपियारा १

एक जो है लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जो ब्रह्म मानिलेइहै सोई माया शबलित ह्वैबो है सोई काल सकल संसार में है सो जगत् को पियार एक जो है रामनाम ताको बिना जाने याही ते जन्म मरण होइ है ॥ १ ॥

तियापुरुषकछुकथोनजाई। सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजायनहिं बोली। हलुकागरुआजायनतोली३
भूखनतृषाधूपनहिं छाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं४

वह माया शबलित ब्रह्मको स्त्री न कहि सकै न पुरुष कहि सकै सर्वरूप ह्वैकै संसार में समाइ रह्यो है २ वाको न रूप कहि सकै और न वह हलका गरुआ तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु होइ तो कहिजाइ औ तौलि जाइ ३ जौनेलोक में न भूख है न तृषा है न धूप है न छाहीं है न दुःख सुख है तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्म रहै है ॥४॥

साखी॥ अपरमपरमरूपमगुरङ्गी, नहिंतेहिसंख्याआहि॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

वह साहबको लोक परमरूप है ताको प्रकाश जो है वह ब्रह्म सो परमरूप है कहे परम नहीं है तौने को आपनेही को मानिबो जो है कि वह ब्रह्म हमहीं हैं सो धोखा है तौनेके मगमें रँगे जीव हैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रकाशमें भरे रहे जे समष्टि जीवहैं ते व्यष्टि ह्वैगये हैं तिनकी संख्या नहीं है सो कबीरजी पुकारिकै कहे हैं कि आपही कल्पना करिकै वह प्रकाशरूप ब्रह्म को मान्यो कि वह ब्रह्म मैंहौं सो वह तो लोकप्रकाश है जीव वह प्रकाश ब्रह्म नहीं ह्वैसकै है यही धोखामें जीव बूड़ो जाइ है यह बड़ो आश्चर्य है और जो यह पाठ होइ "अपरमपारे परमगुरु ज्ञानरूप बहुआहि" तो यह अर्थ है अपरम जो है प्रकाशरूप ब्रह्म ताहू के पार जो है परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्म है ताको परम श्रेष्ठ कहे मालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो वह जो है प्रकाशब्रह्म ताको जो ज्ञान कियो कि ब्रह्म मैं हौं वहै जो है धोखाब्रह्म तेहिते बहुआहि कहे जीव बहुत ह्वैगये काहेते कि ज्ञान बहुतहै ज्ञानी ज्ञान करिकै ब्रह्म मानैहैं और योगी जे हैं ते ज्योतिरूप में आत्मा को मिलाइकै ब्रह्म मानै हैं इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्य मानै हैं और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज, कोई अष्टभुज, कोई देवी, कोई गणेश, कोई सूर्य इत्यादिकन में ऐक्य मानै हैं ज्ञान करिकै तेहिते ज्ञान नाना हैं और साहब तो मन वचन के परे वह लोक में एकही बनो है॥ ५॥

इति सतहत्तरवींरमैनीसमाप्तम्॥ ७७॥

अथ अठहत्तरवीं रमैनी॥ ७८॥

चौ० मानुष जन्म चुके जगमांझी। यहि तनकेर बहुत हैं सांझी १
तातजननि कहै हमरो बाला। स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोर पिय आही। बाघिनिरूप गरासै चाही ३

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये। जम्बुक नाईं रह मुँहबाये ४
काग गीध दोउ मरण बिचारैं।शूकरश्वानदोउपन्थनिहारैं ५
धरती कहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अग्नि कहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरत उबारों ७
ज्यहि घर को घर कहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुम आपनकै जानी। बिषयस्वरूप भुले अज्ञानी ९
साखी॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुखपाय॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय १०

मानुषजन्म चुके जगमांझी।यहि तनकेर बहुत हैं सांझी १
तातजननिकहै हमरोबाला।स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोरपियआही। बाघिनिरूपगरासैचाही ३

हे जीव! तैं मानुष जन्म जगत्के वीच में पायकै चूकिगयो साहब को भजन न कियो या तनके साझिया बहुत हैं १ और माता पिता कहै हैं हमारो पुत्र है आपने अर्थ में लागिकै प्रति-पाल करैहै २ और कामिनि जो परस्त्री है सो कहैहै हमारो बड़ो प्यारो पति है बाघिनिरूप मरति समय में गरासिबोई चाहै है अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जाय है॥ ३॥

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये। जम्बुक नाईं रहमुँहबाये ४
कागगीधदोउमरणबिचारैं।शूकरश्वानदोउपन्थनिहारैं ५
धरतीकहै मोहिं मिलि जाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिनिकहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरत उबारों ७

पुत्र कलत्र जो घरकी स्त्री को लालच लगाये रहै हैं धन लेबे की और वाको उनकी चिन्ता में मांस सुखान जातहै जैसे सियार मांस खाबेको मुँह फारेरहै है तैसे वोऊहैं ४ और काग जे हैं गीध जे हैं शूकर जे हैं श्वान जे हैं ते मरनको पन्थ तेरो निहारै हैं या बिचारै हैं कि जो मरै तौ हम मांस खायँ ५ और धरती कहै हैं कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाख मैं उड़ाय

लैजाउँ ६ औ अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते जरत में उबार होइ बचिजाय ॥७॥

जेहि घरको घर कहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुमआपन कै जानी। विषयस्वरूपभुलेअज्ञानी ९
साखी॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुख पाय॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय १०

जेहि घर को शरीर को तू कहैहै कि मेरोहै सो घर शरीर तेरे गले की बेरी कहे फांसी है अथवा बैरी है यमके यहां गला कटावेंगे ८ हे अज्ञानी! तौने शरीर को तू आपनो मानिकै विषयन में परिकै भूलिगयो है ९ सो यतने जेतने कहि आये ते यहि तनके साझी हैं तिनते जन्म भरि तैं दुःख पायकै हे बावरे! कहे मूढ़! मोर मोर तैं गोहरावै है कि यातन मेरो है अजहूं चेत नहीं करै है कि यातनै मोको फांसे है॥ १०॥

इति अठहत्तरवींरमैनीसमाप्तम्॥ ७८॥

अथ उन्नासिवीं रमैनी॥ ७९॥

चौ० बढ़वत बाढ़ि घटावत छोटी। परखतखर परखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलौं कही। औरौ कहौं परै जो सही २
कहे बिना मोहिं रहो न जाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ३
साखी॥ खाते खाते युग गया, अजहुं न चेतो जाय॥
कहहिं कबीर पुकारि कै, जीव अचेतै जाय ४

बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी। परखतखरपरखावतखोटी १
केतिककहौं कहांलौं कही। औरौ कहौं परै जो सही २
कहेबिना मोहिं रहो न जाई। बेरहि लै लै कूकुर खाई ३

यह मायाको प्रपञ्च जो है सो बढ़ावत जाइ तो बढ़तई जाय है रङ्कते इन्द्रहू ह्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जाय है और जो घटावै लगै तो घटिही जाइहै और नानामतमें लागि मनमुखी बिचारे है

तब तो खर कहे सांचै है और जब काहू साधुते परखायो तब झूठही ह्वै जायहै १ और मैं केतिको बात कह्यो परन्तु पाथरकैसो पानी बहिजाइहै वेधै तो हई नहीं है मैं कहांलों कहों व औरऊ कहों जो सहीपरै कहे जो तोको सांच जानिपरै २ हे जीव! तेरे ये दुःख देखिकै मोको दया होइ है ताते विना कहे मोसों नहीं रहिजाइहै जौने बेरा रामनाम संसारसागर के उतरिबेको मैं बताइदेउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग ते खाइ जाइहैं कहे मेरो कहो तामें नहीं लगन देइ हैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यह पाठ होइ 'बिरहिनि लैलै कूकुर खाइ' तो यह अर्थ है कि बिरहिन जे लोग हैं जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिनको गुरुवालोग खाइ जाइ हैं अथवा वीर जे साहब हैं तिनते हीन जे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ॥ ३ ॥

साखी ॥ खाते खाते युगगया, अजहुँ न चेतो जाय ॥
कहँहिं कबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ४

सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि खातखात केतन्यो युग बीति गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटै है अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नहीं चेत करै है सो यह जीव अचेतै कहे विना साहब के चेत किये अर्थात् विना साहबके जाने नरकको चलोजाइहै॥४॥

इति उन्नासिवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७९ ॥

अथ असिवीं रमैनी ॥ ८० ॥

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसों भेटनसपना १
खराखोट जिन नहिं परखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २
समुझि न परै पातरी मोटी। आछी गाढ़ी सब भो खोटी ३
कह कबीर केहि देहौं खोरी। जब चलिहौं झिन आशा तोरी ४

बहुतकसाहसकरिजियअपना।सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २

हे जीव ! आपही ते तुम ज्ञान योग वैराग्य तपस्या में साहस करिकै बहुतक्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहीं है जौन छुड़ावनवारो है १ जिन जीव गुरुवालोगनके समुझाये नानामत में लागि कहूं सांच साधूते खरा खोट नहीं परखायो ते जीव चाहत तो मुक्तिको लाभ हैं परन्तु जिन सुकर्मनते अन्तःकरण शुद्धद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो ॥ २ ॥

समुझि न परै पातरी मोटी । आछी गाढ़ी सबभो खोटी३
कह कबीर केहि देहौंखोरी । जब चलिहौंझिनआशातोरी४

सो जिन मूर गमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटी कहे विभु नहीं समुझि परै है काहेते ओछी जो मति है तामें निश्चयरूप गांठी नहीं परै है कि यतनोई विचार है "नेति नेति" कहे है याते सब खोटही ह्वैगयो ३ श्रीकबीरजी कहैहैं सांचो जो है साहब रक्षक ताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि हम ब्रह्म ह्वैजायँ तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीन होउगे फिरि संसार परोगे तब काको खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्म हौ ॥ ४ ॥

इति अस्सीवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ८० ॥

अथ इक्यासिवीं रमैनी ॥

चौ० देव चरित्र सुनौरे भाई । सो तो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजे सुनी मँदोदरि तारा । जेहि घर जेठ सदा लगवारा २
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया।सुरगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कह कबीर हरिके गुणगाया । कुन्तीकर्ण कुँवारेहि जाया ४

देवचरित्र सुनौरे भाई । सोतो ब्रह्माधिया नशाई १
ऊजेसुनीमँदोदरि तारा । ज्यहिघर जेठ सदालगवारा२

बड़े बड़े जीव माया में परिकै भूलिगये हैं छोटे जीवनको कहा कहिये हे भाइउ ! देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग

भूलि गये १ ऊजे मन्दोदरी तारा जेहैं तिनके घर में जेठही लग-
वार होत आयो है जो कहो सुग्रीव बिभीषण को कहते हौ तो
तिनके घर न कहते तिनके कहते औरई लहुरे हैं वे जेठ कहे हैं
सो ब्रह्मा के हवाले कह्यो ब्रह्मा के पुत्र आपुसै में काज करतभये
सो पुलस्त्य जेठे हैं ते लहुरे भाईकी कन्या को बिवाहे या मन्दो-
दरी के घरको हवाल भयो और ऋक्षराज स्त्री भये तिन्हैं सूर्य
और इन्द्र गहे तिनते सुग्रीव और बालि भये सो प्रथम सूर्य ग्र-
हण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई और सूर्यते जेठे इन्द्र हैं तेऊ
पीछे ग्रहण कियो तारा के घरको हवाल भयो सो तारा मन्दो-
दरीके घर जेठही लगवार होत आयो है जो लहुर पाठ होइ तो
सुग्रीव बिभीषण बने हैं शकै नहीं है ॥ २ ॥

सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया। सुरगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कहकबीर हरिके गुणगाया। कुन्तीकर्णकुँवारेहिजाया ४

सुरपति अहल्याको गमन करतभयो और सुरगुरु जे बृहस्पति
हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ३ और कुन्ती जो हैं
सो कुँवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या डौलके हैं
जो नीचहू नहीं करै है परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावत
भये ताते इनहूंकी सज्जनहीं में गिनती भई ऐसहु में हरि रक्षा-
के लियो सो हे जीव! तैं केता अपराध कियो ॥ ४ ॥

इति इक्यासिवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ८१ ॥

अथ बयासिवीं रमैनी ॥ ८२ ॥

चौ० सुखकबृक्षयकजक्त उपाया। समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युग चारी। फल द्वै पापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुबर्णिनजाही। कै चरित्र सो तेही माही ३
नटवरसाजसाजियासाजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्ति न देखा। शिवशक्तीबिरञ्चिनहिं पेखा ५

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै, होत सकल की हानि ६

सुखक बृक्षयकजक्तउपाया । समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युगचारी । फल द्वै पाप पुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुबर्णीनजाही । कै चरित्र सो तेही माही ३

साहबको बिसरायकै सूखा जो वृक्ष है यह संसार माया कहे पावत भयो विषय विषरूप माया न समुझिपरी संसारी ह्वैगयो१ शरीर धारणकै छा उरमिन को धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षी है जौने वृक्ष चारिउ युगमें पक्षी ह्वैगयो अथवा क्षयमान जे नवगुण हैं तिनको धारणकीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षी है नवगुण कौन हैं सुख दुःख इच्छा जल द्वेष धर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जो है पक्षी सो पापपुण्य फल ताको खाइबेको चारिउयुग अधिकारी हैं २ तिन फलनमें बहुत स्वाद है कछु कहो नहीं जायहै तेही वृक्ष में जीवरूप पक्षी चरित्र करै है सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

नटवरसाजसाजिया साजी । सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहाबपुरायुक्ति न देखा । शिवशक्ती बिरञ्चि नहिंपेखा ५

नटके बटा कैसी साज साजि कहे नानारूप धारण करिकै आवै जाय है जो बाजीगर खेल खेलै है तौने देखै है अर्थात् जे ब्रह्म में लगे ते ब्रह्महीं देखै हैं जे जीवात्मामें लगे हैं ते जीवात्मै को देखै हैं इत्यादि जो जौने मत में है सो ताही में लगो है सांच बताये लरैधावै है काहे ते उनकी बासना अनेक जन्म ते वही है ४ गुरुवा करिकै मोहा जो बपुरा जीव है सो साहबके जानिबे की युक्ति न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्व कहिआये हैं सो या शिवशक्ति विरञ्चि मायारूप या बात न जानतभये ॥५॥

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचि है, होत सकलकी हानि ६

परदे परदे कहे विना साहबके जाने संसार में जीव चलिगया कहे संसारमें जातरहा वाणी जो है वेद शास्त्र सो तात्पर्य करिकै साहबको बतावै है सो जीवको न समुझि पस्यो जो कोई वेद शास्त्रादि में तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानै सोई बाचै है अपरोक्ष अर्थ जगत्सुख जानिकै सबकी हानि होतही जाय है ॥ ६ ॥

इति बयासिवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ८२ ॥

अथ तिरासिवीं रमैनी ॥ ८३ ॥

चौ० क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिन अवधू गुरुज्ञान लखाया। ताकर मन तहँईं लैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै। पांचों मेटि एककरि बूझै ३
जीवहि मारि जीव प्रतिपाले। देखत जन्म आपनो घाले ४
हाले करै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमत राऊ ५

साखी ॥ मनमत मरै न जीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्य सनेही रामबिन, चले अपनपौ खोय ६

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिनअवधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँईंलैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै। पांचोंमेटिएक करि बूझै३

जैसे क्षत्रिय क्षत्रियाधर्मकरै है तौ वाके सवाई कर्म बढ़ैं हैं रण में पैठिकै शत्रुनको मारिकै शूरतारूप कर्म बढ़ैं हैं ऐसे जीव यह क्षत्रिय हैं क्षत्रिय जे साहब हैं तिनकी जाति है सो संसाररण में पैठिकै मन माया धोखा ज्ञान ई शत्रुमारि साहबके मिलनरूप शूरता बढ़ै है १ जे अवधू कहे बधू जो माया त्यहिते रहित रामोपासक जे साधु ते गुण जे साहब हैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताको मन तहँईं लय भयो मनोनाश बासनाक्षय ह्वैगई जब मनोनाश भयो तब धायाकहे हंसरूप में स्थित ह्वै साहबके पास

को धावत भयो २ क्षत्रिय सो है जो कुटुम्ब सों जूझै कुटुम्ब याके कोहै पांचौ शरीर तिन को मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप त्यहि करिकै साहबको बूझै ॥ ३ ॥

जीवहिमारिजीवप्रतिपालै । देखतजन्मआपनोघालै ४
हालै करै निशाने घाऊ । जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ५

जीवहि मारिकै कहे जो और औरेको जीव ह्वै रह्यो है आपने को ब्रह्म मानै है आपनेको औरै औरै देवताके दास मानै है यह नाम मिटाइदेइ और यह जीवको जीव नाम मिटाइदेइ और हंसरूप में स्थित ह्वैकै जीवको नाम रामदास धरावै तबहीं यह जीव को प्रतिपाल होइहै आपने देखतै जन्म मरणको लैहै कहे छोड़िदेइ है ४ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हालै निशाने में घाउ करै अर्थात् मनोनाश बासक्षय हालै ह्वैजाइहै और जे मनमतराउहैं अपने मनमतमें अपनेको राजा मानै हैं जूझिकै संसार में परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्म मानै है कोई आत्मैको मालिक मानै है ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपने को कृष्णमानि जूझिपर्‌यो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारे जाय हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ मन मतमरैनजीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्यसनेहीरामबिन, चले अपनपौ खोय ६

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्व नहीं जाइ है जिअब तो तब कहिये जब साहब को जानिकै साहबके लोकहि में जन्म मरण छूटि जाय मरिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीन होय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सो शून्य जे हैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमती हैं ते मरैहैं न जियै हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनको है तामें प्रमाण ॥ "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" ॥ ६ ॥

इति तिरासिवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ८३ ॥

अथ चौरासिवीं रमैनी ॥ ८४ ॥

चौ० जोजिय अपने दुखै सँभारू। सो दुख व्यापिरहो संसारू १
माया मोह बन्ध सब लोई। अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोर में सबै बिगूता। जननी उदर गर्भमहँ सूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता। जनभौंरा अस गये बहूता ४
उपजै खपै योनि फिरि आवै। सुखकलेशसपनेहुँनहिंपावै ५
दुख संताप कष्ट बहु पावै। सो न मिला जो जरत बुझावै६
मोर तोर में जर जग सारा। धिक जीवन झूठो संसारा ७
झूठे मोह रहा जगलागी। इनतेभागिबहुरिपुनिआगी ८
जे हितकै राखे सबलोई। सो सयान बाचे नहिं कोई ९

साखी ॥ आपु आपु चेतैनहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीरसपनेजगै, निरस्थि अस्थि नहिं कोइ १०

जोजियअपनेदुखैसँभारू। सोदुखव्यापिरहो संसारू १
मायामोह बन्ध सबलोई। अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोरतोरमें सबै बिगूता। जननी उदर गर्भमहँ सूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता। जनभौंरा अस गये बहूता ४

हे जीव! जौन दुःख यह संसार में व्यापिरह्यो है तौने अपने दुःखको सँभारु अर्थात् तौने दुःखते निकसु १ मायामोह में सब बँधहौ सो अल्पतो लाभ है अर्थात् विषयसुखते थोरही है तिन सबकेमूल सम्पूर्ण दुःख के मेटनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइ हैं कहे बिसरि जाय हैं २ मोर तोर याही में सब जीव बिगूता कहे अरुझिरहेहैं याहीते जननीके उदरमें सदा सूतत हैं अर्थात् गर्भबास नहीं मिटैहै ३ जैसे भौंरा फूलनमें रस लेनको जाइहै संध्या ह्वैगई तब कमल संपुटित ह्वैगयो तब फँसि गयो तैसे ये जीव बहुरूपते बहुत पराक्रम करिकै खेल खेलै हैं कहे विषय रसलेनको जाय हैं माया में फँसिजाय हैं ॥ ४ ॥

उपजैखपैयोनिफिरिआवै। सुखकलेशसपनेहुंनहिं पावै५

दुखसंताप कष्ट बहुपावै । सो न मिला जो जरत बुझावै ६

उपजै है और खपै कहे मरै है पुनि पुनि योनिमें फिरि आवै है सुखको लेश सपन्यो नहीं पावै है ५ दुःख संताप कष्ट बहुत पावै है जो आगीते जरत बुझावै सो गुरु नहीं मिलैहै इहां दुःख संताप कष्ट तीनवार जो कह्यो तामें कुछ भेद है दुःख वह कहावै है जो काहू मारे होइ है और जो रोगादिकन करिकै होइ है सो संकष्ट कहावैहै और जो कोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ॥ ६ ॥

मोर तोरमें जर जग सारा । धिकजीवन झूंठो संसारा७
झूंठेमोहरहाजगलागी । इनतेभागि बहुरिपुनि आगी८
जे हितकै राखे सबलोई । सो सयान बाचे कहिं कोई ६

और तोर मोर करिकै सब संसार जरजाइ है यह संसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूंठो है सो ऐसे झूंठे संसार में जीवनको जीबेको धिक्कार है ७ मायाको जो मोह है सो सब संसारमें लगिरह्यो है सो झूंठो है इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झूंठे ब्रह्माग्निमें जरै है ८ जे जे सबलोई कहे लोगन को हितकै राखै हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचैहैं तू कैसे बचैगो ॥ ६ ॥

साखी ॥ आपु आपु चेतै नहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ॥
कहकबीरसपने जगै, निरस्थिअस्थिनहिंकोइ १०

आपु आपु कहे आपने स्वरूप को नहीं चेतै है कि मैं परम पुरुष श्रीरामचन्द्र के हौं सो मैं जो समुझाऊंहौं तो रिसहा होइ है सो कबीरजी कहै हैं कि जो सपने जागै सपन कहा है देह को अभिमानी मनमुखी ह्वै जागै कहे अपने मनते यह बिचारिलेइ कि मैं जाग्यो मैं ब्रह्म ह्वैगयो अथवा आपने को जान्यो महीं सबको मालिक हौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं है मैं अपनेको जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहब को न मान्यो सो

निरस्थि कहे नास्तिक है सो अस्थि है आस्तिक न होइ है सो कहा जागैहै नहीं जागै है अर्थात् वह ज्ञानतो धोखा है संसारसमुद्र ते तेरी रक्षा कहा करैगो ताते वह साहबको समुझि जाते तेरो संसारसमुद्र ते उबार करि देइ ॥ १० ॥

इति चौरासिवींरमैनीसम्पूर्णम् ॥

इति ॥

अथ पहिला शब्द ॥ १ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी । नारी एक पुरुष दुइ जाये बूझो पण्डित ज्ञानी १ पाहन फोरि गङ्गयक निकरी, चहुँदिशि पानी पानी । तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी २ उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी । वहि मक्खीके मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिन पानी ३ नारी सकल पुरुष वहि खायो, ताते रहेउ अकेला । कहै कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ४ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी ॥
नारी एक पुरुष दुइ जाये,बूझो पण्डित ज्ञानी १

हे सन्तो,हे जीवो ! तुमतो शान्तरूप हौ गुरु जे हैं सबते श्रेष्ठ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतो कहे सातो जे भक्ति हैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात् सगुण निर्गुण के परे मन वचन के परे है कौन सातभक्ति हैं ते कहै हैं शान्त प्रथम ताकर द्वै भेद सूक्ष्मा-सामान्या सो शान्त के सूक्ष्मा के सामान्याके जुदे जुदे लक्षण हैं ताते तीनि भक्ती ये हैं औदास्य,सख्य,वात्सल्य,शृङ्गार चारि ये मिलाय सात भक्ति भईं सोई जेहैं सातौ रस हैं ते मनवचन ये नहीं आवै हैं जब प्राप्ति होइ हैं तबहीं जानि परै है कि ऐसे हैं सो या भांति साहब की जे सातौ भक्ति हैं ते गुप्त ह्वै गईं काहेते कोऊ न जानत भयो सो कहै हैं नारी जो है कारणरूपा माया

सो द्वै पुरुष को प्रकटकियो एकजीव दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्म ईश्वर प्रकट भये हैं सो आदि मङ्गलमें कहि आये हैं "जनी प्रादुर्भावे" धातु है या जायो को अर्थ प्रकट करबोई है और माया ते जीव ईश्वर प्रकट भये हैं तामें प्रमाण "मायाख्यायाः कामधेनोर्वत्सौ जीवेश्वरावुभाविति । जीवेशावाभासेन करोति माया चाविद्या च" (इति श्रुतेः) सो हे पण्डित! ज्ञानी तुम बूझो तो सारासार के विचार करनवारे सांच हौ यह वाणी जो है सोई तुमको भरमाइ दियो है ॥ १ ॥

पाहनफोरिगङ्गयकनिकरी, चहुँदिशि पानी पानी ॥
तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी २

पाहन कहिये कठिनको सो कठिन मन है ताको फोरिकै गङ्गा निकसी नानापदार्थनमें जो राग होइ है सोई गङ्गा हैं सो वही रागरूपा माया में परिकै जीव संसार में रागकरि बूड़िगये और ईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वर जेहैं तेई दुइ भारी पर्वत हैं ते बूड़िगये और दरिया जो धोखाब्रह्महै तामें रागरूपी जो है गङ्गा ताकी जो लहरिहै सो समाइजातीभई अर्थात् सब धोखही में राग करत भये सांच वस्तु में जिन जाना तेई बाचे अथवा वही राग गङ्गा लहरि संसारसागर में समाइजाती भई सबजीव ईश्वर संसार में रागद्वेष करिकै बूड़िगये अथवा वहै जो वाणी गङ्गा सो पाहन जो मन है तौनेको फोरिकै निकरी है सो चारिउ ओर पानी पानी ह्वै रही है तौने पानी दुइ पर्वत बूड़े एक जीव एक ईश्वर और गङ्गा समुद्र में समानी हैं इहां वाणीरूप गङ्गा को पर्यवसान दरिया जो ब्रह्म है ताही में होत भयो ॥ २ ॥

उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी ॥
वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिनबानी ३

मक्खी जे हैं जीव ते तरुवर जो है देह तामें उड़िकै आपने आपने वासननते लागतभये अर्थात् प्रलय जब भई तब वही ब्रह्म

में लीनभये पुनि जब सृष्टि भई तब पुनि शरीर पावत भये अ-
थवा मक्खी जे हैं जीव ते संसारवृक्ष में लागत भये ते सब एक
वाणी बोलै हैं कि एक ब्रह्महीहै दूसरो नहीं है साहबको नहीं जानैहैं
सो वही मक्खी जो जीव है ताके मक्खा नहीं है कहे प्रथम जीव
जो हिरण्यगर्भ समष्टिजीव है ताके पति नहीं है परन्तु विना पानी
गर्भ रहतई भयो जीवते संसार प्रकटै यह आपहीते नाम को
जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तो याको उद्धार
करिबो रमानामदियो ताकी मेरे नाम मेरो अर्थ जानिकै मेरे पास
आवै संसार न होइ ॥ ३ ॥

नारी सकल पुरुष वहि खाया, ताते रह्यो अकेला ॥
कहे कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ४

नारी जो है वहै कारणरूपा माया सो सबजीव ईश्वर जे पुरुष
हैं तिनको खाइलियो कहे आपने पेटमें डारिलियो अर्थात् उनके
काहूके ज्ञान न रहिगयो आपनो चेरो बनाइ लियो तेहिते हे संतो,
हे जीवो! तुमतो शुद्ध हौ इनको छोड़िदेउ तब साहब जे हैं तेई
छोड़ाइ लेइँगे अकेला रहो कहे अकेल जे सबके साहब परमपुरुष
श्रीरामचन्द्र हैं तिनके ह्वैके रहौ जो जीव ईश्वरनको संग करौगे
तो तुमहूंको माया धरिलेइगी श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो अबकी
समुझै कहे यह मानुष शरीर पाइकै समुझै सोई गुरू है तौने
जीवको हम चेला ह्वैजाइँ अर्थात् ताके हम सेवक ह्वै जाइँ जो जो
हमसों पूछै सो सब वाको बताइ देइँ कछू गोप्य न राखैं अथवा
सो हम पूछिलेइँ कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनी भांति ते छूट्यो
सो कबीरजी तो कबहूं बँधिकै छूटै नहीं हैं ताते कबीर जी कहै
हैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तो हम पूछि लेइँ बँधिकै छूटे
कैसे सुख होइ ॥ ४ ॥

इति पहिला शब्द समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा शब्द ॥ २ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै। काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १ उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै। नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिम्ब प्रकासै २ बिन चरणनको दुहुँदिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै। ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३ औंधे घड़ा नहीं जल डूबै, सूधेसों घट भरिया। जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करु, गुरुप्रसादते तरिया ४ पैठि गुफामें सब जग देखै, बाहर कछुव न सूझै। उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५ गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै। नटवर बाजीपेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६ कथनी बदनी निजुकै जोहैं, ई सब अकथकहानी। धरती उलटि अकाशहि बेधै, ई पुरुषहि की बानी ७ बिना पियाला अमृत अचवै, नदी नीरभरि राखै। कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ॥ ८ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै ॥
काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १

हे सन्तो, हे जीवो! तुमतो चैतन्यरूप हौ तुम काहेको सोवौ हौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहौ मायादिक तो जड़ हैं और तिहारो अनुभव जो ब्रह्म है सोऊ जड़ है काहेते कि तिहारो मन तो जड़ है ताहीकी कल्पना ब्रह्म है जो कहो मनको बिषय ब्रह्म है यह तो कोई वेदान्त में नहीं है तो जहांभर मन वचनमें आवै तहांभर अज्ञान कल्पित है और "अहंब्रह्मास्मि" में ब्रह्म है यह मानिबो तो मूलाज्ञान में है यह वेदान्तको सिद्धान्त है जैसे धूरि धूम बादर घटादिक के आकाशही रहिजाय है कबीरजी कहै हैं कि तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ जहांभर ब्रह्म कहै हैं और विचार करै हैं सो मन वचन में आइजाइहै ताते मनहीं को कल्पित है ताते वोऊ जड़ हैं सो तुम नहीं हौ तुमतौ चैतन्य हौ तिहारे

रूप को काल नहीं खाय है और कौनौ कल्पना नहीं ब्यापै है अर्थात् कौनो तुम्हारे स्वरूप में कल्पना नहीं उठैहै और तेरो जो स्वरूप है याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के समीपरहै है सो रूप जरा जो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजै है अर्थात् कबहूं बुढ़ाई नहीं होइ है सदा किशोर बनोरहै है ॥ १ ॥

उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै ॥
नवग्रहमारि रोगिया बैठे, जलमें बिम्ब प्रकासै २

रागरूपी जो है गङ्गा सो संसारमुख ब्रह्ममुख ह्वैरहीहै सो जो उलटै साहबमुख होइ साहबमें जीव अनुराग करै तो समुद्र जो है संसारसागर और धोखाब्रह्मसागर ये दुहुँनको सोखिलेइ और शशि जोहै जीवात्मा मानिबो कि एक आत्महो है दूसरो पदार्थ नहींहै यह ज्ञान और सूर जोहै नाना निरअनादिक ईश्वरनके दास मानिबेको ज्ञान तौनेको गरासिलेइहै और यह सांचो साहबको है जान याको देइहैं संसारवालो जो रोग है सो पारखहीते जाय है सो नवग्रह जब निबल होइहै तब रोग होइहै सो नवग्रह नवद्रव्य हैं नवद्रव्य के नाम पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, आत्मादिक मन तिनको मारिकै कहे मिथ्या मानिकै और आपनी आत्माको साहब को दास मानिकै बैठे तब रागरूपी जल में बिम्ब जो है शुद्ध साहब को अंश याको स्वरूप जाको प्रतिबिम्ब धोखाब्रह्म है और संसार है तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै ॥ २ ॥

बिनचरणनकोदशदिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै॥
ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३

तब विना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुख चलिबो याको छूटिगयो अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन ह्वै गयो तब नवधाभक्तिको छोड़िकै दहु कहे दशौ जो साहबकी अनुरागात्मिका भक्ति हैं तौने के दिशा को धावैहै अथवा नवद्वारको

छोड़िकै दशो द्वारको जोहै मकरतार साहबके इहांकी डोरि लगी है तहांको धावै है और शरीरन को जे प्राकृत नयनहैं ते याके न रहिगये साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौने के नेत्र करिकै साहब को चिदचिद्रूप यह संसार सो सूझि परन लग्यो कहे बूझिपरनलग्यो तब अरे मूढ़ ! भ्रमरूप जोहै ससा खरहा अहंब्रह्म विचार सो तैं जोहै समर्थसिंह ताको ग्रासै है सो वह तो धोखाहै वही भर्म भूलि गयो सो हे जीवो ! यह अचरज कोऊ बूझौ और जौन ज्ञान मैं कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो जो कबहूं न होइ नई बात होय सो यह आश्चर्य है ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे वह ब्रह्म तुम्हारई अनुभव है ताहीमें तुम भुलान हौ॥३॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया, सूधे सों घट भरिया॥
जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करु, गुरुप्रसादते तरिया ४

औंधा घड़ा जो जल में डारि दीजै तौ नहीं डूबै है जल नहीं भरि आवैहै सो तैं जो साहबको पीठि दैकै ब्रह्ममें और संसार में लगै सो तो धोखाहै जैसे सूधे घट में जलभरि आवै है तैसे तैंहूं साहबकी ओर मुखकरु जब साहब तेरे ऊपर प्रसन्न होइगो तबहीं तैं ज्ञान भक्ति करिकै पूरा होइगो जा कारण नर भिन्न भिन्न करै है कहे भिन्न भिन्न पदार्थ मानै है और सब पदार्थ साहबको चिदचिद्रूप करिकै नहीं देखै है सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठ अन्धकारको दूर करनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्रसादते तरोगे अथवा साहबके बतावनवारे अन्धकारके दूर करनवारे जब गुरु मिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरोगे॥ ४॥

पैठि गुफा मों सब जगदेखै, बाहर कछुव न सूझै॥
उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफा है तौनेमें पैठिकै कहे शरीर पाइकै चिदचित् साहबको रूप सब संसार याको सूझिपरै

और साहबके रूपते बाहिरे और कुछ वस्तु न सूझिपरै सुरतिरूपी जो बाण है सो जगत्मुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख ह्वै रहा है सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिव कहे राजा जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगावै यह बात जो कोई शूरा होइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्माज्ञान की एक आत्मै सत्य है तिनको जीति लेइ सो बूझै तबहीं जन्म मरण याको छूटै है ॥ ५ ॥

गायन कहे कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै ॥
नटवर बाजी पेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६

गायन जो है बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहब को कहै हैं तौनेको तो कबहूं नहीं गावै है अनबोला जो निराकार धोखाब्रह्म है जो कबहूं बोलतै नहीं है सो कैसे पूरपरै कौनीतरहते अनबोला को गावै हैं सो आगे कहै हैं वह जो धोखाब्रह्म को पेखना है सो नटवत् बाजी है कहे झूंठै है वहां कछू नहीं देखो परै है जो कहो अनहद को हेतु तो बढ़ावै है कहे दशौं धुनि अनहद की तौ सुनि परै है ॥ ६ ॥

चौ० कथनी बदनी निजुकै जोहै, ई सब अकथ कहानी॥
धरती उलटि अकाशहि बेधै, ईपुरुषहिकी बानी ७

सोई तो सब कथनी बदनी है जो विचारिकै देखौ तो अनहद आदि दैकै ई सब अकथ कहानी हैं साहबके जाननवारे पूरेसन्तन के कहिबे लायक नहींहै झूंठेहैं कछु इनमें है नहीं सब मन के अनुभव हैं पुरुष जे हैं तिनकी यह बानी कहे स्वभाव है धरती जो जड़माया है ताको उलटिदेइ है वाको मुख मुरकाइ देइहै वासों आप फिरि आवैहै और आकाश जो ब्रह्म है ताको बेधै कहे ब्रह्म के पारजाय है तामें प्रमाण " सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः । तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता रसिका हरिवेदिनः " और कुपुरुष जेहैं ते संसार में लगे हैं कि धोखाब्रह्म में लगेहैं उनकी बानी कहे यहै स्वभाव है ॥ ७ ॥

बिना पियाला अमृत अचवै, नदीनीर भरिराखै॥
कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ८

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचों शरीर हैं तेई पियाला हैं स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानन्द पियैहैं और महाकारण कैवल्य ते ब्रह्मानन्द पियैहैं पांचौ शरीर पियाला बिना कहेते निकसिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूप है तामें स्थित ह्वैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृत है ताको अँचवै हैं जाते जन्म मरण न होइ तिनको जगत्के रागरूपी नीर करिकै भरी जो नदी है जाको आगे वर्णनकरिआयेहैं नदियानीर नरकभरि आई सो तिनको राखै कहे छाईहैं अर्थात् भूरहीहैं अथवा संसारमें जो राग कियेहैं सो नरक भरी हैं ताको निकारिकै रसरूपा भक्ति जो साहबकी नीर ताको भरिराखै सो कबीरजी कहैहैं कि सोई युग युग जीवै है कहे वही को जनन मरण नहीं होय जो या भांति परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्रेमरूपी सुधारसको चाखैहै ॥ ८ ॥

इति दूसरा शब्द समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा शब्द ॥ ३ ॥

सन्तो घरमें झगराभारी। राति दिवस मिलि उठि उठि लागैं, पांच ढोटा यक नारी १ न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी। कोइ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २ दुर्मति केर दोहागिनि मेटै, ढोटै चाप चपेरै। कह कबीर सोई जन मेरा, घर की रारि निबेरै ॥ ३ ॥

सन्तो घरमें झगराभारी ॥
राति दिवस मिलि उठि उठि लागैं, पांच ढोटा यक नारी १

आगे या कहिआये हैं कि बिना पियाला अमृत अचवै हैं और जे नहीं अचवै हैं तिनको कहै हैं हे सन्तो, हे जीवो ! या घर जो शरीर है तामें भारी झगरा मच्यो है पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं

और नारी जो माया है सो उठि उठि लागै हैं कहे झगराकरै हैं यहै उपाधि राति दिन जीवको लगीरहै है ॥ १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी ॥
कोउ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहै हैं पांचौ बड़े सवादी हैं आकाश श्रोत्र इन्द्रिय प्रधान है सो शब्द चाहै है वायु त्वचा इन्द्रिय प्रधान सो स्पर्शको चाहै है और तेज चक्षुइन्द्रिय प्रधान है सो रूपको चाहै है और जल रसनेन्द्रिय प्रधान है सो रसको चाहै है और धरती घ्राणेन्द्रिय प्रधान है सो गन्धको चाहै है और माया जीवही को प्रासन चहैहै कोई काहूको हटको नहीं मानै है आपही आपु मालिक ह्वैरहे हैं आपुही आपु आपनी मुरादि कहे वाञ्छा पूरकरै हैं ॥ २ ॥

दुर्मति केर दोहागिनिमेटै, ढोटै चाप चपेरै ॥
कह कबीर सोई जनमेरा, घरकीरारिनिबेरै ३

दुर्मति जेहैं गुरुवालोग जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोंड़ि आत्महीको सत्यमानै हैं और या कहैहैं कि सब सुख करिलेउं वहां कछु नहीं है ऐसे जे नास्तिक हैं तिनकी दोहागिनि कहे नहीं ग्रहणलायक बाणी तिनको मेटिकै कहे छोंड़िकै ढोटा जेहैं पांचौ तत्त्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दबाइ लेइ अर्थात् वे न दबावन पावैं आपने आपने विषयनमें मनको खैंचि लैजाइहै तहां मन न जानपावै सो कबीरजी कहैहैं कि जो पारिखकरिकै शरीर जो घर है तौने में जो पांचौ इन्द्रिनको झगड़ा है ताको निबेरै कहे सब तत्त्व जे पृथ्वी आदिकहैं तिनमें लीन जे पांचौ इन्द्रिय हैं तिनकी जे बिषय हैं तिनको निबेराकरै कि भगवत्की अचिदविग्रहहै पृथ्वी आदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है इन्द्रियरूप करिकै जो देखै और विषयरूप करिकै जो देखै है सो न देखै और यह मानै कि मैं जोहौं जीवात्मा तौने

की एकौ नहीं हैं काहेते कि मैं चिदचित् विग्रह हौं ये जड़ विग्रह हैं इनते भिन्न हौं सो ये जे हैं जड़ ते आत्मै की चैतन्यता पाइके आपुस में लड़े हैं सो इनते जब आत्मा भिन्न ह्वै जाइगो तब सब शरीरै एकौ कार्य करनको समर्थ न होइगो कैसे जैसे शरीरते जीव इनते अपने को जुदो मानैगो हंसस्वरूप में स्थित होइगो सो इनहीं को चपाइ लेइगो घरकी रारि निबरि जायगी सो इस तरहते जो कोई अपने स्वरूपको जानि घर की रारि निबेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र में लगै सोई जन मेरो है ॥ ३ ॥

इति तीसरा शब्द समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा शब्द ॥ ४ ॥

सन्तो देखत जग बौराना। साँचकहौं तौ मारनधावै झूठे जग पतियाना १ नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना। आतम मारि पाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना २ बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना। कैमुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना ३ आसनमारि डिम्भ धरि बैठे, मनमें बहुत गुमाना। पीतर पाथर पूजनलागे, तीरथ गर्ब भुलाना ४ माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना। साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना ५ हिन्दू कहै मोहिं राम पियारा, तुरुक कहै रहिमाना। आपुस में दोउ लरिलरि मूये, मर्म न काहू जाना ६ घर घर मन्त्र जे देत फिरत हैं, महिमाके अभिमाना। गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, ईसब भर्म भुलाना। केतिक कहौं कहा नहिं मानै, आपहि आप समाना ॥ ८ ॥

सन्तो देखत जग बौराना ॥

सांच कहौं तौ मारन धावै, झूठे जग पतियाना १

हे सन्तो! यह जगत् देखत देखत बौराइ गयो यह जानै है कि यह कल्पना मनहीं की है एकनको दुःख पावत देखै है एकन

को भूत होत देखै है एकनको रोगग्रसित देखै है एकनको घोड़े हाथी चढ़े देखै है एकनको राजा होत देखैहै और एकनको मरत देखै है आपही मरघट ज्ञान कथै है कि ऐसेही हमहूं मरिजाइँगे सो यहि देखत देखत भुलाइजाइहैं परमपरपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करै है जाते संसारते छूटै जो सांच बताऊं हौं कि सांच जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं जो चित् अचित् में व्यापक हैं सब ठौर बने हैं तिनमें लगौ जाते उबार है तो मारनधावै है और झूठे जे मायाब्रह्म हैं तिनके बिस्तारके जे नानामत हैं तिनमें जो कोई लगावैहै तो तिनको सांच मानिकै पतिआय जाय है ॥ १ ॥

नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना।
आतममारिपाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना२

बहुत नेमी धर्मी देखे हैं बहुत प्रातःस्नान करनवालेन को देखेहैं स्वर्गको जाय हैं और आत्माको मारिकै कहे भगवान् को मन्दिर शरीर में साक्षात् सब के हृदय में भगवान् अन्तर्यामी-रूप ते बसे हैं तौने शरीरको फोरिकै मेढ़ा महिषादिकनको मूड़ लैके पीतर पाथर आदिक जे देवीकी मूर्ति हैं तिनमें चढ़ावै हैं और सब के उद्धार हैबेको बतावै हैं तो इनमें कौन ज्ञान है कछू ज्ञान नहीं है काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानै हैं ॥ २ ॥

बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना ॥
करि मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें यहै जो ज्ञाना ३

और बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरान के पढ़नवाले ते जीवनको मुरीद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरी के हलालकरै की तदबीर बतावै हैं और आपौ हलाल करै हैं ॥ ३ ॥

आसनमारिडिम्भधरि बैठे, उनमें बहुत गुमाना ॥
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्ब भुलाना ४

और कोई चौरासी आसन कैकै प्राण चढ़ायकै डिम्भधरि बैठे

हैं कि हमारे बरोबरि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमानकरै हैं यह योगिनको कह्यो और कोई पीतरकी मूर्ति कोई पाथरकी मूर्ति पूजै हैं और सर्वभूतमें ब्यापक जो भगवान् तिन भूतनको द्रोह करै हैं ते अज्ञानी हैं साहबको नहीं जानै हैं तामें प्रमाण "अह-मुच्चावचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे । नैव तुष्येऽर्चितोर्चायां भूत-ग्रामावमानिनः १ यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कल-त्रादिषु भौमइज्यधीः । यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्व-भिज्ञेषु स एव गोखरः २" (इति भागवते) और कोई तीर्थन में लागे है इनहीके गर्बमें सब भुलाने हैं कि हम मुक्त है जायँगे॥४॥

माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना ॥
साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना ५

अब कबीरपन्थिन को नानापन्थिन को कहैहैं कि माला पहिरे हैं टोपी दीन्हे हैं और नाकते लैके अछिद्र ऊर्ध्वतिलक दीन्हे हैं ताही के अनुसार छाप पाये हैं या कहै हैं हमको गद्दीकी छाप भईहै हम महन्त हैं पान पायो है और साखीशब्द गावत हैं पै वाको अर्थ भूले हैं साखीशब्द में जो साहबको रूप बतावै हैं जीवात्मा को सो नहीं जानै ॥ ५ ॥

हिन्दूकहै मोहिंरामपियारा, तुरुक कहै रहिमाना ॥
आपसमेंदोउलरिलरिमूये, मर्म कोइ नहिं जाना ६

सो हिन्दूतो कहै हैं कि वेदशास्त्र में रामही पियारा है और मुसल्मान कहै हैं कि रहिमानही पियारा है यह द्विविधा लगाय राख्यो है या न जानतभये कि एकही हैं आपस में लड़िलड़िकै मरिगये मर्म कोई न जानतभये कि वही राम है वही रहिमान है साहब एकई है दूसरो नहीं है सब नाम वहीके हैं तामें प्रमाण "सर्वाणि नामानि निजमाविशन्ति" (इतिश्रुतिः) सो सबनाम वही में घटित होयहैं ॥ ६ ॥

घर घर मन्त्र जे देत फिरतहैं, महिमाके अभिमाना ॥

गुरुवासहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७

घर घर जे मन्त्र देत फिरत हैं अपनी महिमा के अभिमानते कि हम सिद्ध हैं योगी हैं पीर हैं औलिया हैं ऐसे जे गुरुवा हैं ते यही अभिमानते सबकी रक्षाकरनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै सब जीवनको और और में लगाइदेइहैं और कहै हैं कि हम उद्धार कै देइ हैं गुरुवासहित सब शिष्य बूड़िजाइँगे और जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि हम परम पुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षक हैं ॥ ७ ॥

कहहिं कबीर सुनोहो सन्तो, ई सब भर्म भुलाना ॥
केतिक कहौं कहा नहिं मानै, आपहि आप समाना ८

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो! तुम सुनो ये सब भर्मई भुलानरहे हैं मैं चारौयुग में केतनो समुझाऊंहौं पै मानै नहीं हैं यद्यपि माया ब्रह्मकी एती सामर्थ्य नहींहै कि यह जीवको धरिलै जाय काहेते कि वह जीवही को अनुमान है सो यह आपनेनते आप यह भर्म में समाइगयो है कि मैं ब्रह्म हौं आप आपहीते यह माया ब्रह्म सो आपस मानलियो है अर्थात् संगति कैलियो है तेहिते संसारी ह्वैगयो ॥ ८ ॥

इति चौथा शब्द समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां शब्द ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यक भो भाई। यह कहौं तो को पतिआई १ एकै पुरुष एकहै नारी, ताकर करहु बिचारा। एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २ एकै नारी जाल पसारा, जग में भया अँदेशा। खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा बिष्णु महेशा ३ नागफांस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई। ज्ञान खड्ग बिन सब जग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई ४ आपुहि मूलफूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई। कहैं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुरु लियो जगाई ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यकभोभाई। यह कहौं तो को पतिआई १
एकै पुरुष एक है नारी, ताकर करहु बिचारा॥
एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २

हे सन्तो, शुद्धजीवो, भाई! एक बड़ो आश्चर्य भयो जो मैं वाको कहौं तो को पतिआय १ एकै पुरुष है एकै नारी है कहे वही जीवात्मा पुरुषौ है नारिउ है ताको बिचारकरो वा कौन है एकै अण्डमा कहे एक ही प्रणवमें उत्पन्न चौरासी लाखयोनि तामें परिकै यह जीव संसारके भर्म में भुलाय रह्यो है अथवा एकही अण्ड कहे ब्रह्माण्डहिमें॥ २॥

एकै नारी जाल पसारा, जगमें भया अँदेशा॥
खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा बिष्णु महेशा ३

यह जीव शरीर धर्यो तब एकै नारी जो बाणी सो नानाप्रकार की जोहै कल्पना सोई है जाल ताको पसारि देतभई तब जग में नानाप्रकारको अँदेशा होत भयो कहे नानाप्रकार के मतन करिके जगत्के कारणको खोजतभये परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये कोई अन्त न पावतभये थकिकै " नेति " कहिदियो आत्मा को नानाविचार कियो कि कौनकोहै॥ ३॥

नागफाँस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई॥
ज्ञान खड्ग बिन सबजग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई४

सो ये कैसे अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुणकी फांसी लिये घट के भीतर माया बनीरहै है सोई सब संसारको मूसिकै खाइ लेइहै मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वैतो नाना मतन में परे यह जानै हैं कि यही सत्य है माया जो है सो परमपुरुष को जानिबो मूसि लियो कहे चोराइलियो सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको और अपने आत्मा को जानिबो कि साहब को हौं मैं और मायादिकन को मिथ्या मानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताके

बिना सब जग जूझो जाइ है वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो तब साहबको अपनो स्वरूप का जानै ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई॥ कहहि कबीर तेई जन उबरे, ज्यहि गुरु लियो जगाई५

आपहि वह मायामूल अविद्या ह्वै जगत् नानापदार्थ भई कहे कारण अविद्या भई और आपही फूल फुलवारी कहे कार्य अविद्या ह्वैकै जगत्के नानापदार्थ भई और आपही कालरूप ह्वैके चुनि चुनि खाइहै सो कबीरजी कहैहैं स्वप्न व जो माया तौनेते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरे हैं अर्थात् जो साहबको जानै हैं और अपने स्वरूपको जानै हैं कि मैं साहबको हौं ताको माया स्वप्नवत् है अथवा गुरु जे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र हैं तेई जिनको मोहनिशा में सोवत जगाइदियो है अर्थात् हंसरूप दैके अपने पास बोलाइलियो है तेई जन उबरैहैं कहे बचे हैं ॥ ५ ॥

इति पांचवां शब्द समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठा शब्द ॥ ६ ॥

सन्तो अचरज यकभो भारी। पुत्रधरलमहतारी १ पिताके संगहि भई बावरी, कन्यारहल कुमारी। खसमहिं छोंड़ि ससुर सँग गवनी, सो किन लेहु बिचारी २ भाई संग सासुरी गवनी, सासु सौतियादीन्हा। ननँदभौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहिलीन्हा ३ समधी के सँग नाहीं आई, सहजभई घरबारी। कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ॥ ४ ॥

सन्तो अचरज यक भो भारी। पुत्र धरल महतारी १

---

१ "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकृत्। अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते" (इति गुरुगीतायाम्)॥

पिताके संगहि भई बावरी, कन्या रहल कुमारी॥
खसमहिं छोंड़ि ससुरसँगगवनी, सो किनलेहु बिचारी२

हे सन्तो! एक बड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीव है ताकी महतारी जो माया है सो धरतभई १ अरु पिता जो ब्रह्म है ताके संग बावरी ह्वै जातभई कहे जारपुरुष बनावत भई अर्थात् माया शबलित ब्रह्म भयो और कन्या जो बुद्धि है सो पति को निश्चय कहूं न करतभई बिचारै करत रहिगई कुँवारिही रहतभई अर्थात् सब मतन में खोजत भई परन्तु निश्चय न होत भई पहिले पिता जो ब्रह्म है ताको खसम बनायो पुनि तौने खसम को छोंड़िकै ससुर जो है मन कहे मनैको अनुभव ब्रह्म है ताके संग गवनत भई सो हे जीवो! अपनेते काहे नहीं बिचारि लेउहौ कि माया हमारे मनमें पैठिकै और और में बुद्धि निश्चय करावै है॥२॥

भाई के सँग सासुर आई, सासु सौतिया दीन्हा॥
ननँद भौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहि लीन्हा ३

प्रथम याको भय भई तब या बिचार कियो कि "द्वितीयाद्वै भयं भवति" तबहीं माया लगी याते भाई भयो मायाको भय सोई भाईके साथ नानामतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मन है सोई सासुर है तहां आई और तिन गुरुवनकी बाणी जो है सोई सासु है काहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणी होति है सो गुरुवनकी बाणीरूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दीक्षारूप सो माया को देतभई सो मायाते दैवयोग छूटिउ जाय परन्तु दीक्षा सवति ते नहीं छूटै है सो मायाकी सवति दीक्षा काहेतेभई माया तो ब्रह्मकी स्त्री है सो ताही ब्रह्मको दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई ब्रह्मकी बहिनि भई मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पति बनायो सो भौजी आप भई सो ये दोऊ भौजी ननँद मिलिकै परपञ्च रच्यो है अरु जीव कहै है मेरो नाम कहदियो है कि जीवही सब करै है॥३॥

समधी के सँग नाहीं आई, सहज भई घरवारी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ४

मायाकी कन्या बुद्धि कहि आये सो बुद्धि कुँवारेही में नाना जीवन को जारपति बनायो सब जीव साहब के अंश हैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सो माया के समधी भये तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनको बिवाह लेत भई अर्थात् बशकर लेत भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! जीव जो पुरुष है सो माया के साथ नारी ह्वैगयो ॥ ४ ॥

इति छठा शब्द समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां शब्द ॥ ७ ॥

सन्तो कहौं तो को पतिआई। झूठा कहत सांच बनिआई १ लौके रतन अबेध अमौलिक, नहिं गाहक नहिं साँई । चिमिकि चिमिकि चमकै दृगदुहुँदिशि, अरबरहा छरिआई २ आपहि गुरू कृपा कछु कीन्हो, निर्गुण अलखलखाई । सहजसमाधि उनमुनी जागै, सहजमिले रघुराई ३ जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा । परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कबीरा ॥ ४ ॥

सन्तोकहौंतोकोपतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १

हे सन्तो ! झूठा जो ब्रह्म है ताको कहत कहत जीवन सांच बनिआई वही ब्रह्मको सांच मानलियो है अब जो मैं सांच साहबको बताऊं हौं तो को पतिआय अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्महीमें लगे हैं ॥ १ ॥

लौके रतन अबेध अमौलिक, नहिं गाहक नहिं साँई ॥
चिमिकिचिमिकिचमकैदृगदुहुँदिशि, अरबरहाछरिआई २

लौ लगनको कहै हैं सो वा ब्रह्ममाहीं हौं या जो लौ कहे लगन ताही ज्ञानको रतनकै अबेधित अमौलिक मानि जामें गाहक

और साईं नहीं है अर्थात् दूसरा तो हई नहीं है गाहक साईं कहां ते होय सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानिलियो है तौने ब्रह्म उनके दृगन में चमकि चमकि चमकै है सर्वत्र देखो परै है जो कहो लोकप्रकाश ब्रह्महि देखो परैहै सो नहीं अरु जो या हठ है कि सर्वत्र ब्रह्महीहै या जो बरहा है सो छरिआइ रह्योहै सर्वत्र ब्रह्महि देखाय है जैसे बरहा में जल बढ़े सर्वत्र फैलिजाय है ऐसे "अहं ब्रह्मास्मि" जो या ज्ञान सो जब बढ़यो तब याको हठहीरूप ब्रह्म देखो परै है ॥ २ ॥

आपुहि गुरू कृपा कुछ कीन्हो, निर्गुण अलख लखाई ॥
सहज समाधि उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई ३

सो गुरु जे हैं सद्गुरु ते जब आपही कृपा करै हैं तब निर्गुण जो ब्रह्म है ताको अलख लखावै हैं कि वे कछु वस्तुही नहीं हैं अर्थात् अलख हैं धोखा हैं साहब कब मिलै जब सहज समाधि उनमुनी मुद्राकरि जो सर्वत्र ब्रह्म देखै है तौन उनमुनीरूप निद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चित् अचित्‌रूप विग्रह या जगत् साहब को है या देखै तो सहजही में परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलैं ॥ ३ ॥

जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा ॥
परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कबीरा ४

अवेधित अमौलिक आगे कहिआये ताको तो नेतिनेति कहै हैं वामें काहूको मनहीं नहीं बेध्यो अर्थात् धोखही है अब साधुनको मन जो माणिक है अनुरागपूर्वक लाले सो साहब जे हीरा हैं तिनमें बेध्यो है ऐसे जे साहब चित् अचित्‌रूप जहां जहां देखौहौ तहां तहां सोई है यह कबीरजी कहैहैं कि यह परमतत्त्व को उपदेश में गुरुते पायो है ॥ ४ ॥

इति सातवां शब्द समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवां शब्द ॥ ८ ॥

सन्तो आवै जाय सो माया । है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहुँ गया न आया १ क्या मकसूदमच्छकच्छहोना, शंखासुर न संहारा । अहैदयालु द्रोह नहिंवाके, कहहु कौनको मारा २ वेकर्ता न बराहकहावैं, धरणिधरै नहिं भारा । ईसबकाम सहबके नाहीं, झूठकहैसंसारा ३ खम्भफारि जो बाहरहोई, ताहिपतिज सबकोई । हिरणाकुशनखउदरबिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४ बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया । बिना बिवेक सकल जग जहड़े, मायाजगभरमाया ५ परशुराम क्षत्री नहिं मारा, ईछलमायाकीन्हा । सतगुरुभक्तिभेद नहिं जानै, जीवअमिथ्या दीन्हा ६ सिरजनहार न ब्याहीसीता, जलपषाण नहिं बन्धा । वे रघुनाथएककैसुमिरे, जोसुमिरैसोअन्धा ७ गोपीग्वालगोकुल नहिं आये, करते कंस न मारा । है मेहरबानसबनको साहब, नहिं जीता नहिं हारा ८ वे कर्ता नहिंबौद्धकहावैं, नहीं असुरको मारा। ज्ञानहीन कर्ता सबभरमे, मायाजगसंहारा ९ वे कर्ता नहिं भये कलङ्की, नहीं कलिङ्गहिमारा। ई छल बल सब माये कीन्हा, यतिनसतिन सब टारा १० दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ताकै जिन पूजा । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा॥११॥

अवतरण सबते गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णन करिआये तिनके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहेआवै हैं ते अमायिक हैं काहेते कि आवै जाय नहीं हैं तिनही को परात्पर ब्रह्म करिकै वर्णत हैं तामें प्रमाण " पूर्णमदःपूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते " (इतिश्रुतेः)और ई मायातेपरेहैं और बहुधा निरञ्जनादिक जे नारायण हैं जिनको पांच ब्रह्म में कहिआयेहैं ते उनकी उपासना करिकै उनको आपने ते अभेद मानिकै उनकी शक्तिको प्राप्ति ह्वैकै जगत्के कार्य सब करै हैं और जब मत्स्यादिक अवतार लेइ हैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उनते अवतारकी शक्ति

पाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सब हैं तिनके उपासक हैं उपासनामें देवको और अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है "देवो भूत्वा देवं यजेत्" तेहिते उनकी शक्ति ते ये सब अवतार लेइहैं जो कहो यामें कहा प्रमाण है कि ये सब उनहींके उपासक हैं तो रामनाम के साहब मुखअर्थ में मकार स्वतः सिद्ध सानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौने में साहब के जे सबपार्षद हैं तिनको वर्णन करिआये हैं ये सब नारायणादिक रामनामही की उपासना करै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीन चाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामहीमें ह्वै जाय है रामनाम की ये सब उपासना करै हैं तामें प्रमाण "नारायणःस्वयंभूश्च शिवश्चेन्द्रादयस्तथा। सनकाद्या मुनीन्द्राश्च नारदाद्या महर्षयः॥ सिद्धाः शेषादयश्चैव लोमशाद्या मुनीश्वराः। लक्ष्म्यादिशक्तयः सर्वा नित्यमुक्ताश्च सर्वदा॥ मुमुक्षवश्च मुक्ताश्च ऋषयश्च शुकादयः। तत्प्रभावपरं मत्वा मन्त्रराजमुपासते" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) जो कहो ये सब रामनाममें साहब मुख अर्थ तो जान्यो मायिक काहेभयो तो बिना माया शबलित भये जगत्के कार्य नहीं ह्वै सकै हैं तेहिते ये सब माया शबलित ह्वैकै कार्यकरै हैं परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इनके नहीं होइहैं जब महाप्रलय भई तब सब जीव साहबके लोक प्रकाश में समष्टिरूप रहै हैं जब उत्पत्ति भई तब फिरि कर्मकरिकै उत्पत्ति होइहै और ये सब नारायणादिकनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं होइहै काहेते कि ईश्वर हैं जब महाप्रलय भई तब जे साकेतलोक में नारायणादिकहैं ते इनके अंशी हैं उपास्य हैं तहां लीन ह्वैकै रहे जाइहैं उत्पत्तिसमय में समष्टिजीव व्यष्टि होन चाहै हैं तब राम नाम में जगत् मुख अर्थको भावना करै हैं तब साकेतनिवासी जे नारायण हैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकट होइ हैं साकेत में जे नारायणादिक हैं ते अमायिकहैं और तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जाय हैं ते माया

शबलितै हैं सो ये सब मत्स्यादि अवतारन को मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्व देखावै हैं कि साहब सबते भिन्न हैं ॥

सन्तो आवै जाय सो माया ॥
है प्रतिपाल काल नहिं वाके, नहिं कहुँ गया न आया १

हे सन्तो! आवै जाय है सो तो मायाको धर्म है जे साहब हैं परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते सबको प्रतिपालहीभर करै हैं कहे उद्धारईभर करैहैं और काम नहीं करै हैं उनके काल नहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै अथवा जो कोई वे साहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र न कहीं गये हैं न आये हैं ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना, शंखासुर न सँहारा ॥
अहै दयालु द्रोह नहिं वाके, कहौ कौन को मारा २
वे कर्ता न बराह कहावैं, धरणि धरै नहिं भारा ॥
ई सब काम सहब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ३

अरु वे उद्धारकर्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र को क्या मकसूद कहे क्या मकसद है अर्थात् क्या प्रयोजन है मच्छ कच्छ होने का वे शंखासुरको नहीं संहार्‍यो है शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको मार्‍यो है अवतारते सब आइगये अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षाकरै हैं उनके द्रोह नहीं है कहौ कौनको मार्‍यो है २ अरु वे उद्धारकर्ता साहब बाराह नहीं भये और न पृथ्वीको भारा धर्‍यो सो जौन सबकोई कहै हैं कि ई सब काम साहबही के हैं सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार झूठई कहै है सो साहब को बिना जाने कहै हैं ॥ ३ ॥

खम्भ फारि जो बाहर होई, ताहि पतिज सब कोई ॥
हिरणाकशिपु नख उदर बिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४
बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया ॥

दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ता कै जिन पूजा॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा ११

नारायणै माया करिकै अवतार लेइहै ते सब ईश्वरी माया है कहे ईश्वररूपही माया है तिनको जिन पूजा कहे रामचन्द्र मानि कै न पूजो वैसे पूजो तो पूजो ईश्वर मानिकै न पूजो सो कबीर जी कहैहैं कि हे सन्तो! जो उपजै हैं और खपै हैं सो साहबते दूजो पुरुष हैं वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूं नहीं आवै जाय हैं तामें प्रमाण "पूर्णःपूर्णतमः श्रीमान् सच्चिदानन्दविग्रहः। अयोध्यां कापि संत्यज्य स कचिन्नैव गच्छति" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) "साकेते नित्यमाधुर्यधाम्नि स्वेराजतेसदा" (शिवसंहितायाम्) जो कहो इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतार लिख्यो है सोई कबहूं आवै जाय नहीं है साकेतही में बनेरहै हैं जब कबहूं बाणयुद्धकी इच्छा चलै है तब यह अयोध्या साकेतई प्रकट होइ है अरु उहांके सब परिकार जसके तस प्रकट होइहैं यह ब्रह्माण्ड में तहां जैसे साकेतमें विहारकरै हैं तैसे विहारकरै हैं याही हेतु ते ज्ञानी अज्ञानी जड़ चेतन कीट पतङ्गादिको मुक्ति करिदियो सो श्रुतिमें लिखै है "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" बिना ज्ञान मुक्ति नहीं होइहै सो जो वह साकेतकेशव न होते तो मुक्ति कैसे होते जो कहो यह ब्रह्माण्ड वह साकेतई ह्वैगयो तो साकेत को आइबो तो आयौ तो सुनौ वह साकेत और यह अयोध्या एकई है इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे साकेत तो साहब के रूपई है सो वहौ सर्वत्र पूर्ण है "अयोध्या च परंब्रह्म" इत्यादिक प्रमाण ते जब परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट विहार करन को होइहै तब प्रकट ह्वैजाइ हैं और जब गुप्तविहार करनकोहोइहै तब गुप्त ह्वैजाइ हैं तब साकेत जो प्रकट और गुप्त ह्वैजाइहै कैसे जैसे श्रीकबीरजी को जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छा होइ है तब प्रकट होइ उपदेश करै हैं और जब देखै हैं और जब गुप्त उपदेश

करनहोइहै तब गुप्त उपदेश करे हैं जाको उपदेश करैहैं सोई जानै है वे साकेतनिवासी श्रीरामचन्द्र जैसे सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्रपूर्ण है जो कहो उनके नामादिक तो अनिर्वचनीयहैं वे कैसे प्रकट वचन में आवैंगे तो नारायण जे रामावतार लेइहैं तेई हैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यञ्जित होइहैं सो पीछे लिखिआये हैं जब उद्धारकर्ता साहब प्रकट होइहैं तब जे देखनवारे सुननवारे हंसरूप में स्थित हैं तेई वहीरूपते देखैहैं सुनैहैं सच्चिदानन्दात्मको भगवान् सच्चिदानन्दात्मिका अस्यव्यक्तिः यह श्रुति करिकै एकरूपता कहिआये हैं याहीते लोकहूको व्यापक कह्यो और नारायण जो रामावतार लै अशोकबाटिका में लीलाकियो सो वर्णनकरि मन वचन के परे जे साहब हैं तिनके लीला को व्यञ्जितकरैहैं सो व्यञ्जित तो करैहैं परन्तु मन वचनके परे जे साहबहैं तिनके नामरूप लीलाधाम मन वचनकेपरे साकल्य करिकै व्यञ्जितऊ नहीं करिसकैहैं सो यह बात जो कोई साहब करिकै हंसरूप पाये हैं सो साहबके मन करिकै साहबको नामादिक जानै है और जपै है और साहबके दिये रूपकी आंखीते साहबको देखै है तामें वेदसारोपनिषद्को प्रमाण ३७ "जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्य- मुपसृत्य पप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयंज्ञात्वेह विमुक्तोभवतीति १ सहोवाच कौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधामलीला- मनोवचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशंकथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञाप- काज्ञानादिति सपुनःप्रतिवक्ति २" अथैते श्लोका भवन्ति॥ "विरजा- याःपरे पारे लोको वैकुण्ठसंज्ञितः। तन्मध्ये राजतेऽयोध्या सच्चिदा- नन्दरूपिणी ३ तत्र लोकेचतुर्बाहू रामनारायणः प्रभुः। अयोध्यायां यदा चास्य अवतारोभवेदिह ४ तदास्ति रामनामेदमवतारविधौ विभोः। तन्नाम्नो नामरहितस्याम्नातंनामतस्यहि ५ दशकण्ठ- वधाद्यादिलीलाविष्णोःप्रकीर्तिताः। सकदाचित् कल्पेस्मिन् लोके साकेतसंज्ञिते ६ पुष्पयुद्धं रघूत्तंसः करोति सखिभिः सह ७ कस्मिन् कल्पेतु रामोऽसौ बाणजन्येच्छया विभुः। तैरेवसखिभिः सार्द्धं-

माविर्भूय रघूद्वहः ८ रावणादिवधेलीला यथा विष्णुः करोति सः । तथायमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः ६ क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः । लीलानिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम् १० किंचायोध्यापुरोनाम साकेत इति सोच्यते । इमामयोध्यामाख्याय सायोध्या वर्ण्यते पुनः ११ अनिर्वाच्यत्वमेतस्या व्यक्तमेवानुभूयते । रामावतारमाधत्ते विष्णुः साकेतसंज्ञिते १२ तद्रूपं वर्णयित्वा निर्वचनीयप्रभोः पुनः । रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्य हि १३ " (इत्यथर्वणवेदे वेदसारोपनिषदि प्रथमखण्डे) श्रीकबीरजीका यही मत है कि साकेत छोड़ि कहूं नहीं जाय है नित्यविहारी है ॥ ११ ॥

इति आठवां शब्द समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां शब्द ॥ ९ ॥

सन्तो बोलेते जगमारै । अनबोलेते कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न बिचारै १ पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमियापाछे । बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २ उन्दुर राजा टीकाबैठे, विषहरकरैखवासी । श्वानबापुरा धरनिठाकुरा, बिल्लीघरमें दासी ३ कागज कारकारकुड़ आगे, बैलकरै पटवारी । कहहि कबीर सुनौ हो सन्तो, भैंसै न्याउ निवारी ॥ ४ ॥

सन्तो बोले ते जगमारै ॥

अनबोलेते कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न बिचारै १
पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमिया पाछे ।
बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २

हे सन्तो! जो बोलौहौ कहे जो मैं बताऊंहौं सोतो मानै नहीं है बोलेते जगमारैहै कहे शास्त्रार्थ करैहै और जो न बोलौ तो बनै कैसे शब्दको कोई नहीं बिचारै १ अरु पहिले पूत जो जीव है ताको जन्म ह्वैलेइहै तब पिता जो है जीवको अनुमान ब्रह्म ताको

जन्म होइ है पिता जीव को काहेते कह्यो कि जब शुद्धजीव एकते अनेक ब्रह्महीद्वार भयोहै वह माया शबलित ब्रह्मपूत है और जीव मायाही में पर्यो है दोनों माया शबलित हैं सो बाप जो है जीव और पूत जो है ब्रह्म तिनकी महतारी एकमायाही है अर्थात् यहीते अनादिकालते दोनों प्रकट हैं यहीमें परेहैं सो तैं विचारु तो यह अचरजको काछेहै अर्थात् तैंही अपने अज्ञानते यह अचरज काछै है और नानारूप धरैहै ॥ २ ॥

उन्दुर राजा टीकाबैठे, बिषहर करै खवासी ॥
श्वानबापुरा धरनिठाकुरा, बिल्ली घरमें दासी ३

उन्दुर जोहै मूस सोतौ राजाभयो टीकामें बैठ्यो और बिषहर जोहै सर्प सो खवासी करैहै और श्वानबापुरा जो है सो धरनिठाकुराकहे बस्तुलैकै ढांकिके धरैहै कहे भण्डारी है और बिल्ली घरमें दासीहै सो खानवालिनि है अर्थात् उन्दुरकहे वह साहबको ज्ञान जाको दूर कैदियोहै उन्दुर मूसको संस्कृतमें कहे हैं सो उन्दुर कहे मूस तो जीव है सो शरीरको आपनो मानिलियोहै सोई राजा भयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्प सो कालहै सो खवास भयो कहे क्षण पल घरी पहर वाको खातबीती तो होत जायहै सो खवास ह्वैकै यह काल वाकी आयुर्दाय को खातईजायहै औरनानाप्रकार की जो बिषय हैं तेई बीराहैं ताको खवावत जायहै अरु श्वान कहे वह श्वान भवानन्द जो है सो बापुरा जो जीव ताको धरिकै ढांकि लियोहै कहे साहबको ज्ञान नहीं होन देइहै और बिल्ली जो है षट् दर्शननकी बाणी सो घरमें दासी ह्वैरहीहै कहे नानामतन में लगावै है साहबकी भक्तिरस जो है सोई है गोरस ताको खाइलेइ है ॥ ३ ॥

कागज कार कारकुड आगे, बैल करै पटवारी ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, भैंसे न्याउ निवारी ४

कागजकारकहे लिखो कागजकार कुड जो बैल है ताको आगे

धरो है सोई बैल पटवारी करैहै सो कारो कागज कहे लिखो कागज जो गुरुवालोगन की बनाई पोथी तिनको आगे धरिके बैल जे गुरुवालोगन के चेला हैं ते पटवारी करैहैं अर्थात् कायानगरी के बसैया जे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दशौ इन्द्रिय तिनको बिचारिके कि कौन काके आधीन है ज्ञानरूपी द्रव्य तहसील करैहै वा पटवारी कैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मै ते चैतन्य हैं याते आत्मै मालिक है यह निश्चयकियो सो कबीरजी कहै हैं हे सन्तो! तुम सुनो वहां भैंसा जो है सोई न्याउ निवारैहै इहां भैंसा कहे गुरुवालोग जोहैं सो आप चहलामें परे हैं और चहलामें परो जो जीव ताहीको मालिक बतावै हैं और चेला जे हैं तिनहूं को माया के चहला में डारैहैं ऐसो न्याउ निवारैहैं भाउ यह है कि भैंसा यमकी असवारी है सो यमही पुर को लैजाइगो तहां जब यमके लट्ठा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी॥ ४ ॥

इति नवम शब्द समाप्तम्॥ ६ ॥

अथ दशवां शब्द ॥ १० ॥

सन्तो राह दुनों हम डीठा। हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबनको मीठा १ हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूधसिंघाड़ा सेती। अनको त्यागै मननहिं हटकै, पारन करै सगोती २ तुरुक रोजा नमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै। उनकी भिश्त कहां ते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३ हिन्दूकि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घटसों त्यागी। वै हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनों घर लागी ४ हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सद्गुरुइहै बताई। कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, राम न कहेउ खोदाई ॥ ५ ॥

सन्तो राह दुनों हम डीठा॥
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबन को मीठा १

हे सन्तो ! हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानैहै हम सबको समुझावते हैं कि बिषयन को छोंड़िके देखो तो दूनों की राह एकईहै सो दूनों दीनको बिषयनको स्वाद मीठो लग्यो है यहीके मिलनकी उपाय करै हैं साहब को नहीं खोजैहैं ॥ १ ॥

हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूध सिंघाड़ा सेती ॥
अनको त्यागै मन नहिं हटकै, पारन करै सगोती २
तुरुक रोजानमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै ॥
उनकी भिश्त कहांते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३

हिन्दू जेहैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी ब्रतसाधै हैं कहे उपासे रहैहैं और फरहार करै हैं और बिहानभये नानाप्रकारके ब्यञ्जन बनाइकै सगे जेहैं गोती भाई तिनको लैकै पारण करै हैं और मनको नहीं हटकैहैं कहे दशौइन्द्रिय ग्यारहों मनको नहीं हटकै हैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करैहैं अथवा जैसे सगोतीमें कहे सगाई में अर्थात् जैसे बिवाह में जाफ़त में खाय हैं तैसे पारण करै हैं २ और मुसल्मान रोजा रहैहैं व नमाज गुजारैहैं और बिसमिल्ला को बाँग दैकै पुकारैहैं और सांझको मुर्गी मारिके पोलाव बनाइ बनाइ खाय हैं सो कहो तो उनकी भिश्त कैसे होइगी ॥ ३ ॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घट सों त्यागी ॥
वै हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनों घर लागी ४

हिन्दूकी दया तुरुककी मेहर है जो हिन्दू दया करता तो यम ते छूटत अरु जो मुसल्मान मेहर करता तो यमते छूटत सो ये दोऊ दया और मेहरको आपने घटते त्यागि दियो है मुसल्मान कहै हैं कि गलेकी रगसे भी अल्लाह नगीच है और घटघट में मौजूद है और गला काटतई हैं सो गौ से एकी गला काटते हैं और हिन्दू कहै हैं कि ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है और झटका मारैहैं कहे

मूड़ काटि डारैहैं सो दूनों घरमें आगि लगी है यह अज्ञानरूपी आगि दूनोंकी बुद्धि को दाहे डारै है ॥ ४ ॥

हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सतगुरु इहै बताई ॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, राम न कहो खोदाई ५

हिन्दू मुसल्मानकी एकै राह है राम न कह्यो खोदाइ कह्यो राम कह्यो नाम सब वही बादशाहके हैं सो वह बादशाहको हिन्दू तुरुककी एती बड़ी साबाशी कब नीक लगैगी अथवा हिन्दू तुरुक की एकराहहै कहे एक रामनाम लियेते उद्धार होइहै सो कर्मते निवृत्त ह्वैके न हिन्दू राम कहै न मुसल्मान खोदाइ कहै आपने आपने कर्म में सब लगे हैं तेहिते माया कैसे छूटै अथवा न नारायण राम कह्यो कि तुम झटका मारौ न खोदाइ कह्यो कि तुम हलाल करौ ये दोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियो है ॥ ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां शब्द ॥ ११ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई । बकरा मारि भैंसाको धावै, दिल में दर्द न आई १ करि असनान तिलककरि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई । आतमराम पलकमो बिनशे, रुधिर कि नदी बहाई २ अतिपुनीत ऊंचेकुल कहिये, सभामाहँ अधिकाई । इनते दिक्षा सबकोइ माँगै, हँसि आवै मोहिंभाई ३ पापकटनको कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा । बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यमघींचा ४ गाय बधै तेहि तुरका कहिये, उनते वै का छोटा । कहहि कबीर सुनौ हो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटा ॥ ५ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई ॥
बकरा मारि भैंसाको धावै, दिलमें दर्द न आई १
करि असनान तिलककरि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई ॥
आतमरामपलकमो बिनशे, रुधिरकि नदी बहाई २

हे सन्तो! पांड़े निपुण कसाईहैं काहेते कि कसाई अविधिते मारै है वह बिधिते मारै है याते निपुणहै बोकराको मारिके भैंसा के बलिदान दीबेको धावैहै १ स्नान करिके रक्तचन्दनके बड़ेबड़े तिलक देकै बैठेहै और बिधिसों देवीको पुजावैहै अरु यह कहैहै अन्तर्यामी सर्वत्र है और बोकरा भैंसाको मूड़काटि डारैहै रुधिर की नदी बहन लगैहै तब वह आतमराम जो है जीव कहे आत्मा जो है शरीर तेहि बिषे है आरामजाको सो बिनाशि जायहै कहे शरीरते जुदा ह्वैजाय है जैसे दूध पानी बिनशि जाय है मुरदा ह्वैजाय है ॥ २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये, सभा माहँ अधिकाई ॥
इनते दिक्षा सब कोउ मांगे, हँसि आवै मोहिं भाई ३

सो ऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अतिपुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं अरु सभामें उनहीं की अधिकाई है कहे शास्त्रार्थ करिके सभामें आपानिन अधिकाई राखे है तेहिते सबकोई दीक्षा मांगे हैं कि हमको दीक्षा दै संसारते उबारिलेउ सो यह देखिकै मोको हँसि हँसि आवै है कि आपई नरक में जाइहै तो नरक ते कैसे उबारि है अर्थात् तोहूं को वही नरकमें डारि देइ है ॥ ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावे, कर्म करावे नीचा ॥
बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यम घींचा ४

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावै हैं रामायणादिक और वही कथा में बर्णन है कि रघुनाथजी शिकार खेलैं हैं सो गुरुवालोग कहैहैं कि तुमहूं शिकार खेलो यह नहीं जाने हैं कि रघुनाथजी तिर्यग्योनिवालन पर दया करी कि ई ज्ञानभक्ति बैराग्य कैसे करैंगे याते मारिकै मुक्ति करिदेइ हैं इनको मारैंगे तो पाप ते हम ई दोऊ नरकै जायँगे याहीते दोऊ गुरू चेलाको परस्पर नरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरक में डारिबेको यम घींचही धरै हैं नरकमें डारि देहिंगे तब नरकमें गुह मूत्र खाइगो

और मारो जाइगो और जो जीवनको मारिकै मांस खायो है तेई वाके मांसको खायँगे और अपने अपने सींगनते खुरनते मारैंगे याते मांस खायो है वै जीवतही मांस खायँगे इहांते जो जीवनको वह मास्यो तिनको क्षणइमात्रको क्लेश है और उहां वै जीव वाको बारबार मारैंगे मरणको क्लेश क्षणमें होइगो और यातना शरीर लाखनबर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़पुराणादिक में प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

गाय बधै तेहि तुरुका कहिये, उनते वैका छोटा ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटा ५

जे गायको मारैहैं ते मुसल्मान कहावै हैं सो इनते वैकाछोटे हैं तुरुक गाय मारैहै अरु वै भेंड़ा भैंसा मारैहैं आत्मा तो सब एक हीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहेते कि जे शास्त्रको नहीं समुझैं तेतो मूढ़ही हैं वे खोटकर्म करोई चाहैं परन्तु जे शास्त्रको समुझैहैं तिनहूंको समुझाइकै खोट कर्ममें लगाइदेइ हैं अपनी पाण्डित्यके बलते ब्राह्मण जो कह्यो ताको या अर्थ है सबको यही समुझावैहै को काको मारैहै सर्वत्र तो एकई ब्रह्म है और कोई या समुझावै है कि बलिदान दै देवीको प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञान दै ब्रह्म बनाइदेइँगे ॥ ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्द समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां शब्द ॥ १२ ॥

सन्तो मते मात जनरङ्गी। पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवाले सतसङ्गी १ अर्द्धऊर्ध्वलै भाठीरोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी। मूंदे मदनकर्म कटि कसमल, संततचुवै अगारी २ गोरखदत्त बशिष्ठ ब्यासकबि, नारदशुकमुनिजोरी। सभाबैठिशम्भू सनकादिक, तहँ फिरि अधरकटोरी ३ अम्बरीष औ याज्ञ जनकजड़, शेषसहस मुख पाना। कहँलोंगनों अनन्तकोटिलै, अमहल महल देवाना ४ ध्रुव प्रह्लाद विभीषणमाते, माती शिवकी नारी।

सगुण ब्रह्ममाते बृन्दावन, अजहुं न छूटि खुमारी ५ सुरनरमुनि जेतेपीर औलिया, जिनरे पियातिनजाना । कहैकवीर गूंगेको शक्कर, क्योंकर करै बखाना ॥ ६ ॥

सन्तो मतेमातजनरङ्गी ॥

पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवालेसतसङ्गी १

सन्तो मतेकहे सन्तनके जे मत हैं तिनमें रङ्गी जे जन हैं तेई मात कहे मतिरहेहैं 'रं गच्छतीति रङ्गः रङ्गोस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरङ्गी' रकार बीजको जो कोई प्राप्त होइ है सो रङ्ग कहावै सो रकार बीज रामोपासकनके होइ है ते रामोपासक जाके गुरु होइ सो कहावै रङ्गी अथवा सुरति कमल बैठे जे परम गुरु हैं ते रकार बीजको उच्चार करै हैं सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइकै सुने सो रङ्गी है सोई रङ्गी सन्तनके मतमें मातै है और कबीरऊ रकारई बीज को जपत रहै हैं सो बंशावली में लिख्यो है श्रीराजा रामसिंह बाबाकबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धान्त है तब कबीरजी कह्यो "राअक्षरघटरम्योकबीरा । निजघरमेरोसाधुशरीरा" सो पीछे लिखिआये हैं अरु सुधाको मादकधर्म है सो श्रीरामचन्द्र के प्रेमरूपी प्याला में भरयो जो है सुधारसरूपा भक्ति ताको जे पानकरै हैं तिनके सत्संगी जेहैं तेऊ मतवाले ह्वै जायहैं कहे परम सिद्धान्तवालो जो मतहै तेहिते युक्त ह्वैजाइ हैं अथवा रसरूपा भक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रसआनन्द को कहे हैं सो आनन्द में निमग्नरहैहैं तामें प्रमाण "रसोवैसःरसंह्येवायं लब्ध्वा नदी भवति" (इति श्रुतेः) उनकी कहाचली है इहां सुधारसको कह्यो ताको हेतु यह है कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जनन मरण छोंड़िकै अमर होयहैं औरेनको जनन मरण नहीं छूटै है अरु वह रसरूपा भक्ति मधि उत्पत्ति भयो है ताको रूपक करिके समुझावै हैं ॥ १ ॥

अर्द्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी ॥

मूंदे मदन कर्म कटि कश्मल, संतत चुवै अगारी २

उहां समेटिकै कहिआये हैं अब इहां रसरूपा भक्तिको मद को रूपक करिके कहै हैं अर्द्धकहे नीचेके लोक ऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्यन्त जो सारासार को बिचार सार कहे चित् अचितूरूप साहबको या जगत् मानिबो और असार कहे नानात्व जगत् मानिबो या जो बिचार सोई भाठी रोपतभये और तेहिते भयो जो यथार्थज्ञान कि सब सच्चिदानन्दस्वरूप है काहेते चितौ अचित साहबको रूपहै यह हेतु ते सोई ब्रह्म अगिनि उदगारी कहे बारत भये महुवा नरमें धरै है इहां मदन जो मनोज तौनै जो है शरीर नर अर्थात् वीर्यते शरीर होइहै सो अन्तःकरण में मूंदे जे साहब की अनेक प्रकार की जो लीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुवादिक द्रव्य हैं तिन्हैं जो कर्मनकी बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कश्मल ताको काटिडारयो तब निश्चयात्मक बुद्धि जे पात्र तामें रसरूपा भक्तिरूप जो अगारी सो निरन्तर चुवनलागी ॥ २ ॥

गोरखदत्त बशिष्ठ ब्यास कबि, नारद शुकमुनि जोरी ॥
सभा बैठि शम्भू सनकादिक, तहँ फिरि अधरकटोरी ३

गोरख, दत्तात्रेय, वशिष्ठ, व्यास, कवि कहे शुक्र, नारद, शुकमुनि कहे शुकाचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरत भये और सभाके बैठैया जेहैं शम्भु सनकादिक तहां रसरूपा भक्ति जो सुधारस तेहि करिके भरी जो है प्रेमरूपी कटोरी सो तिनके अधर हैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकै न वचन करिके कोई धरि सकै है अर्थात् न मनमें आवै न वचन में आवै वाके पान करतमें छकि सब जाय हैं रसवाच्य में नहीं आवै है यह सर्वत्र ग्रन्थन में प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

अम्बरीष औ याज्ञ जनक जड़, शेष सहसमुख पाना ॥
कहँलों गनों अनंत कोटिलै, अमहल महल देवाना ४

अम्बरीष व याज्ञवल्क्य व जड़भरत व शेष कहे संकर्षण और सहसमुख कहे शेषनाग ते पान करतभये सो कहांलों मैं गनों परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहल महल अनन्त कोटि हैं ताहीमें लीनभये और देवाना होतभये कहे मत्त होत भये इहां अमहलमहल जो कह्यो सोऊ जे अयोध्याजीके महल हैं अमहल हैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं अरु महल जो कह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्तमान बने हैं अमहल कह्यो याते निर्गुणधर्म आयो और महलकह्यो याते सगुणधर्म आयो सगण निर्गुण में नहीं होयहै निर्गुण सगुण में नहीं होयहै उनमें दूनों धर्म बनेहैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं तिनमें जायके देवाने भये माया ब्रह्ममें जो देवाने रहे सो छोड़ि दिये अमहलमें देवाना ह्वैवोई महलन में साहबकी अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यानकैकै हंसरूप में स्थित ह्वैकै रसरूपा भक्ति पानकैकै छकिरहे रसरूपा भक्ति शान्तशतक के तीसरे खण्ड में औ रामायणादिकमें हम लिखेन है सो देखिलेहु ॥ ४ ॥

ध्रुव प्रहलाद विभीषण माते, माती शिवकी नारी ॥
सगुणब्रह्म माते बृन्दाबन, अजहुं न छूटि खुभारी ५

और ध्रुव, प्रह्लाद, विभीषण और पार्वती मतिगई और सगुण ब्रह्म जे साक्षात् नारायण श्रीकृष्ण हैं तेऊ वृन्दावन में मतिगये अबहूं भर खुभारी नहीं छूटी कि भाव यह है कि जिन के शरीर छूटे तेतो साकेतहीमें जाय देवानेभये कहे प्रेम में छके और जिनके शरीर बने हैं तिनहूंकी खुभारी नहीं छूटि कहे अबहूं भर श्रीरामचन्द्रही की उपासना करेहैं ताते प्रमाण "पूजितो नन्दगोपाद्यैः श्रीकृष्णेनापि पूजितः । भद्रया महिषीभिश्च पूजितो रघुपुङ्गवः" यह वह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौने को प्रमाण सब आचार्य दियो है ॥ ५ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया, जिनरे पिया तिन जाना ॥

कहै कबीर गूंगे को शक्कर, क्योंकरि करे बखाना ६

और सुर नर मुनि जेते पीर औलियाहैं तिनमें जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियो है तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है और तेई मन वचनके परे हैं जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है सो जिन जान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूंगे को शक्कर है काहेते वह मन वचनके परे है जब वहीभांति उहा ह्वै जाय तब वाको स्वाद पावै काहू सों वाको कोई बखान नहीं करि सकैहै सो कबीरजी कहैहैं कि जो कोई कहै यह अर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला कबीर जीव ब्रह्मको कहिआये हैं वहीको पीपीकै सब मतवार ह्वैगयेहैं सांच पदार्थ नहीं जान्यो तो हम यह कहै हैं जिनको कबीरजी आगे वर्णन करि आये हैं तेई नहीं जान्यो तो तुमहीं कैसे जान्यो जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो वाणीको कह्यो तो तुमहीं झूंठ कहौहो जो कहो पारिख करिके जान्यो तो पारिखकिये तो मन वचनके परे और निर्गुण सगुण के परे जे शुद्धजीवात्मा सदा रघुनाथजीके निकटवर्ती ते और श्रीरामचन्द्र येई आवै हैं वेदशास्त्रमें प्रमाण मिलैहै तुम पारिखकहिके मन वचनके परे कौन पदार्थ राख्योहै जो कहो हम जीवात्माको मानैहैं और कोई ब्रह्मको मानैहैं तो आत्मा और ब्रह्म येहू नामहै वचनमें आयगयो और तुम जो विचार करौहो सो मनमें आयगयो जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्र को मन वचन के परे कहौहौ वोऊ तो मन वचन में आयजाय हैं तो हम पूर्व लिखिआये हैं कि नारायण राम अवतार लेइ हैं तिनके नामरूप लीलाधाम के वर्णन करिके वे जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सपरिकर लक्षितकरै हैं वे मन वचन के परे हैं और यहू आगे लिखि आये हैं कि "ऐसीभांति जो मोकहँ ध्यावै। छठयें मास दरश सो पावै" सो अपनी इन्द्रिय हैं आपै देखेपरैहैं जो कोई उनके प्रसन्न करिबेको उपाय करैहै सो साहिबै के जनाये जानै है तामें प्रमाण कबीरजी की साखी सागरकी

चौपाई "जानै सो जो महीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लै आऊं॥ बीजको में लिखी है साखी " बहुबन्धनते बांधिया एकबिचारा जीव। काबल छूटै आपनो जो न छुड़ावै पीव " उनको वर्णन कोई जीव नहीं करिसकै है तेहिते जो पारिख हम कियो सोई सांच है जो तुम पारिखकरौहौ सो झूंठ है तुम श्रीकबीरजी को अर्थ जानते नहींहो भ्रम में लगेहो अनामा उनहीं को नाम है अरु वोई हैं तामें प्रमाण " अनामा सोप्रसिद्धत्वादरूपो भूत-वर्जनात् " (इति वायुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति बारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवां शब्द ॥ १३ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै । गति मति वाकी समुझि परै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १ कासेमरकेशाखाबढ़ये,फूल अनूपम बानी । केतिकचात्रिकलागिरहे हैं, चाखतरुवाउड़ानी २ कहाखजूरबड़ाई तेरी, फलकोई नहिंपावै । ग्रीषमऋतुजब आयतुलानी, छायाकाम न आवै ३ अपनाचतुरऔरकोसिखवै, कामिनिकनक सयानी । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरणरतिमानी ॥ ४ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै ॥
गति मति वाकी समुझिपरै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवो ! राममें जो तिहारी माया जो कपट सो दुन्दि मचावैहै कैसी माया है कि जाकी गति मति नहीं समुझि परै सुर नर मुनि जे हैं तिनहूं को नचावै अर्थात् उनहूंको लागिहै सो साहब को न जानिबो रूप कारण जगत्को आदि-मङ्गलमें कहि आये हैं ॥ १ ॥

का सेमर के शाखा बढ़ये, फूल अनूपम बानी ॥
केतिक चात्रिक लागिरहे हैं, चाखत रुवा उड़ानी २

सो हे जीवो ! तुम द्वन्द्वमाया को त्यागौ साहबको जानो

या संसाररूप सेमरको वृक्ष तामें नाना वासना नानादेवतनकी उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै जौने वृक्षमें अनुपम कहे साहब के जाननेवारे विशेषकर ज्ञानवारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी बाणी सोई फूल है ताहीते भयो जो धोखाब्रह्म को ज्ञान सोई फल है तामें केतकौ चात्रिकरूप जीव लागिरहे हैं इहां चात्रिकै कह्यो और पक्षी न कह्यो सो चात्रिक पियासो रहैहै और इनहूंके मुक्तिकी चाह रहैहै पक्षी रस नहीं पावैहै इनमुक्ति नहींपावैहै चाखत में रुवा उड़ैहै पक्षीके जीभमें लपटिजाय है जीभहुको रस सूखि जाय है इहां वा ज्ञानको जब अनुभव कियो तब गुरुवालोग बतायो कि तुमहीं ब्रह्म हौ तुम्हारई जीवात्मा मालिक है सबको राम सबको खाय लेयहै रामको भजो रामतौ मायिक है सो जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें बासना रही सोऊ छूटिगई यही गुरुवा है पक्षी वा रस नहीं पावै है तब खेद होइ है और या वही ज्ञानमें दृढ़ताकरिके उड़त उड़त नरकहीमें गिरैहै नरकमें दुःख पावैहै॥ २॥

कहा खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै ॥
ग्रीषमऋतु जब आय तुलानी, छाया काम न आवै ३

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टान्तदैके कहैहैं खजूर की बड़ाईले कहा करै फल तो कोई पावतै नहीं है ग्रीष्मऋतु में छाया काहूके काम नहीं आवैहै वाके तरेही रहैहै आतप तपतै रहै है ऐसे हे गुरुवालोगो ! तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि मैंही ब्रह्म हौं मोते बड़ो कोई नहीं है आत्मै मालिक है सो न कोई ब्रह्मैभयो न आत्मै मालिकभयो या फलो कोई नहीं पायो जो कोई तुम्हारे मतमें आवै है सो जननमरणरूप ग्रीष्म ताप नहीं छूटै है या तुम्हारो उपदेशरूप छाया काहूके काम नहीं आवैहै ॥ ३ ॥

अपना चतुर औरको सिखवै, कामिनि कनकसयानी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरण रति मानी ४

गुरुवालोग कनककामिनीके मिलिबेको आप चतुर ह्वैरहे हैं

कनक सुवर्ण कहावैहै सो आत्मा को सुवर्ण जो है स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनी में लपट्यो है तेहिते शुद्ध नहीं है अथवा कनक जो है सुवर्ण सो शुद्ध है और सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्या हैं ऐसे और सबको मिथ्या मानिके एक ब्रह्महीको मानिबो और कामिनीमें सयानी कहे ज्ञानकरिके बिचारै है कि कामिनी माया हई नहीं है मिथ्या है यह सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखैहै व औरहूको सिखवैहै जनन मरण होतई जायहै माया नहीं छूटैहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! याही ते मैं ये बखेड़न को छोड़िके परमपरपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चरणनमें रति मान्यो है इहां सन्तनको साखी दैकै जो कह्यो ताको हेतु यह है कि सन्त समुझैंगे कि सांच कहै हैं कि झूठ कहैहैं अथवा हे जीवो ! मेरो सिखापन सुनो श्रीरामचन्द्रके चरणमें रति मानिके जैसे सब भयो है नानामत कियो है तैसे एकबार मेरो वचन सुनि रामचरण में रति मानिके सन्त होउ व्यङ्ग्य यह है कि जो सन्तहोउगे तो जनन मरणते रहित ह्वैजाउगे औरी भांति न छूटौगे अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अपनो चतुर नहीं है माया ही में परेहैं और और को कनककामिनी में सयानी कहे विचार करावै है कि कनककामिनीरूप माया को विचार कै देख्यो या मिथ्या है सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेश सें कनककामिनी माया कब त्यागैंगे ॥ ४ ॥

इति तेरहवां शब्द समाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवां शब्द ॥ १४ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यम लूटै १ ह्वै मसकीन कुलीन कहावै तुम योगी संन्यासी । ज्ञानी गुणी शूर कबिदाता ईमति काहु न नासी २ अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब अनुभव भाव न दरशै । लोह हिरण्य होय धौं कैसे जो नहिं

पारस परशै ३ जियत न तरै मुये का तरिहौ जियतै जो न तरै। गहि परतीति कीन जिन जासों सोई तहँ मरै ४ जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना। कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै ॥
तातै पकरि पकरि यमलूटै १

ह्वै मसकीन कुलीन कहावै, तुम योगी संन्यासी ॥
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता, ई मति काहु न नासी २

राम रा कहे रकार जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिनको अभाव है रामोपासक नहीं हैं तिनकी संशयकी गांठि नहीं छूटै है तेहिते पकरि पकरिके यम लूटिलेइहैं अर्थात् याको मारिकै नरकमें डारिदेइँ हैं फिरि फिरि शरीर पावैहै फिरि लूटिजाय है मारो जायहै १ मसकीन कहे ग़रीब फ़क़ीर ह्वैकै कुलीन कहावैहै कहे भये तो फ़क़ीर परन्तु कुलाभिमान नहीं छूटै है कहै हैं कि हम फलाने गद्दी के मुरीद हैं सो तुम योगी हौ संन्यासी हौ ज्ञानी हौ गुणी हौ शूर हौ कवि हौ दाता हौ इत्यादिक जो भेदकी मति हैं सो कोई न नाश कियो काहेते कि हे सन्तो! ये परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो यह कोई नहीं जानै है और यह जगत् चित् अचित् विग्रह करिके साहबको रूप है भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है ॥ २ ॥

अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब, अनुभव भाव न दरशै॥
लोह हिरण्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परशै ३

स्मृति, वेद, पुराण सबै पढ़े हैं परन्तु परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूको नहीं दरशैहै जो पारसको स्पर्श न होय तो लोह हिरण्य कहे सोन कैसे होय न होय तैसे स्मृति वेद पुराणन को तात्पर्य श्रीरामचन्द्र हैं

तिनके चरणको जौलों न परशै तौलों मुक्ति नहीं होयहै पार्षद-रूपता वाको प्राप्ति नहीं होय है ॥ ३ ॥

जियत न तरै मुये का तरिहौ, जियतै जो न तरै ॥
गहि परतीति कीन जिन जासों, सोई तहैं मरै ४
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना, सोई समुझि सयाना।
कहै कबीर तासों का कहिये, देखत दृष्टि भुलाना ५

सो जियतमें जो न तुम तरौगे तो मुये कैसे तरौगे सो हे जीवो! जियतै काहे नहीं तरिजाउहौ जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्श किये जीव शुद्ध ह्वै जायहै तौने साहबसों जो कोई जहैं साहबको मत गहिकै परतीति कहे विश्वास कीन है सो जानत है कहे संसारही में अमर ह्वै गयो है ४ सो कबीरजी कहे हैं कि ये जीव ज्ञान करै हैं कि अज्ञान करै हैं ताहीको सब कुछ मानिकै आपने को सयान मानैहैं तिनसों कहा कहिये जो अपनी दृष्टिते देखत देखत भुलाय दियो स्मृति, वेद, पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही को कहै हैं उनहीं के भक्त हनुमान् विभीषणादिक अमर भये हैं सो देखतेहौ और यह नहीं समुझै हैं कि सबके मालिक बादशाह श्रीरामचन्द्र हैं इनहींके छोड़ाये छूटैंगे औरके छोड़ाये न छूटैंगे ॥ ५ ॥

इति चौदहवां शब्द समाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवां शब्द ॥ १५ ॥

रामराचली बिनावनमाहो। घर छोड़े जात जोलाहो १ गज नौगज दशगज उनइसकी, पुरिया एक तनाई। सात सूत नौ गाड़बहत्तरि, पाटलागु अधिकाई २ तापट तूलन गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई। तामें घटै बढ़ै रतिबो नहिं, करकच करघरहाई ३ नित उठि बेठ खसम सों बरबस, तापर लागतिहाई। भीनी पुरिया काम न आवे, जोलहा चलारिसाई ४ कहै कबीर

सुनोहो संतो, जिन्ह यह सृष्टि उपाई। छांड़ि पसार रामभजु बौरे, भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

रामराचली बिनावन माहो। घर छोड़े जात जोलाहो १

रामराकहे रा जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिनके अभाव है साहबको नहीं जानें ऐसे जे समष्टिजीव तिनके इहां मा जो है कारणरूपा माया सो बिनावनको कहे बिनवावनको चली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली इहां बिनबो न कह्यो बिनवाइबो कह्यो सो बिना चैतन्यब्रह्म और जीवके लपेटे याको बनायो नहीं बने है काहेते कि यह जड़ है अर्थात् ब्रह्मजीवको संयोग करिके बनवावनको चली ब्रह्मजीवके पास सों जोलाहा जो यह जीव है सो घरको छोड़देयहै अर्थात् यह शुद्ध जीवात्मा आपनो जो घर है साहबके लोकको प्रकाश जहां शुद्ध रहै है तौने घरको छांड़िकै माया के लपेटमें परिके आपने बन्धनको आपने मनकरिके संसाररूपी पटको बनावै है ॥ १ ॥

गज नौ गज दृश गज उनइसकी, पुरिया एक तनाई ॥ सात सूत नौ गाड़ बहत्तर, पाट लागु अधिकाई २

प्रथम एकगज़की कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथम जीव वाणीप्रणवरूप एकगज़की पुरिया अनुमान ब्रह्म बनायो अर्थात् मनभयो पुनि नौगज़की पुरिया तनावतभई सो नवौ व्याकरण बनावत भई अर्थात् नवौ व्याकरण में शब्दब्रह्मको वर्णन है सो शब्द बनावत भई पुनि दशगज़ की पुरिया तनावतभई सो चार वेद औ छःशास्त्रई दशगज़की पुरिया तनभयो पुनि उनइसगज़ की पुरिया तनावतभयो सो अठारहौं पुराण उनीसौं महाभारत ये उनइसगज़ की पुरिया बनावतभयो पुनि सातसूत कहे सप्तावरण पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अथवा सातसौ सूत जाग्रत् महाजाग्रत् बीजजाग्रत् स्वप्नजाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति येसात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनि नव

गाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तरहज़ार नस बनावत भयो ॥ २ ॥

तापटतूल न गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई ॥
तामें घटै बढ़ै रतिवो नहिं, करकच कर घरहाई ३

तापटकहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रमरूप तूलरह्यो तबतो गजमें नहीं अमात रह्यो कहे अप्रमेय रह्यो है और सेर कहे सिंहरूप रह्यो है संसारको नाशकैदेनवारो रह्यो है सो संसारी ह्वैके जैसे सूत पैसाको अढ़ाईसेर विकाय है तैसे यहजीवात्मा विषयरूप पैसाको चाहिके अढ़ाईसेर ह्वैगयो एकै पृथ्वीको विषय सुख चाहै हैं एकै यज्ञादिक करिके स्वर्गको विषय सुख चाहैहैं आधे मुमुक्षु ह्वैके ईश्वरन के लोकको सुख चाहै हैं और ब्रह्ममें लीन ह्वैवो चाहै हैं इनमें पूरी विषय भोग नहीं है याते आधा कह्यो अहंब्रह्म तूलते नानाशरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो जो पट संसार में बिनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभर न घटै है न बढ़ै है घरहाई जो है जीवैकी नारी माया सो यही जीवको कच आपने करमें करिलियो है अर्थात् यह जीवकी चूँदी गाहिलियो है मायाको भोक्ता जीव है याते जीवहीकी स्त्री माया है ॥ ३ ॥

नितउठि बेठ खसमसों बरबस, तापर लागतिहाई ॥
भीनी पुरिया काम न आवै, जोलहा चला रिसाई ४

खसम जो जीव है तासों नित उठिउठिके बरबस कहे जबरदस्ती बेठकहे बेगारिलेयहै सो एकतो संसारमें माया तो बेगारि लेयहै दूसरो जो भागनते यह संसार उठो तो आत्मा को तिहाई लगी कहे त्रिकुटी में धोखाब्रह्म को ध्यान लगायो जौने में बिनि जाय है तौन पुरिया कहावै है सो जब भीजि जाय है तब नहीं काम आवै है ऐसे यह संसार पुरिया है नाना पदार्थ ते जो है राग तेहि करिके जब शरीर भीज्यो तब यह संसार को असार

सोई श्रोता जे हैं लोकबासी ते श्रवणते सुने हैं और श्रवण नहीं हैं याते साकारौ नहीं है और श्रवणते सुने है याते निराकारौ नहीं है माया ब्रह्म जीव को जो अरुझा लाग्यो है सो जो जीव साहबको स्मरणकरे ताके पाटन कहे पटाइलीबे को साहब स्ववश हैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखि देइहैं सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहुवचन है सो जे जीव उनके शरण जाय हैं तिनको पाटनके लिखि दीबे में अपनायलीबे में स्ववशहैं तामें प्रमाण "सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम" और बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहै है वहां कालकी गति नहीं है और बाजन सदा बाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां होता रहैहै सो हे मननशील, मुनि लोगो! तुम उनहीं को समुझो और उनहीं को मनन करो वह धोखा ब्रह्मै के मनन कीन्हेते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो ॥ २ ॥

इन्द्रियबिनुभोगस्वादजिह्वाबिनु, अक्षय पिण्ड बिहूना॥
जागत चोर मँदिर तहँ मूसै, खसम अछत घरसूना ३

तुम वह साहब को कैसे समुझो इन्द्रिय बिना ह्वैके साहबके लोक को जो है भोग सुख है ताको लेउ और बिना जिह्वा ह्वैके अनिर्बचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेउ और पिण्ड बिहूना कहे पांचौ शरीरते बिहीन ह्वैके कहे पांचौ शरीरनको छोड़िके हंस स्वरूपमें स्थित ह्वैके अक्षय कहे अक्षय ह्वैजाउ तुम्हारे अन्तःकरण-रूपी घरको चोर जोहै धोखाब्रह्म सो मूसे लेयहै अर्थात् साहबको ज्ञान चोराये लेयहै तुमहीं अहंब्रह्म बुद्धिकराये देयहै काहे ते कि खसम जेहैं साहब ते अछत बने हैं और तुम अपनो हृदय घर सून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहब को नहीं जान्यो ॥ ३ ॥

बिजबिनु अंकुर पेड़बिनुतरुवर, बिनफूलै फल फलिया॥

बांझकिकोखिपुत्रअवतरिया, बिनपगतरुवरचढ़िया ४

इहां काकु अर्थ है बीज बिना कहूं अंकुर होय हैं और पेड़ बिना कहे बिना जर कहूं तरुवर होइहैं और बिनाफूल कहूं फल होइहैं अरु बांझके कोखिमें कहूं पुत्र होइहै व बिनापग कोई तरुवर में चढ़ै है सो बीज तो वह ब्रह्मको कहौहौ सो तो शून्य है कोई पदार्थ नहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसे माया शबलित ब्रह्म भयो और पेड़जरि मायाको कहौ सो तो मिथ्याहै संसार तरुवर कैसे भयो और ज्ञानरूप जो फूल है ताहू को तो मूलाज्ञान कहौहौ सोऊ मिथ्या है कहो तो मुक्तिरूपी फल कैसे फर्यो और मनको तो जड़ कहौहौ ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो और आत्मा को तो अकर्ता कहौ हौ मन बुद्धि चित्तते भिन्नहै सो बिना पांव संसार वृक्षको चढ़िके कैसे चैतन्याकाश को पहुँच्यो ॥ ४ ॥

मसिबिनुद्वाइतकलमबिनुकागज, बिनु अक्षर सुधि होई॥
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिनुज्ञाता, कहै कबीर जन सोई५

विना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौहौ मनको अनुभवकैसे रहैगो वह मिथ्यई होयगो और विना कागज़क़लम कहाकरैगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अन्तःकरण तो मिथ्यै कहौहौ ज्ञान केहिके आधार होइगो जहां बुद्धिरूपी क़लम ते लिखौगे निश्चय करौगे और जो यह पाठ होय विन अक्षर सुधि होय तो यह अर्थहै कि जो एकआत्माही को सत्य मानोगे तो साहब को विना अक्षरकहे विना अनादि माने सुधि कहे सुरति तुमको कैसे होयगी और कौन सुरति देयगो और सुधिबिन कहे जो सुधि न भई तो सहज कहे सोहं सो कैसे होयगो तेहिते विना ज्ञाताको ज्ञानकरुकहे अवैते अपने को ज्ञाता मानि रहे हैं कि मैं अपनो विचार करत करत और सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जायहै ताहीको मानिलेउँगो कि यही तत्त्व है सो यह भ्रम छांड़े तेरेजानेते साहब न जानि परैंगे साहब मन वचन

के परे हैं सो जौन विना ज्ञाता को ज्ञान कौनहै जो साहब देय हैं काहेते कि वह ज्ञान काहू को नहीं जानोहै जब साहब आपनोरूप देयहैं तब वह रूपते जानिपरै साहबहीके रूपको जानो परै है वाको ज्ञाता कोई नहींहै सो ज्ञान करु अर्थात् रकारधुनि श्रवणरूप साधन करु तब साहबई तोको हंसस्वरूप देकै आपने नामरूप लीलाधाम को स्फुरित करायदेयँगे तौने हंसस्वरूप की आंखीते श्रवणते साहब को देखु और साहबके गुण सुनु सो कबीरजी कहै हैं कि यहितरह ते जाके बिना ज्ञाताको ज्ञान है सोई मेरो जनहै अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थिति है तौनेही लोकको वह जनहै विना ज्ञाताको ज्ञान कौन कहावैहै जो साहब देयहैं तामेंप्रमाण "तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते" (इति गीतायाम्) ॥ ५ ॥

इति सोलहवां शब्द समाप्तम् ॥ १६ ॥

अथ सत्रहवां शब्द ॥ १७ ॥

राम गाइ औरेन समुझावै हरिजाने बिन बिकलफिरै १ जा मुख वेदगायत्रीउच्चरै तासु बचन संसारतरै। जाके पांव जगत उठिलागै सो ब्राह्मण जिउबद्धकरै २ अपनाऊंचनीचकर भोजन घीणकर्मकरिउदरभरै। ग्रहणअमावसढुकिढुकिमाँगै करदीपक लिये कूप परै ३ एकादशीव्रतौ नहिं जानै भूतप्रेतहठि हृदय धरै। तजि कपूर गांठी बिषबांधे ज्ञानगमाये मुगुध फिरै ४ छीजै शाहु चोरप्रतिपालै सन्तजनन की कूटकरै। कहकबीरजिह्वाकेलम्पट यहिबिधि प्राणी नरक परै ॥ ५ ॥

रामगाइ औरनसमुझावै, हरिजानेबिन बिकलफिरै १
जामुख बेदगायत्री उच्चरै, तासु बचन संसार तरै ॥
जाकेपाँवजगत उठिलागै, सो ब्राह्मण जिउ बद्धकरै २

श्रीरामचन्द्रको गावै हैं व औरेनको समुझावै हैं व सबके कलेश हरनवारे जे साहबहैं तिनको नहींजानै कि येई क्लेशहरि हैं

च वैष्णवाः । नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले" सो राम नाम जो कपूर है ताको छोड़िकै नाना पाखण्डमत जो बिषय है ताको धारण कीन्हे ज्ञान गमाय के मूर्ख चारों ओर फिरै हैं ॥ ४ ॥

छीजै शाहु चोर प्रतिपालै, सन्तजनन की कूट करै ॥
कहै कबीर जिह्वाके लम्पट, यहि विधि प्राणी नरकपरै ५

तेहिते शाहु जो आतमा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को अंश सदाको दास या जीव को स्वरूप हैं सो जे हैं ते छीजै हैं अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलि जाय है गुरुवन के बताये जे नाना पाखण्ड मत तेई चोर हैं तिनको प्रतिपाल कियो कहे संग कियो तेई ज्ञानको चोराय लेय हैं और जे साहब के ज्ञानके बतैया संत हैं तिनहींकी कूट करै हैं कि ये मुड़ियन को मत वेदशास्त्र के बहिरे हैं सो कबीरजी कहै हैं ऐसे जिह्वाके लम्पट प्राणी हैं ते नरकही में परै हैं ॥ ५ ॥

इति सत्रहवां शब्द समाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अठारहवां शब्द ॥ १८ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो। अबुझालोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार बिचारो १ केते रामचन्द्र तपसी सों, जिन यह जग बिटमाया। केते कान्ह भये मुरलीधर, तिनभी अन्त न पाया २ मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया। केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिनभी अन्त न पाया ३ केतिक सिद्ध साधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया। केते मुनिजन गोरख कहिये, तिनभी अन्त न पाया ४ जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई, शिवसनकादिक हारे। ताके गुण नर कैसे पैहौ, कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो ॥
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार विचारो १

परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण न्यारे न्यारे हैं इहां तीनवार जो कह्यो ताते या आयो कि साहब के गुण माया के गुणते जीवात्मा के गुणते ब्रह्मके गुणते न्यारे हैं कौनी रीतिसे न्यारे हैं कि मायाके गुण नाशवान् हैं विचार किये मिथ्या हैं और साहबके गुण नित्य हैं साँचहैं और जीवात्माके गुण अणु हैं और साहब के गुण विभु हैं और ब्रह्म निर्गुणत्व गुण ब्रह्ममें है और साहब निर्गुण सगुण के परे है सो या प्रमाण पीछे लिखि आये हैं "अपाणिपादो जवनो गृहीता" इत्यादि और ब्रह्मसम्बन्धी अनुभवानन्दजीव को होइ है और साहब अनुभवातीत हैं याते साहब के गुण सबते न्यारे हैं सो वा बात अबुझालोग कहांलौं बूझैं कोई बूझनहार तो विचारते जाउ ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसीसों, जिन यह जग बिटमाया ॥
केते कान्ह भये मुरलीधर, तिन भी अन्त न पाया २

केतन्यो रामचन्द्र हैं कौन रामचन्द्र जे तपस्वी ब्रह्म हैं तिनसों जगत् बिटमाया कहे बनायो है अर्थात् जे नारायण रामावतार लेइहैं सो ब्रह्माते कैसे जग बनवायो सो कथा पुराणन में प्रसिद्ध है कि कमल में ब्रह्मा भये तब आकाशवाणी भई "तप तप" तब तपस्या कियो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि जगत् बनावो तब बनावतभये नारायण जे रामावतार लेइ हैं तामें प्रमाण "यदा स्वपार्षदौ जातौ राक्षसप्रवरौ प्रिये। तदा नारायणः साक्षाद्रामरूपेण जायते ॥ प्रतापी राघवसखा भ्राता वै सह रावणः। राघवेण तदा साक्षात्साकेतादवतीर्यते" ते नारायण अन्त न पायो ते नारायण रामचन्द्र क्षीरशायी श्वेतद्वीपनिवासी बहुत हैं जिनके गुण को अन्त कोई नहीं पावै हैं अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचन्द्र एकई हैं और केते कान्ह मुरलीधर भये तिन भी अन्त नहीं पायो काहेते कि उनके अनन्त गुणहैं॥ २॥

मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया ॥

केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिन भी अन्त न पाया ३
केतिक सिद्धसाधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया ॥
केते मुनिजन गोरख कहिये, तिन भी अन्त न पाया ४

और केतन्यो मत्स्य, कच्छ, वाराह, वामन, बौद्ध, कलङ्कीरूप भये तिन भी अन्त नहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिन में वामन नरसिंह आदिक अवतार आइगये तेऊ अन्त नहीं पायो है ३ और केतन्यो सिद्ध साधक संन्यासी भये जे वन में बास करतभये और केतन्यो मुनि गोरख इन्द्रिन के रखवार भये तेऊ ताको अन्त नहीं पायो ॥ ४ ॥

जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई, शिव सनकादिक हारे ॥
ताके गुण नर कैसे पैहौ, कहै कबीर पुकारे ५

और जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि तिनके अनन्तगुण हैं सो हे नर ! तुम कैसे पावोगे ? जे गुरुवन के कहे कहौहौ कि महीं राम हौं सो मिथ्या है वे राम के गुण न तुम्हारे गुरुवा पायो है न तुम पावोगे व्यङ्ग यह है कि ते वे पाखण्डी गुरुवनको संग छाँड़िकै रामोपासकनको संगकरौ तब जैसी भजनक्रिया वे करै हैं सो करिकै निर्गुण सगुणके परे साहबके लोक जाउ तब तिहारो जनन मरण छूटैगो ये गुरुवालोग जौने में सिद्धान्त करि राखे हैं ते सब याही कैतीहै निर्गुण सगुणमें है और परम पुरुष पर साहबको लोक सब के पर है तामें प्रमाण कबीरजीको रेखता भूलनाछन्द पिङ्गल में कहैहैं ॥ " चला जब लोकको शोक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु बनाई । भृङ्ग ज्यों कीटको पलटि भृङ्गै किया आप समरङ्ग दै ले उड़ाई ॥ छोड़ि नासूतमलकूत को पहुँचिया विष्णुकी ठाकुरी दीखजाई । इन्द्रकुब्बेरजहँ रम्भको नृत्य है देव तेंतीसकोटिक रहाई १ छोड़ि बैकुण्ठको हंसआगे चला शून्य में ज्योति जगमग जगाई । ज्योतिपरकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भयहुआ भयमिटाई ॥ अलख निर्गुण जेहि

वेद अस्तुति करै तीनहूं देवको है पिताई । भगवान तिनके परे श्वेत मूरतिधरे भागको आन तिनकोरहाई २ चारमुक्कामपरखण्डसो-रहकहैं अण्डको छोर ह्यांतेरहाई । अण्डकेपरे अस्थान आचिन्त को निरखिया हंस जब उहांजाई ॥ सहस औ द्वादशै रूह हैं सङ्गमें करतकिल्लोल अनहद बजाई । तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छाई ३ महल कञ्चन बने मणिक तामें जड़े बैठ तहँ कलश आखण्ड छाजै । आचिन्तके परे अस्थान सोहंगका हंस छत्तीस तहँवाँ बिराजै ॥ नूरका महल औ नूरका भुम्य है तहां आनन्द सो द्वन्दभाजै । करत किल्लोल बहुभांतिसे संग यक हंससोहंग के जो समाजै ४ हंस जब जात षटचक्रको बेधिकै सातमुक्काममें नजर फेरा । सोहंगके परेसुरति इच्छा कही सहसबामन जहँ हंस हेरा ॥ रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं उपमा हिन्दूजीनिवेरा । सुरति से भेटिकै शब्दको टेकि चढ़ि देखि मुक्कामअंकूर केरा ५ शून्यके बीचमें विमल बैठक जहां सहज अस्थान है गैबकेरा । नवो मुक्काम यह हंस जब पहुँचिया पलक बेलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ तहाँसे डोरिमक्रतारज्यों लागिया ताहि चढ़ि हंसगो दै दरेरा । भये आनन्दसे फन्दसब छोड़िया पहुँचिया जहां सतलोक मेरा ६ हंसिनी हंस सबगायबज्जायकै साजिकै कलश वहिलेन आये । युगनयुग बीछुरे मिले तुम आइकै प्रेमकरि अङ्गसों अँगलगाये ॥ पुरुषने दर्श जबदीन्हिया हंसको तपनिबहु जनमकी तब नशाये । पलटिकै रूप जब एकसेकीन्हिया मनहुं तब भानु षोडश उगाये ७ पुहुपके दीप पीयूष भोजन करै शब्द की देह जब हंसपाई । पुहुपके सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्र छाई ॥ दिपैं बहुदामिनी दमक बहुभांतिकी जहां घन शब्दको घुमड़लाई । लगे जहं बरसने गरज घन घेरिकै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहाई ८ सुनै सोइ हंस तहँ यूथके यूथ ह्वै एकही नूरयकरङ्गरागै । करत बीहार मनभामिनी मुक्तिभै कर्म औ भर्म सबदूरिभागै ॥ रङ्क औ भूप कोइपरखि आवै नहीं करत

किल्लोल बहुभाँतिपागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखण्ड सतशब्दलागे ९ पुरुषके बदनकी कौन महिमा कहौं जगतमें उभय कछु नाहिंपाई। चन्द्र औ सूरगण ज्योति लागैनहीं एकहीनख्यपरकाशभाई॥ पानपरवानजिनवंश का पाइया पहुँचिया पुरुषके लोकजाई। कहैं कब्बीर यहि भांति सोपाइहौं सत्यकी राह सो प्रकट गाई १०" और वह लोकको वर्णन वेदसारार्थ जो सदाशिवसंहिताहै ताहूमेंहै (श्रीसौमित्रिरुवाच) "महर्लोकःक्षितेरूर्ध्वमेककोटिप्रमाणतः। कोटिद्वयेन विख्यातजनलोकं व्यवस्थितः १ चतुष्कोटि प्रमाणं तु तपोलोको विराजितः। उपरिष्टात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः२आयुःप्रव्यातकौमारं कोटिषोडशसंभवम्। तदूर्ध्वोपरिसंख्यातमुमालोकं सुनिष्ठितम् ३ शिवलोकं तदूर्ध्वं तु प्रकृत्या च समागतम्। विश्वस्य पुरतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो बहिः ४ एतस्माद्बहिरावृत्तिः सत्तावरणसंज्ञका। तदूर्ध्वं सर्वतत्त्वानां कार्यकारणमानिनाम् ५ निलयं परमं दिव्यं महाविष्णवसंज्ञकम्। शुद्धस्फटिकसंकाशं नित्यस्वच्छमहोदयम् ६ निरामयं निराधारं निरम्बुधिसमाकुलम्। भासमानं स्ववपुषा वयस्यैश्च विजृम्भितम् ७ मणिस्तम्भसहस्रैस्तु निर्मितं भवनोत्तमम्। वज्रवैदूर्यमाणिक्यग्रथितं रत्नदीपकम् ८ हेमप्रासादमावृत्य तरवः कामजातयः। रत्नकुण्डैरसंख्यातपुरुषैर्मलयवासिभिः ९ स्त्रीरत्नैः परमाह्लादैः संगीतध्वनिमोदितैः। स्तुतं च सेवितं रम्यरत्नतोरणमण्डितम्१०कारुण्यरूपं तन्नीरं गङ्गायस्माद्विनिःसृता। अनन्तयोजनोच्छ्रायमनन्तयोजनायतम् ११ यत्र शेते महाविष्णुर्भगवाञ्जगदीश्वरः। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् १२ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतं व्यवस्थितम्। इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणां च सहस्रशः १३ उद्भवन्ति विनश्यन्ति कालज्ञानविडम्बनैः। यदंशेन समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १४ कार्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः। यत्र आवर्तते विश्वं यत्रैव च प्रलीयते १५ तद्वेदा परमं धाममदीयं पूर्वसूचितम्।

एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातु वाञ्छितं हि नः १६ तदूर्ध्वन्तु परं दिव्यं सत्यमन्यद्व्यवस्थितम् । न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवद्भावितात्मनाम् १७ महाशम्भुर्मोदतेऽत्र सर्वशक्तिसमान्वितः । तदूर्ध्वं तु स्वयंभातं गोलोकं प्रकृतेः परम् १८" अरु सहस्रशीर्षापुरुष जो लिख्यो है तहँ शुद्धजीव समिटेरहे हैं वे समष्टि हैं ताके रोमरोम में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड हैं तहँते अनेक ब्रह्माण्ड उत्पत्ति होइ हैं और तहँ महाप्रलय में लीन होइ हैं और दूसरे सत्यलोक में जो महाशम्भुको वर्णनकियो सो परमगुरु को रूप है तामें प्रमाण "वन्देशम्भुजगद्गुरुं" और गुरुसों व साहबसों अभेद तामें प्रमाणहै॥ "आचार्यं मां विजानियान्नावमन्येत कर्हिचित्" (इति भागवते) और महाशम्भु सों व महाविष्णुसों अभेदहै तामें प्रमाण "शिवस्य श्रीविष्णोर्यइह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत् स खलु हरिनामाहितकरः" (इतिस्कन्दपुराणे) और नारायण जे वर्णन करिआये तेऊ श्रीरामचन्द्रई के रूप हैं तामें प्रमाण (सदाशिवसंहितायाम्) "वासुदेवो घनीभूतं तनुतेजा महाशिवः" और गोलोक में श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी विहारकरैहैं और गोलोकके मध्य साकेतमें रामरूप ते रघुनाथजी विहारकरैहैं तामें प्रमाण सदाशिवसंहिता के विस्तारते वर्णन करि आये कि पश्चिमद्वार वृन्दावन है, उत्तरद्वार जनकपुर है, पूर्वद्वार आनन्दवन है, दक्षिण द्वार चित्रकूट है ताके आगे यह लोक है तेहिते इहां प्रयोजनमात्र लिख्यो है "तेषां मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् इति" और साकेत के ऊपर कछु नहीं है और साकेत, अयोध्या और सत्यासत्य लोक इत्यादिकनाम सब उस लोकके पर्याय हैं तामें प्रमाण "साकेतान्न परं किंचित्तदेवहि परात्परम्" और गोलोक जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तेई श्रीरामचन्द्रईके महत् "सीतारामात्मकं युग्मं प्राविशन्नतिपूर्वकम् १" श्रीजानकीजी ने श्रीरघुनाथजीसों कह्यो कि वृन्दावनमें विहार करिये तब रघुनाथजी ने कह्यो जब तुमकह्यो तें एक दूसरा विहारस्थल बनाइये तब हम वृन्दावन

बनायो राधिका तुम भई कृष्ण हम भये सो विहार करते भये सो हमारई तुम्हाररूप राधाकृष्ण हैं या कहिकै आकर्षण करिकै वृन्दावन बोलाइलियो राधाकृष्ण आइगये तबराधिकाजी जानकी जी में लीनभई श्रीकृष्णचन्द्र रामचन्द्रमें लीनभये अरु पुनि विहाराकियो जब विहार करिचुके तब जानकी रघुनाथ ते निकसिकै वृन्दावन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको सो यह कथा शुकसंहिता में है ताको एकश्लोकलिख्यो है और विस्तार से देखिलीजियो तेईं श्रीकृष्णके नखको प्रकाश ब्रह्महै वही प्रकाश को मुसल्मान लामकान कहे हैं और जे दशमुक़ाम रेखता में कहिआये और दशवोई मुक़ाम सदाशिवसंहितामें वर्णनकरिआये तिनमें पांच मुक़ाम मुसल्माननके कहे हैं और पांच मुक़ाम छोड़िदेइहैं तिनको उनहींमें गतार्थ मानिलेइहैं मुसल्माननमें वोई पांच मुक़ामके दुइनाम हैं नासूतको आलम अजसाम कहे शरीरधारी याते यह लोकके सब आइगये और मलकूत को आलम मिसाल फिरिस्तनकै दुनिया देवलोक और जबरूतको आलम अर्थात् कहे पृथ्वी, अप, तेज, वायु, तत्त्वरूप हैं और लाहूतको आलम कर्ब कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाश जो है ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश लिख्यो है और हाहूतको मुक़ाम महम्मदी कहे जहांभर महम्मद पहुँचेहै श्रीकृष्णके लोक अब इनके मन्त्रऊ लिखे हैं " जिकिरिनासूतलाईलाहइलाहू जिकिरमलकूतइल्लिलाहू जिकिरजबरूतअल्लाह अल्लाह जिकिरलाहूत अल्लाहजिकिरहाहूतहूंहू " सो इनको राति दिन पांचहज़ार बारकरै जब पांचहज़ार होय तब ध्यानकरै और ध्यान में गड़ै और आपको भूलै फिरि जहानको भूलै पुनि जिकिरकहे मन्त्रको भूलै तब क्रमते मजकूरको पहुँचै अर्थात् अल्लाही जे श्रीकृष्णचन्द्र हंसस्वरूपदेइँ तामें स्थित ह्वैकै जिनको प्रकाश निराकार जोहैं ऐसे जे श्रीकृष्ण हैं तिनके पास होत उनके बताये मन वचनके परे जे खुद खामिन्द सब के बादशाह जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके पास

जाता है सो यह मत महम्मद जे साहबके बन्देहैं तिनको साहब भेजा तब जे साहबके पास पहुँचनवारेरहे तिनको महम्मद भेद बताइदियो सो बिरले कोई कोई यह भेद जानैहैं ते साहबके पास पहुँचैहैं अब याको क्रम बतावै हैं जौनीभांति साहबके पास पहुँचै तामें प्रमाण पीरानपीरसाहबके पासपहुँचे ऐसेजेहैं सलोलके मालिक पनाहअता तिनको कबित्त " देहनसूतसुरैमलकूतऔ जीवजबूतकीरूहबखानै । अरबीमेंनिराकारकहैजेहिलाहुतैमानिकै मंजिलठानै॥आगेहाहूतलाहूतहैजादुतिखुदखामिन्दजाहूतमेंजानै। सोईश्रीरामपनाहसबैजगनाहपनाहअतायहगानै १ " (दोहा) "तजैकर्मणासूलहि निरखैतबमलकूत। पुनिजबरूतौछोड़िकै दृष्टि परै लाहूत २ इन चारोंतजिआगेहींपनाहआताहाहूत । तहां न मरै न बीछुरै जात न तहँयमदूत ३ " और जुलजलालअव्वल एक राम मुसल्मानोंके कहे हैं किताबन में प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका साहब बख्शीश का अर्थात् वह सबते बुजुर्गी कहे बड़ाहै उससे बड़ा कोई नहीं है और वही गुनाहका बकसनेवालाहै औरे के छोड़ाये न छूटैगो जब श्रीरामचन्द्रजीवको छोड़ावेंगे तबहीं छूटैगो और खोदाके सौ नाम हैं निन्नानबे सगुणनाम हैं और मुक्तिको देनवारो निर्गुण अल्लाह नामहीहै वहीहै वही खुदखामिन्दका नामहै तौनै बात वेदशास्त्र में सिद्धान्त कियोहै कोई कोई जे साहबके पहुँचेहैं ते वे ग्रन्थजानै हैं सो लिख्योहै कि और देवतनके नामते अधिक और सब नाम भगवान्केहैं और भगवान्के सब नामते अधिक रामनाम है सो महादेवजी पार्वतीजी ते कह्यो है "सहस्रनामतत्तुल्यं रामनामवरानने।सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्त-विभ्रमकारकाः ॥ एकएव परोमन्त्रोरामइत्यक्षरद्वयम् । विष्णो-रेकैकनामापि सर्ववेदाधिकं मतम् ॥ तादृग्नामसहस्रेण रामनाम-समं स्मृतम् " (इति पाद्मे) और गोसाईंजीनेहू लिख्यो है "राम सकल नामनते अधिका" सो यही रामनाम ते अल्लाह नाम निकस्यो रामनामके मकार को रकार भये आगे का पीछे

आया तब अर भया सो अर राके पीछे आया तब 'अरराम' भयो रलके अभेदसे 'अल्ला' भयो व्याकरण वर्णविकार, वर्ण नाश, वर्णविपर्यय पृषोदरादिपाठ से सिद्धशब्द को साधनके वास्ते प्रसिद्धहै और जो सदाशिवसंहिता में दश मुकाम लिखि आयेहैं और पहिले रेखतामें लिखिआयेहैं सो कबीरजी पुनि खुद खामिन्दको दूसरे रेखतामें वही बात लिख्योहै "जुलमतनासूत मलकूतमें फ़िरिस्ते नूरजल्लाल जबरूतमेजी । लाहूतमें नूरजम्माल पहिंचानिये हक्क मक्कानहाहूतमेजी ॥ बका बाहूत साहूत मुर्सिद वारहै जो रब्बराहूमेजी । कहत कब्बीर अविगति आहूत में खद्द खामिन्द जाहूतमेजी १ " सो वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण सबते न्यारे हैं और उनका धाम सबते परे है वाको कोई अन्त नहीं पायो सो तिनके गुण हे जीवो ! तुम कैसे पावोगे ॥ ५ ॥

इति अठारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवां शब्द ॥ १९ ॥

एतत रामजपोहो प्राणी, तुम बूझोअकथकहानी । जाको भाव होत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १ डाइनि डारे सोनहाडोरे, सिंहरहे बन घेरे । पांच कुटुंबमिलि जूझनलागे, बाजन बाजघनेरे २ रोहु मृगा संशय बन हाँकै, पारथ बाना मेलै । सायर जरै सकल बनडाहै, मक्षअहेरा खेलै ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै । जो यहिपदको गाइ बिचारै, आप तरै अरु तारै ॥ ४ ॥

एतत राम जपोहो प्राणी, तुम बूझौ अकथ कहानी ॥
जाको भावहोत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १

एतत कहे ई जे निर्गुण सगुण के परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो कैसे जपो कि अकथ कहानी कहे मन बचनके परे

जो है रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थबूझि के जपो श्रीरघुनाथजीके ऊपर जाको भाव होयहै ताको यह संसाररूपी जो है निशा बिहानई ह्वै जायहै सोवतते जागिउठैहै ताते यह ध्वनित होयहै जाको रघुनाथजीके ऊपर भाव नहींहै ताको यह संसाररूपी निशा बनी रहैहै बिहान नहीं होयहै जागै नहीं है कहे ज्ञान नहीं होयहै भ्रमरूपी निशामें सोवतैरहैहै यहि संसारमें जीव कैसे घेरे रहतेहैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

डाइनि डारे सोनहा डोरे, सिंह रहे बन घेरे ॥
पांच कुटुँब मिलि जूझनलागे, बाजन बाज घनेरे २

डाइनि जेहैं गुरुवालोग छालाके डारनेवाली जे वाके कानमें अपनी विद्या डारिदियो इहां गुरुवालोग डाइनिहैं जे सिंहको मन्त्र ते बांधि देय हैं वा वन त्यागि और वन नहीं जायहै औ सोनहा जो है सोहंहंसमन्त्रतौने मो डोरा बांध्यो अर्थात् यह कह्यो कि तहीं ब्रह्म है और कहां खोजै है तैं वा है वा तैं है यह मन्त्रको अर्थ बतायो सो सिंह जो है जीव या सामर्थ्य है सो उनही बाणीरूप वन में घेरिरह्यो कहे बँधिरह्यो तब पांचौ जे ज्ञानेन्द्रिय हैं पांचौ जे कर्मेन्द्रिय हैं अथवा पांचौ जे प्राण हैं प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान तेई कुटुम्बहैं तिनमें मिलिकै जूझैलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पञ्चआनन जब सिंहको मारन जाय है तब झुनका बाजा बजावै है तैसे यहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजा हैं ॥ २ ॥

रोहुमृगा संशय बन हांकै, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बन डाहे, मच्छ अहेरा खेलै ३

रोहु कौन कहावै कि जो कमरी में आगी बारत जाय है झुनका बजावत जाय है तामें मृगा मोहि जाय हैं सो वाही की छाया में पीछे धनुष बाणकी बांस की बंदूकादि आयुधलिये खड़ो रहै है शिकारी सोई मारै है यही रोह है सो मृगराज जो है जीव

ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यास कैकै धोखाब्रह्म को प्रकाश बताायो तामें रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहौ हाँकि कौन लायो तो संशयरूप हँकवैया है जैसे आगी बरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृग मृगराज जाय है या कैसो बाजा बाजै है या कैसी टेम है या संशय जो है ज्ञान मिलन की चाह सो याको हाँकिलै आयो ऐसे गुरुवालोगनकी जो बताई वाणी वन है जौन अनहद सुनिबेकी युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनि सुनिकै और जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्म देखिकै जीव या संशय कैकै निकट जाय है और या बिचारै है कि या ज्योतिरूप ब्रह्म महीं हौं कि मोते भिन्न है तब शिकारी जैसे ढुको रहै है ऐसो मूलाज्ञानरूप शिकारी अहंब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि वा जीवको अनुभव करायदेयँ कि महीं ब्रह्म हौं वाके जीवत्वको नाश कै देयहै यही मारिबो है और जैसे बाण लागे मृगराज को अन्तःकरण जर उठै है अधिक कोपै है वनमें जोई आगे वृक्ष परै है तौने पर चोट करैहै जो मारनवाले को देखै है तो वाहूको धरिखाय है ऐसे जब आपनेको ब्रह्म मान्यो तब सायर जो संसार है सो जरै है अर्थात् संसार याको मिथ्या जानि परै है और बन डाहै है कहे वा दशा में बाणीरूप बन सोऊ भूलि जाय है ऐसे बधिक मार्‍यो बधिक को बाघ मार्‍यो बधिकको जब मारिकै दोऊ गलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो अथवा मरिकै दोऊ बहैरहे कीड़ापरे जब बाढ़को जल आयो तब मछरी खायो ऐसे ब्रह्महुमें लीन ह्वै अठई अवस्था को प्राप्त भये तब न जीवत्व रह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसेहू भये तथापि साहबको विना जाने मच्छ जो काल है सो खायलेइ है फिरि संसार में परैहै तामें प्रमाण "येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः । आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं ततः पतन्त्यधो नादृतयुष्मदङ्घ्रयः" (इति भागवते) कबीर जी को प्रमाण "कोटिकरमकटपलमें, जो राचै यकनाम ।

अनेक जन्म जो पुण्यकरै, नहीं नाम बिनु धाम " ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै ॥
जो यहि पदको गाइ बिचारै, आपु तरै अरु तारै ४

सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! जो यह पदको निरधारै कहे सारासार विचारकरै और जौन ब्रह्मपद कहिआये तौने को गाइ बिचारै कहे माया विचारै सो आपु तरिहि और आनहूको तारै है अर्थात् साहबको वा जानै ॥ औरहूको जनाइदेइ ॥ ४ ॥

इति उन्नीसवां शब्द समाप्तम् ॥ १९ ॥

अथ बीसवां शब्द ॥ २० ॥

कोइ रामरसिक रसपियहुगे। पियहुगेसुखजियहुगे १ फल अमृतै बीजनहिंबोकला, शुकपक्षीरसखाई। चुवै न बुन्दअङ्गनहिं भीजै, दासभँवरसँगलाई २ निगमरसाल चारिफललागे, तामें तीनि समाई। एक है दूरिचहै सब कोई, यतन यतन कोइ पाई ३ गयउ बसन्तग्रीष्मऋतुआई, बहुरि न तरुवर आवै। कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राममगन ह्वै पावै ॥ ४ ॥

कोइ रामरसिक रस पियहुगे। पियहुगे सुख जियहुगे १
फल अमृतै बीज नहिं बोकला, शुक पक्षी रस खाई ॥
चुवै न बुन्द अङ्ग नहिं भीजै, दासभँवर सँग लाई २

हे जीवौ! कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिक ह्वैकै रामरस पिऔगे जो रामरसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्ममरणते छूटोगे अरु आनन्दरूप होउगे १ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके खाये ते जन्म मरण नहीं होइ है और तौनेफल में बीज बोकला नहीं है अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहीं है और न मीठो फल होइहै ताही फलमें सुवा चोंच चलावै है यह लोकमें प्रसिद्ध है यहां शुकाचार्य रामरस को मुक्त ह्वै आस्वादन कियो

है ताते यह व्यञ्जित भयो कि रामरसते ब्रह्मानन्द कमही हैं अर्थात् श्रीमद्भागवत में है " वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् " ऐसो कहि शुकाचार्य परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रही के चरणनको वन्दनाकियोहै और श्रीरघुनन्दनही के शरणगये हैं यह वर्णन श्रीमद्भागवतहीमें है " तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टं पादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये " (इति भागवते) और श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्व तात्पर्यते वर्णन कियो है सो कोई बिरला सन्तजन याको अर्थ जानै है और जो यह पाठहोइ " फल अंकृतै बीज नहिं बोकला" तो यह अर्थ है कि फलकी अंकृति कहे आकृति तो है परन्तु बीजवोकला जे निर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवैहैं इनते भिन्न है सो रामरसरूपी फल है तो रसरूपई है परन्तु वाको रस बुन्दहू नहीं चुवैहै अर्थात् अन्त कबहूं नहीं होइ है अनादि अनन्त है और काहूके पांचौ शरीर के अङ्ग नहीं भीजे हैं अर्थात् कोई पांच शरीर ते भिन्न नहीं होइ है जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवर हैं ते वाके संग लगे रहैहैं अर्थात् रामरसपान करतई रहैं हैं ॥ २ ॥

निगमरसाल चारि फल लागे, तामें तीनि समाई ॥
यक है दूरि चहै सब कोई, यतन यतन कोइ पाई ३

सो कबीरजी कहै हैं कि निगम जो है रसालकहे आमको बृक्ष तामें चारिफल लागे हैं अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष तिनमें तीनिफल तहैं समात हैं कहे नष्ट ह्वैजाइ हैं अर्थात् तीनिऊं अनित्यहैं और एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरि है यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावै है अर्थात् निगमतो रसाल है रसमयहै तात्पर्यवृत्ति करिके साहबईको बतावै है सो वह तो कोई जानै नहीं है यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ॥ ३ ॥

गयउ बसन्त ग्रीष्मऋतु आई, बहुरि न तरुवर आवै ॥
कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राम मगन ह्वै पावै ४

अरु जो कोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फलपायो है वाको

पायो है ताको वसन्तऋतु जाइरहै है ग्रीष्मऋतु ह्वैजाइ है कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलिगयो सुखको आस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीं ब्रह्म हौं ग्रीष्मऋतुमें प्रकाश बढ़ै है सो यही प्रकाशमें समाइगयो सो फेरि जोचाहै कि रामोपासनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छाया मिलै तौ नहीं मिलै श्रीकबीरजी कहैहैं कि सुखसागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके रामनाम रस में जब मग्न होय है तबहीं पावैहै जीवको स्वरूप "आत्मदास्यंहरेस्स्वाम्यंस्वभावं च सदास्मर" और शुकाचार्य या फलको चाखिन है तामें प्रमाण "निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहोरसिकाभुविभावुकाः ५" (इति भागवते) ॥ ४ ॥

इति बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २० ॥

अथ इक्कीसवां शब्द ॥ २१ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहै अभागा १ कोइ तीरथकोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २ विद्यावेदपढ़ि करहंकारा । अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३ दुखितसुखितसबकुटुँब जेंवइबे । मरणबेरयकसरदुखपइबे ४ कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ॥ ५ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहैंअभागा १

सबको दण्डछोड़ाय देनवारे जे सबते परे परमपुरुष श्री रामचन्द्रहैं तिनमें जो तैंनहीं रमैहै सो तोको गुरुवालोगनको कौन दण्ड चवावलगाहै यह तो सब यहींके साथी हैं साहबके भुलायदेनवारे हैं जे उपदेश करनवारे गुरुवनके कहे माया ब्रह्मआत्माको ज्ञानरूपी दण्डचवावमें जोते परे हैं सो हे अभागा ! जब तैं मरि जैहै तब वे गुरुवा तोको न बचासकेंगे तब क्या करोगे ॥ १ ॥

कोइतीरथ कोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २

तीर्थन में जाइकै कोई चहौहौ कि बिना ज्ञानही मुक्ति ह्वै जाइ है और कोई मूड़मुड़ायकै बेषबनाइकै संन्यासीह्वैकै और अपने आत्माही को मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तिह्वैजायँ और कोई नास्तिकादिकनके जे नानापाखण्ड मतहैं तिनमें लागिकै जानौ कि मुक्ति ह्वैगये और कोई भ्रम जो धोखाब्रह्म है तामें लागिकै आपने को ब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हम मुक्तह्वैगये और कोई और और देवतन के मन्त्रउपदेश पायकै जानौहौ कि हम मुक्त ह्वै गये ॥ २॥

बिद्या बेद पढ़ि कर हंकारा । अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३

अरु कोई वेदबाह्य जे नानाविद्या अपने अपनेगुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै व कोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र और चौंसठकला· दिक सब आइगये अहंकार करोहो कि हम मुक्त ह्वैगये सो मुक्ति तो जिनको वेदतात्पर्य करिकै ऐसे जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके विना जाने न होइगी होयगो कहा कि जब अन्तकाल तेरो होइगो तब यही मुख में क्षार फांकैगो और पुनि जब पुण्यक्षीण होइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरबै करोगे क्षारई फांकौगे ॥ ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुँबजेंवइबे । मरणबेरयकसरदुखपइबे४

दुःखसुख में सबकुटुम्बनको जेंवावैहै ते मरणसमय कोई काम नहीं आवै हैं तैं अकेलही दुःख पावैहै परन्तु सहाय तेरी कोई नहीं करिसकै है ॥ ४ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ५

कलि नाम झगड़ाकोहै सो कबीरजी कहैहैं यह मायाब्रह्मको झगड़ा बहुत खोट है अथवा यह कलिकाल अतिखोट है जो वस्तु करवामें रहै है सोई टोटीते निकसैहै तैसे जो कर्म यह जीव करैहै सोई दुःख सुख वह जन्म भोगकरै है अरु नाना देवतनकी उपासना अब करै है ताहीकी बासना बनीरहै है तेहिते पुनि वोई देवतनमें लागै है अरु जो ब्रह्मविचार अब करै है सोई ब्रह्मविचार पुनि जन्म लैकै करैहै अर्थात् विना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र के

जाने जन्म मरण नहीं छूटै है जो वासना अन्तःकरणमें बनीरहैहै सोई पुनि होय है ॥ ५ ॥

इति इक्कीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवां शब्द ॥ २२ ॥

अवधू छोड़ो मन बिस्तारा । सोपदगहहु जाहिते, सद्गति परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरिहजरत तब नाहीं । आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असी सहसपैगंबर नाहीं, सहसअठासी मूनी । चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं, मच्छकच्छ नहिंदूनी ३ वेद किताब अस्मृति नहिं संयम, नहीं यमन परसाही । बांगनेवाज कलिमा नहिंहोते, रामोनहीं खोदाही ४ आदिअन्तमन मध्य न होते, आतश पवन न पानी । लख चौरासी जीवजन्तु नहिं, साखी शब्द न बानी ५ कहै कबीर सुनोहो अवधू, आगे करहु बिचारा । पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतमकिन उपचारा ॥ ६ ॥

अवधू छोड़ो मनबिस्तारा । सोपदगहहुजाहितेसद्गति,परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरि हजरत तब नाहीं । आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असीसहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी । चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी३ वेदकिताब अस्मृति नहिं संयम, नहीं यमन परसाही । बांगनेवाजकलिमा नहिं होते, रामो नहीं खोदाही ४ आदिअन्तमनमध्य न होते, आतश पवन न पानी । लखचौरासी जीव जन्तु नहिं, साखीशब्द न बानी ५ कहैकबीरसुनोहोअवधू, आगे करहु बिचारा । पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतम किन उपचारा ॥ ६ ॥

हे अवधू जीवो ! तुम्हारे तो वधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात् तुम तौ मायाते भिन्न हौ जेतनो तुम देखो हो सुनो हौ ताको माया में मिलिकै तुम्हारे मनही विस्तार कियो है सो यह मनको विस्तार छोड़िदेउ अरु जिनते सद्गति कहे समीचीन गति है मन वचनके परे धोखाब्रह्म के पार ऐसो जो लोक प्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पद गहौ कबीर जी कहै हैं कि हे जीवो ! बिचार तो करौ जो जो बात यह पदमें स्पष्ट वर्णन करिगये ते ये कोऊ तब नहीं रहे अरु वासों भिन्न जो तुम कहौहौ कि पूर्णब्रह्म है कहे सर्वत्र ब्रह्मही है वासों भिन्न दूसरो नहीं है सो यह धोखा कहांते प्रकट भयो है और किरितम जो माया है ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह शुद्धसमष्टि जीवको मनही किरितम जो माया है ताको आरोपण कियो है और मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियो है ताहीको कियो राम खोदाय आदि जे मन वचनमें आवै हैं जे वर्णन करि आये हैं तेई विस्तारहैं सो पूर्व मङ्गल में और प्रथम रमैनी में वर्णन करिआये हैं और यहां राम को व हरिको जो कहै हैं सो नारायण जे रामावतार लेइहैं तिनको कहै हैं नहीं यमनपर साही कहे चौदहो यमनके परे जे निरञ्जनहैं तिनहूंकी साही नहीं रही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको नहीं कहै हैं काहेते कि वेतौ मन वचनके परे हैं सो पूर्व लिखि आयेहैं सो बांचि लेहुगे सो जब मन को त्यागो तब परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूप देइँ तामें प्रमाण " मुक्तस्य विग्रहोलाभः " यह श्रुति तौने स्वरूपते साहबको अनिर्वचनीय रामनाम नामादिक तुमको स्फुरित होइँगे तामें प्रमाण " वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः । तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाश्यते " (इति महारामायणे) ॥६॥

इति बाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवां शब्द ॥ २३ ॥

अबधू कुदरतिकी गति न्यारी । रङ्कनिवाजकरै वह राजा, भूपति करै भिखारी १ येतेलवँगहि फलनहिंलागै, चन्दनफूलनफूलै । मच्छशिकारी रमैजँगलमें, सिंहसमुद्रहिंभूलै २ रेड़ारूखभयामलयागिरि, चहुँदिशिफूटीवासा । तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्डमें, देखै अन्धतमासा ३ पंगुलमेरुसुमेरुउलंघै, त्रिभुवनमुक्काडोलै । गूंगा ज्ञानबिज्ञान प्रकाशै, अनहदवाणीबोलै ४ बांधि अकाशपताल पठावे, शेषस्वरगपरराजै । कहै कबीर रामहैंराजा, जो कछुकरैं सो छाजै ॥ ५ ॥

जो पूर्व यह कहिआये कि रामौ नहीं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीचीन गति होइ है तिनके पद गहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै बतावै हैं ॥

अबधूकुदरतिकी गतिन्यारी ॥

रङ्कनिवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी १
येते लवँगहि फल नहिं लागै, चन्दन फूल न फूलै ॥
मच्छ शिकारी रमै जँगलमें, सिंह समुद्रहि भूलै २

हे अबुध, जीवो ! परमपरपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्य की गति न्यारी है सुग्रीव जे पुत्र कलत्र ते हीन भिखारीकी नाईं बन बन पहाड़ पहाड़ बागतरहे तिनको निवाजि के राजा बनाइ दियो और सबराजनके जीतनवारे जे क्षत्रिय तिनको मारिकै पृथ्वी भूसुरन दै डारेउ नारायण के दशौ अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो १ लवङ्गमें फल नहीं लागै सोऊ लागै चन्दनमें फूल नहीं फूलै सोऊ फूलै है जाकी सामर्थ्य ते सो बालमीकीय में लिख्यो है जब श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं तब जे वृक्ष फलै फूलैवाले नहीं रहे सूखेरहे तेऊ फलि फूलि आये हैं और मच्छ जो मत्स्योदरी सो शिकारी जो शन्तनु ताके साथ भय ते रमनलगी सिंह समर्थ को कहे हैं सो

समर्थ जे वड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें बसेजाय ॥ २॥

रेड़ारूख भया मलयागिरि, चहुंदिशि फूटी बासा ॥
तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्ड में, देखै अन्ध तमासा ३

रेड़ा रूख जेहैं शबरी वानर निषादादिक जिनको वेदका अधिकार नहीं रह्यो तेऊ चन्दन ह्वैगये उनकी बास चारिउ दिशा फूटी कहे उनको यश सबकोई गावैहै चन्दन औरौ वृक्ष को चन्दन करैहै ऐसे औरहूको साधुन बनावनवारे ये सब भये तामें प्रमाण "न जन्म नूनं महतो न सौभगं न वाक् न बुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः । तैर्यद्विसृष्टानपि नोवनौकसश्चकार सख्येबत लक्ष्मणाग्रजः" (इति भागवते) और आँधर जे हैं धृतराष्ट्र तिनको कृष्णचन्द्र ब्रह्माण्डभरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्यते शरीरही में देखायदियो नारायण और कृष्णचन्द्र साहबकीसामर्थ्यते करै हैं तामें प्रमाण "यस्य प्रसादाद्देवेश ममसामर्थ्यमीदृशम् । संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ धाता सृजति भूतानि विष्णुर्द्धारयते जगत्" (इति सारस्वततन्त्रे) कृष्णचन्द्रको अवतार विष्णुहीते होइ है सो पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै, त्रिभुवन मुक्ता डोलै ॥
गूंगा ज्ञान बिज्ञान प्रकाशै, अनहद बाणी बोलै ४

और जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगु जे हैं अरुण ते पृथ्वी के कीला जे हैं सुमेरु कुमेरु तिनको रोज उलंघै हैं नाकैहैं अथवा पंगु जो हैं राहु जाके शिरैभर है गोड़ हाथ नहीं है सो सुमेरु कुमेरु का नाकतरहै है और मुक्त जे हैं नारद, शुक, कबीर आदिक जे संसार ते मुक्त ह्वैकै मनादिकनको छोड़िकै साहबके पास गये हैं और यह शास्त्र में लिखैहै कि वहांके गये पुनि नहीं आवैहै परन्तु तेऊ साहबकी सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलै हैं संसारबाधा नहीं करि सकै है और जब शुकाचार्य निकसे हैं तब व्यास पछुआनजात रहे हैं तब गूंगे जे वृक्ष हैं तेऊ व्यासको समुझायो है और

मध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तब बरदा शिष्यनको पढ़ायो है और जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उन के दासनके ह्वैगई कि वोई अनहद बाणी को बोलै हैं जाकी हद्द नहीं है ॥ ४ ॥

बाँधि अकाश पताल पठावै, शेष स्वरगपर राजै ॥
कहै कबीर राम है राजा, जो कुछ करै सो छाजै ५

और आकाश जो है आकाशवत्ब्रह्म तौनेको जो मानैहै कि वह ब्रह्म मैंहीहौं ताको साहब अपनो ज्ञान कराइकै धोखाज्ञानको बाँधिकै पतालमें पठैदेइहै अर्थात् जेहि जीवको मूलाज्ञान निर्मूलई करि देयहै जैसे लोकमें या बात कहै हैं कि या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़दियो फिरि वा अज्ञान को अंकुर नहीं होय है और शेष कहे भगवत् शेष जो है जीव सो जे साहबकी सामर्थ्यते स्वर्गादिकनके परे जो है साहबको लोक तहाँ राजैहैं स्वर्गपद को अर्थ जो दुःखते भिन्न स्थान होयहै सो कहावै स्वर्ग और जो लोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहब तहाँ राजैहै दुःखरहित स्थानको स्वर्ग कहै हैं तामें प्रमाण " यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनन्तरम्। अभिलाषोपनीतं च तत्पदं स्वः पदास्पदम् इति " सो कबीरजी कहै हैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परमपरपुरुष श्री रामचन्द्रही हैं वे राजा हैं वे जो कुछ करैं सो सब छाजैहै चाहे रङ्कको राजा करैं चाहे राजाको रङ्ककरैं चाहे लौंगमें फल लगावैं चाहे चन्दनमें फूल फुलाय देयँ चाहे मछरीको वनमें रमावैं चाहे सिंह को समुद्रमें रमावैं चाहे रेंड़ारूखको चन्दन करैं चाहे अन्धा को तीनउलोक देखायदेयँ चाहे पंगु को सुमेरु कुमेरु नँघाय देयँ चाहे गूंगाको ज्ञान कहवायदेयँ चाहे आकाशको बाँधिके पाताल पठावैं चाहे पातालवासी जे शेष तिनको स्वर्गपर राखैं या सामर्थ्य उनमें है श्रीरामचन्द्र तो राजा हैं तामें प्रमाण " राजाधिराजस्सर्वेषां रामएवनसंशयः " और उनहींकी भयते सूर्य चन्द्रमा

अवसर में उयेहैं और मृत्यु जब समय आवैहै तब खाय है तामें प्रमाण " यद्भयाद्वाति वातोयं सूर्यस्तपति यद्भयात्। वर्षतीन्द्रोदहत्यग्निर्मृत्युश्चरतिपञ्चमः " (इति श्रीमद्भागवते) ॥ ५ ॥

इति तेईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥ २४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा। जोई पदको करै निबेरा १ तरुवर एक मूलबिनठाढ़ो, बिन फूले फललागा। शाखापत्रकछू नहिंवाके, अष्ट गगनमुखजागा २ पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै। गावनहारके रूप न रेखा, सतगुरु होइ लखावै ३ पक्षी खोज मीनको मारग, कहै कबीर दोउभारी। अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरतिकी बलिहारी ॥ ४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा। जोई पद को करै निबेरा १
तरुवर एक मूल बिन ठाढ़ो, बिन फूलै फल लागा॥
शाखा पत्र कछू नहिं वाके, अष्टगगन मुख जागा २

बधू जाके न होइ सो अवधू कहावै सो हे अवधू जीवो ! जो यह पदके अर्थको निबेरा करिके जानै सो योगी गुरु कहे श्रेष्ठ है और मेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौ हौं १ एक जो तरुवर है सो विना मूल ठाढ़ो है अरु वामें विना फूल फल लागो है सो यहां तरुवर मन है सो जड़ है अरु आत्मा चैतन्य है शुद्ध है जो कहिये आत्मा उत्पत्ति है सो जो आत्मा उत्पत्ति होतो तो आत्मा चैतन्यहै मानो होतो ताते आत्मा ते नहीं उत्पत्तिभयो यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो बिचारै तो वाको मूल भगवत् अज्ञान सतनहीं है विना मूल ठाढ़ो भयोहै अरु विना फूलै फल लागोहै कहे जगत् उत्पादक क्रियामन नहीं कियो मिथ्या संकल्पमात्रते जगद्रूप फल लागवई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अङ्गनहीं है चित्त बुद्धि अहंकार येऊ मिथ्याहैं निराकार हैं

अरु यह मनैके मुखते आठौ गगन जागतभये सात सतावरणके आकाश अथवा चैतन्याकाश ॥ २ ॥

पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै ॥
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु होइ लखावै ३

अब श्रीकबीरजी जीवात्मा को वृक्षरूप ह्वैकै वर्णन करैहैं पौ बिनु कहे आत्माको जगत् को अंकुर नहींहै मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्र दुइ लागबेई कियो और करहू जो कर्म है सो नहीं रह्यो आत्मामें जगत्रूप तुम्बा लागवेई कियो यह जीवात्माकी दशा काहेतेभई कि बिनु जिह्वा जो है निराकार ब्रह्म ताके जे गुण हैं देश काल वस्तु परिच्छेद ते शून्यत्व सो आपने में लगावन लग्यो ये गुण मोहीं में हैं मेरो स्वरूप यहीहै सो जो या आपने को ब्रह्म मान्यो तौ आत्मा के ब्रह्मके रूप को रेख नहीं है काहेते याकोदेश बनो है समष्टि जीवलोक प्रकाश में रहै है और काल बन्यो है जौनेकाल में समष्टिते व्यष्टि होयहै और या देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते सहित है काहेते अणु है भगवद्दास है तामें प्रमाण "बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च । भागो जीवः सविज्ञेयः सचानन्त्यायकल्पते " (इतिश्रुतिः) अंशोनाना-व्यपदेशात्ते ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीन को मारग, कहे कबीर दोउ भारी ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरति की बलिहारी ४

ताते मीनकी नाईं संसारते उलटीगति चलिकै पक्षी जो हंसस्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजी कहैहैं ये दोऊ भारीहैं संसारते उलटी गति होइबो यह भारीहै आपनो हंसरूप पाइबो यहू भारीहै सो संसारते उलटी गतिकरि हंसरूप पाइकै परमपर जो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय भाव यह है तब तेरो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति चौबीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवां शब्द ॥ २५ ॥

अबधूवोततुराबलराता । नाचै बाजन बाज बराता १ मौरके माथेदूलहदीन्हों, अकथाजोरिकहाता । मड़येके चारन समधी दीन्हों, पुत्रबिवाहलमाता २ दुलहिनिलीपिचौकबैठाये, निरभयपद परभाता । भातहिं उलटि बरातहिखायो, भली बनी कुशलाता ३ पाणिग्रहण भये भवमण्डौ, सुषुमनि सुरति समाता । कहै कबीर सुनोहो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ॥ ४ ॥

अबधू वोततुरा बलराता । नाचै बाजन बाज बराता १

हे जीवो ! आप तौ अबधू रहेहौ कहे आपके बधू जो है माया सो नहीं रही है परन्तु रौरे अब वह तत्वमें रातेहैं अथवा हे अबधू ! यह शरीरको राजा है जीव सो अब वह तत्त्वमें राता है कौनतत्त्व में राता है सो कहै हैं जहां बाजन नाचैहै बरात बाजैहै सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचै है कहे जाग्रत्अवस्था में स्थूल स्वप्न अवस्थामें सूक्ष्म और सुषुप्ति में कारण तुरीयामें महाकारण येई नाचैहैं तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उनमुनी मुद्राआदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तेईबाजैहैं कहे तिनको जो संघट्ट ह्वैबोहै इन्द्रिनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकी ध्वनि सुनि परती हैं तामें प्रमाण " उठतशब्द घनघोर, शंखध्वनि अतिघना । तत्त्वोंकी झनकार, बजतझीनीझना ॥ १ ॥

मौर के माथे दूलह दीन्हों, अकथा जोर कहाता ॥
मड़ये के चारन समधी दीन्हों, पुत्र बिवाहल माता २

नाभीमें चक्र है तामें नागिनीको बास है चक्रके द्वारमें मूड़ दिये परीहै आत्मा नीचे है सो वह आत्मा दूलह है ताही की नागिनी मौर ह्वै रही है सो जब पांचहजार कुम्भक कियो तब नागिनी जागी सो ऊपर को चढ़ी तब चक्रको द्वार खुलिगयो तब आत्मा तो दूलह है सो चढ़िकै मौर जो नागिनी है ताके माथेपर

गैबगुफा में बैठ्यो जाइ और बरातनमें जो नहीं कहिबेलायक झूंठीबात सो गारी में कहै हैं इहां शरीर में ब्रह्म ह्वैजैबो अकथ है कहिबे लायक नहीं है सो कहै हैं कि हम ब्रह्म ह्वैगये और मड़ये के चारनको नेग समधी देइहै इहां मड़येके चारनके नेगनमें समधी ही दीन्हो है माया को पिता जो मन है सो एक समधी है और मनके समधी साहब हैं काहेते कि यह जीव भगवद्वात्सल्य को पात्र है जब यह आत्मा विषयनमें रह्यो है तब बेजाने कबहूं कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्माण्ड मड़वा में गयो तबते कबीर जी यह कूट करै हैं कि मड़येके चारन में समधीको दैराख्योहै कहे समधी जो साहब ताको कहिबो सुनिबो मिटिगयो सो जानै तो यह है कि हम मायाते छूटिगये पै नागिनीको जै बुन्द सुधा देइ है तै वर्ष वहां समाधि लागै है सो नागिनी ही वहां गहिराखै है सो पुत्र जो जीव है सो माता जो माया है ज्योतिरूप आदिशक्ति ताको बिवाहि लेय है कहे वाही के संग ज्योति में लीन ह्वैके वहां रहै है ॥ २ ॥

दुलहिनि लीपि चौक बैठाये, निर्भय पद परभाता ॥
भातहिं उलटि बरातहि खायो, भली बनी कुशलाता ३

चौक लीपिकै दुलहिनि बैठावै हैं यहां दुलहिनि जो है माया जो जगतरूप करिकै नानारूप है ताको लीपिकै एक करिडास्यो कहे एक ब्रह्मही मानत भयो ताके ऊपर चौक बैठायो कहे चौक देत भयो अर्थात् अन्तःकरणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावै है वृत्त्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाण चैतन्य कहावै है विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेयचैतन्य कहावै है स्फूर्त्यवच्छिन्नचैतन्य फूल चैतन्य कहावै है सो ये चारों चैतन्यको चौकबैठायो कहे चौक पूर्‍यो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थितकियो बिवाह होत होत भिनसार होइजाय है तब यह मन भयो कि हम निर्भयपद को पहुँचिगये प्रभात ह्वैगयो मोहरात्री ब्यतीत ह्वैगई नागिनीको जो अमृत सरोवर में अमृत पिआवैहै सोई भात है सो नागिनी

जब अमृत पियो तब वहै भात बरात जो आगे वर्णन करि आये पांचतत्त्व पचीस प्रकृति ताको खाइ लियो अर्थात् कुछ सुधि न रहगई सो कबीरजी कहै हैं कि भली कुशलात बनी है कि तब तो कुछ सुधिहू रही अब कछू सुधि नहीं रहिगई ॥ ३ ॥

पाणिग्रहण भये भवमण्ड्यो, सुषुमनि सुरति समाता ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ४

वहां मंडवपरेपर पाणिग्रहण होय है इहां पाणिग्रहण भये पर भवमण्ड्यो अर्थात् जब पाणिग्रहण माया को ह्वैचुक्यो कहे नागिनीको जब सुधा पिआइचुक्यो तब जै मुँह नागिनी को पानी दियो एक मुँहदियो तो महीना भरेकी समाधिलगी व दुइ मुँह दियो तो तीन महीनाकी समाधिलगी व चारि मुँह दियो तो छः महीनाकी समाधिलगी व पांच मुँह दियो तो वर्ष दिनकी व छः मुँह दियो तो तीन वर्ष की व सात मुँह दियो तो बारहवर्षकी समाधिलगी और जो हजारन वर्ष समाधि लगावा चाहै तो और मुँह देय सो जब नागिनी को सुधा पिआयो तब जै मुँह दियो तेतनेतदिनभर सुषुमनिसुरति समाता अर्थात् सुषुम्णा में जीव की सुरति समाइ है पुनि जब समाधि उतरी तब फिर भवमण्ड्यो कहे संसारी भयो अर्थात् पुनि ब्रह्माण्डमण्ड्यो कि शरीरकी सुधि भई सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, हे ज्ञातापण्डितो ! तुम सुनौ तौ बूझौ तौ वे कहां मुक्तिभये नहीं भये फेरि तो संसारही में उलटि आवै हैं ॥ ४ ॥

इति पचीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ छब्बीसवां शब्द ॥ २६ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये। गाठन भजन सवारै सोई, ज्यों राम रखै त्यों रहिये १ आसन पवन योग श्रुति संयम, ज्योतिषपढ़िवैलाना। छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, ये कल काहु न जाना २ आलम दुनी सकल फिरि आये, कलि जीवहि

नहिं आना। ताही करिकै जगत उठावै, मनमेंमन न समाना ३
कहै कबीर योगी औ जंगम, फीकी उनकी आसा। रामै रामरटै
ज्यों चातक, निश्चय भगतिनिवासा ॥ ४ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये ॥
गाठन भजन सवारै सोई, ज्यों राम रखै त्यों रहिये १

कबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ, जीवो! और और बहुत मत-
वारे तो बहुत जीव हैं तिनको कहा कहिये रामोपासक हमारो
दोस्त जैसे हम गाठ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहे हैं ऐसे
ऐसे वह गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देखे रहै और जैसे हम
को राम राखै है तैसेही रहै हैं ऐसे वहू रहै क्षणभरि न भूलै ऐसा
कोई बिरला है ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुति संयम, ज्योतिष पढ़ि बैलाना ॥
छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, एकल काहु न जाना २

अब बहुत मतवारे जे बहुत हैं तिनको कहैहैं कोई आसन
दृढ़ करैहै कोई पवन साधैहै कोई योग करै है कोई वेद पढ़ैहै कोई
संयम करैहै कोई व्रत करैहै कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब
बैकलाइगये जो बैकल होइहै सो झूठको साँच जानैहै और साँच
को झूठ मानै है सो छः दर्शन छानबे पाखण्डवारे जे ये सब हैं
एकल कहे एक स्वामी सब के परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको
न जान्यो अथवा एकल कहे जौने करते मैं उपासना करौहौं सो
कोई नहीं जानै है ॥ २ ॥

आलमदुनी सकल फिरिआये, कलि जीवहिं नहिं आना ॥
ताही करिकै जगत उठावै, मनमें मन न समाना ३

आलम कहे सबजीव दुनियामें फिरि आये गुरुवालोगन के
यहां याकल जौने करते मैं उपासना श्रीरामचन्द्र की करौहौं सो
आपने जियमें न आनत भये जाते संसार छूटिजाय साहब मिलैं
जे नानामत आगे कहिआये ताही करिकै जगत्को उठावैहै कि

जगत् उठिजाय मरिहि जाइ सो यह जगत् तो मनरूपही है सो उनके मनमें मनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनको मिथ्या कियो न करिगयो अथवा धोखाब्रह्म ताको मन कहे विचार उन के मनमें समाइ रह्यो है ताही करिकै जगत् को उठावै है कि जगत् न रहिजाय सोऊ न उठ्यो ॥ ३ ॥

कहै कबीर योगी औ जङ्गम, फीकी उनकी आसा ॥
रामै नाम रटै ज्यों चातक, निश्चय भक्ति निवासा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि योगी जंगमन की सबकी आशा फीकी है काहेते धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्या नहीं होइ है जीवन के ब्रह्म होबेकी आशा फीकी है सो जो रामनाम निशिवासर लेय है और जैसे चातक एक स्वातीही की आशा करै है तैसे परम-पुरुषपर श्रीरामचन्द्रकी आशा करैहै ताहीके हृदयमें उनकी भक्ति को निश्चय कै निवास होइ है भक्तिरसरूप है याते इनकी आशा सरिस है अर्थात् सफलै है और सोई संसारसागर ते उबरै है सो आगे रमैनीमें कहिआये हैं "कहै कबीर ते ऊबरे जो निशिबासर नामहिलेव" ॥ ४ ॥

इति छब्बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥ २७ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूपकथाहै, कहौं तो को पतिआई। जहँजहँ देखों तहँतहँ सोई, सबघट रह्यो समाई १ लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै। जस बिनु ज्योति रूप बिनु आ-शिक, रतन बिहूनारोवै २ भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखै, रूप बिना बहुरूपा। थितिबिनुसुरति रहस बिनु आनँद, ऐसो चरित अनूपा ३ कहै कबीर जगतबिनु माणिक, देखो चित अनुमानी। परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब, भजहु न शारँगपानी ॥ ४ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूप कथाहै, कहौं तो को पतिआई ॥

जहँ जहँ देखौं तहँ तहँ सोई, सब घट रह्यो समाई १

जातिकरिकै सबजीव एकहीहै ताते जीवनको भाई कह्यो कि हे भाई, जीवो ! वे जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुतरूप है अरु वहि रूपकी अनूपकथा है सो मैं जो वाको दृष्टान्त दैकै समुझाऊंहौं कि वाकोरंग दूर्वादलकी नाईं है अरसी कुसुमकी नाईं नीलकमलकी नाईं तौ येई सबमें भेद परै एक एककी तरह नहीं है वह तो मन वचन के परेहै ऐसे नामरूप लीलाधाम सब है वाको तो कैसे समुझाऊं काहेते जो मैं वाको समुझाइकै कहौं तो कैसे कहौं और जो कहबऊकरौं तो कोई पतिआय कैसे सो यहितरहको जो याको रूपहै सो जहां जहां देखोहौं तहां तहां वहै रूप देखायहै काहेते कि सबघटमें समायरह्यो है यहां सबघटमें समान्यो जो कह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइरह्योहै यह आयो जो व्यङ्गथपदार्थ है जीव ब्रह्म माया काल कर्म स्वभाव ताहीको सब देखैहै और जो व्यापकपदार्थ है ताको कोई नहीं देखैहै जो चितहू अचितमें जो कहो वही धोखाब्रह्मको तुमहूं कहतेहौ जो सर्वत्र फैलिरह्योहै तो वाको कोई नहीं कहतेहैं काहेते कि अद्वैतवादी कहै हैं कि सब पदार्थ वही ब्रह्महीहै वाते भिन्न दूसरो पदार्थ नहीं है और हम कहै हैं कि सब पदार्थ चित अचितरूपते व्याप्य है और हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको विश्वास होइ ताको वे साहब साकेतनिवासी परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सहजही प्रकट ह्वैजाय हैं सो जो मैं कहौ हौं ताको नहीं प्रतीत करै हैं चित जो है जीव और ब्रह्म ताहूमें श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं तामें प्रमाण "ॐयोवैश्रीरामचन्द्रस्यभगवान् द्वैतपरमानन्दात्मा यः परंब्रह्मेतिरामतापिन्याम्" जीवहू में व्यापक हैं तामें प्रमाण "य आत्मनितिष्ठन् यमात्मानं वेद यस्यात्मा शरीरमिति" मायादिक सबमें व्यापक हैं तामें प्रमाण "यस्य भासा सर्वमिदं विभाति" (इतिश्रुतिः) ॥ १ ॥

लछिबिनुसुख दरिद्रबिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै ॥

जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक, रतनबिहूना रोवै २

कैसो साहब सर्वत्र पूर्ण है सो बतावै हैं लछिबिनु सुख कहे जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुख नहीं होइ है देखो तो नहीं परै है साहबपै जो कोई स्मरण करै है सर्वत्र ताको सुख होय है साहबको कौनौ बात को दरिद्र नहीं है जो चाहै सो करिडारै समर्थ है परन्तु नानाजीवनको अज्ञान में परे देखिके साहिबौको यही दुःखहै कि मेरे अंश जीव माया में परिके नरक स्वर्ग जाय हैं काहेते यह दुःख है कि साहब अतिदयालु हैं तामें प्रमाण "तावत्तिष्ठन्तिदुःखीवयावद्दुःखंन नाशयेत् । सुखीकृत्यपराभक्तान् स्वयम्पश्चात्सुखीभवेत् इति" ध्वनि यह है कि साहब दयालु हैं ते सर्वत्र पूर्ण हैं यह विचारिकै कि जीव मोको जहैं स्मरणकरै मैं तहैं उबारिलेउँ फिरि कैसो साहब है कि मोहनिद्रा नहीं है सदा जगै है अपने भक्तनकी रक्षा करिबेको ऐसेहू साहबके सम्मुख जो जीव नहीं होइ हैं तिनकी ओर सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात् कबहूं नहीं देखै है फिर कैसो साहब है जाकी ज्योति जो ब्रह्म है अर्थात् जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो बिना कौनौ कथै है वा कौनौ लीलै कियो अकथहै ऐसे साहबके बिना रूपमें आशिकभये साहबको ज्ञानरत्नविहीना जीव संसारमें जनन मरण पाइ पाइ रोवै है ॥ २ ॥

भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखे, रूप बिना बहुरूपा ॥
थितिबिनुसुरतिरहसबिनुआनँद, ऐसो चरित अनूपा ३
कहै कबीर जगत बिनु माणिक, देखौ चित अनुमानी ॥
परिहरि लाभै लोभ कुटुंब सब, भजहु न शारँगपानी ४

फिर कैसो है साहब भ्रम बिना है अर्थात् कबहूं माया शबलित ह्वैकै जगत्मैंही उत्पत्ति कियो सदाज्ञानगुण सदाज्ञानस्वरूप है तौने साहबको मानै बिनु निरखे कहे मन बिना ह्वैकै हंसस्वरूप पाइकै तैं देखै कैसेहैं साहब कि चित् अचित् जे रूप हैं तेहि

विनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करिसकै हैं और चित् अचित् के शरीरी है बहुतरूपो हैं सब उन्हीं के रूप हैं फिरि कैसे हैं जब साहब सुरति दीन है तब जीवनकी स्थिति भई है और सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वा लोक में बनी है और आनन्द जो मन वचन में आवै है सो नहीं है वहां आनन्द बनो है ऐसे साहब के अनूप चरित हैं अर्थात् जो रहस कहि आये सोऊ मन वचन के परे है सो कबीरजी कहै हैं कि जो चित्त में अनुमान करि देखौ तो यावत् उपासना व ज्ञान तुम करौ हौ जगत् मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी ऐसी मुक्ति के लाभ को लोभ त्यागिकै व सब कुटुम्ब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिके शारंगपानी कहे धनुष को लीन्हे साहब तिनको काहे नहीं भजौ हौ अर्थात् भजौ॥३।४॥

इति सत्ताईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥ २८ ॥

भाईरेगैयाएकबिरंचिदियो है, भारअभरभोभाई। नौनारीको पानिपियतिहै, तृषा तऊ न बुताई १ कोठाबहत्तरि औ लौलाये, बज्रकेवांरलगाई। खूंटागाड़िडोरीदृढ़बांधो, तेहिवोतोरिपराई २ चारि वृक्षछौशाखावाके, पत्रअठारहभाई। एतिकलै गैया गम कीन्हो, गैया अतिहरहाई ३ ईसातौअबरणहैंसातौ, नौऔचौदह भाई। एतिक गैयैखाइबढ़ायो, गैया तौ न अघाई ४ खूंटामेंराती है गैया, श्वेतसींग हैं भाई। अबरणबरण कछूनहिंवाके, भक्ष अभक्षौखाई ५ ब्रह्माबिष्णु खोजकै आये, शिवसनकादिकभाई। सिद्धअनन्त वहि खोजपरे हैं, गैयाकिनहुँनपाई ६ कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जो या पदअरथाई। जो या पदको गाइबिचरिहै, आगेह्वैतरिजाई ॥ ७ ॥

भाईरे गैया एक बिरंचि दियोहै, भार अभरभो भाई ॥
नौ नारीको पानि पियति है, तृषा तऊ न बुताई १

हे भाई, जीवो! एक बाणीरूप गैया तुमहीं सबको बिरंचि जे ब्रह्मा हैं ते दियो है सो गैया को जो तात्पर्य दूध है ताको तुम न पायो गैयाको भार अभर ह्वैगयो तुम्हारो सँभारो न सँभारिगयो अर्थात् जो जो बाणीमें विधि निषेध लिखेहै सो तुम्हारो कियो एको नहीं ह्वै सकैहै सो ये मायिक बिधिनिषेध तो तुम्हारेकिये ह्वै नहीं सकैहै बाणी जो तात्पर्य वृत्तिते बतावै है सो तो अमायिकहै कैसे जानौगे? वह गैया कैसी है सो बतावै हैं नौ कहे नवो जे व्याकरण हैं तिनकी जो नारी कहे राह है तिनकर जो शब्दरूपी जल है ताको पियैहै अर्थात् वोहीके पेटते वेद शास्त्र सब निकसे हैं और वहीके पेटमेंहैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरणके शब्दरूपी जलते शोधेजायहैं अर्थात् वही बाणी में जल समाइहै परन्तु तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवो व्याकरण करिकै शोधै है शास्त्रार्थ करतही जाय है बोध नहीं होइ है कि शुद्ध ह्वैगयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेयहै ॥ १ ॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये, बज्र केवाँर लगाई ॥
खूंटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो, तेहि वो तोरि पराई २

पातञ्जलिशास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लौ लगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरीमुद्राकरि घेटीके ऊपर बज्र कपाट जो लग्यो है ताको जीभते टार्यो तब वहां अमृत स्रवो तब नागिनी उठी श्वासके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मो खूंटा जो ब्रह्माण्डहै ब्रह्मज्योति तहां पहुँच्योजाइ सो ज्योतिरूप ब्रह्म खूंटा है तामें प्रणागिनी जो गैयाहै ताको बांध्यो तेहि वो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तब फिरि जसको तस संसारी ह्वैगयो नागिनीशक्ति उतरि आई पुनि जीवनको संसार में डारिदियो ॥ २ ॥

चारि बृक्ष छौ शाखा वाके, पत्र अठारह भाई ॥
एतिक लै गैया गम कीन्हो, गैया अति हरहाई ३

पातञ्जलिशास्त्र में योगक्रिया है सो कायाते होय है ताते अलग कह्यो अब सब मेटिकै कहे हैं चारि वेद जे हैं तेई वृक्ष हैं और छइउ शास्त्र जे हैं तेई शाखा हैं अठारहौ पुराण पत्र हैं सो एकलै कहे यहां लगे गैया गमनकैजातभई कहे प्रवेश कै जातभई सो गैया बड़ी हरहाईहै अर्थात् जहां जहां आरोप कियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियोहै तौन वाके पेट ते बाहर नहीं है भीतरहीहै ॥ ३ ॥

ई सातौ अवरण हैं सातौ, नौ औ चौदह भाई ॥
एतिक गैया खाय बढ़ायो, गैया तउ न अघाई ४

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र और सातौ सहस्रार जहां ब्रह्म ज्योति में जीव को मिलावै है अरु सातौ आवरण जे हैं पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्व, अथवा सातौवार काल अरु नौखंड जे हैं अरु चौदहौ भुवन जे हैं सोई सबनको गैया खाइकै बढ़ाइडार्‍यो तऊ न अघातभई अर्थात् सब वाणीमय ठहरे ॥ ४ ॥

खूंटा में राती है गैया, श्वेत सींग हैं भाई ॥
अवरण वरण कछू नहिं वाके, भक्ष अभक्षौ खाई ५
ब्रह्मा बिष्णु खोज कै आये, शिवसनकादिक भाई ॥
सिद्ध अनन्त वहिखोज परे हैं, गैया किनहुँ न पाई ६

सो वह गैया खूंटा जो धोखाब्रह्म है तामें रातीहै अर्थात् ब्रह्म माया शबलित है अरु यहि गैयाके सींग श्वेत हैं कहे सतोगुणी हैं सोई ब्रह्म में बांधिबो है और अवरणकहे असत औ वरणकहे सत ई वाके कोई नहीं हैं अर्थात् सत असतते बिलक्षण है अथवा अवरण कहे नहीं है वरण जाके ऐसो निरक्षर ब्रह्मनाम रूपादिक नहीं है जाके और वरण कहे अक्षर ब्रह्म जीव ई दोनों नहीं हैं वाके अर्थात् ई दोनों ते विलक्षण है और भक्ष अभक्षौ खाइ है कहे जो कर्म करावनलायक है सो करावै है और जो कर्म

करावनलायक नहीं है सोऊ करावै है अर्थात् विद्यारूप ते शुभकर्म और अविद्यारूप ते अशुभकर्म करावै है सो वाको शिवसनकादिक ब्रह्मा विष्णु महेश अनन्त सिद्ध खोजमरे पै गैया कोऊ न खोजे पायो कि सत है कि असत है तात्पर्यंऊ न जाने ॥ ५ । ६ ॥

कहैं कबीर सुनो हो सन्तो, जो या पद अरथाई ॥
जो या पद को गाइ बिचरि है, आगे ह्वै तरिजाई ७

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो जो यह पदको अर्थ है कहे अर्थ विचरिहै और जौन पद हम वर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सप्तावरण आदिदैके जे पद हैं कहे स्थान तिनको जो कोई गाइ कहे मायाको रूपही बिचारैगो कि यहांभर तो मायाही है सो मायाके आगेह्वैके साहबको लोक विचारैगो सोई तरैगो॥७॥

इति अट्ठाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २८ ॥

अथ उन्तीसवां शब्द ॥ २९ ॥

भाईरे नयन रसिकजोजागै । परब्रह्म अविगत अबिनाशी, कैसेहुकैमनलागै १ अमलीलोग खुमारीतृष्णा, कतहुँसँतोष न पावै । काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरिभरिप्यावै २ ब्रह्म कलारचढ़ाइनिभाठी, लैइन्द्रीरसचाखै । सँगहिपोचह्वै ज्ञानपुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३ संकटशोच पोचयाकलिमों, बहुतक व्याधि शरीरा।जहँवांधीर गँभीर अतिनिर्मल,तहँ उठि मिलहु कबीरा॥४॥

यहां मायाके परे जे साहब हैं तिनको बतावै हैं ॥

भाईरेनयनरसिकजोजागै ॥
परब्रह्म अविगत अबिनाशी, कैसे कै मन लागै १

हे भाइउ ! नयनरसिक जो है संसारी चर्मचक्षु ते भिन्न भिन्न देखि विषयरस लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षूहोइ तो ब्रह्मके पार व अविगत कहे विगत नहीं सर्वत्र पूर्ण व अबिनाशी कहे जाको नाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं

तिनमें कैसेकै मनलागै जो कैसेहुकै पाठ होय तो यह अर्थ है जो कैसेहुकै मन लगवो करै तो बीचमें बहुत अवरोध हैं ॥ १ ॥

अमली लोग खुमारी तृष्णा, कतहुँ सँतोष न पावै ॥
काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरि भरि प्यावै २

सबलोग अमली हैं विषय छांड़यो पै तृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं संतोषको नहीं पावै है फिरि काममत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो मुद्राराक्षसादि ग्रन्थन में प्रतिपाद्य जे मत हैं तेई प्याला हैं तिनको काम क्रोधरूप जो मद सो माया भरि भरि उन को पिआवै है ॥ २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी, लै इन्द्री रस चाखै ॥
सँगहि पोच ह्वै ज्ञान पुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३

प्रथम तो काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तो ब्रह्म जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धिकरै हैं गुरुवा लोग ते भाठी चढ़ाइन ज्ञान सिखवैलगे कि तुहीं ब्रह्म है ताही में इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मि को रस चाखनलग्यो अर्थात् ब्रह्मानन्द को अनुभव करनलग्यो जो मद पियै है ताको ज्ञान भूलिजायहै यहै कहैहै कि महीं मालिक हौं सो जो गुरुवालोगन को संगकियो ब्रह्मानन्द पानकियो सो मैं साहबकोहौं यहअक्क भूलिगई वही गुरुवालोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि महीं ब्रह्महौं जो चतुराईहोइ सो विभ्रन को नाकि जाइहै ॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमों, बहुतक व्याधि शरीरा ॥
जहँवां धीरगँभीरअतिनिर्मल, तहँ उठि मिलहु कबीरा ४

पोच कहे अज्ञानी जे जीव हैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झगड़ा में बहुतसंकट शोच व व्याधिशरीर को है सो जहां अतिधीर है कहे चलायमान नहीं है निश्चलपदहै व गंभीर कहे गहिर है व निर्मल कहे मायाब्रह्म को लेश नहीं है सो हे कबीर कायाके बीरजीवो ! मायाब्रह्म के तुम परे हौ तहांते उठिकै

कहे मायाब्रह्म के विघ्नते निकसिकै साहबको मिलौ तबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति उन्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ तीसवां शब्द ॥ ३० ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया । अल्ला रामकरीमकेशव हरि, हजरतनाम धराया १ गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा । कहन सुननको दुइकरिथापे, यक नेवाज यक पूजा २ वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये । कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये ३ बेद किताव पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े । बिगत बिगतकै नाम धरायो, यक माटीके भांड़े ४ कह कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनहुं न पाया । वे खसिया वे गाय कटावैं, बादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

अब यहां यह वर्णन करै हैं कि दूसरो जगदीश नहीं है परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तेई जगदीश हैं ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया ॥
अल्ला राम करीम केशव हरि, हजरत नाम धराया १
गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा ॥
कहन सुनन को दुइकरि थापे, यक नेवाज यक पूजा २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ ! दुइ जगदीश कहांते आये तोको कौने भरमायो है अल्ला राम करीम केशव हरि हज़रत ये तो सब नामभेद हैं कहते तो एकही को हैं १ जैसे एक गहना को सुवर्ण ते गहना कहे गहिलेइ कहे सुवर्ण विचारिलेइ तामें भाव दूजा नहीं है वह सुवर्ण है जैसे कोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिक नाम कहै हैं परन्तु है सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबे को दुइ करि थाप्यो है यक नेवाज यक पूजा परन्तु है सब साहबकी बंदगीही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको सेवै हैं ॥ २ ॥

वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये॥
कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये ३

वोही परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र को महादेव व महम्मद व ब्रह्मा व आदम सबकहिये कहे कहतभये कोई राम कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरान में लिखै है कि सब नामन में अल्लाह नाम ऊपर है और यहां वेद पुराणमें लिखै है कि सब नामन में रामनाम ऊपर है तामें प्रमाण " सर्वेषामपि मन्त्राणां राममन्त्रफलाधिकमिति " " सहस्रनामततुल्यं रामनामवरानने " याते सबके मालिक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही जगदीश हैं दूसरो जगदीश नहीं है उनहीं के अल्लाहनामको सब नामनतेपरे महम्मद कुरान में लिख्यो है व उनहीं नामको महादेवने तन्त्रमें लिख्यो है और ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताब में कहतभये अरु इहां तो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींके ज़िमींमें कहे जगत् में रहतभये नाम के भेदते कोई हिन्दू कोई मुसलमान कहावै है॥३॥

बेद किताब पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े॥
बिगत बिगत कै नाम धरायो, यक माटी के भांड़े ४

जिनके पोथी जमा होय हैं ते कहावैं कुतुबा वे वेद पुराण जमा कैकै पढ़ैहैं वे किताब जमाकैकै पढ़ै हैं वे पण्डित कहावैहैं वे मोलना कहावै हैं वेद पढ़िकै पण्डित किताब पढ़िकै मोलना कहावैं बिगत बिगतकहे जुदा जुदा नाम धराय लेते भये हैं एकई माटीके भांड़े कहैहैं सब पञ्चभौतिकही हैं॥ ४ ॥

कह कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनहुँ न पाया॥
वे खसिया वे गाय कटावैं, बादै जन्म गँवाया ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिन्दू तो बोकरा मारिके मुसलमान गाय मारिके नाना प्रकार के बाद विवाद करिके अथवा बादै कहे बृथा ही दोऊ भूलिके जन्म गँवाइ दियो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावत भये हिन्दू तुरुक के खुदखाविन्द एकई है कोई

बिरले जानैहैं ते वहां पहुँचै हैं तामें प्रमाण " छोड़ि नासूतमलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाजी । और साहूतराहूत इहां डारिदे कूदि आहूत जाहूत जाजी ॥ जायजाहूतमें खुदखाविन्द जहँ वही मकान साकेत साजी । कहै कब्बीर ह्वां भिश्त दोजख थके वेद कीताबकाहूत काजी ॥ ५ ॥

इति तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३० ॥

अथ इकतीसवां शब्द ॥ ३१ ॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १ घर घर सावजखेलै अहेरा, पारथ वोटा लेई । पानीमाहिंतलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरादेई २ धरती बरसै बादलभीगै, भीट भया पैराऊ । हंस उड़ाने तालसुखाने, चहले बीधापाऊ ३ जौलगि कर डोलै पगु चलई, तौलगि आश न कीजै । कह कबीर जेहि चलत न दीखै, तासु बचन का लीजै ॥ ४ ॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १
घर घर सावज खेलै अहेरा, पारथ वोटालेई ॥
पानीमाहिं तलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरा देई २

कबीरजी कहैहैं कि हे हंसा ! संशयरूप छूरीते मारिगयो तोको उलटो ज्ञान ह्वै गयो बछरुवा जो है तैसो तेरोस्वरूप ज्ञानरूप जो दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो १ सावज जो या मन है सो घरघर में कहे शरीर शरीरमें शिकार खेलै है पारथ कहे शिकारी जो तैं सो वोटालेइहै अर्थात् नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरै है पै मन तोको नहीं छोड़ैहै साउज ते नहीं बचैहै वाणीरूप जो है पानी नानाशास्त्र तौनेमें भूभुरि जो सूर्यन के तापते तपित भूमिहोय है सो भूभुरि कहावै है ऐसे संसार तापते तपित जो तेरा अन्तःकरण सो तलफिगयो अर्थात् अधिक अधिक शङ्का होत भई तिनते अधिक तप्तभयो शीतल न भयो

काहेते कि वे साहबको भुलाइकै औरे में लगाइदेइँगे संसार ही में फँसो रहैगो यामें धुनि यह है कि जे संसारते छूटे हैं रामोपासक हैं तिनहीं को वचन मानिये तिनहीं के यहां जाइये ॥ ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवां शब्द ॥ ३२ ॥

हंसा हो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १ पाखण्डरूप रच्यो इन्हतिरगुण यहिपाखण्डभूल संसारा । घरको खसम बधिक भो राजा परजा काधौं करै बिचारा २ भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत विष कैलियसारा । आगे बड़े ऐसही भूले तिनहुँ न मानल कहा हमारा ३ कहल हमारा गांठी बांधो निशिबासरहि होहु हुशियारा । ये कलिके गुरु बड़परपञ्ची डारि ठगौरी सबजग मारा ४ वेदकिताब दोय फन्दपसारा ते फन्देपर आप बिचारा । कह कबीर ते हंस न बिछुड़े जेहि में मिल्यो छोड़ावनहारा ॥ ५ ॥

हंसाहो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १
पाखण्डरूपरच्योइन्हतिरगुण, तेहिपाखण्डभूलसंसारा ॥
घरको खसम बधिकभोराजा, परजा काधौं करै बिचारा २

हे हंसा, जीवो ! सबेरेते कहे तबहीं ते चित्तमें चेतकरौ सबेरेते कह्यो ताको भाव यह है कि जब काल नियराइ आवैगो तब कछू न करत बनैगो तिहारे फांसिबेको यह माया बहुत परपञ्च कियो है १ पहिले पाखण्डरूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जे सत, रज, तमहैं तिनको तिहारे फांसिबेको प्रकट कियो सो तीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवता हैं अरु पाखण्डरूप जो धोखाब्रह्म है तामें सब भूलिगये घरको खसम जब स्त्री को बधिक कहे दुःख देनलाग्यो मारनलाग्यो तब स्त्री कहाकरै तैसे जो राजा प्रजा को बधिक कहे मारनलाग्यो दुःख देनलाग्यो तब

विचारे प्रजा कहा करैं सो यह मनतो सबको मालिक ह्वैरह्यो है सो यही जो सबको दुःख देनलाग्यो तौ जीव कहाकरै ॥ २ ॥

भक्ति न जानै भक्त कहावै, तजि अमृतविषकैलियसारा ॥
आगे बड़े ऐसही भूले, तिनहुं न मानल कहा हमारा३

भक्तिको तो जानै नहीं हैं भक्त कहावै हैं अमृत जो है परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै विष जो है और और की भक्ति ताको सार मानि लियाहै सो आगे जे बड़े बड़े ह्वैगये हैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहब की भक्ति छोड़िकै और और की भक्ति करिकै संसारही में परतभये ॥ ३ ॥

कहलहमारागांठीबाँधो, निशिबासरहिहोहुहुशियारा ॥
येकलिकेगुरुबड़परपञ्ची, डारि ठगौरी सब जग मारा ४

सो हमारो कहो गांठी बांधो जो अबहूं हमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करौगे तौ संसारही में परौगे कलियुग के जे गुरुवा हैं ते बड़े परपञ्ची हैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्ति को छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइ हैं सो निशिबासर हुशियार रहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवालोगनको कहा न मानो ॥ ४ ॥

बेद किताब दोयफन्द पसारा, ते फन्देपर आप बिचारा॥
कहकबीरतेहंस न बिछुरे, जेहिमैं मिलो छोड़ावनहारा ५

वोई जे गुरुवालोगहैं ते आइ ये वेद किताबको फन्दा पसारि कै नानामतमें करतभये सो वहीफन्द में आप परतभये व औरहू को वहीफन्दमें डारिकै नानामतमें लगाय देते भये वेद किताब को तात्पर्य न जानतभये सो कबीरजी कहै हैं कि जौने जीवको मैं फन्दते छोड़ावनहार मिल्योहौं और परमपुरुष में लगाइदियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंगे सो तुमहूं पारिखकरिके मेरो

कहो मानिकै हे हंस, जीवौ ! तुमहूं फन्द छोड़ि परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगौ ॥ ५ ॥

इति बत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३२ ॥

अथ तेंतीसवा शब्द ॥ ३३ ॥

हंसा प्यारे सरवरते जे जाय । जेहि सरवर बिच मोतिया चुनते बहुबिधि केलि कराय १ सुखेताल पुरइनि जल छोड़े कमलगयो कुँभिलाइ। कह कबीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कबआइ॥२॥

हंसा प्यारे सरवरते जे जाय ॥

जेहि सरवर बिच मोतियाचुनते, बहुबिधिकेलि कराय १
सुखे ताल पुरइनि जल छोड़े, कमलगयो कुँभिलाइ ॥
कह कबीर जो अबकी बिछुरै, बहुरि मिलै कबआइ २

हे प्यारे, हंस! सरवर जो शरीरहै ताते जे जाय कहे जिनके शरीर छूटिजाय हैं जौने सरवर शरीर को प्राप्त होइकै मोतिया चुनै हैं कहे ज्ञानयोगादिक साधन करिकै मुक्ति की चाहकरै हैं और बहुबिधकी केलिकरै हैं जो त्याजे पाठ होय तो या अर्थ है हे हंसा, जीव ! प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जाय है जौन सरवर शरीर में नाना देवतनकी उपासनारूप मोती चुने नानाबिषयनको भोग कीन्हे सो छोड़ेजाय है १ सो शरीररूपी ताल जब सूख्यो कहे रोगकरिके ग्रस्तभयो तब पुरइनिजल छोड़िदियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो अरु अनुभव जो तुम करतरह्यो सोई कमल है सो कुँभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि याहितरहते जो अबकी बिछुरै कहे शरीर छूटिजाय तब पुनि कबै ऐसो शरीर पावैगो चौरासीलाख योनि भटकैगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीरछूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजाय हैं तेहिते मानुषशरीर पायकै साहबको जानै वह

शरीरहू छूटे नहीं भूलै है काहेते कि साहबही आपनो ज्ञान देइ है और हंसस्वरूप देइ है ॥ २ ॥

इति तेंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवां शब्द ॥ ३४ ॥

हरिजन हंसदशा लियेडोलैं। निर्मल नाम चुनी चुनि बोलैं १ मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै। मौनरहै की हरिगुण गावै २ मानसरोवर तटकेवासी। रामचरण चित अन्तउदासी ३ काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै। प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै ४ नीर क्षीर को करै निबेरा। कहै कबीर सोई जन मेरा ॥ ५ ॥

जे साहबको नहीं जानै हैं तिनको कहि आये अब जे साहब को जानै हैं तिनकी दशा कहै हैं ॥

हरिजनहंसदशालिये डोलैं। निर्मलनामचुनीचुनिबोलैं १

हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनके जे जन हैं ते हंसदशा जो है शुद्ध जीव पार्षदरूपता तौनी दशा के लिये सर्वत्र डोलै हैं कहे फिरै हैं यहां हरि जो कह्यो ताको हेतु यह है कि अपने भक्तन की सिगरी बाधा हरै सो हरि कहावै है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरि लेइ हैं तब तिनके जन सुखपूर्वक संसार में फिरै हैं उनको संसार स्पर्श नहीं करै है अरु जो नाम माया शबलित है तिनको छोड़ि देइ है और निर्मल जो नाम रामनाम है मन बचन के परे अमायिक ताको चुनि चुनि कहे साहबमुख अर्थ ग्रहण करिके और संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलै हैं कहे रामनाम उच्चारण करै है यहां मन वचन के परे जो नाम है ताको कैसे बोलै है ऐसो जो कहो तो ये हंसदशा लिये डोलै है कहे जब शुद्धजीव रहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्रिय देइ है तिनते तौने नाम को बोले है जैसे सूमा जरिजाय है तब वाकी ऐंठनभर रहिजाइ है तैसे यह शरीर की आकृतिमात्र रहिजाइ है वह पार्षदही शरीर में

स्थितरहै है जब शुद्ध शरीर ह्वैजाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावै है यह आगे लिखि आये हैं ॥ १ ॥

मुक्ताहललियेचोंचलोभावै । मौनरहै की हरिगुणगावै २

हंस मुक्ताहल चोंच में लिये बच्चन को लोभावै है जौन बच्चा माँगै है ताके मुँहमें डारिदेइ है ऐसे साधुन के मुखमें पांच मुक्ति हैं सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सालोक्य, साष्टर्य तिनते जीव को लोभावै है कहे सब यह जानै है कि इनहीं की दई देजाइ है जो जौन मुक्तिकी चाह करिकै उनके समीप जाइ है ताको श्रीरामनाम के उपदेश करिकै तौन भाव बताइकै मुक्ति देइ हैं और आप मौनही रहै हैं कि साहब के गुणगाइकै छकेरहै हैं ॥ २ ॥

मानसरोवर तटके बासी । रामचरण चित अन्त उदासी ३

और हंस जे हैं ते मानसरोवर के तटके बासी हैं अरु वे साधु कैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवर है ताके तटके बासी हैं कहे मनते भिन्न ह्वैरहे हैं जामें हंसकी दशा है साहबकी दीन ऐसो जो चिन्मात्र आपनो स्वरूप है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहींके चरणन में लगाइ राखै हैं अरु अन्त उदासी कहे जो वह धोखाब्रह्म में "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै आत्मा को अन्त ह्वैजाइहै आपै ब्रह्म मानिलेइहै वह जो है आत्माके अन्त ह्वैबेको मत धोखा तेहिते उदासी कहे उदास ह्वै रहे हैं अथवा अन्त जो है संसार ताते उदास रहै हैं ॥ ३ ॥

काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै । प्रतिदिनहंसादर्शनपावै ४
नीर क्षीर को करै निबेरा । कह कबीर सोई जन मेरा ५

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यह अज्ञान सो निकट नहीं आवै है तौ और मत कैसे आवै सो कबीरजी कहै हैं कि यह भांति जो चलै है सो हंस शुद्धजीव प्रतिदिन श्रीरामचन्द्र को दर्शन पावत रहै है सर्वत्र साहब को देखत रहै है ४ जैसे हंस नीर क्षीर को निबेरा करै हैं तैसे हंस जे साधु हैं ते असार जो

है नाना उपासना नाना ज्ञान तामें अमीसी जो वेद शास्त्र पुराणादिकन में साहब की उपासना ताको ग्रहण करै हैं और सब असार को छोड़िदेय हैं सो कबीर जी कहै हैं कि सोई जन मेरो है अर्थात् जे रामोपासक हैं तेई कबीरपन्थी हैं और सब पाखण्डी हैं जौने स्वरूपमें हंसदशा है तौनेस्वरूप में साहब के स्फूर्ति कराय नाम जपैहैं तामें प्रमाण " माला जपौं न कर जपौं जिह्वा जपौं न राम । मेरा साईं हरि जपै मैं पावों विश्राम ॥ ५ ॥

इति चौंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवां शब्द ॥ ३५ ॥

हरि मोर पीव मैं रामकी बहुरिया । राम मोर बड़ा मैं तनकी लहुरिया १ हरि मोर रहँटा मैं रतन पिउरिया । हरिको नाम लै कातल बहुरिया २ छःमास ताग बर्षदिन कुकुरी । लोग बोले भल कातल बपुरी ३ कहै कबीर सूत भलकाता । रहँटा न होय मुक्ति को दाता ॥ ४ ॥

हरिमोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ामैंतनकी लहुरिया १

मोर पीव हरि हैं पीवकहे वे मोको पियार हैं मैं उनकोऊ पियार हौं अरु मैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र की बहुरिया कहे नारी हौं यहां नारीकह्यो सो यह जीव साहबकी चित्शक्तिहै तामें प्रमाण कबीरजीके आदिटकसार ग्रन्थ को ॥ आतम शक्ति सुबश है नारी । अमरपुरुष जेहि रची धमारी १ औ दूसरो प्रमाण सायरबीजकको । दुलहिनि गाऊ मंगलचार । हमरे घरआये रामभतार ॥ तन रतिकरि मैं मन रतिकरिहौं पांचौंतत्त्व बराती । रामदेव मोरे ब्याहन ऐहैं मैं यौबन मदमाती ॥ सरिर सरोवर वेदीकरिहौं ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेवसंग भांवरिलेहौं धनियनिभागहमारा । सुरतेंतीसो कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कह कबीर हम ब्याहचले हैं पुरुष एक अबिनाशी २ अरु श्रीरघुनाथजी मोर बड़े हैं अरु मैं तनकी लहुरिया हौं कहे उनके शरीर सर्वत्र ब्यापक

विभु हैं औ मैं अणु हौं तामें प्रमाण "अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहं व्याप्यतिष्ठति" (इतिस्मृतिः) ॥ १ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया २

अरु हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मोर रहँटा कहे चित् अचित्रूप ते जगत् वोई हैं अरु मैं रतनपिउरिया हौं यह जगत् जीवही के वास्ते बन्यो है तामें प्रमाण ॥ जीव सूत ह्वैकै लपटि रहे हैं मैं रतनकी पिउरिया हौं ताते मैं नहीं लपटौ हौं हरि जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नामलैकै बहुरियाकहे उलटिकै मैं कात्यो अर्थात् जगत् को जगद्रूप करिकै नहीं देख्यो जगत् को चित् अचित्रूप करिकै देख्यो है रामनाम में बहुरिकै साहब मुखअर्थ देख्यो जगत् मुखअर्थ नहीं ग्रहणकियो ॥ २ ॥

छःमासतागबर्षदिनकुकुरी।लोगकहलभलकातलबपुरी ३

छःमहीना में एक ताग कात्यो छःमहीना में एक ताग और कात्यो तब वर्षदिनमा एक कुकुरी भै दोनों ताग मिलाय कै अर्थात् छःमहीना में आपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं साहब की नारी हौं और छःमहीनामें मैं साहबको स्वरूप समुझ्यो बर्षदिन में साहब को मिल्यो सो मैं तो इतनी देर करिकै मिल्यो साहब तो हजूरही रहैं ताहूमें लोग कहै हैं कि बपुरी भलकात्यो जो अनन्तकोटि जन्मते नहीं जानै है सो साहब को बपु आपनो बपु बर्षदिना में समुझ्यो ॥ ३ ॥

कहैकबीरसूतभलकाता । रहँटा न होय मुक्तिको दाता ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जौनेरहँटा जगत्ते सूत भल कात्यो है कतवैया कबीरजीको विवेक है सो रहँटा न होय यह मुक्ति को दाता है काहेते कि जब शुद्धआतमा रह्यो है याको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं न तिनको ज्ञान रह्यो और न संसारको ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्यो है तामें प्रमाण "नित्यःसर्वगतस्स्थाणुरचलोयंसनातनः" (इति गीतायाम्) जब यह याके मनभयो

तब संसारको कास्यो है और संसार में परिकै दुःख सुख भोग कियोहै और जब पूरा गुरु मिल्यो है तब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको पाइकै संसार ते छूटिगयो है और पुनि संसार में नहीं आयो सो कबीरजी कहे हैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्ति को दाता है जो संसार बुद्धि करिकै देखै है सो संसार में रहै है और जो संसार को साहबको चित् अचित्‌रूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिही देइ हैं या संसारै में आये मुक्ति भयो है ॥ ४ ॥

इति पैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवां शब्द ॥ ३६ ॥

हरि ठग जगत ठगौरीलाई । हरिवियोग कस जियहुरे भाई १
को काको पुरुष कौन काकी नारी । अकथकथा यमजाल पसारी२
को काको पुत्र कौन काको बापा । को रे मरै को सहै संतापा ३
ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । रामठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरीठगपहिंचाना ॥ ५ ॥

हरिठगजगतठगौरीलाई । हरिबियोगकसजियहुरेभाई १

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्य के चोरावनहारे गुरुवालोग ते जगत् में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइहैं और और में लगाइकै सो हे जीवो ! हरिके वियोगते तुम कैसे जिओहौ ॥ १ ॥

कोकाकोपुरुषकौनकाकीनारी। अकथकथायमजालपसारी२
कोकाकोपुत्रकौनकाकोबापा । को रे मरै को सहै संतापा३

यह संसार में जब सांचे साहबको भूल्यो तब को काको पुरुष है को किसकी नारी है अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासना करैहैं आपन स्वामी मानैहैं तिनके स्वामी कबहूं होय है वोई या की नारी होय है दास होइहै कबहुं स्त्री पुरुष होय है पुरुष स्त्री होय है सो या यमकहे दोऊ बिया

अविद्या के जालपसाख्यो है २ को काको पुत्र है को काको बाप है को मरै है को संताप सहै है तुम को तो सुखै सुख है तुमहीं साहब हौ तुमहीं भोगी हौ ॥ ३ ॥

ठगिठगिमूलसबनकोलीन्हा। रामठगौरीबिरलैचीन्हा ४
कहकबीरठगसोमनमाना। गईठगौरी ठग पहिंचाना ५

सो यह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूल जो है साहब को ज्ञान सो ठगि लेतभये और जो यह पाठ होइ ठगि ठगि मूड़ सबनको लीन्हा तो यह अर्थ है कि सब जगको ठगि ठगि मूड़ि लियो कहे चेला करि लियो है सो यह ठगौरी जो रामकै परीहै कि रामको ज्ञान सब जीवनको गुरुवालोग ठगेलेयहैं जैसे कोई रुपयाको कपड़ाको घोड़ाको ठगैहै तैसे गुरुवालोग रामको ठगैहैं तामें प्रमाण " शास्त्रंसुबुद्धातत्त्वेन केचिद्वादबलाज्जनाः। कामद्वेषाभिभूतत्वादहंकारवशंगताः॥ याथातथ्यं च विज्ञाय शास्त्राणां शास्त्रदस्यवः। ब्रह्मस्तेनानिरारम्भादम्भमोहवशानुगाः ४" सो कबीरजी कहे हैं कि तुम्हारो मन ठग है जे गुरुवालोग तिनहीं सो मान्यो है ते तुमको ठगिलीन्हे हैं सो जब तुम ठगको पहिंचानि लेउगे कि ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी ॥५॥

इति छत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३६ ॥

अथ सैंतीसवां शब्द ॥ ३७ ॥

हरिठग ठगत सकल जगडोला। गवनकरतमोसोंमुखहु न बोला १ बालापनके मीत हमारे। हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे २ तुम अस पुरुष हौं नारि तुम्हारी। तुम्हरि चाल पाहनहुंते भारी ३ माटिकिदेह पवनको शरीरा। हरिठग ठगत सो डरल कबीरा॥४॥

हरिठगठगतसकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीव कहै हैं कि हरिको ठग जो गुरुवा है सो ठगहारी करिकै सब जीवन को ठगतकहे हरिते बिमुख करत जगडोला कहे

संसार में फिरै है अरु जब गवन करनलगे यम घेरिलियो तब मोसों मुखहू ते न बोले कि येतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्म में अथवा जीवात्मामें ते न बचायो यह खबरि कहि समुझाय न दियो कि हम को धोखा है गयो तुमहूं धोखा में न परौ ॥ १ ॥

बालापन के मीत हमारे । हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे २

तुमअसपुरुषहौंनारितुम्हारी।तुम्हरिचालपाहनहुंतेभारी३

सो तुम बालापन के हमारे मीत हौ जबभर रह्यो जियो तबभर हमको धोखाहीमें लगायेरहे अब हमैं छोड़िकै सकारे कहे हमहीं ते आगे कहां जाहुगे काहेते कि तुम तो काहूको रक्षक मान्यो नहीं वही धोखा में लगेरहे आपही को मालिक मानेरहे अब तुम्हारी रक्षा कौनकरै सो जब तुम्हारी कोई न कियो यम लैही गये तो जौन ज्ञान हमको दियो है तौनेते हमारी रक्षा कौन करैगो २ तुम ऐसो हमारे पुरुष है तुम्हारी हम नारी हैं काहेते कि बीजमन्त्र हमको उपदेश दियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौ ते भारीहै कहे पाहनौ ते जड़है तेहिते साहब को भुलाइदियो ॥ ३ ॥

माटिकिदेहपवनकोशरीरा।हरिठगठगतसोडरत्तकबीरा४

माटी की यह देह है सो स्थूल शरीर नाशवान् है और पवन को शरीर सूक्ष्म शरीर है सो मनोमय चञ्चल है ज्ञानभये वहौ नाशवान् है तामें स्थित जे कबीर कहे काया के बीर जीव हैं ते हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं सबके कलेशहरनवारे तिनको ठग जे गुरुवालोग हैं तिनके ठगत में कहे रक्षक को छपायदेत में जीवडरै है कि हमारी रक्षा अब कौन करैगो वह ब्रह्म तो धोखई है वातो गुरुवनहीं की रक्षा नहीं कियो और तेई मालिक होतो तौ माया के वश कैसे होते और यम कैसे धरिलैजाते ॥ ४ ॥

इति सैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवां शब्द ॥ ३८ ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा । जहँ जहँ गये अपनपौ खोये

तेहिंफन्दे बहुफन्दा १ योगी कहै योगहै नीको द्वितिया और न भाई । मुण्डित मुण्डित मौनजटाधरि तिनहुं कहां सिधि पाई २ ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं । जहँ से उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तबहीं ३ बायें दहिने तजे बिकारै निजुकै हरिपद गहिया । कह कबीर गूंगे गुरखाया पूछे सों का कहिया ॥ ४ ॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवालोगनको उपदेश लग्योहै तिन को कहैहैं और गुरुवालोगन को कहैहैं ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा ॥

जहँ जहँ गये अपनपौ खोये, तेहिफन्दे बहु फन्दा १

मलीनबुद्धि जाकी होइहै ताको गन्दा कहैहैं सो गन्दा जो यह जीव है सो बिना जाने भर्मते बिगरि जातभयो ताते चिन्मात्र हरि को अंश जो यह जीव ताकी नीचबुद्धि होइगई जहां गयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साहबको हौं यह ज्ञान खोयकै तौने फन्दा में परिकै तौने मतमें लगिकै बहुत फन्दा जे चौरासी लाख योनि हैं तिनमें भटकत भये ॥ १ ॥

योगी कहै योग है नीको, द्वितिया और न भाई ॥
मुण्डितमुण्डितमौनजटाधरि, तिनहुं कहां सिधिपाई २
ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता, ये जो कहहिं बड़हमहीं ॥
जहँ से उपजे तहँहिं समाने, छूटिगये सब तबहीं ३

जिनको जिनको यह पद में कहिआये ते ते आपने मत को सिद्धान्त करतभये कि हमारही मत सिद्धान्त है परन्तु रक्षकके बिना जाने जहांते उपजे तहैं पुनि समाइ जातभये अर्थात् जा गर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनिगये जनन मरण नहीं छूटैहैं जब दूसर अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धान्त करि राख्यो तैं ते मत सब छूटिगये अथवा जहांते उपजेकहे जौने

लोकप्रकाश ते उपजे हैं तहैं समाने महाप्रलय में तब सब बिसरिगयो ॥ २ । ३ ॥

**बायें दहिने तजो बिकारै, निजुकै हरिपद गहिया ॥
कह कबीर गूंगे गुर खाया, पूछे सों का कहिया ४**

सो मन्त्रशास्त्र में जे वाममार्ग दक्षिणमार्ग हैं ते दोऊ बिकारई हैं तिनको दुहुनको छोड़िदेउ और हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकै कहे आपनमानिकै गहौ अथवा निजुकै कहे विशेषिकै तिनके पदको गहौ जो कहो उनको बताइदेउ वे कैसेहैं तो वेतौ मन बचन के परेहैं उनको कोई कैसे बताइसकै जो उनको जान्यो है ताको गूंगे कैसो गुरभयो है कछू कहिनहिंसकै है इशारहिते बतावे है वेदशास्त्र को तात्पर्य करिकै जो सज्जनलोग साहबको समुझावै हैं सो तात्पर्य वृत्तिही करिकै बतावै हैं ऐसे तुमहूं जो भजनकरौगे तो तुमहूं उनको जानि लेउगे कि ऐसेहैं ॥ ४ ॥

इति अड़तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३८ ॥

अथ उनतालीसवां शब्द ॥ ३९ ॥

ऐसे हरिसों जगत् लरतुहै । पण्डुर कतहूं गरुड़ धरतुहै १ मूस बिलारी कैसे हेतू । जम्बुक कर केहरिसों खेतू २ अचरजयक देखा संसारा । सोनहा खेद कुंजर असवारा ३ कह कबीर सुनो सन्तो भाई । यह सन्धी कोइ बिरले पाई ॥ ४ ॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पण्डुरकतहूं गरुड़धरतुहै १

जैसे पूर्ब कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत् लरतुहै कहे बिरोध करतुहै और जे उनके भक्त उनको बतावै हैं तिनके मत को खण्डन करै है सो हे मूढ़ ! पण्डुर कहे पनिहां पियरसर्प कहूं गरुड़को धरतु है जो डुण्डुभ पाठहोय तो डुण्डुभ पनिहां सर्प का नामहै सो रामोपासना गरुड़ है सो और मत जे सर्प हैं तिनको

कहां खण्डन कौन होइहै वही सबको खण्डन करनवारी है जो वाको रामोपासना को मत अच्छीतरहते जानो होइ है ॥ १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू। जम्बुक कर केहरि सों खेतू २

सो हे जीवो! तुम्हारो ज्ञान तौ मूस है और गुरुवालोगन को ज्ञान बिलारी है जे और और मत में लगावै हैं तुमको और और मत में लगाइकै खाइ लेइँगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो जम्बुक जो सियार सो केहरि जो सिंह है तासों खेत करैहै कहे लरैहै सो जम्बुक अज्ञान है सो सिंह जो तुम्हारो जीव सो लरैहै वह सिंह जीव कैसो है अज्ञानको नाश कै देनवारो है अर्थात् जब आत्मा को ज्ञान होइ है तब अज्ञान नाश ह्वै जाइहै ॥ २ ॥

अचरजयक देखासंसारा। सोनहाखेदकुंजर असवारा ३
कह कबीर सुनो सन्तो भाई। यह सन्धी कोइ बिरले पाई ४

सो हम यह बड़ो आश्चर्य देख्यो है सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवार को खेदै है सो नाना मतवारे जेहैं तेइ कुत्ते हैं ते कांउ कांउ कहे शास्त्रार्थ करिकै कुंजर के असवार जे हैं रामोपासनाके साधक तिनको खेदै हैं कहे उनसों वे कल नहीं पावैहैं यहां कुंजर मन है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदिये हैं और आप असवार हैं ३ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, भाई! तुम सुनौ मनते भिन्न ह्वैके साहब के मिलबे की जो है सन्धि भेद ताको कोई बिरला पाये है अर्थात् जबभर मन बनो रहै है तबभर वाको भूलिबेकी सन्धि बनीही रहै है मनते भिन्न ह्वै वाके भजन करिबेको उपाय कोई बिरला जानै है ॥ ४ ॥

इति उनतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३९ ॥

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४० ॥

पण्डित बाद बदौ सो झूठा। रामके कहे जगतगति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १ पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा

बुझाई । भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २ नरके संग सुवाहरि बोलै हरिप्रताप नहिं जानै । जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३ बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नामलिये का होई । धनके कहे धनिक जो हो तो निर्धन रहत न कोई ४ सांची प्रीति बिषय माया सों हरिभगतन की हासी । कह कबीर यक राम भजे बिन बांधे यमपुर जासी ॥ ५ ॥

पण्डित बाद बदौ सो भूठा ॥

राम के कहे जगत गति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १

सो हे पण्डितो ! जो बाद बदौ हौ सो भूठा है काहेते कि पण्डित तो वह कहावै है जाके सारासार बिचारिणी बुद्धि होइ है सो सारासार बिचारिणी बुद्धि तो तिहारे है नहीं पण्डितभर कहावो हौ काहेते कि सारशब्द को भूठा कहौहौ यह बाद बदिकै राम के कहे ते जो गति पावतो तौ खांड़ौ कहे मुखमीठ ह्वैजातो ॥ १ ॥

पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ॥
भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २
नरके संग सुवा हरिबोलै हरिप्रताप नहिं जानै ॥
जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३

जो पावक के कहे दाह पावतो तो जीभ जरिजाती और जल के कहे तृषा बुझाइ जाती और भोजनके कहेते भूख भाजिजाती तौ रामके कहेते दुनियौं तरि जाती २ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहै है और श्रीरामचन्द्र को प्रताप नहीं जानैहै काहेते कि जब कबहूं जङ्गल में उड़िजाय है तब राम की सुरति नहीं करै है ऐसे जो तुम रामनाम कहि हरिको प्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ॥ ३ ॥

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु, नामलिये का होई ॥
धनके कहे धनिक जो होतो, निरधन रहत न कोई ४

बिना देखे बिना स्पर्श किये नाम लिये कहा होइ है अर्थात् जो कोई दूर होइ और देखै न स्पर्श न होइ और जो वाको नाम लेइ तौ का जानि लेइहै नहीं जानै है धन के कहेते कोई धनिक ह्वै जातो तो निर्द्धनी कोई न होतो ऐसे नामलिये जो मुक्ति होत तो सब मुक्त होइजात सो हे पण्डितो! तुम ऐसे असंगत दृष्टान्त दैकै यह बाद बदौ हौ सो झूठा है काहेते कि रामनाम तो मन वचन के परे है और ये सब मन वचनमें आवै हैं और वह राम नाम साहबके दियेते स्फुरित होइ है यहै रामनाम जपेते और ये सब अनित्य ह्वैजाइ हैं॥ ४॥

सांची प्रीति बिषय माया सों, हरिभक्तन की हासी॥
कह कबीर यक रामभजे बिनु, बांधे यमपुर जासी ५

सो कबीरजी कहैहैं कि हे नास्तिक, पण्डितो! बिषय माया सों सांची प्रीति करौहौ और ऐसे ऐसे कुवाद बदिकै हरिभक्तन की हासी करौहौ नामरूप लीलाधाम को खण्डन करिकै सो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नाम के बिना भजन किये बांधे मोगरनकी मार सहत यमपुरहीको जाहुगे जे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते बिमुख हैं ते सब लोकनमा निन्दित हैं तामें प्रमाण "यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति। निन्दितस्सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते"॥ ५॥

इति चालीसवां शब्द समाप्तम्॥ ४०॥

अथ इकतालीसवां शब्द॥ ४१॥

पण्डित देखौ मनमो जानी। कहुधौं छूति कहांते उपजी तबहिं छूति तुम मानी १ नादे बिन्दु रुधिर यकसंगै घटहीमें घट सज्जै। अष्टकमलकी पुहुमी आई यह छुति कहां उपज्जै २ लख-चौरासी बहुत बासना सो सब सरिभो माटी। एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेतधौं काटी ३ छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन

छूतिहि जग उपजाया । कह कबीर ते छूति बिबर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

पण्डित देखो मनमोजानी ॥

कहुधौं छूति कहांते उपजी, तबहिं छूति तुम मानी १

हे पण्डित ! तुम मन में जानिकै कहे बिचारिकै देखौ तो और कहौ तो यह छूति कहांते उपजी है जो छूति तुम अपने मनमें मान्यो है ॥ १ ॥

नादे बिन्दु रुधिर यक संगै, घटही में घटसज्जै ॥
अष्टकमलकी पुहुमी आई, यह छुति कहां उपज्जै २

नाद ते पवन बिन्दुते बीर्य रुधिर के संगते घटहीमें घट सजै है बुद्बुदा होइहै सो अष्टदल को कमलहै तामें अटकिकै लरिका होइ है सो पुष्ट परै है सो लरिकौ के वाही भांति को अष्टदलकमल होइहै तौने अष्टदलकमल के दलदल में वाको मन फिरत रहैहै ताते तैसे नाना कर्म में लगिकै नाना स्वभाव वाके होइ हैं और जहां जहां की बासना करिकै मरै है तौनी तौनी योनि में प्राप्त होइहै एकै जीव बासनन करिकै सर्वत्र होइहैं यह छूति कहां ते उपजैहै ॥ २ ॥

लखचौरासी बहुत बासना, सो सब सरिभो माटी ॥
एकै पाट सकल बैठारे, सींचि लेत धौं काटी ३

यह जीव बहुत बासमन में परिकै चौरासीलाख योनिन में भटकैहै शरीर सरिकै माटी ह्वै जाय है एकै पाट में कहे जगत् में नाना बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करतभई अरु ये शरीर सब माटिही आइँ और माटी में मिलि जाइँगे और जीव सबके एकही है और एकही पाटमें बैठेहैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेत हैं का जल सींचे छूति मिटिजात है नहीं मिटै ॥ ३ ॥

छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन, छूतिहि जग उपजाया॥
कह कबीर ते छूति बिबर्जित, जाके संग न माया ४

सो वही छूति जो है बासना सो जब उठी तब जेंवन कियो और वही बासना उठी तब अँचयो और कहांलौं कहैं वही बासना ते जगत् उपज्यो है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि जाके संग माया नहीं है सोई बासनारूपी छूतिते बिबर्जितहै सो हे पण्डित! माया को जो तुम छोड़्यो नहीं छूति तिहारे भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ बड़ी छूति कियोहै बासनैते चित्तकी वृत्ति उठैहै तब यह मानैहै कि हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं॥ ४॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्तम्॥ ४१॥

अथ बयालीसवां शब्द॥ ४२॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई। जाते आवागमन नशाई॥ अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १ उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पतालके माहे। बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं नरकजात धौं काहे २ अनजानेको नरक स्वर्ग है, हरिजानेको नाहीं। जेहि डरको सबलोग डरतहैं, सो डर हमरे नाहीं ३ पाप पुण्य की शङ्कानाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं॥ ४॥

ते बासना माया के योग ते होइ हैं सो माया जौनी प्रकार ते छूटैहै सो उपाय कहैहैं अरु आचार को वहां खण्डन करि आये सो अब जौनी दशा में आचार नहीं है सो कहैहैं॥

पण्डितशोधिकहहुसमुझाई। जाते आवागमन नशाई॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पताल के माहे॥
बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं, नरकजात धौं काहे २

हे पण्डित! तुमतो सारासार को बिचार करौ हौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाय कहो जाते यह जीवात्माको आवागमन नशाइ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये फल कौनी दिशा में रहै हैं १ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहां सर्वत्र मैं ढूंढ़िडार्‌यो परन्तु बिना गोपाल कहूं ठौर न देख्यो गोपालकहे गो जो इन्द्रिय जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहींको सर्वत्र देखत भयो विषय इन्द्रिनते देवता मनते मन जीव ते जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ते चैतन्य है सो जीव उनको चित् शरीर अरु माया काल कर्म स्वभाव उनको अचित् शरीर है तेहिते बिना गोपाल कहूं ठौर नहीं है जीव नरक स्वर्ग जाय है सो अब बतावै हैं ॥ २ ॥

अनजाने को नरक स्वर्ग है, हरिजाने को नाहीं ॥
जेहि डरको सबलोग डरत हैं, सो डर हमरे नाहीं ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनजाने को नरक स्वर्ग है कहे जो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको न स्वर्ग है न नरक है और जो कोई हरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरक है न स्वर्ग है जौन डर को सबलोग डराय हैं माया ब्रह्म नरक स्वर्गादिकनको तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबैको देखैहैं ॥ ३ ॥

पाप पुण्यकी शङ्का नाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं ४

और न उनको पाप पुण्य की शङ्का है काहेते कि जो कोई बद्ध होइ सो न मुक्त होइ तेहिते न वे बद्धही हैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण (श्रीभागवते) " बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः । गुणस्य मायामूलत्वान्न मे मोक्षो न बन्धनम् " हम तो सर्वत्र साहबही को देखै हैं वे नरक स्वर्ग को नहीं जाइ हैं सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो ऐसी भावना जे नर करै हैं

ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के अंश हैं सो तिनहीं के स्थान में जाइ हैं ॥ ४ ॥

इति बयालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तेंतालीसवाँ शब्द ॥ ४३ ॥

पण्डित मिथ्या करो बिचारा। ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूल स्थूल पवन नहिं पावक, रविशशि धरणि न नीरा। ज्योति स्वरूपी काल न उहँवां, बचनन आहि शरीरा २ कर्म धर्म कछुवो नहिं उहँवां, ना कछु मन्त्र न पूजा। संयम सहित भाव नहिंएकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहँवां, ना ह्वां भेद बिचारा। हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरु जाके नाहीं, सो दूजा कि अकेला। कह कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ५ ॥

पण्डित मिथ्या करो बिचारा। ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूलस्थूलपवन नहिंपावक, रविशशिधरणि न नीरा। ज्योतिस्वरूपी काल न उहँवां, बचन न आहिशरीरा २ कर्म धर्म कछुवोनहिं उहँवां, ना कछु मन्त्र न पूजा। संयमसहित भावनहिंएकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहँवां, नाह्वांभेदबिचारा। हरिहर ब्रह्मनहीं शिवशक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरुजाकेनाहीं, सो दूजा कि अकेला। कहकबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हमचेला ॥ ५ ॥

हे पण्डित! तुमतौ वह ब्रह्म को मिथ्यै बिचार करो हो जो यह पद में वर्णन करिआये सो वहमें एकउ नहीं है वह तो धोख ही है सो कबीरजी कहै हैं कि सो वह आत्मा ते दूसर है कि अकेल वह ब्रह्महै जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञानभयेपर समुझै

कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको हौं वह ब्रह्म धोखा है सोई गुरू है मैं चेलाहौं काहेते कि मोहिं तो धोखई नहीं भयो है जो आपनेको ब्रह्ममानिकै और साहबको समुझै है और वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरू है और मैं वाको चेला हौं अर्थात् सोई मोसों अधिक है काहेते कि वह धोखा में परिकै निकस्यो है यह प्रशंसा कियो ॥ ५ ॥

इति तेंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चवालीसवां शब्द ॥ ४४ ॥

बूझहु पण्डित करहु बिचारी पुरुष अहै की नारी १ ब्राह्मण के घर ब्रह्मणी होती योगी के घर चेली । कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलिमें रहैअकेली २ बर नहिं वरै ब्याह नहिं करई पुत्र जन्म हो निहारी । कारे मूड़े यकनहिं छांड़ै अबहूं आदिकुवांरी३ नायिक न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै । कह कबीर वे युगयुग जीवैं जातिपांति कुल खोवै ॥ ४ ॥

यह मायाही सब जगत्के जीवनको भरमायो है सो कहै हैं ॥

बूझहु पण्डित करहु बिचारी पुरुष अहै की नारी १
ब्राह्मण के घर ब्रह्मणी होती योगी के घर चेली ॥
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलि में रहै अकेली २

सो हे पण्डित! तुम बूझौ व बिचारिकै कामकरो यह माया पुरुषरूप है कि नारीरूप है यह माया सबको लपेटिलियो है १ विद्या माया ब्राह्मण के तौ ब्राह्मणी ह्वैकै बैठीहै ब्राह्मण कहैहैं कि हम ब्रह्म को जानै हैं "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" अरु घरमें ब्राह्मणी बैठायेरहैहैं वाको स्त्रीको भाव करैहैं बेटीसों बेटीको भाव बहिनी सों भगिनीको भाव मानैहैं सो कहो तो ब्रह्मभाव कबभयो जो कहो जिनके स्त्री नहीं है तिनको तो ब्रह्मभाव ठीक है तो उनके ब्रह्मजानपनीरूप ब्राह्मणी की गरूरी बनी है संयोगिन के तो

चेली ह्वै बैठी है और योगिनके योगीरूप ह्वै बैठीहै योगी महामुद्रा साधन करिकै वीर्य की उलटी गति कैदेइहैं सो जब वृद्ध भये तब षोड़श कन्या एक घर में रातिभरि राखिकै संभोग करिकै उनको वीर्य लिंगद्वारते खैंचिकै कपार में चढ़ाइ लेइ हैं तब आप तरुण ह्वै जाइहैं वे षोड़शौ कन्या मरि जाइहैं एतो बड़ो अनर्थ करैहैं जे प्राणायाम करिकै प्राण चढ़ाय लैजाइहैं तिनके कुण्डलिनी ह्वै बैठीहैं औ मुसल्माननके जब बिवाह होइ है तब निगाह सों निगाह पढ़िकै कलिमा पढ़िकै तुरुकिनी होइ है और मुसल्मान होइहै सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मण में स्त्रीके साथ कर्मरूप ह्वै कै और योगिनके दशमुद्रारूप ह्वैकै और मुसल्मानन में निगाह कलमा आदिदेकै सरारूप ह्वैकै अकेली मायही रहत भई साहबके काम ये एको नहीं हैं ॥ २ ॥

बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई, पुत्रजन्म हो निहारी ॥
कारे मूड़े यक नहिं छांड़े, अबहूं आदि कुवांरी ३

बर कहे श्रेष्ठ जे हैं साहबके जाननवारे भक्त तिनको नहीं बर्‍यो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या ये दोनों को नहीं है अरु खसम ब्रह्म है सो ब्याह नहीं करै है काहेते कि धोखा की भँवरी नहीं परै और माया को पुत्र जगत् है जाको गर्भधारण करै है सो कारे कहे जिन के शिखा है हिन्दूलोग और मूड़े कहे जिनके शिखा नहीं है मुसल्मान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़्यो अबहूं भर वह आदिकहे आद्या जो माया है सो कुवांरी ही बनी है अर्थात् हिन्दू मुसल्मान को आपही बशकैलियो है इनके बश नहीं भई ॥ ३ ॥

मायिक न रहै जाइ न ससुरे, साईं संग न सोवै ॥
कह कबीर वे युग युग जीवैं, जाति पांति कुल खोवै ४

अरु मायिक जो है शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्तिभई है माया तहां तो रहतही नहीं है वहां तो जीव के साहबको अज्ञानरूप

कारणमात्र रह्यो है और सासुर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म जहां जीव मान्यो है कि ब्रह्म मैंहीं हौं सो धोखा है तहां नहीं जाइहै और वही साईं कहे पति है काहेते कि वही माया शबलित होइ है तब जगत् होइ है ताके सङ्ग नहीं सोवै है काहेते कि वह तो धोखई है और वह माया धोखा है जो कछु वस्तु होइ तब न वाके संग सोवै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब जगत्को माया लपेटि लियो है जे जीव साहब और साहब की जाति आपको मानै हैं और अपनी जातिपांति कुल खोवै हैं सोई माया ते बचे हैं और युग युग जियै हैं और सबको माया खाइही लियो है अर्थात् उनहीं को जनन मरण नहीं होयहै ॥ ४ ॥

इति चवालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवां शब्द ॥ ४५ ॥

कौन मुवा कहु पण्डितजना। सो समुझाय कहौ मोहिं सना १ मूये ब्रह्मा विष्णु महेशा । पार्वतीसुत मुये गणेशा २ मूये चन्द्र मुये रबि केता । मुये हनुमत जिन्ह बांधी सेता ३ मूये कृष्ण मुये करतारा । यक न मुवा जो सिरजनहारा ४ कहै कबीर मुवा नहिं सोई । जाको आवागमन न होई ॥ ५ ॥

कौनमुवाकहु पण्डितजना।सो समुझाय कहौमोहिंसना १
मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा । पार्बतीसुत मुये गणेशा २
मूये चन्द्र मुये रबि केता । मुये हनुमतजिन्हबांधीसेता३
मूये कृष्ण मुये करतारा । यकनमुवा जो सिरजनहारा४
कहै कबीर मुवा नहिं सोई । जाको आवागमन न होई५

जिनको जिनको या पदमें बर्णन करिआये ते ते सब महाप्रलय में लीन होइहैं एक कहे सम अधिकते रहित जो साहब नहीं मुवा और सिरजनहार जो समष्टिजीव सो नहीं मुवा है अर्थात् सो रहि जाय है और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावै हैं जीवतो

मरै नहीं है शरीरही मरैहै सो जे जे देवतनको मुवा कहिआये ते जौन रूप ते साहब के समीपरहे हैं सो स्वरूप उनको नहीं मुवै है पार्षद शरीर ते बनेरहे हैं यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआये हैं ॥ १ । ५ ॥

इति पैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४५ ॥

अथ छियालीसवां शब्द ॥ ४६ ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई। यक मरमुये अन्न नहिं खाई। यक मर सीझरसोई १ करिअसनानातिलककरि बैठे, नौगुणकांध जनेऊ। हांड़ीहाड़हाड़थारीमुख, अबषटकर्मबनेऊ २ धरम कथै जहँजीवबधै, तहँअकरमकरमेरेभाई। जोतोहरेकोब्राह्मणकहिये, तौकेहिकहिय कसाई ३ कहै कबीर सुनोहोसन्तो, भरमभूलिदुनिआई। अपरमपार पारपुरुषोत्तम, यह गति बिरलैपाई ॥ ४ ॥

अब जे षट्कर्मी पण्डितलोग बलिदान करिकै मांस खाइ हैं तिनको कहै हैं ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई ॥

यक मरमुये अन्न नहिं खाई, यक मर सीझ रसोई १ करि असनान तिलक करि बैठे, नौगुण कांध जनेऊ॥ हांड़ी हाड़ हाड़ थारीमुख, अब षटकर्म बनेऊ २

हे पण्डित! एक बड़ो आश्चर्य होइ है एक मरैहै ताके मरेते कोई अन्न नहीं खाय है अरु वाके छुयेते अशुद्ध ह्वै जाइहै अरु एक जीवको मारिलैआवै हैं तौने मुर्दाको रसोई में सिझवै हैं १ और नौगुणको जनेऊ कांधे में डारिकै स्नानकरिकै बड़ो बेदना ऐसो तिलक दैकै बैठेहैं सो कबीरजी कूटकरै हैं कि अब षट्कर्म बनि पर्‍यो कि हाड़ है थारी में हाड़ है मुखमें हाड़ है वही षट्कर्म ब्राह्मणके ये हैं पढ़ै पढ़ावै दानदेइ लेइ यज्ञ करै यज्ञ करावै इहां

ये षट्कर्म करै हैं एक हँड़िया दूजे हाड़ तीजे थारी चौथे हाड़ पाँचौ मुख छठों हाड़ अब ये षट्कर्म बनिपर्‌यो ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव बधै, तहँ अकरम कर मेरे भाई ॥
जो तोहरे को ब्राह्मण कहिये, तौ केहि कहिय कसाई ३
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, भरम भूलि दुनिआई ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, यह गति बिरलै पाई ४

जहां धर्मको कथै है कि या यज्ञ है देवपूजन पितर श्राद्ध है या धर्म है तहँ जीवनको मारै है सो हे भाइउ ! जो करिबेलायक कर्म नहीं है सोऊ करै हैं ऐसे जे तुम्हारे कर्म हैं तिनको तो ब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे कसाई काको कहैंगे ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलिरही है अपरमकहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्म है ताहूते पारपुरुष समष्टिजीव हैं जाके अनुभवते ब्रह्म भयो है ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्र हैं काहेते कि वे बिभु सर्वज्ञ हैं और जीव अणु अल्पज्ञ है ते श्रीरामचन्द्र जीकी जो यह गति है ज्ञान सो कोई बिरलै पाई है अर्थात् कोई बिरला जान्यो है कि सबते पर साहबई है उनते सम औ अधिक कोई नहीं है तामें प्रमाण " सकारणकारणकारणाधिपो नचास्य कश्चिज्जनिता नचाधिपः । न तस्य कार्यं करणं च विद्यते नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते " (इति श्वेताश्वतरोपनिषदि) "समो न विद्यतेतस्यविशिष्टः कुत एव तु " इतिबाल्मीकीये) और कबीरौजीको प्रमाण " साहब कहिये एकको, दूजा कहोनजाइ । दूजा साहब जो कहैं, बादविडम्बनआइ ॥ जननमरणतेरहित है, मेरा साहब सोय । मैं बलिहारी पीउकी, जिन सिरजा सब कोय " ॥ ४ ॥

इति छियालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४६ ॥

अथ सैंतालीसवां शब्द ॥ ४७ ॥

पण्डितबूझिपियोतुमपानी। जामाटीके घरमें बैठे, तामें सृष्टि समानी १ छपनकोटि यादव जहँबिनशे, मुनिजनसहसअठासी। परगपरगपैगम्बरगाड़े, तेसरिमाटीमासी २ मत्स्यकच्छघरियार बियाने, रुधिरनीरजलभरिया। नदियानीरनरकबहिआवै, पशु मानुष सबसरिया ३ हाड़झरीझरि गूदगली गालि, दूध कहांते आवै। सो तुम पाँड़े जेवनबैठे, मटिअहिछूतिलगावै ४ वेदकिताब छोड़िदिहुपांड़े, ई सबमनकेकर्मा। कहै कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

जे दम्भकरिकै बड़ो आचार करैहैं जिनको चिद्अचिद् साहब को रूप है यह बुद्धि नहीं है ॥

पण्डित बूझि पियो तुम पानी ॥

जा माटी के घर में बैठे, तामें सृष्टि समानी १
छपनकोटि यादव जहँ बिनशे, मुनिजन सहस अठासी॥
परग परग पैगम्बर गाड़े, ते सरि माटी मासी २

सो हे पण्डित! ज्ञानतो तिहारे है नहीं आचार करौहो सो तुम कहां को पानी पियौ हो भला बूझिकैकहे बिचारिकै तौ पानी पियौ जौने माटी के घरमें अर्थात् पृथ्वी में तुम बैठेहौ तौने में सब सृष्टि समाइरहीहै १ और जौनी पृथ्वी में छप्पनकोटि यादव और अठासी हज़ार मुनि ये उपलक्षण हैं अर्थात् सब जीवन के शरीर वही माटीमें मिलि मिलिकै सरिगये अरु परग परग में पैग़म्बर गाड़े हैं ते सब सरिकै माटी ह्वैरहेहैं तेहिते माटी मासी है कहे मांस में मिलिरही है और माटी मासी कहे मधुकैटभके मांस की आइ ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया ॥
नदिया नीर नरक बहि आवै, पशु मानुष सब सरिया ३

हाड़ झरीझरि गूद गली गलि, दूध कहांते आवै ॥
सो तुम पांड़े जेंवन बैठे, मटि अहि छूति लगावे ४

अरु नदिया के जल में मत्स्य कच्छ घरियार बियाने कहे होयहैं और रुधिर नीर मल इत्यादिक वही नदिया के जल में मिलिजाइ है और पशु मानुष जे सरिजाय हैं ते वही पानी पियो हो और आचार करोहो ३ दूधो हाड़ते झरि झरि गूदते गलि गलिकै लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैकै हे पण्डित! तुम जेंवन बैठौहौ और माटी जो मांस है ताको छूति लगावो हौ कि मांस बड़ो अपवित्र है याको जे खाइ हैं ते बड़ो निषिद्धकर्म करै हैं सो कहो तो वह दूध मांसते कैसे भिन्न है ॥ ४ ॥

वेद किताब छोड़ि दिहु पांड़े, ई सब मन के कर्मा ॥
कहै कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ५

सो हे पांड़े ! शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जाने जाइहैं ते वेद किताबको तुम छोड़िदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करौ हौ ते तौ सब तुम्हारे मन के कर्म हैं आपने मनहींते ये सब तुम बनाइ लियो है इनते तुम न निबहौगे श्रीकबीरजी काकुकैरहैं कि, हे पांड़े ! बिचारिकै देखौ ये सब तुम्हारे धर्म हैं अर्थात् नहीं हैं तुमतौ साहबकेहौ अथवा कबीरजी कहै हैं एते सब कर्म करौहौ अपने मनके बनाये और वेद किताबौ के कहेते ये सब तुम्हारे धर्म कहे तुम्हारे शरीरैमाहैं तेहिते शरीरते भिन्न ह्वैकै आपने स्वरूप को जानौगे तब आपने सांचे कर्मन को जानौगे यह व्यंग्य है ॥ ५ ॥

इति सैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥ ४८ ॥

पण्डित देखो हृदयबिचारी । कौनपुरुषकोनारी १ सहजसमाना घटघटबोले, वाको चरितअनूपा । वाकोनामकहाकहिलीजे, ना वह बरण न रूपा २ तैं मैं काहकरै नरबौरे, क्यातेरा क्यामेरा ।

रामखोदायशक्तिशिवएकै, कहुधौंकाहिनिवेरा ३ वेदपुराणकुरान-
कितेबा, नानाभांति बखानी । हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकल
काहु न जानी ४ छःदरशन में जो परवाना, तासुनाम मनमाना ।
कह कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सबखलकसयाना ॥ ५ ॥

पण्डित देखो हृदय बिचारी । कौन पुरुष को नारी १
सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा ॥
वाको नाम कहा कहि लीजै, ना वह बरण न रूपा २

हे पण्डित ! तुमतौ सारासारको बिचार करौहौ हृदय में बि-
चारिकै देखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मा तो न पुरुष
न नारी है १ जो कहो घट घट में सहजजीव ब्रह्म समाइ रह्यो है
वाको चरित्र अनूप है सोई हमारो स्वरूप है तो वाको नाम कहां
कहिलीजै वाको तो न वर्ण है न रूपहै वह तो धोखा है ॥ २ ॥

तैं मैं काह करै नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा ॥
राम खोदाय शक्ति शिव एकै, कहुधौं काहि निवेरा ३

और जो तैं मैं कहौहौ कि तैं मैं आह्यो मैं तैं आह्यो एकही
ब्रह्म तो है तैं मैं कहाकरै है विचारिदेखु तौ क्या तेरा है क्या मेरा है
सब साहबका तौ है जो तैं साहब होइ तब न तेरा होइ रामखोदाय
और शक्ति शिव जे हैं तिनमें कहुधौं तैं काको निवेरा कियो है कि
एक यह जगत्को मालिक है और वही मैं हौं अर्थात् इनकी सा-
मर्थ्य तोमें एकऊ नहीं देखि परैहै तातें इनमें तैं कोई नहींहै ॥३॥

वेद पुराण कुरान कितेबा, नाना भांति बखानी ॥
हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकलकाहु न जानी ४

वही साहबको नाना नामलैकै कहै हैं सो वेद पुराण कुरान
किताबमें वही साहबको सबते परे नानाभांतिते नाना नाम लैकै
वर्णन कियो है यही हेतुते हिन्दू, तुरुक, जैनि, योगी एकल कहे
एक नामकरिकै कोई नहीं जान्यो कि एक यही सिद्धान्तहै यही

सबको मालिक है अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपाय ते मैं मन वचनके परे साहबको जान्यो है सो कोई नहीं जान्यो॥४॥

छः दरशन में जे परवाना, तासु नाम मन माना ॥
कह कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सब खलक सयाना ५

छइउ दर्शन में अरु जेते सब हिन्दू तुरुक आदि वर्णन करि आये तिन सबमें जौने धोखाब्रह्म को प्रमाण परे है तौनेही को नाम सब के मन में मानैहै कहत तौ मन बचनके परे हैं परन्तु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाही को सब मानै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि सब खलक सयाना है काहेते कि कहते तो यह बात हैं कि वह तो मन वचन में आवतै नहीं है और जे मन वचन में आवै हैं तिनहीं में फिरि लागै है ताते हमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहै हैं कि साहब आपही ते कृपा करिकै अनिर्वचनीयं रामनाम स्फुरित करि देइहैं ताहीके मिलन को उपाय बतावै हैं यह काकु करै हैं ॥ ५ ॥

इति अड़तालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवां शब्द ॥ ४९ ॥

बुझ बुझ पण्डित पद निर्वाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १ नीचऊँचपर्वतठेलानभीत । बिनगायनतहँवांउठगीत २ ओसन प्यासमँदिरनहिंजहँवां । सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३ नितैअमावस नित संक्रांति । नितनितनवग्रहबैठेपांति ४ मैंतोहिंपूछौंपण्डित जना । हृदयाग्रहणलागुकेहिघना ५ कहकबीरयतनौनहिंजान । कौनशब्दगुरुलागाकान ॥ ६ ॥

अब योगिनको कहै हैं ॥

बुझबुझपण्डितपदनिरबाना।सांझपरेकहँवांबसभाना १
नीचऊँचपर्वत ठेलानभीत । बिनगायनतहँवांउठगीत२

हे पण्डित ! तुम वह निर्वाणपद को बूझो तो जो त्रिकुटी में

ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखौ हौ सो सूर्य साँझ परे कहे जब शरीर छूटिगयो तब कहां बसैहै १ नीचेते ऊंचेको कहे कुण्डलिनीतेगैबगुफामें जब आत्मा जाइ है तौने पर्वत में न ठेला है न भीति है और बिना गायन तहँवां गीतउठैहै कहे अनहदकी ध्वनि सुनिपरै है ॥ २ ॥

ओसनप्यासमँदिरनहिंजहँवां। सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३

ओस जो वहां परै है कहे अमृत जो वहां झरै है ताको पान करिकै न प्यास ह्वैजाइहै कहे पियास नहीं लगै है अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो मानि राखे हैं कि अमृत पीकै हम अमर ह्वैजाइँगे सो अमर न होउगे और जो गैबगुफा—पर्वतमें घर मानि राखे हैं सो वहां तेरो मंदिर कहे घर नहीं है अर्थात् वहां तो शून्य है तहां सहस्रदल में धेनु दुहावै हैं कहे धेनु जो है गायत्री ताको अर्थ जो है वह दूध ज्ञानस्वरूप ब्रह्म ताको विचार करै हैं आपने को ब्रह्म मानै हैं जब शरीरसरिजाइहै तब गैबगुफो जरिजाइहै और फिरि शरीर धारणकरैहैं ॥ ३ ॥

नितैअमावसनितसंक्रांति। नितनितनवग्रहबैठेपांति ४

और तहां नित अमावसरहैहै चन्द्रमा सूर्यन के ओट ह्वैजाइ सो अमावस कहावैहै सो यहांते आत्मा जाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीन ह्वै जाइ है ताते नित अमावस रहै है और फिरि जब समाधि उतरी तब शङ्कामें परिगयो वही वाको नित संक्रान्ति है व नित नवग्रह पांति जो है दुवार जामें ऐसो जो है ग्रह शरीर तौने की पांति बैठैहै कहे इतना योग साधैहै तऊ शरीर धारण करिबो नहीं छूटै है ॥ ४ ॥

मैंतोहिंपूछौं पण्डितजना। हृदयाग्रहणलागुक्यहिखना५
कहकबीरइतनौनहिंजान। कौन शब्द गुरुलागाकान ६

हे पण्डित! तुमसों हम पूछै हैं कि जब समाधि उतरिआवैहै तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइहै औ निर्बाणपद कहतही

हौ सो निर्बाणपद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते और कैसे नाना शरीर पावते सो देखतेहौ बूझते नहीं हौ यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमा को कब ग्रहणकियो ५ श्रीकबीरजी कहै हैं कि इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीर के साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीर के साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरे कान में लागिकै गुरुवालोग कौन सो हंसशब्द को उपदेश कियो है जाते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को भूलि गये ॥ ६ ॥

इति उनचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ४६ ॥

अथ पचासवां शब्द ॥ ५० ॥

बुझबुझपण्डितबिरवा न होई । अधबस पुरुष अधाबसजोई १ बिरवा एक सकल संसाला । स्वर्ग शीश जर गयल पताला २ बारह पखुरी चौबिस पाता । घनबरोह लागी चहुँघाता ३ फलैनफुलै वाकिहै बानी । रैनिदिवस बिकारचुवपानी ४ कहकबीरकछु अछलोन जहिया । हरिबिरवाप्रतिपालत तहिया ॥ ५ ॥

बुझबुझ पण्डितबिरवा न होई । अधबसपुरुषअधाबसजोई १
बिरवाएक सकलसंसाला । स्वर्गशीशजरगयलपताला २

हे पण्डित! यह संसाररूपी वृक्षको जो तैं बूझिराखेहै कहे मानि राखे है तैं बूझतौ जितने विचार होइहैं तिनको यह मिथ्याही है हरिके चिद्अचिद्रूप ते सत्य है यह संसारवृक्ष आधा पुरुष है आधा प्रकृति है अर्थात् चित्पुरुष जीव और अचित् मायादिक इनहीते सम्पूर्ण जगत्है १ पुनि कैसो है संसाररूपी बिरवा याको स्वर्ग शीश कहे ब्रह्माण्ड को जो खपराहै सो शीशहै अरु याकी जर पाताल में गई है ॥ २ ॥

बारहपखुरीचौबिसपाता । घनबरोह लागी चहुँघाता ३
फलैनफुलैवाकिहैबानी । रैनिदिवस बिकार चुव पानी ४

व बारहमहीना जे हैं ते बारै पंखुरी हैं अर्थात् काल और चौबिस तत्त्व वाके चौबिस पात हैं और घन कहे नानाकर्मनकी बासना तेई घनबरोह चारोंओर लगी हैं ३ या संसाररूपी वृक्ष साहबको ज्ञानरूप फल नहीं फूलै और साहबको भक्तिरूप फल नहीं लगै है या संसार के बाहर भये ते होय है और रातिदिन बिकाररूप पानी चुवैहै ॥ ४ ॥

कहकबीरकछुअछलोनजहिया।हरिबिरवाप्रतिपालततहिया ५

सो कबीरजी कहै हैं कि जहां हरि परमपुरुष श्रीरामचन्द्र जाके अन्तःकरण में भागवतधर्मरूपी बिरवनकी बाग़ प्रतिपालै हैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छो नहीं है व्यंग यह है कि माली जो होइहै सो कांटावाला पेड़निष्काम अलग कैदेइहै इहां हरि संसाररूपी बिरवा अलग कैदेइ है भागवतधर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी रेखता में कह्यो ॥ धर्म की बाग फुलवारि फूलीरही, शीलसंतोष बहुतकसोहाई । भक्तिका फूल कोउसंतमाथेधरै, ज्ञानमतभेदसतगुरुलखाई ॥ बिबेक बिचारसोइबागदेखनचले, प्रेमफलपाइटोरैचखाई । पराहै स्वाद जब और भावैनहीं, तजैगाप्राण की बहवई ॥ ५ ॥

इति पचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवां शब्द ॥ ५१ ॥

बुझबुझ पण्डितमनचितलाय । कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १ खनउबैखनडुबैखनअवगाह । रतननमिलैपाव नहिं थाह २ नदिया नाहिंसरसबहैनीर । मच्छनमरैकेवटरहैतीर ३ कह कबीर यह मन का धोखा । बैठारहैचलाचहचोखा ॥ ४ ॥

बुझबुझपण्डितमनचितलाय।कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १

हे पण्डित ! सारासारके बिचार करनवाले तेतो बिवेकी कहावै हैं चित्तलगाइकै यह मनको बूझि तौ कबहूं भरलकहे कबहूंतो तैं

आपनेको मानिलेइहै कि मैंही ब्रह्म हौं आनन्दते भरिजाय है औ कबहूं वह ज्ञान बहिजाय है तब सुखाइजाइहै अर्थात् वह आनन्द नहीं रहिजाइहै ॥ १ ॥

खनउवैखनडुवैखनअवगाह।रतननमिलैपावनहिंथाह२ नदियानाहिंसरसबहैनीर । मच्छ न मरै केवट रहै तीर३

तब क्षण में संसार ते मन ऊबि उठैहै कहे वैराग्य ह्वै आवै है और क्षण में वही मनरूपी नदी हिलै है बूड़िजाय है अर्थात् संसार के विषय में बूड़िजाय है और क्षण में अवगाह है कहे नाना मत में बिचार करैहै कि संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदी की थाह नहीं पावै है तेहिते रत्न जो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है विचारही करत रहिजाय है २ सो मनरूपी नदिया है नहीं जो तैं बिचार करै तू तो मनके बाहरहै परन्तु सरसनीर सङ्कल्पबनै है अब मच्छको मारनवालो केवट ज्ञान तीर में बनै है परन्तु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरै हैं॥ ३ ॥

कहकबीर यहमनकाधोखा । बैठा रहै चलाचहचोखा ४

सो कबीरजी कहै हैं कि नानामत में परिकै संसार छूटिवेको नहीं उपाय करौहौ व चोखे कहे नीके चला चाहौ हौ परन्तु हौ बैठे कहे साहबके मिलिबे को उपाय ये एकऊ नहीं हैं काहेते कि पश्चिम को ग्राम नगीचऊ होइ और तहां जाइबो चाहै व जस जस पूर्वको मेहनत करिकै मंज़िलकरै तौ तस तस दूरिही परतु जाइहै यह संसार मनको धोखा मिथ्या है सो मनते भिन्न ह्वैकै साहबमें लगै तबहीं साहब मिलैंगे ॥ ४ ॥

इति इक्यावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवां शब्द ॥ ५२ ॥

बूझिलीजै ब्रह्मज्ञानी । घोरि घोरि वर्षा बरषावै, परियाबुन्द न पानी १ चींटीकेपगहस्तीबांधे, छेरीबीगैखायो । उदधिमाहँते

निकसिछांछरी, चौड़ेगेहकरायो २ मेढुकसर्परहैयकसंगै, बिल्लीश्वान बियाही। नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अदभुत कथोनजाही ३ संशयमिरगालनबनघेरे, पारथबानामेलै। सायरजरैसकलबनडाहै, मच्छअहेराखेलै ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै। बिनु पंखै उड़िजाहिअकाशै, जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी ॥

घोरि घोरि बर्षा बरषावै, परिया बुन्द न पानी १

हे ब्रह्मज्ञानी ! आप बूझिये तौ घोरि घोरि कहे नये नये ग्रन्थन को बनाइकै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडास्यो कि एक ही ब्रह्म है वही वाणी शिष्यनके श्रवण में बर्षा ऐसो बर्षावो हौ परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानी को बुन्दहू न उनके पस्यो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल ह्वैरह्यो है ॥ १ ॥

चींटी के पग हस्ती बाँधे, छेरी बीगै खायो ॥
उदधिमाहँ ते निकसि छांछरी, चौड़े गेह करायो २

चींटी कहिये बुद्धि को काहेते कि सूक्ष्म होइ है कुशाग्रवर्ती शास्त्र में कहै हैं ताके पाइँ में मतङ्गरूप जो मन है ताको बांधि दियो मन बड़ा है व दुर्वारमत है याते हाथी कह्यो तब छेरी जो है माया सो बीगा जो है जीव ताको खाइलियो जीवको बीगा काहेते कह्यो कि जो जीव आपनेस्वरूप को जानै तौ छेरी जो है माया ताको नाशकैदेइ सो छेरी मायही बीगा जीवको आपने पेट में डारिलियो अरु छेरी माया को कहै हैं तामें प्रमाण " अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णा " इत्यादि सो लोकप्रकाश जो उदधि तहां ते निकरिकै चौड़ी छांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर माया ते बनवायो अर्थात् संसारी ह्वै गयो ॥ २ ॥

मेढुक सर्प रहै इकसंगै, बिल्ली श्वान बियाही ॥

नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अदभुत कथो न जाही ३

वह कैसो संसार है जहां मेढुकजीव और सर्प काल एकैसंग रहै हैं नाना शरीरन को काल खात जाइ है पुनि पुनि शरीर होत जाइ है अरु बिल्ली जो है मानसीवृत्ति सो श्वान भवानन्द ताको विवाही गई अर्थात् वाही में लगिगई वृत्तिको बिल्ली काहेते कह्यो कि बिल्ली जहां गोरस देखैहै तहैं जाइहै और यह वृत्ति जो है सोऊ जहैं रस जो है सुख सो देखै है तहैं जाइहै सो श्वानभवानन्द में बहुत सुख देख्यो याते वाही को विवाही गई तब नित उठिकै सिंह जो ज्ञान सो सियार अज्ञान ते मारो जाइ है जो कह्यो ज्ञान तो अज्ञान को नाश करनवारो है अज्ञान ते ज्ञान कैसे नाश होइ है सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि हम ब्रह्म हैं सो अद्भुत है कहिबे लायक नहीं है नेति कहै है अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराण में नहीं कह्यो कि फलानो जीव ब्रह्म ह्वैगयो याही ते मूलाज्ञान में ठहराये हैं ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बनडाहै, मच्छ अहेरा खेलै ४

येई दुइतुक अधिकसे जानेपरै हैं परन्तु पोथी में लिखो लख्यो अर्थ करिदियो सो शरीरवनको संशय जो मिरगा है सो घेरे है व पारथ जे हैं गुरुवालोग ते संशयरूपी मृगा के मारिबे को बाण जो है नाना प्रकार को उपदेशरूप वाणी ताको मेलैहैं सो उनको वाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै कहा है सो कहै हैं सायर जो है विवेकसागर सो जरिजाइहै व नाना शरीर जे वनहैं ते लाइ देइ हैं अर्थात् गुरुवनकी वाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवन को उपदेश कियो तब उनको सबको साहब को विवेक जरिजरि गयो औरे औरे में लगिगये विवेक करिकै साहब को ज्ञान जो ह्वैबे को रहै सो न भयो तब संसारसमुद्र में मच्छ जो है काल सो अहेर खेलै है अर्थात् जीवनको खाइ है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै ॥
बिनु पंखे उड़ि जाहि अकाशै, जीवहि मरण न सूझै ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह संसार अद्भुत है और ब्रह्म अद्भुत है इन दूनों को ज्ञान जिनको है कि ये धोखा है ऐसो कोहै अर्थात् कोई नहीं है परन्तु जो कोई बिरला बूझनवारो होइ और मनमाया ये दोनों धोखा हैं येई तहैं उड़ै हैं नाना पदार्थन को स्मरण होइ है नानायोनि पावै है संसार में तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही को ह्वैरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़ि कहे निकसिकै साहब के यहां पहुँचै जाइ जो कहो विना पखना कैसे उड़िजाय सो यहां उपासना दुइ प्रकार की हैं एक बांदरकैसो बच्चा भजन करै है कि बांदर को बच्चा अपनी माता को आपही धरे रहै है सो यह जीव नाना प्रकार के शास्त्रादिकन ते विचार करिकै व असांच मत खण्डन करिकै आपही अपने साहब को धरे रहै हैं भ्रम में नहीं परै है और दूसरी उपासना बिलारी के बच्चा कीसी है बिलारी को बच्चा और सबकी आशा तोरे माता की आशा किये रहै है सो वह बिलारी अपने बच्चाको जहां सुपास देखै है तहां आपही उठाइ लैजाइ है तैसे यह जीव वेदशास्त्र को छोड़ि कै न काहूके मत के खण्डन करिबे की सामर्थ्य है न अपने मत के मण्डन करिबे की सामर्थ्य है साहब को जानैहै कि मैं साहब का हौं दूसरो मत सुनतही नहीं है सो जब सब पक्ष को छोड़िकै साहब को ह्वैरह्यो तब याको साहबही हंसस्वरूप दैकै अपने लोक को उठाइ लैजाइहै ॥ ५ ॥

इति बावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५२ ॥

अथ तिरपनवां शब्द ॥ ५३ ॥

गुरुमुख ॥ वह बिरवा चीन्है जो कोई। जरामरणरहितै तन होई १ बिरवा एक सकलसंसारा। पेड़ एक फूटल तिनडारा २ मध्यके डार चारि फललागा। शाखापत्रगनतकोबागा ३ बेलि एक

त्रिभुवन लपटानी । बांधेतेछूटिहिनाहिंपानी ४ कहकबीरहमजात पुकारा । पण्डित होय सो करै बिचारा ॥ ५ ॥

वहबिरवा चीन्है जो कोई । जरामरण रहितै तन होई १

जो बिरवाको आगे वर्णनकरै हैं ताको जो कोई चीन्है व असार मानि लेइ व सार जो साहब हैं तिनको जानै सो पार्षद स्वरूप ह्वैजाइ व जन्म मरण ते रहित ह्वैजाइ ॥ १ ॥

बिरवा एक सकल संसारा । पेड़ एक फूटल तिन डारा २
मध्यकेडारचारिफललागा । शाखापत्र गनतकोबागा ३

सो एक बिरवा सब संसार है तौने बिरवाको पेड़ कहे मूल बिराट् पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनि डार फूटयोहै २ सो मध्यकी डार जे विष्णु हैं तिनमें अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये चारि फल लागतभये चारिफलके देवैया विष्णु हैं सो जो कोई विष्णु का उपासक होइ सो चारों फलको पावै है डारन जो डरैया कहै हैं ते शाखा कहावै हैं सो ब्रह्मा-विष्णु-महेश जे तीनि डारै हैं तिनते नाना देव नाना मत भये तेई शाखा हैं तिनको को गनत बागा है अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो व सतोगुणी, रजोगुणी व तमोगुणी जे नाना वासना होत भईं तेईं पत्र हैं ॥ ३ ॥

बेलिएक त्रिभुवनलपटानी । बाँधेतेछूटिहिनहिंपानी ४
कहकबीर हमजातपुकारा । पण्डितहोयसोकरैबिचारा५

वृक्ष में बेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्ष में आशारूपी बेलि लपटि गई है तामें बँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ४ साहब कहैहैं कि हे कबीर ! कहेजीव, तोको संसार जातमें हम पुकारा है राम नाम को सो पण्डित होइ तौ विचार करिलेइ अर्थात् असार जो राम नाम में जगत्मुख अर्थ ताको छांड़ि राम में सार जो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पास आवै ॥ ५ ॥

इति तिरपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५३ ॥

अथ चौवनवां शब्द ॥ ५४ ॥

साईंकेसँग सासुर आई। संग न सूती स्वाद न मानी, गयो यौबन सपनेकी नाईं १ जनाचारि मिलि लगन शोचाई, जनापांच मिलि मण्डपछाई। सखी सहेली मङ्गलगावैं, दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई २ नानारूप परी मनभांवरि, गांठि जोरि भई पति-आई। अरघे दै दै चली सुवासिनि, चौकहिरांड़भई सँग साईं ३ भयो विवाहचली बिनदूलह, बाटजान समधी समुझाई। कह कबीर हम गौने जैबै, तरबकन्तलैतूरबजाई ॥ ४ ॥

यह जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकी शक्ति है सो जौनी भांति ते याको आपने स्वरूपको ज्ञान रह्यो है व फिरि भयो है सो लिखै हैं ॥

साईं के सँग सासुर आई ॥

सङ्ग न सूती स्वाद न मानी, गयोयौबनसपनेकीनाईं १

परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के लोक को प्रकाश जो ब्रह्म है ताको साईं मानिकै ताही सङ्ग सासुर जो यह संसार है तहां आई सासुर संसार काहेते ठहर्‌यो कि अहंब्रह्मबुद्धि संसारही में होइहै जब संसारके बहिरे रहैहै तबतो याको सुधिही नहीं रहैहै जब महाप्रलय ह्वै जाइहै तब सत् जो है साहबके लोकको प्रकाश ब्रह्म ताहीमें सब रहे हैं जब उत्पत्ति का समयभयो सुरति पायो तब आपनेको लोकप्रकाश ब्रह्म मान्यो तब मनभयो मनते इच्छा भई तब यह ब्रह्म कहै हैं कि मैं जीवात्मा में प्रवेश करिकै नामरूप करिकैहौं सो जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप जीवात्माके करतभयो याही ते याको साईं मानि कै चित्‌शक्ति जीव सासुर जो संसार तहां आवत भयो सो वह ब्रह्म को खसम मानिलेबो धोखा है काहेते कि वह तौ निराकार है सो वाके सङ्ग न सोवत भई न स्वाद पावत भई नानारूप भरत भई तेई यौवन हैं जे सपने की नाईं जातभये सो जौनी भांति चित्‌शक्ति जीव साईंके संग ससुरे में आई सो लिखै है अपने को ब्रह्म मान्यो तब संसार की उत्पत्ति भई तामें

साईंको संग बन है यह जो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनै है वह
अहंब्रह्म को विचार मिटिगयो ॥ ३ ॥

भयो बिवाह चलीबिनुदूलह, बाटजातसमधीसमुझाई ॥
कह कबीर हम गौने जैबे, तरब कन्तलै तूर बजाई ४

सो इसतरहते बिवाह भयो कहे इसतरहते संसारी भयो और
पुनि बिन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्ति ह्वैकै
चित्‌शक्ति जीव साहबके पास जाइबेकी गैललियो सो वह बाट
जातमें समधी जो है शुद्ध समष्टिजीव सो याको समुझावत भयो
कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध हो अर्थात् जब जीव साहबके
लोक प्रकाशको बेधिकै साहबके लोकको चल्यो तब यह समुझत
भयो कि जैसे ये शुद्ध रहे हैं तैसे हमहूं शुद्ध रहे हैं यह बीचहीं
में धोखा भयो है उनको देखिकै यह ज्ञान भयो यही उनको समु-
झाइबो है यही समुझबोहै सो कबीर जो है काया को बीर जीव
सो कहैहै कि मन वचन के परे जो साहब के ऊपर दूसरो साहब
नहीं है जासों हमारो बिवाह ह्वैबेको नहीं है वह हमारो सदा को
कन्तहै तहां हम गवने जाइ हैं अर्थात् तहांको हम गवन करेंगे
अरु वाही कन्त को लैकै कहे पाइकै तरिजाब और कन्त को
लैकै न तरैंगे व तहैं परम मुक्तिरूपी तूर बजावेंगे अर्थात् और
ईश्वरन में लागे व आपनेको ब्रह्ममाने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो
अर्थात् संसार व सबउपासना और ब्रह्म ह्वैजाइबो ये सब तूरिकै
साहबके पास जाइकै अर्थात् डङ्कादैकै जाइगो ॥ ४ ॥

इति चौवनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५४ ॥

अथ पचपनवां शब्द ॥ ५५ ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई १ सिंह
शार्दुल यकहर जोतिनि, सीकस बोइनि धाना । बनकी भलुइया
चाखुरफेरै, छागरभयेकिसाना २ कागा कपरा धोवन लागे, बकुला

किरैरै दांता। माछी मूड़ मुड़ावनलागी, हमहूं जाव बराता ३ छेरी बाघहि ब्याह होतहै, मङ्गलगावै गाई। बनके रोझधैदाइज दीन्हो, गोह लोकंदै जाई ४ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै। सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै॥ ५॥

जिनको सद्गुरु मिले तिनको या भांति उद्धार ह्वैगयो व जिनको सद्गुरु नहीं मिले जे सद्गुरुको नहीं मान्यो तिनको गुरुवालोग और और मत में लगाइ देइ हैं वे साहब को नहीं जानैहैं सो कबीरजी कहैहैं॥

नलको ढाढ़स देखो आई। कछु अकथ कथा है भाई १

साहब कहतेहैं कि हे भाई, हे सन्तो! ढाढ़सदेखो यह जीव मेरो अंश है सो मोको नहीं जानैहै और और में लागिकै खराब होइहै नाना दुःख सहैहै मोको जानिकै दुःख नहीं त्याग करैहै बड़ो ढाढ़सी है सो हे भाइउ! ढाढ़स करिकै जौनेके लिये जामें यह लागैहै सो ब्रह्म अकथ कथाहै कहिबे लायक नहीं है वह ब्रह्म-विचार झूंठा है वहां कछु प्राप्ति नहीं है सो अकथकथा कहै हैं॥ १॥

सिंह शार्दुल यकहरजोतिनि, सीकस बोइनि धाना॥
बनकी भलुइया चाखुर फेरै, छागर भये किसाना २

यहां सिंह जो है जीव शार्दूल जो है मन येई दोऊ बैल हैं कर्म जो है सोई हर संसार सीकस भूमि है कहे ऊसर भूमि है अजा कहावै है माया सोई छेरी ताको पति बोकरा है सो छागर कहावै तेई माया में लपटे किसान गुरुवालोग सो जोतिकै उप-देशरूप धान बोवत भये व तौने नवानावके जे भलुइया कहे भुलावनहारे पण्डित तेई चाखुर फेरै कहे निरावै हैं अर्थात् ताते घृत्ति करिकै वेद जो साहब को बतावै है ताको अर्थ फेरिडारैहै॥ २॥

कागा कपरा धोवन लागे, बकुला किरैरै दांता॥
माछी मूड़ मुड़ावन लागी, हमहूं जाव बराता ३

नाना पाखण्ड मतमें परे ऐसे जेहैं मलिन पाखण्डी जीव तेई

काग हैं ते कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करैहैं कि हमारे मतमें आवो तो हम तुम्हारो अन्तःकरण शुद्धकरिदेइँ व रूपक पक्षमें जब बरात जाइहै तब सबुनीकरिकै लोगजाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो अरु जिनके अन्तःकरणरूपी धोवनको वे उपदेश कियो तेई बकुलाभये कहे ऊपरते तो वेष बनाये चन्दन टोपीदिये हैं और अन्तःकरण मलीन है विषय में चित्त लगाये रहैहैं जहां कोई सन्तमत कहन लगैहै ताको खण्डन करिडारैहैं दांत किरैरै हैं कहे कोप करै हैं जैसे बकुला ऊपरते तो स्वच्छ है और नदी के तीर मछरी खाइबेको बैठ है भीतर बासना मलीन भरी है हंस आवै है तिनको डेरवाय कै बैठन नहीं देइ है दांत किरैरहै तैसे बरात जब चलैहै तब कारिंदा कामकाजी सफ़ेद कपरा पहिरि दांत किरैरै हैं कि यह काम करो वह काम करो कहां बैठे हो यह रिस करै हैं व माछी कहे जो माया ते क्षीण ह्वैवेको विचार करै हैं ते माछी कहवावै हैं अर्थात् मुमुक्षु ते नाना मतके जे गुरुवालोग हैं तिनके यहां मूड़ मुड़ावै हैं कि हमहूं बरातजाब कहे हमहूं मुक्ति होब सो वहां मुक्ति तो पायो नामहि पररूपी मीठी बाणी में परिकै आपने को ब्रह्म मानतभये तेहिते स्वस्वरूप को ज्ञान न रहिगयो माया में फँसि गये और रूपकपक्षमें दुलहा के संगती जे हैं ते बार बनवावै हैं ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होत है, मङ्गल गावै गाई ॥
बनके रोझधै दाइज दीन्हो, गोह लोकन्दै जाई ४

अब ब्याहको रूपक कहै हैं गुरुवालोग जेहैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करनवारे ते छेरी जो है माया ताको और बाघ जो है जीव ताको ब्याह होतहै अर्थात् जीवको माया में डारिदेइहैं और छेरी जो है माया ताको बाघ जो है जीव सो खाइलेनवारो है अर्थात् जो जीव आपने स्वरूप को जानै तौ माया को नाशकरिदेइ अरु तहां गायरूपी जो गायत्री है सो मङ्गल गावै है अर्थात् सब जीव को कर्तव्य गायत्री गावै है वेद गायत्री ते कह्यो है और बन कहे

बाणीको रोझ जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हो यहां रोझको प्रणव काहेते कह्यो कि रोझ गवय कहावै हैं काहेते कि गोकी सदृश होइ है सो गैया जोहै गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवही ते निकसी है प्रणव ब्रह्म है ताको दाइज दीन्हो कहे ब्रह्म मैंहीं हौं यह प्रणव को अर्थ समुझाइ दीन्हो कन्या के साथ जो डोलहाई जाइ हैं ते लोकन्दी कहावै हैं सो यह लोकोक्ति है मिथिलाकैती कहै हैं सो गोह जो है सो लोकन्दै जाइ है कहे डोलाके साथ जाइहै वहां गोह कहे गो जो इन्द्रिय हैं जब जीव माया में लपटै तब और चञ्चल हैजाइ है नाना शरीररूप डोला में चढ़ा जीव ताहीके साथ साथ जाइहै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै ॥
सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै ५

सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे सन्तो ! तुम सुनो इस पद में जे भ्रम वर्णन कियो तिनको छोड़िकै यह पद को अर्थ सांच जो साहब ताको जानै असांच को छोड़ै सोई पण्डितहै सोई ज्ञाता है सोई भक्तहै ॥ ५ ॥

इति पचपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५५ ॥

श्रीकबीरजी साहब की उक्ति में कहैहैं गुरुमुख ॥

अथ छप्पनवाँ शब्द ॥ ५६ ॥

नलको नहिं परतीति हमारी । झूठे बनिज कियो झूठेसन, पूंजी सबै मिलिहारी १ षटदर्शन मिलि पन्थ चलायो, तिरदेवा अधिकारी । राजादेश बड़ो परपंची, रइअतरहत उजारी २ इतते उत औ उतते इतरहु, यमकी सांटसँवारी । ज्यों कपिडोर बांधि बाजीगर, अपनेखुशी परारी ३ यहैपेठउत्पत्ति प्रलय को, बिषया सबै बिकारी । जैसे श्वानअपावनराजी, त्योंलागी संसारी ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, मानो बचन हमारो । अजहूं लेहु छोड़ाय कालसों, जो घटसुरति सँभारो ॥ ५ ॥

यह है याही को सुख बिषयन में जाइ रहैहै आपनो सुख बिषय में पावै है अरु मानै है कि मैं बिषय को सुख पाऊं हौं अरु वह ब्रह्म को अनुभव कियो तहां वाके आत्मै को सुख मिलै है जानै यहहै कि मोको ब्रह्मानन्द भयो है काहेते कि जब भर अहंब्रह्म बुद्धिरहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइहै जब सबको निराकरण ह्वै गयो एक आत्माही को ज्ञान रहिगयो सो ब्रह्मानन्दरूप होइ है तेहिते वह ब्रह्मानन्द आत्माही को आनन्दहै सो जैसे श्वान आपने ही लोहू के स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यहौ आपनो सुख बिषय ब्रह्म में पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लागिरह्यो है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, मानो बचन हमारो ॥
अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारो५

सो हे कबीर, कायाके बीर जीवो ! हम तुमसों यह अद्भुत ज्ञान कहैहैं हमारो वचन मानौ जो अपने घट में सुरति सँभारो और वह सुरति मोमें लगावो तो अबहूं कहे माया ब्रह्म में तुम परेहौ ताहू पर तुमको मैं कालते छोड़ाय लेउँ अथवा अजहूँ को भाव यहहै कि कालकी डाढ़ में तुम परिचुके हौ सो कालते तुम को छोड़ाइ लेउँगो ॥ ५ ॥

इति छप्पनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवां शब्द ॥ ५७ ॥

ना हरिभजै न आदतछूटी । शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं,अँधरेभये हियो की फूटी १ पानीमाहँ पषानकी रेखा, ठोंकत उठैभभूका । सहसघड़ानितही जलढारै, फिरिसूखेका सूका २ सेतेसेतसेत अङ्गभो,शयनबढ़ीअधिकाई ।जोसनिपातरोगिअहिमारै,सोसाधुन सिधिपाई ३ अनहदकहत कहतजगबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी । निकट पयानायमपुरधावै, बोलहिएकहिबानी ४ सतगुरुमिलेबहुत सुखलहिया, सतगुरुशब्दसुधारै । कहकबीरसोसदासुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ॥ ५ ॥

नाहरि भजै न आदत छूटी॥
शब्दै समुझि सुधारत नाहीं, आँधरेभयेहियोकीफूटी १

ना तैं हरि भजैहै अरु ना तेरी आवागमनकी आदत कहे स्वभाव छूट्यो यह अर्थ साहबके कहे शब्दको सुनिकै व बिचारिकै जो आपनो नहीं सुधारै है सो काहे नहीं सुधारै है काहेते कि साहब कहतई जाइहै कि जो मोको अबहूं जीव जानै तौ कालते छोड़ाय लेउँ ताते आँधर भये हियौ की तिहारी फूटि गई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुँची इन्द्रियन जवाब दियो तामें प्रमाण "नेह गये नैना गये, गये दांत औ कान। प्राण छरीदा रहिगये, तेऊ कहतहैं जान" अबहूँतौ जानौ भजन करिकै छूटिजाउ ॥१॥

पानीमाहँ पषान की रेखा, ठोंकत उठै भभूका ॥
सहसघड़ा नितही जल ढारै, फिरि सूखेका सूका २

हे जीवौ! तुम बड़े जड़ हौ जैसे पानी में पाषाण की रेखा कहे छोटी शर्बती पथरी डारिराखै तो और भभूका आगी को उठन लगैहै चकमक में ठोंकेते तैसे जस जस साधुलोग उपदेश करत जाइ हैं तस तस साहब को भजन तौ नहीं करौहौ व काम क्रोध आदिक जे आगी हैं ते तुम को जोर करत जाइ हैं अर्थात् जब उपदेश करन लगै है तब अधिक रिस करनलगौहौ जैसे पाषाणमें नित हजारन घड़ा जल डारै पै पाषाण भीतर सूखै रहैहै तैसे केतऊ ज्ञान उपदेशकरै परन्तु हे जीवो! तुमजड़के जड़ही बनेरहौहौ॥२॥

सेते सेते सेत अङ्गभो, शयन बढ़ी अधिकाई ॥
जो सनिपात रोगिअहि मारै, सो साधुन सिधिपाई ३

सेत सेत जो ब्रह्म है तामें लगे लगे तुम भीतर बाहर सफ़ेद ह्वै गये अर्थात् बुढ़ायगये ऊपरौके रोमाबुढ़ायगये ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनो स्वरूप भूलिगयो तब शयन में कहे सोवनमें अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे अपनी आतमा को ज्ञान व साहबको ज्ञान व जगत्भूलिगयो

पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरी दशा ह्वैगई सोई लक्षणसन्निपातमें होइ है सो तोको सन्निपात भयो है सान्निपातरोग याको मारै है व उनको आत्माको ज्ञानभूलिजाइहै ब्रह्म ह्वैबो साधुलोग सिद्धि पाई हैं कि हम सिद्ध हैं यह मानि लेइही आत्मा को ब्रह्म ह्वैबो असिद्ध है सो आगे कहैहैं सीते सीते पाठ होइ तौ ज्ञान करत करत कि संसारताप हमारो छूटिजाइ शीत अङ्ग ह्वैगये कहे सन्निपात की अधिकाई तुम्हारे अङ्ग में बढ़िआई अर्थात् सन्निपात में खबरि देह की भूलिजाइ है व रोगियन को मारै है सोई साधुलोग सिद्धि पाई है कि हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्ध ह्वैगये ॥ ३ ॥

अनहद कहत कहत जगबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै, बोलहि एकहि बानी ४

वह जो ब्रह्म है ताकी हद नहीं है ताको अनहद कहत कहत कहे नेति नेति कहत २ संसार बिनशिगयो अनहद जो ब्रह्म है तामें सृष्टि के सबलोग समाइगये और सृष्टि में वह अनहदब्रह्म समाइगयो सो मानत तो यह है कि सब ब्रह्महीं में समाइहै कहे ब्रह्मै ह्वै जाइ है परन्तु निकट पयाना यमपुरही को धाइबो है अर्थात् आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म नहीं होइ है यमपुरही को चलेजायँ हैं तेऊ एकही बाणी बोलैं हैं कि एकब्रह्महीं है दूसरा नहीं है तामें धुनि यह है कि अरे मूढ़ ! एक तो ब्रह्म है नरकै कौन जाय है ॥ ४ ॥

सतगुरु मिले बहुतसुख लहिया, सतगुरु शब्द सुधारै ॥
कह कबीर सो सदा सुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ५

हे जीवौ ! तुमको सतगुरु मिलै तो वे रामनामरूपी पद में साहबमुख अर्थ बताइदेइँ तौनेको जो तुम बिचारौ तौ बहुत सुख पावो श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थ अर्थ बताइकै गुरुवा लोगन बिगारिडारयो है ते शब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थ

अर्थ खण्डन करिकै वे वेदशास्त्रादिकन के शब्द के तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहबमुख अर्थ बताइदेइहैं सो जो वा शब्द जो रामनाम ताको जगत्मुख अर्थ बताइ देइ हैं सो जो कोई रामनामरूपी पद में साहब मुख अर्थ बिचारै सो सदा सुखी रहै है ॥ ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥ ५८ ॥

नरहरलागीदवाबिकारबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा । मैं जानौंतोहींतेब्यापै, जरतसकलसंसारा १ पानीमाहँअगिनिको अंकुर, मिलनबुझावनपानी। एकनजरैजरैनौनारी, युक्ति न काहू जानी २ शहर जरै पहरूसुखसोवै, कहैकुशलघरमेरा । कुरिया जरै वस्तुनिजउबरै, बिकलरामरँगतेरा ३ कुबिजापुरुषगलेयक लागी, पूजिनमनकीसाधा। करतबिचारजन्मगोखीसा, ईतनरहल असाधा ४ जानिबूझिजोकपटकरतहै, तेहि असमंद न कोई । कहकबीरसबनारिरामकी, मोते और न कोई ॥ ५ ॥

नरहरलागीदवाबिकारबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा ॥
मैं जानौं तोहीं ते ब्यापै, जरत सकल संसारा १

हे नरहर ! दवलागी कहे तेरे स्वरूपकी हरनवारी मायारूपी दवारि लगी है तैं कैसाहै बिकार बिन तौ माया मोको काहे को लगीहै तौ बिना ईंधन को बुझावनवारो तोको नहीं मिल्यो जो तोको समुझाइ देइ कि तैं बिनबिकारको है जो मिलाहै सो नाना उपासना नाना मतरूप ईंधन डारनवारो मिला है साहबको ज्ञान-रूप जलडारै मायारूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानौ हौं या मायारूपी दवारि तोहींते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोहीं ते भये ताही में सब संसार जरो जाइ है ॥ १ ॥

पानीमाहँ अगिनि को अंकुर, मिलन बुझावन पानी ॥
एक न जरै जरै नौ नारी, युक्ति न काहू जानी २

सो वह मायारूपी अग्नि को अंकुर पानी में है कहे नाना वेद शास्त्रादिक बाणीमें हैं ते वेदशास्त्रादिकन के अर्थ को बदलिकै साहबको छिपाइकै मायारूपी अग्नि को प्रकटकियो और तोको औरे औरेमें लगाइ दियो अर्थात् वे सब मतन को फल ब्रह्म ह्वै जाइबो बताइ दियो वह अग्नि के बुझावन को वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थ है जल सो नहीं मिलै है अथवा जे वेद शास्त्रादिकन के सांच अर्थ मुनिजनलोग बनाइ गयेहैं वशिष्ठसंहिता, शुकसंहिता, हनुमत्संहिता, अगस्त्यसंहिता, सदाशिवसंहिता, सुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ और वेदशिरोपनिषद्, विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मत के कहनवारे ते जल नहीं मिलै है सो जब वह आगिलगी तब अद्वैत करिकै बहुत समुझावै है परन्तु एक वह आत्मा नहीं जरै और साहबमें जे नवधा भक्ति हैं ते नवनारीहैं ते जरै हैं सो यह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहीं होइहै और साहब को जानै तौ वे नवधा भक्ति न जरैं ॥ २ ॥

शहर जरै पहरू सुख सोवै, कहै कुशल घर मेरा ॥
कुरिया जरै बस्तु निजउबरै, बिकल राम रँगतेरा ३

और शहर कहे साहबके मिलिबे के जेते ज्ञान हैं जीवात्मा के ते जरेजाइ हैं और पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवै है कहे साहब के बतावनवारे सन्त नहीं ढुरे हैं जे आपने बाणीरूप जल सों माया ब्रह्मरूपी आगी बतावै सोवतै रहैहै और यह कहै है कि, मैं सच्चिदानन्द हौं सो मेरो घर जो है सच्चिदानन्द सो कुशल है यह नहीं जानै है कि ये सब तो जरिहीगये सो मैंहूं जरिजाउँगो एक माया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजाइगी वही आगि में तेरी कुरिया जो है स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजाइगी अर्थात् जब 'ब्रह्मास्मि' में सुषुप्ति होयगी तब मैं सच्चिदानन्दरूप हौं यहू ज्ञान न रहिजाइगो याही ते तैं बिकल है सो यह करु जाते तेरी बस्तु जो है साहब में नवधा भक्ति सो उबरै औरे औरे रङ्ग में लगिबो तेरो

रङ्ग नहीं है श्रीरामचन्द्रके रङ्ग में रँगै यही तेरो रङ्ग है ॥ ३

कुबिजा पुरुष गले यकलागी, पूजि न मन की साधा॥
करत बिचार जन्मगोखीसा, ईतन रहल असाधा ४

कुबिजा पुरुष कहे अङ्गभङ्ग पुरुष जो वह ब्रह्म है नपुंसक ताको एक मानिकै कि एक ब्रह्महीं है ताके गलेमें साहबकी जीवरूपा शक्ति तैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषके सङ्ग स्त्री की साध नहीं पूजै है तैसे वह ब्रह्म में लगे तुम्हारी साध नहीं पूजैहै कहे वामें आनन्द नहीं मिलैहै वही ब्रह्म को बिचार करत जन्म खीस कहे बृथा जाइ है तनकहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाधरहै है कहे साहब के मिलनको सुख नहीं पावैहै ॥ ४ ॥

जानि बूझि जो कपट करतहै, तेहि अस मन्द न कोई ॥
कह कबीर सब नारि रामकी, मोते और न कोई ५

सो जानिबूझिकै जे लोग कपट करै हैं कहे वह धोखाब्रह्म में लगैहैं तिन ऐसो मन्दकहे मूढ़ कोई नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि जहांभर चित्शक्ति जीव हैं ते सब श्रीरामचन्द्रकी नारी हैं सो मैं जानौ हौं याते मोते और पुरुष साहबै है सो जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़ि और पुरुष करैहैं ते छिनारि हैं सो जो छिनारि हैं तिनके ऊपर संसाररूपी मार परोईचाहै तामें व्यङ्गथ यह है कि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को पतिमानै हैं तेई माया ब्रह्माग्नि ते बचै हैं ॥ ५ ॥

इति अट्ठावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवां शब्द ॥ ५९ ॥

मायामहाठगिनिहमजानी । तिरगुणफांसलियेकरडोलै, बोलै मधुरीबानी १ केशवकेकमलाह्वैबैठी, शिवकेभवनभवानी । पण्डा के मूरतिह्वैबैठी, तीरथ में भइ पानी २ योगीकेयोगिनिह्वैबैठी, राजाके घर रानी । काहूकेहीराह्वैबैठी, काहूकेकौड़ीकानी ३ भक्तन

के भक्तिनिह्वैबैठी, ब्रह्माकेब्रह्मानी । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथकहानी ॥ ४ ॥

माया महाठगिनि हम जानी ॥

तिरगुण फांसलिये करडोलै, बोलै मधुरी बानी १
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिवके भवन भवानी ॥
पण्डा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भइ पानी २
योगी के योगिनि ह्वै बैठी, राजा के घर रानी ॥
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी ३
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यहसबअकथ कहानी४

माया महाठगिनि है हम जानी यह माया माधुरी बानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवन को बांधिलियो और सबके घर में नानारूप करिकै बैठी है केशव के कमला ह्वैकै बैठी है व शिवके भवन भवानी ह्वैकै बैठीहै और पण्डाके मूरति ह्वै बैठी है व तीरथ में पानी ह्वै रही है व योगी के घर में योगिनि ह्वै बैठी है व राजाके रानी ह्वै बैठी है व काहूके हीरा ह्वै बैठी है व काहूके कानी कौड़ी ह्वैकै बैठी है और ब्रह्माके ब्रह्मानी ह्वै बैठी है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो सुनो यह सब माया को चरित्र अकथ कहानी कहाँलौं बर्णनकरैं यह माया सत् असत् ते विलक्षण है कहिबे लायक नहीं है अरु याको अन्त नहीं है॥ १ । ४॥

इति उनसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ साठवां शब्द ॥ ६० ॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतनहरिलीन्हा १ जीवनऐसोसपनाजैसो, जीवनसपनसमाना । शब्दगुरू उपदेशदियो तैं, छांड़योपरमनिधाना २ ज्योतिहिदेखिपतंगहूलसै, पशुनहिंपेखै

आगी । कामक्रोधनलमुगुधपरे हैं, कनककामिनीलागी ३ सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डितशास्त्रविचारै । सतगुरुके उपदेश बिना तुम, जानिकैजीवहिमारै ४ करौ बिचार विकारपरिहरौ, तरनतारनै सोई । कह कबीर भगवन्त भजनकरु, द्वितिया और न कोई ॥५॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा १

पूर्व जो वर्णन करि आये सो मायाजीव को मोहित करतभई सांचमें असांचकी बुद्धि होयहै मोहको लक्षण सो यह आत्मा तो शरीरनते भिन्न सांच है ताको शरीर की बुद्धि भई कि शरीर मैं हौं मन आदिक मेरे हैं यह असांचबुद्धि भई याही ते माया में परिगयो तब याको माया मोहते मोहित करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ज्ञानरतन जो रहै कि मैं उनको अंश हौं वे बड़ेरतनहैं मैं कनी हौं अल्पज्ञ हौं परन्तु जाति उनहीं की हौं वे बिभु आनन्द हैं जैसे उनमें मन आदिक नहीं हैं तैसे मैं जो उनको जानौं तौ महूं मन आदिक नहीं हौं यह जीवको ज्ञान रत्नमाया हरिलीन्हौं ॥ १ ॥

जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना ॥
शब्दगुरू उपदेश दियो तैं, छांड़्यो परम निधाना २

यह जीवन ऐसो है स्वप्न है यह शरीरते दूसरे शरीर में गयो तब यह शरीर स्वप्न ह्वैगयो और वह जीव स्वप्न जे सम्पूर्ण शरीर हैं तिनमें नहीं समान्यो वह शरीर ते भिन्न है काहेते मरिबो जीबो शरीर को धर्म है सो अपने स्वरूप को नहीं जानै है स्वप्न समान जे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियो है गुरू कहे सबते गुरुपरमपुरुषपर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते शब्द जो रामनाम ताको उपदेशदियो कि तैं मेरो है सो मेरे पास आउ सो तौने शब्द में परमनिधान कहे तिनके रहिबेको पात्र जो साहबमुख अर्थ है ताको शब्द छोड़ि दियो औ संसारमुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो ॥२॥

ज्योतिहि देखि पतङ्ग हूलसै, पशु नहिं पेखै आगी ॥

काम क्रोध नल मुगुध परे हैं, कनककामिनी लागी ३

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतङ्ग हूलसै कहे ज्योति में मिलिबेको जाय है परन्तु वहै पशु जो है अज्ञानी पतङ्ग सो नहीं देखै है कि या आगी है यामें जरिजैहैं सो वही धसिकै जरिजाय है तैसे काम क्रोधादिकन में जीव मुगुधपरे हैं या नहीं जानै हैं कि यामें जरिजायँगे ॥ ३ ॥

सय्यद शेख किताब नीरखै, परिडत शास्त्र बिचारै ॥
सतगुरु के उपदेश बिनातुम, जानि कै जीवहि मारै ४

सो हे सय्यद, शेखो ! तुम किताब देखिकै नानाकर्म करौहौ और हे पण्डितो ! तुम नाना शास्त्र पुराण पढ़िकै सुनिकै नानाकर्म करौ हौ सतुगुरु को उपदेश तौ तुम लियो न असतगुरुन के पास जाइ जाइ उनहींको उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुम अपने जीव को मारौ हौ कहे जनन मरणरूप दुःख देउहौ साहब के जाननवारे जे हैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहब को बताइदेइँ और जन्म मरण तुम्हारो छूटि जाय जानिकै आपनी आतमा को मारौ हौ तामें प्रमाण "नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् । मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा" (इति श्रीभागवते) ॥ ४ ॥

करौ बिचार बिकार परिहरौ, तरन तारनै सोई ॥
कह कबीर भगवन्त भजन करु, द्वितिया और न कोई ५

सो बिचार करौ व सम्पूर्ण जे बिकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ौ तरण तारण एक पुरुषपर श्रीरामचन्द्रही हैं श्रीकबीरजी कहे हैं कि तिनहीं को भजन करु उनते और दूसरो तेरो छोड़ावनवारो नहीं है इहां तरण तारण दुइकह्यो सो तरण जो है मुक्ति ह्वैबे की इच्छा ताते तारणवारो कोई नहीं है वोई हैं वही मुक्ति की इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरोपासनादिक नाना उपासना करिकै तरन को चाहै हैं परन्तु कोई तरै

नहीं हैं जब तरनकी चाह छूटि जाइहै तब मुक्ति होइहै सो यह तरन की इच्छाते एक परम पुरुष श्रीरामचन्द्रही तारि देइहैं अर्थात् उनहींकी दीनमुक्ति दैजाइहै और की मुक्ति नहीं दीनदैजाइ है जबभर तरनकी इच्छा होइ है तबभर मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण " भुक्तिमुक्तिस्पृहायावत्पिशाचीहृदिवर्तते । तावद्भक्तिसुखस्पर्शःकथमभ्युदयोभवेत्" (इतिभक्तिरसामृतसिन्धौ) ॥ ५॥

इति साठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६०॥

अथ इकसठवां शब्द ॥ ६१ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ १ काय बिगुरचन अनवनिबाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी २ हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दुनोघरछाड़ै ३ कर्मफाँस यमजाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहिमारा ४ रामबिनानल ह्वैहौकैसा । बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५ कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घर सों जब वा घर जैहौ ॥ ६ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ१
कायबिगुरचनअनवनिबाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी२

हे जीवो ! तुम मरिहौ तौ फिर तन लेहौ तौनेको लैकै का करिहौ का या तनते कियो है का वा तनते करिहौ जब प्राण छूटैगो तब वाहू शरीर को लैकै बाहरै धरोगे १ सो या काया जो है ताको बिगुरचन कहे छूटै में आनि आनि बाटि है काहेते कोई तो या काया को जारै है और कोई माटी में गाड़ैहै सो जो गाड़ै है और जारै है तिनको अब कहे हैं ॥ २ ॥

हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दुनौ घरछाड़ै ३
कर्मफांस यमजाल पसारा । ज्योंधीमरमछरीगहिमारा ४
रामबिना नल ह्वैहौ कैसा । बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५

सो हिन्दू जे हैं तेतो जारै हैं और तुरुक जे हैं ते गाड़ै हैं सोई

दूनौ घरमें जो परपञ्चहै ताको तू छाड़ै ३ संसार में यमराज कर्म-फांसरूपी जाल पसारिराख्यो है जाही शरीर में जीव जायहै तहैं मारिडारै हैं जैसे धीमर जौनेडावरमें मछरी जायहै तौनेही डावरते खैंचिकै मारिडारै है तब शरीरकी नाना बाटि होइहै भस्महोयहै कीरा होय है विष्ठा होय जाय है ४ सो हे जीवो ! बिना साहबके जाने तुम कैसे होउगे बाटमें जैसे गोबरौरा जोई आवै जाय सोई कचरि देइहै मरिजाय है ॥ ५ ॥

कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घरसों जब वा घर जैहौ६

सो कबीरजी कहै हैं कि जब या घरसों वा घर जाउगे अर्थात् जब यह शरीर ते दूसरो शरीर धरौगे गर्भबास होइगो तब पछिताउगे गर्भबास में साहब की सुधि होइहै सो जब गर्भबास को क्लेश होइगो तब कहौगे कि हे साहब ! अबकी बार जो छु-ड़ावो तौ फिर न ऐसेकाम करैंगे सो गर्भस्तुति श्रीमद्भागवता-दिकन में प्रसिद्ध है तेहिते यह व्यङ्ग है कि परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो ॥ ६ ॥

इति इकसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवां शब्द ॥ ६२ ॥

माई मैं दूनौ कुल उजियारी । बारह खसम नैहरे खायो, सो-रह खायो ससुरारी १ सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरा परलो गारी । जारौं मांग मैं तासु नारिकी, सरिवर रचल हमारी२ जना पांच कोखिया में राखौं, औ राखौं दुइचारी । पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३ सहजै बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी । आउँ न जाउँ मरौं ना जीवौं, साहब मेट्यो गारी ४ एकनाम मैं निज के गहिल्यो, तो छूटल संसारी । एक नाम मैं बदिकै लेखौं, कहै कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

माई मैं दूनो कुल उजियारी ॥
बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी १

चितशक्ति कहै है कि हे माई कहे हे माया! मैं दूनो कुल उजियार करनवारी हौं कहे मोहींते जीवकुल उजियार हैं जीव छःप्रकार मुक्ति मुमुक्षू विषयी बद्ध नित्यबद्ध नित्यमुक्त और ब्रह्मकुल उजियार है सब ईश्वर ब्रह्मकुलही में हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो महीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै और महीं सब जीवकी चैतन्यता हौं सो बारह खसम को नैहर में खायो ते बारह खसम कौन हैं तिनको कहै हैं अष्टप्रधान जे हैं काली, कौशिकी, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, भैरव और नवौं परमपुरुष जिनके ई आठौ प्रधान कहे मन्त्री हैं इनको महातन्त्र में वर्णन है और पांच ब्रह्म आदि मङ्गलमें वर्णनकरिआये हैं तिन में रेफरूपा जो है सो मन्त्ररूप है और पराशक्ति है ताको शक्तिमान में अन्तरभाव है और शब्दब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता नहीं है विचार करिबे लायकै तेहिते पांचब्रह्म में तीनिब्रह्म उपासना करिबे लायकहैं सो अष्टप्रधान और नवौं परमपुरुष और तीनिब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समिष्ट जो है सोई नैहर है जहांते व्यष्टि होइ है सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां में इनको खाइलियो है कहे पेट में डारिलियो है मोहिंते भिन्न नहीं है और जब मैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्म में लग्यो वहीको खसम मान्यो तब षोडश कलात्मक जो है जीव ताको खाइलियो कहे पेटमें डारिलियो ॥ १ ॥

सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरापरलोगारी ॥
जारौं मांग मैं तासु नारि की, सरिवर रचल हमारी २

सासु जो है जगतमुख सुरति ताके व मनके संयोग ते ब्रह्म को अनुभव होइ है तेहिते वह सुरति ब्रह्मकी महतारी है और ननँदि जो है विद्या माया काहे ते कि पहिले जब विद्या माया

उत्पत्ति होइ है और जब ब्रह्म को अनुभव होइहै सो सासु जो है जगत्मुख सुरति और ननँदि जो है विद्या सो ये दूनौ को संसार-रूपी खटिया के पटिया जे हैं उत्पत्ति प्रलय तिनमें बांध्यो और भसुर जेठको मिथिला में कहे हैं सो भसुर जो है ब्रह्म ते जेठ वि-ज्ञान काहेते कि विज्ञान पहिले ह्वै लेइहै तब ब्रह्म को अनुभव होइहै याते ब्रह्म ते विज्ञान जेठ है सो मोको गारी पर्यो कहे मैं तो साहब की चितशक्ति हौं सो मोको ब्रह्म में लगाइदियो यही मोको गारी परी सो जगत् कारणरूपा जो वह मायारूपी नारि है तौनेकी मैं मँगुवा जारौंहौं तौ आप जड़ व चितशुद्ध जीवको गहिकै हमारी सरिवर रच्यो है कहे जीवनको जड़को जड़ कै दियो अर्थात् साहबको ज्ञान भुलाइ दियो तेहिते जगत्मुख ह्वैकै चैतन्य मानैहै कि हम ब्रह्महैं व आपको कर्ता भोक्ता मानै है सो शुद्धजीव को मिलि कै कारणरूपा साहब की अज्ञानरूप माया ही मानै है मायाही को खराब कियो शुद्धजीवहै ताकी मैं मंगुवाजारौं ॥ २ ॥

जना पांच कोखियामें राखौं, औ राखौं दुइ चारी ॥
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३

वही माया को मिलिकै जना पांच जे पांचौ इन्द्रिय हैं व पांचौ तत्त्व हैं व पांचौ शरीर हैं तिनको कोखि में राखौ हौं और दुइ जे निर्गुण सगुण हैं व चारि जे अन्तःकरण चतुष्टय हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तिनको कोखिमें राखौं हौं और पार जो है ब्रह्म अथवा मोक्ष ताके परोसी कहे बतवैया जे हैं गुरुवालोग तिनको मैं कलेवा करौंहौं कहे उनको मतखण्डन करौंहौं शुद्धबुद्धि जो महतारी है मेरी ताकोसंग ह्वैकै अर्थात् शुद्धबुद्धि जब मोको होइ है तब उनको सब मिथ्या मानिलेउहौं एक साहबैकी ह्वैरहौंहौं ॥ ३ ॥

सहजै बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी ॥
आउँ न जाउँ मरौं ना जीवौं, साहब मेट्यो गारी ४

अब हे भाई ! तोको मैं छोड़यो मैं बपुरी गरीबिनि हौं मेरे

निकट न आउ अब मैं सहज सेजबिछायो कहे सहज समाधि मैं साहब को कियो अरु पाउँ पसारिकै सोउंहौं कहे मोको तेरी भय नहीं है यह जगत् मोको बिसरिगयो चितशक्तिमात्र रहिगई व ब्रह्म में मैं लगिरहिउँ नाना उपासना में लगिरही तिनकी मैं नहीं हौं यह गारी मोको परीरही सो साहब मेरीगारी मेट्यो कहे अपनो हंसस्वरूप मोकोदियो तौने स्वरूप ते अपनो रूप देखायो सो साहबकी मैं रहौं सो साहबकी मैं ह्वैगई न आउंहौं न जाउंहौं जो कहौ मेरी गारी साहब कैसे मिटायो ॥ ४ ॥

एक नाम मैं निजकै गहिल्यो, तौ छूटल संसारी ॥
एक नाम मैं बदिकै लेखौं, कहै कबीर पुकारी ५

व एक रामनाम को निजकै कहे आपन करिकै गहिलीन्ह्यो कि यही उद्धारकर्ता है और सब नरकही डारनवारे हैं तब यह संसार छूटिगयो यह हेतु ते कबीरजी कहै हैं कि मैं बदिकै लेखौ हौं कहे पाउँ रोपिकै मानौ हौं कि यही एक रामनाम को जो बिश्वास करिकै विचार करिकै जपैगो तौ संसारते छूटिही जाइगो सो यह सबलोग सुनत जाउ मैं पुकारिकै कहौहौं तामें प्रमाण "राम न जपौकहांभोमन्दा । रामबिनायममेलैफन्दा ॥ सुतदारा को कियापसारा । अन्तकेबेरभये वटपारा ॥ मायाऊपरमाया माड़ी । साथ न चलैखोखरीहाड़ी ॥ जपौरामजोजियतउबारै । ठाढ़ी बांह कबीरपुकारै " ॥ ५ ॥

इति बासठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवां शब्द ॥ ६३ ॥

मैं कासों कहौं को सुनै को पतिआय । फुलवाके छुवतभवँर मरिजाय १ गगनमँडलबिच फुलयकफूला । तरभोडारउपर भो मूला २ जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ । बिनडारबिनापातफूल यकहोइ ३ फुलभलफुललमालिनिभलगूंथल । फुलवाबिनाशि

गयलभवँरनिरासल ४ कह कबीर सुनो सन्तोभाई । पण्डितजन फुलरहे लुभाई ॥ ५ ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय।फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय १

कबीरजी कहैहैं कि, मैं जासों कहौंहौं सो तो सुनतई नहीं है औ जो सुन्यो तौ शङ्का कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडास्यो सांचेको स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलैहै तऊ यह कहैहै कि यह जोलहाको कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ बिचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है ये तो सब धोखामें अटके हैं मैं कासों कहौं को सुनै कौन बात कहौं हौं कि वह धोखाब्रह्म आकाशको फूल है ताके छुवत में भवँर जो है तिहारो जीवात्मा सो मरिजाय है कहे तुम नहीं रहिजाउहो वह धोखाब्रह्मई रहिजाइ है वाके आगेकी बात तुम कैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो वे जब अपनी इन्द्रिय देइँगे तब वह ब्रह्मके ऊपर की बात जानि परैगी जौन हंस-शरीरी देइ है सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्यस्वरूप ना पाइकै ब्रह्ममाया के परे मन बचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है सो मेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखा में लगे है जो धोखाते जगत् होइ है कैसो होइ है कि ॥ १ ॥

गगनमँडलबिचफुलयकफूला।तरभोडारउपरभोमूला २

गगनमण्डल कहे लोकप्रकाश चैतन्याकाश में एकफूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्ममाया शबलित होत भयो अर्थात् आकाशफूल को मिथ्या कहैहैं सो वह मिथ्याही फूल भ्रमते फूलत भयो जीव को भ्रम भयो ताके अनुमानते प्रकट ह्वैजातभयो सो मूल तो वह ब्रह्म है सो ऊपर भयो और तरे वाकीडारैं फूटत भईं चौदहों लोक संसाररूप बृक्ष तैयार भयो ॥ २ ॥

जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ।बिनडारबिनापातफूलयकहोइ३

फुलभलफुललमालिनिभलगूंथल ।
फुलवाबिनशिगयो भवँरनिरासल ४ ॥

वह न जोति गयो न बोयगयो और न सींचिगयो विना डार पात है ऐसो बिरवा चैतन्याकाश जो लोकप्रकाश है तामें धोखा ब्रह्मरूप फूल फूल्यो ताहीते संसाररूप बिरवा तैयार भयो ३ तब मालिनि जो माया है सो भल गूंथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नानावाणी सों खूब वर्णन करिकै वहीको आरोप करत भई तब यह जीव सब छोड़िकै वही ब्रह्म में नानावाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहां कुछ न पायो वह धोखही ह्वैगयो तब भवँर जो जीव सो निराश ह्वैगयो ॥ ४ ॥

कह कबीरसुनो सन्तोभाई। पण्डितजन फुलरहेलोभाई ५

श्रीकबीर जी कहै हैं कि, हे सन्तो, भाइउ ! सुनो वही ब्रह्मफूल में पण्डित जन जे हैं ते लोभाय रहेहैं यह विचार नहीं करै हैं कि जगत् को तो हम मिथ्यई कहैहैं और वही ब्रह्म ते जगत्की उत्पत्ति कहैहैं सांचते सांच झूंठेते झूंठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तो वासों झूठा जगत् कैसे उत्पत्ति होतो और वही ब्रह्म को निराकार अकर्ता निर्द्धर्मिक कहौहौं कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन अरु वाको निर्वस्तु कहौहौं कि वह कुछु वस्तु नहीं है देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते शून्यहै कहो तो वह धोखई रहिगयो कि कुछु वस्तु रहिगयो सो तिहारेहि बातमें वह धोखा जान्यो परैहै कि कुछु नहीं है शून्यहै तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र में लागौ जाते माया ब्रह्म के पार ह्वै उनहींके पास पहुंचौ जाइ और आवागमन ते रहित ह्वैजाउ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६३ ॥

अथ चौंसठवां शब्द ॥ ६४ ॥

जोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैं ध्याना । ताना